असली पुराने छाप का श्री शकर
महादेव जी के कहे यंत्र-तंत्रों का अपूर्व संग्रह

वृहद् इन्द्रजाल

अर्थात् कौतुक रत्न भाण्डागार

क्रां	क्रीं	क्रूं
शां	शीं	शूं

कालि	का	देवि
मे	शुभं	कुरु

श्री शंकर महादेव
जीके कहे हुए तंत्र
मंत्रों का संग्रह
सम्पूर्ण

ANIS
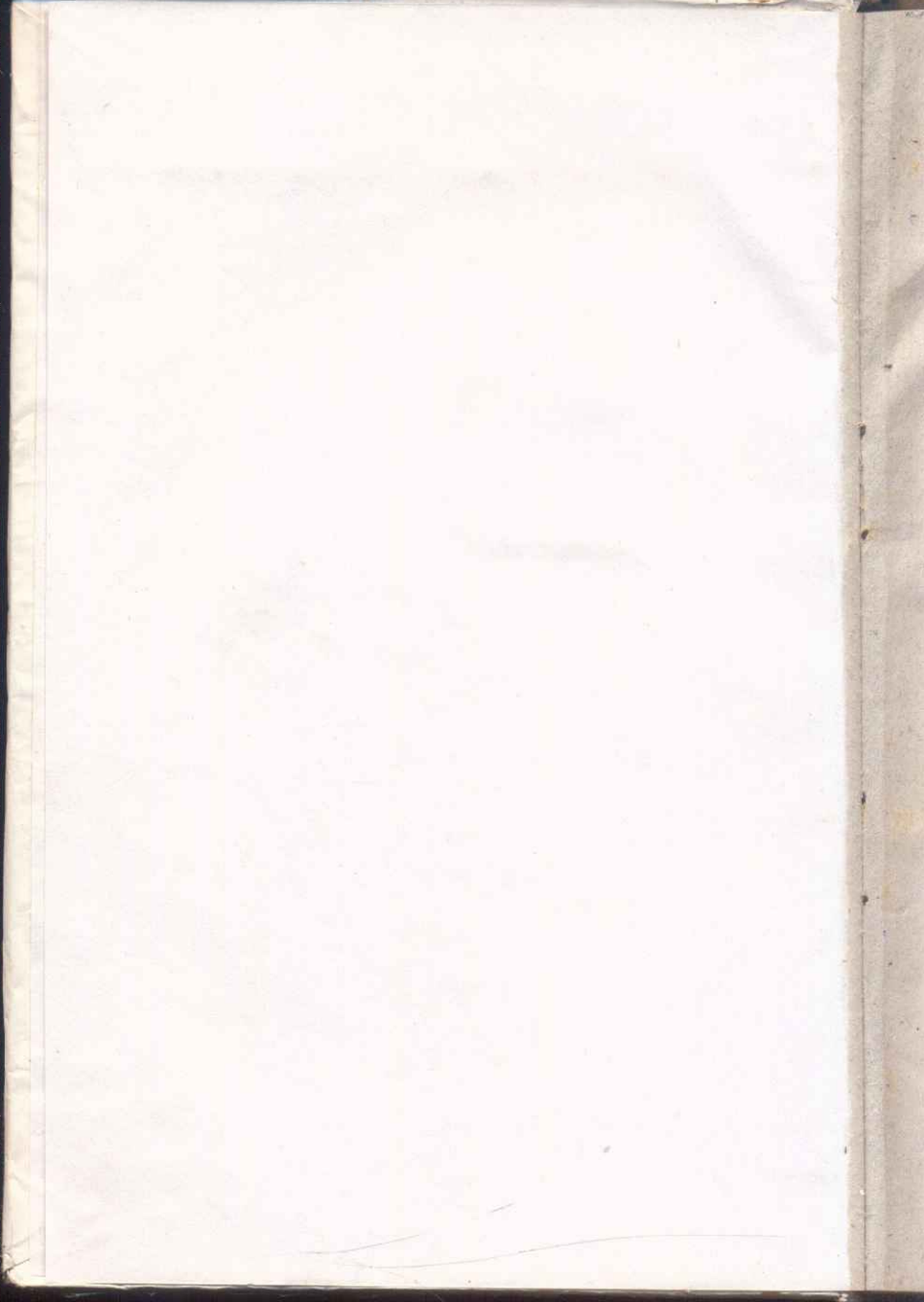
असली पुराने छाप का

बृहद् इन्द्रजाल

(कौतुक रत्न भाण्डागार)

✡✡

(श्री शंकर महादेव जी के कहे यंत्र मंत्र का अपूर्व ग्रन्थ)

प्राचीन हस्त लिखित प्रति से संग्रहीत

✡✡

लेखक – तांत्रिक श्री पं० श्रीमणि शुक्ल

प्रकाशक –
श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०
५२७ ए/२, कक्कड़ नगर इलाहाबाद-३
ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३।

मूल्य : रु० ३५-००

* आवश्यक सूचना *

तन्त्र मन्त्र अपने कार्य की सिद्धि के लिये हैं, न कि उनसे अनुचित लाभ उठाया जावे। पुस्तक में बहुत से उपयोगी तन्त्र मन्त्र दिये गये हैं फिर भी हमारी उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिस प्रकार कुआँ या तालाब जल पीने के लिये होता है न कि उसमें डूब कर आत्महत्या की जावे या उससे किसी का अनिष्ट किया जावे।

यह पुस्तक सर्व जन के कल्याण के लिये प्रकाशित की गई है फिर भी कोई बुरी प्रकृति का मनुष्य इसमें वर्णित उपायों द्वारा किसी का अनिष्ट करे या और कोई अनुचित उपाय अपनाये तो उसमें हमारा क्या दोष है?

पुस्तके लिखिता विद्या सादरं यदि जप्यते,
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्प कोटि शतैरपि।
गुरुं विनापिशास्त्रऽस्मिन्नाधिकारः कथेचन्॥

अर्थ–जो व्यक्ति केवल पुस्तक लिखित विषय को देखकर ही मंत्र जप आदि आरम्भ करके सिद्ध होना चाहते हैं, वह कभी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पाते, क्योंकि इन्द्रजाल अथवा मंत्र शास्त्र की सिद्धि का अधिकार गुरु के समीप ही लाभार्थ माना गया है। अतः बिना गुरु के सिद्धि नहीं मिलती। इसलिये गुरु के उपदेशानुसार ही कार्य को प्रारम्भ करना योग्य है।

वैसे तो आज का युग वैज्ञानिक व यन्त्रों का युग है, ऐसे तन्त्र मन्त्र का नहीं, फिर भी जिनका विश्वास है उनको फल मिलता ही है।

विनीत–
प्रकाशक

* विषय सूची *

महायक्षिणी सिद्धि, सुन्दरी यक्षिणी, मनोहारी यक्षिणी, कनक यक्षिणी, कामेश्वरी यक्षिणी, रति क्रिया यक्षिणी, पद्मिनी यक्षिणी, नटी यक्षिणी, अनुरागिनी यक्षिणी, विशाला यक्षिणी, चंद्रिका यक्षिणी, लक्ष्मी यक्षिणी, शोभना यक्षिणी, मदना यक्षिणी।

छठां अध्याय– **पृ० १४६ से १५९ तक**

(मन्त्रों से रोगों का इलाज)

आधा शीशी का मन्त्र, आँख दुखने का मन्त्र, पीलिया का मन्त्र, कुत्ता काटने का मन्त्र, बिच्छू के विष उतारने का मन्त्र, प्रेत वशीकरण मन्त्र, आयु बढ़ाने का मन्त्र, फोड़ा झाड़ने का मन्त्र, पानी से दूध होने का मन्त्र, आँख की फूली काटने का मन्त्र, भूख लगने का मन्त्र, डबके का मन्त्र, तिजारी ज्वर का मन्त्र, चौथिया निवारण मन्त्र, बर्रानि का मन्त्र, प्रेत निवारण का मन्त्र, गर्भधारण तथा रक्षा मन्त्र, शिशु रोदन मन्त्र, टोना का मन्त्र, नेत्र बाधा निवारण मन्त्र, कर्ण बाधा निवारण मन्त्र, कण्ठ कष्ट मन्त्र, मस्तक पीड़ा का मन्त्र, नकसीर निवारण मन्त्र, ज्वेर निवारण मन्त्र, बवासीर का मन्त्र, विदेशी को घर बुलाने का मन्त्र, नजर झाड़ने का मन्त्र, सुई निकालने का मन्त्र, पशुओं के कीड़े झाड़ने का मन्त्र, डाढ़ दर्द का मन्त्र, डाढ़ के कीड़े का मंन्त्र।

सातवाँ अध्याय– **पृ० १६० से १८२ तक**

(विविध चमत्कार)

शास्त्रार्थ जीतने का मन्त्र, मदारी को पछाड़ने की विधि, दामिनी (बिजली) नाशक मन्त्र, चोरी निकालने का मन्त्र, डाकिनी मूँड़ने का मन्त्र, भूत प्रेत बोलाने का मन्त्र, बीन बाँधने का मन्त्र, साँप निकालने का मन्त्र, पानी पर चलने का मंत्र,

रात के समय साँप दिखाई देना, बिच्छू दिखाई देना, बिना दीपक के अक्षर दिखाई देना, गुप्त होने की विधि, सिद्धि तेल, अन्धा बनाने की विधि, शत्रु का पेशाब बन्द हो, सूर्य का रथ दिखाई देना, दिन में तारे दिखाई देना, अनोखा खड़ाऊँ, कच्चे मटके में पानी भरना, अण्डा उछालने की विधि, चलनी में पानी भरना, अण्डा उछालना, बबूल का काँटा चबाना, मुंह में आग रखना, खुद आग का पैदा होना, खेत की रखवाली हो, शीशी आग से भरी दिखाई देना, दीवार पर आग दिखाई देना, शीशी में अण्डा उतारना, मीबू उछालने की विधि, हाथ पर सरसों जमाना, कोयले को हरा करना, जले हुए बोरे में अंगूठी लटकाना, अग्नि से बिस्तर न जले, आग से उंगली ना जले, बन्दूक की गोली मुंह से छूटना, लोहे को ताँबा बनाना, कपड़ों में आग लगाना, तोप के समान आवाज करना, आग खुद जले, घड़ी को गायब करना, छाते पर गिलाफ चढ़ाना, अक्षर रङ्ग बिरङ्ग करना, वर्षा में दीपक जले, फुलझड़ी बिना रङ्ग का पीला होना, जादू का लाल रङ्ग बनाना, अण्डे का नाच, सुनहरे सितारे, लाल बारूद, नीली बारूद, जर्द बारूद, गोल फुलझड़ी, महताबी, नकली महताबी, रङ्गीन महताबी, बाण बनाना, नारङ्गी रङ्ग वाली बारूद, नीलामीला बनाना, अँगूठी कबूतर में से निकलना, भूत प्रेतादि दोष निवारण योग, पुत्र ही पैदा होय, प्रसव दुख निवारण।

(अन्य उपादेय विषय)

वशीकरण नुस्खे, लाल नीली स्याही बनाने की रीति, सुनहरा मुलम्मा, चाँदी को मुलम्मा, सोने की चीज को चमकना, नीलम बनाना, हीरा बनाना, फिरोजा बनाना, पुखराज बनाना, आदि अनेकों चमत्कारिक नुस्खे दिये गये हैं ।

जय श्री महाकाली

ॐ महाकाल्यै नमः

जय माता श्री छिन्नमस्ता की
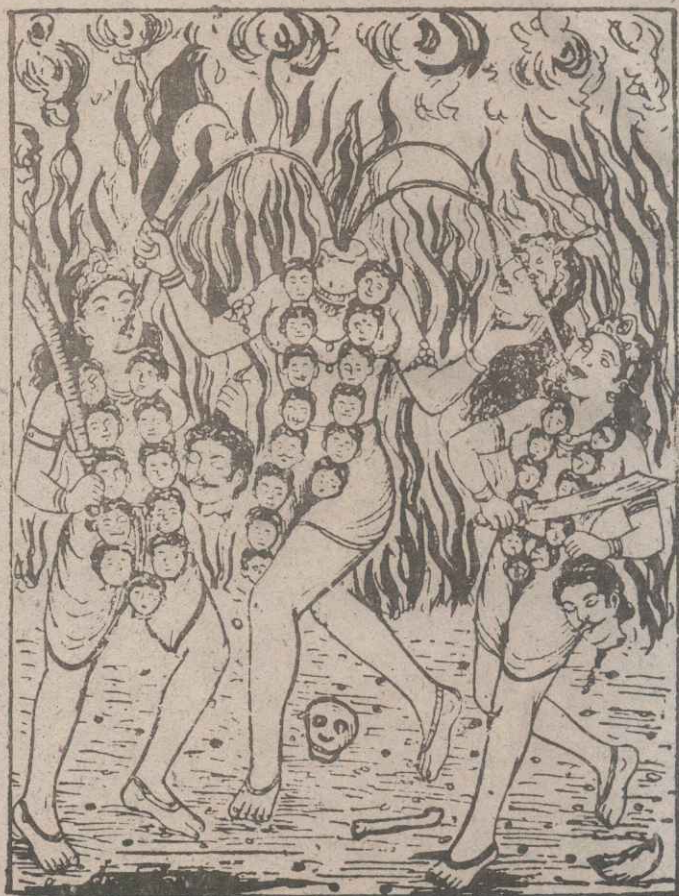
रुण्ड मुण्ड ध्वस्तिनी छिन्नमस्तायै नमः

माता श्री बगलामुखी देवी

ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।

षोडसीदेवी

श्री हनुमद् यंत्रम्

साध्यनाम
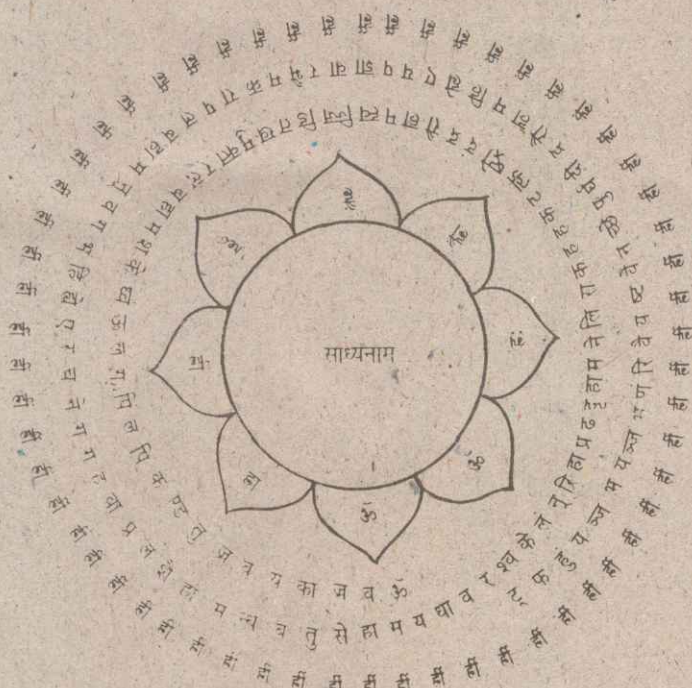
इसे भोजपत्र में लिखकर ताबीज बनाकर पहनने से भूत प्रेतादिक बाधायें नहीं सतातीं ।

श्री भूतभावन भगवान शंकर

ॐ नमः शिवाय

श्री रुद्र यंत्रम्
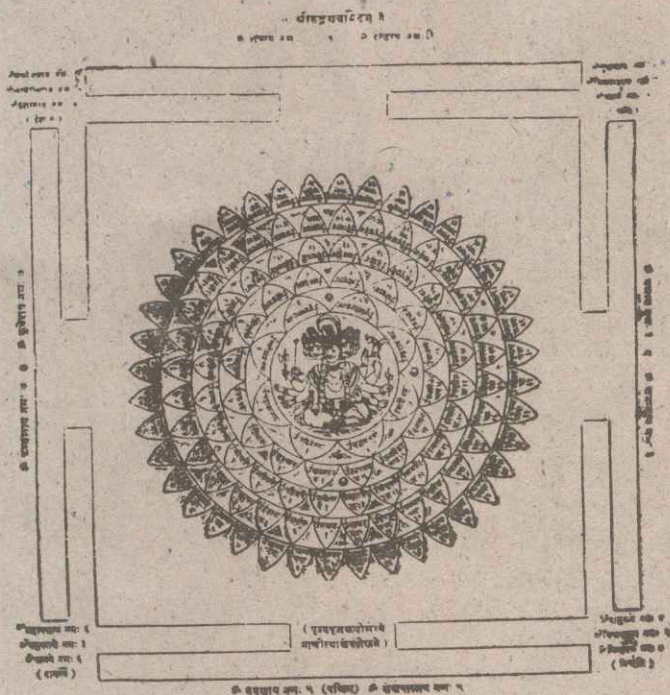
ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय

इसे भोजपत्र में लिखकर ताबीज बनाकर बाँधने से शिवजी की विशेष कृपा तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

श्री काल भैरव जी

ॐ भैरवोभूतनाथश्च भूतात्मा भूत भावनः
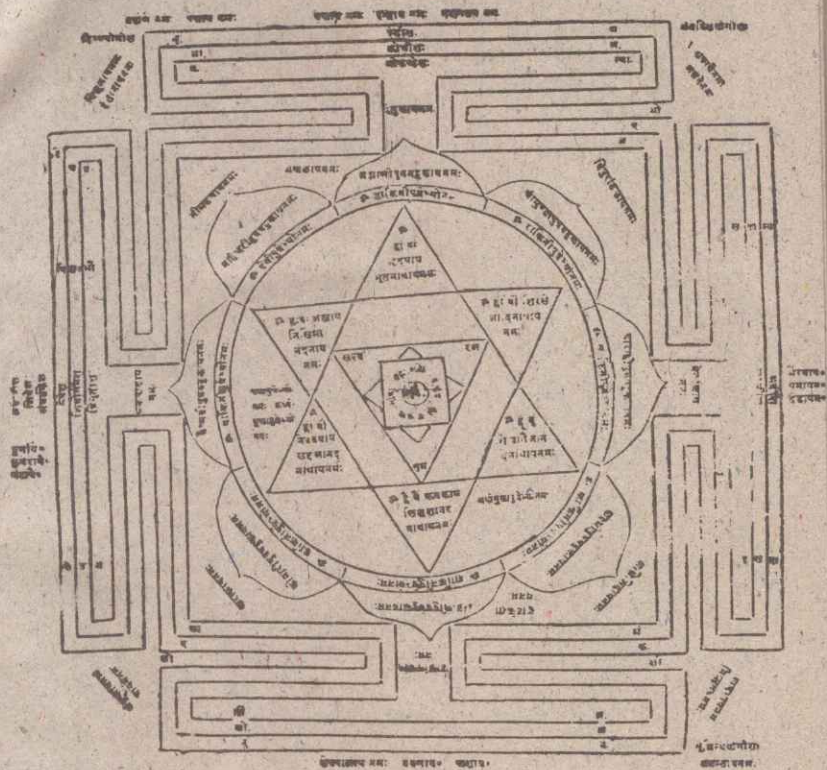
श्री भैरव यंत्रम्

इस यंत्र को भोजपत्र में लिखकर ताबीज में रखकर बाँधने से सब प्रकार की बाधायें दूर होती हैं ।

श्री कामाक्षा देवी जी

ॐ कामाक्षा देब्यै नमः

श्री श्री दुर्गा देवी

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो,
स्वस्थै स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि ।
दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ॥

श्री तारा देवी

नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकाम् ।
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजौ हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

श्री सरस्वती देवी

श्री सरस्वत्यै नमः

सीतारामानुरागी हनुमान

ॐ हरि मर्कट मर्कटाय वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ।

श्री महिषासुर मर्दिनी

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ़ मधु यावत्पिबाम्यहम् ।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥

शुम्भ निशुम्भ हन्त्री भगवती

शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यार्त्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

पुराने छाप का

असली इन्द्रजाल

(कौतुक रत्न भाण्डागार)

प्रथम अध्याय

मंगलाचरणम्

क्रोधाज्वलन्तीं ज्वलनं वमन्तीं,
सृष्टिं दहन्तीं दितिजं ग्रसन्तीं ।
भीमं नदन्तीं प्रणमामि कृत्यां,
तां रोद्धयमानां क्षुधयोग्रकालीं ॥

जिन अम्बे का क्रोध युक्त प्रज्वलित स्वरूप, जिनके मुखार-विन्द से प्रदीप्त ज्वाला (अग्नि) का सदैव, प्रकाश जो क्षण मात्र में विशेष कर भस्म करने की शक्ति रखता है, जो दिति पुत्रों को ग्रास (भक्षण करने वाली हैं) जिनकी गर्जना विकट व भयानक हैं, जो क्षुधार्थ होते हुए रोदन परायण हैं, ऐसी श्री उग्रकाली देवी को बारम्बार नमस्कार करता हूँ ।

❀ श्लोक ❀

कैलाश शिखरे रम्ये नाना रत्नोपशोभिते ।
नाना द्रुम लताकीर्णे नाना पक्षिरवैर्युते ।। १ ।।

सर्वंतु कुसुमा मोद मोदिते सुमनोहरे ।
शैल्य सौगन्धमद्याढचे भरू दिसरूप विलायते ।।२।।

अप्सरो गण संगीतकध्वनि निनादिते ।
सिरच्छाया द्रुमच्छायच्छादिते स्निग्धमंजुले ।।३।।

मृक्त कोकिल संदोहं सघूष्ट विपिनान्तरे ।
सर्वदा स्वगणैः सार्धमृतुराल निसेवते ।। ४ ।।

सिद्ध चारण गन्धर्व गणपत्य गणैर्वृतें ।
तवमान धरे देव चराचर जगद्गुरुम् ।। ५ ।।

सदाशिव सदानन्द करुणाऽमृत सागरम् ।
कर्पूरकुन्द धवलं शुद्धसत्व मयं विभुम् ।। ६ ।।

गिरिवर दोनानाथ योगीन्द्र योगिवल्लभम् ।
गङ्गा सीकर संन्निकेत जटामंडलं मंडितम् ।।७।।

विभूति भूषित शतं ब्याल माल कपालिकम् ।
त्रिलोचनं त्रिलोकेशं त्रिशूलवर धारिणम् ।।८।।

आशुतोषं ज्ञानमय कैवल्यं फलदायकम् ।

निरवकल्पम् निरातंकं निरवे शेप निरंजनम् ॥९॥
सर्वेषां हित कर्त्तारं देव देव निरामयम् ।
अर्द्ध चन्द्रोज्वलद्भालपश्चवक्त्र सुभूषिताम् ॥१०॥
प्रसन्न वदनं वीक्ष्ये लोकानां हित काम्यया ।
विनयेन समायुक्ता रावण: शिवमब्रवीत ॥११॥

कैलाश पर्वत के रमणीय शिखर पर जहां अनेक प्रकार के रत्न शोभायमान रहते हैं, जहाँ तरह-तरह की बेल और लतायें तथा अनेक पक्षी कलरव करते रहते हैं। ऋतुओं में जहाँ सुन्दर-सुन्दर सुमन प्रस्फुटित होते हैं, वह स्थान मन को प्रसन्नता-दायक है। सुमन सुगन्ध फैलाते तथा शीतल समीर सुगन्ध से भरी चलती हैं, अप्सरायें झंकार युक्त गायन से गुञ्जार उत्पन्न करती हैं तथा पेड़ों की छाया सर्वदा जहाँ स्थिर रह कर उक्त स्थान को शीतल बनाये रखती हैं।

कोकिलाओं के सुन्दर झुण्ड कुहू-कुहू कर मीठी धुन सुनाते तथा ऋतुराज बसन्त जहाँ विराजमान है। गणपत्य, चारण, सिद्ध एवं गन्धर्व आदि शंकर के गणों से भरा-पुरा वह स्थान, जहाँ बमशंकर देवादि देव महादेव मौन भाव से ध्यान में लीन हैं। शम्भु करुणा के सिन्धु हैं अमृत के महीदधि हैं, ज्ञानमय हैं।

उन महादेव के वस्त्रस्वरूप दशों दिशायें हैं। आरत और दीन जनों के स्वामी योगि प्रिय गंगा की लहरों से सिंचित जटायें हैं, जिनकी सर्वशरीर में भस्म लेप, शान्त रूप गले में मुण्डमाल एवं त्रिशूल धारण किये आशुतोष, भोलेनाथ विकार-हीन, त्रिविध ताप रहित ज्ञानमय हैं ज्ञान भी जिनकी [illegible]

से अवगत नहीं, जिनके माथे पर चन्द्र शोभायमान है। ऐसे महादेव अवघड़दानी को प्रसन्न पाकर लंकेश रावण पूछता है।

हे देवाधिदेव ! हे जगद्गुरु ! अपने चरणों में दास का प्रणाम स्वीकार कर—क्षणमात्र में सिद्धि प्रदायिनी महान तन्त्र विद्या का वर्णन करिये।

रावण की प्रार्थना से प्रसन्न होकर महादेव जी ने जो अनेक प्रकार की इन्द्रजालिक तांत्रिक और मांत्रिक विद्याओं का वर्णन किया वह अनेकानेक ग्रंथों से संग्रहीत कर इस ग्रंथ में दिया जा रहा है।

———

उपाख्यान

इन्द्र की सभा में एक अप्सरा नाचते-नाचते जब पृथ्वी पर बेहोश होकर गिर पड़ी। तब तो चारों तरफ हलचल मच गई। तमाम देवता घबरा गए और इन्द्र के तो क्रोध का ठिकाना न रहा। उसकी सभा कीनाचने वाली नर्तकी बेहोश होकर गिर पड़ी, इसमें इंद्र का अपमान था। चारों तरफ खोज की गई कि इसका कारण क्या है? पर कुछ भी मालूम न हो सका। लाचार होकर उन्होंने गुरुदेव वृहस्पति से शंका का समाधान करना चाहा।

वृहस्पति जी ने कहा-'राजन ! लंका के रावण ने इस अप्सरा को बेहोश करके तुम्हारा अपमान किया है।'

इंद्रसभा और इन्द्र देवता स्वयं ही इस उत्तर से भौचक्के रह गये। इन्होंने हाथ जोड़कर पूछा 'गुरुदेव ! रावण तो सभा में है नहीं और न इस अप्सरा के कोई अस्त्र ही लगा है, जिससे उसे मुर्छित हो जाना चाहिये।'

गुरुदेव हँस पड़े और बोले 'इन्द्र! अस्त्र बल से अभी तेरी बुद्धि आगे नहीं बढ़ी। अस्त्र-बल तो तन्त्र-मंत्र बल के आगे तुच्छ है, अस्त्रों का प्रयोग तो केवल सामने से ही किया जा सकता है, परन्तु मंत्रों का प्रयोग सैकड़ों

मील दूर बैठने पर उसी आसानी से तथा उतने ही अधिक पराक्रम के साथ किया जाता है।

इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा 'महाराज ! आपकी इस कथा ने तो मुझे अधिक उत्तेजित कर दिया है। आप मुझे इस विज्ञान के बारे में पूरा हाल बतायें।'

इन्द्र की जिज्ञासा देखकर बृहस्पतिजी ने सारी बातें वर्णन करते हुये कहा-एक समय दशकंधर ने देवाधिदेव शिवजी की बहुत बड़ी तपस्या की। भोले शङ्कर उससे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपने पास बिठा लिया। रावण ने शङ्करजी से कुछ नहीं माँगा इससे शङ्कर जी अधिक प्रसन्न हो गये।

एक दिन जब रावण शङ्कर जी के पैर दाब रहा था और महादेवजी पार्वजी के साथ लेटे थे, तो उस समय पार्वती के बहुत कहने पर महादेवजी ने तांत्रिक विद्या के बारे में बताया कि मनुष्य की साधना से पैदा की हुई शक्ति अस्त्रों की शक्ति से कई गुनी तेज और विशाल होती है। उसकी सिद्धि से कोई भी शक्ति मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ पाती। मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील की दूरी से भी इसी तरह से किया जा सकता है, जिस प्रकार कि शस्त्रों का प्रयोग आमने-सामने से।

महादेवजी के मुँह से यह वर्णन सुनकर तो रावण

के मुँह में पानी आ गया और अपने मन में तांत्रिक विद्या के पूरी तरह सीखने का संकल्प उसने कर लिया । रावण के मन की बात महादेवजी को जानते देर न लगी, उन्होने सारी विद्या उसे सिखाई और कहा कि इस विद्या द्वारा वह संसार के अन्य असाध्य कामों को भी पूरा करके यश प्राप्त कर सकता है । रावणने उसी विद्या के प्रयोग से आज अप्सरा को मूर्छित किया है ।

इंद्रने कहा–'गुरुदेव! आप तो मेरे मन की बात तनिक देर ही में जान लेते हैं, मुझे भी इस विद्या को सीखने की बहुत इच्छा है । मैं भी चाहता हूँ कि आप मुझे जिस तरह हो इस विद्या को सिखाने की चेष्टा करें

गुरुदेव वृहस्पति बहुत हँसे और फिर बोले 'इन्द्र! तू अभी तक होड़ ही में रहा, खैर ! यदि तेरी इतनी तीव्र इच्छा है तो मैं तुझे अवश्य ही तांत्रिक विद्या सिखा दूँगा, तू अपने मन को स्थिर कर ले तथा इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि इस विद्या को सीखने के लिए मनुष्य को काम, क्रोध, मद, लोभ, राग द्वेष, ईर्ष्या से दूर रहना पड़ता है । वह मनुष्य इसमें पूर्णतया सफल हो सकता है जो सादगी से जीवन व्यतीत करता हुआ इस विद्या को सीखना चाहे, तो मुझे विद्या को सिखाने में कोई आपत्ति नहीं है, मैं सहर्ष सिखला दूँगा ।

इन्द्र बड़े सोच में पड़ गया मगर फिर हृदय कड़ करके बोला–'महाराज' ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि जैसा आपने कहा है वैसा ही करूँगा। तमाम बातें से दूर रह कर भी मैं इस तांत्रिक विद्या को अवश्य सीखूंगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं वैसे ही काम करूँगा।

वृहस्पति ने इन्द्र का यह निश्चय देख कर कहा कि जिस प्रकार मैंने जगद्गुरु श्री शंकर जी महाराज से यह अनुपम तांत्रिक विद्या सीखी है वही तुझसे वर्णन करता हूँ। इसके छैः प्रकार के कर्म हैं शांति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण। प्रयोग नौ तरह के हैं। उनके नाम हैं मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी साधन और रसायन क्रिया।

—:o:—

प्रयोग की विधि
इन्द्रजाल कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व का कार्य

ॐ नमोनारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजाल कौतुक-निदर्शये दर्शय सिद्धि कुरु स्वाहा।

उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने के पश्चात् इस इन्द्रजाल नामी कार्य को करना चाहिए। तब तो कार्य सिद्धि की आशा है अन्यथा नहीं।

स्वरक्षा का मन्त्र

ॐ परंब्रह्मपरमात्मने मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु।

उपरोक्त मंत्र को १०८ बार जप करके अपने मुख की फूँक द्वारा अपने शरीर को आवृत (फूँक से फुँकायमान) करना चाहिये, ऐसा करने से कर्ता को कोई विघ्न नहीं होता।

बृहस्पतिजी बोले--हे राजन्! इस विद्या के छः स्तम्भ हैं। इन तमाम स्तम्भों का अलग-अलग वर्णन है और उनके कर्म भी अलग-अलग हैं।

षष्ट कर्माणि

शान्तित्वश्य, स्तम्भनानि, निद्वेषणोच्चाटने तथा।
मरणांतानिशंसेति षष्ट कर्माणि मनीषिणः ॥

शान्ति, वशीकरण, स्तम्भनविद्वेषण, उच्चाटन, और मारण यही छः प्रयोग षष्ट कर्म के रूप जाने जाते हैं।

षट्कर्मों के लच्चण

(क) जिस कर्म के प्रयोग करने से रोग, ग्रहकष्ट एवं बुरे कर्मों की शान्ति होती है, उसको शान्ति कर्म जानो।

(ख) जिस कर्म के करने से प्राणी मात्र अपने वशीभूत हो-जावे अथवा किसी को वश कर सके उसे वशीकरण जानो।

(ग) जिस कर्म के प्रयोग से किसी चलती हुई चीज को रोक दिया जावे वह स्तम्भन कहावे।

(घ) जिस कर्म द्वारा दो विभिन्न प्राणियों में विरोध एवं वैमनस्यता उत्पन्न की जावे उसे विद्वेषण जानो।

(ङ) जिसके द्वारा प्राणी का मन उच्चाटन किया जावै वह जहाँ है वहाँ से भागने को, विदेश से घर या घर से विदेश जाने को आतुर होवे, उसे उच्चाटन कहते हैं।

(च) जिस कर्म के द्वारा किसी भयंकर शत्रु के प्राणों का अपहरण कर लेवे उसे ही मारण कहते हैं।

इस प्रकार छः कर्मों के लक्षण समझते हुए अब उन कर्मों की देवियों का वर्णन सुनो।

कर्माणि प्रयोगम्

उपर्युक्त छहों कर्मों के प्रयोग नौ प्रकार के हैं। मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी-साधन तथा रसायन।

षट् कर्मों की देवियाँ

(क) शान्ति कर्म की देवी रति हैं, रति को अनंग अर्थात् कामदेव की पत्नी माना गया है

(ख) वशीकरण की देवी सरस्वती हैं—वीणापाणि मराल वाहिनी जिनसे सभी नीचे हैं।

(ग) स्तम्भन की देवि विष्णु-प्रिया लक्ष्मी जगदम्बा हैं।

(घ) विद्वेषण की देवी ज्येष्ठा हैं।

(ङ) उच्चाटन की देवी महिषासुर मर्दिनी असुर-विनाशिनी दुर्गा हैं।

(च) मारण की देवी महाकाली भ काली हैं।

उपर्युक्त तन्त्रों को देवियों का वर्णन समझते हुए यह भी जान लेना चाहिए कि जो भी कर्म करना हो उसकी देवी को प्रथम ध्यानावस्थित कर उनका विधि पूर्वक पूजन कर कर्म का आरम्भ करे, अन्यथा सिद्धि नहीं मिलती।

अथ कर्म-दिशा वर्णन

शान्ति कर्म करने को ईशान कोण, वशीकरण हेतु उत्तर दिशा,, स्तम्भन के लिए पूर्व दिशा विद्वेषण में नैऋत्यकोण तथा मारण के लिए आग्नेय कोण की ओर मुँह करके आसन पर बैठना चाहिये।

अथ षष्ट कर्माणि काल विचारम्

उपर्युक्त छः कर्मों के लिए काल विचार आवश्यक है, जो कर्म करना हो उसके बताये समय के अनुसार ही करे।

शान्ति कर्म के लिए दिन का तृतीय पहर, दोपहर से पहले वशीकरण, दोपहर के बाद में उच्चाटन एवं सायं काल में मारण का प्रयोग करे, यह आवश्यक है।

ऋतु विचार

शान्ति कर्म के लिए हेमन्त ऋतु, बसन्तऋतु में वशीकरण, शिशिर में स्तम्भन, ग्रीष्म में विद्वेषण उच्चाटन कर्म के लिए वर्षा ऋतु और मारण क्रिया शरदऋतु में ही उचित है। महापुरुषों का कथन है कि सूर्योदय से लेकर रात के पिछले पहर तक दस-दस घड़ियों के पश्चात् छहों ऋतुयें अपना-अपना भोग कर जाती हैं अर्थात् सूर्योदय के बाद दस घड़ी तक बसंत, दोपहर को ग्रीष्म, दोपहर के बाद वर्षा, सन्ध्या समय शिशिर, आधीरात को शरद तथा प्रातःकाल में हेमन्त ऋतु का साम्राज्य होता है।

रंग और कर्म

स्तम्भन क्रिया में पीत रङ्ग, उच्चाटन क्रिया में धुएं का सा रङ्ग, विद्वेषण में रक्त का रंग, वशीकरण, मोहन और आकर्षण में लाल रङ्ग, मारण क्रिया में काला रंग एवं शान्ति क्रिया में श्वेत रंग का ध्यान रक्खें। इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये।

शुभ दिन

प्रत्येक कर्म के अलग-अलग दिन वार होते हैं जैसे शान्ति कर्म को वृहस्पतिवार एवं विद्वेषण के लिए शनिवार इत्यादि।

अथ षटकर्म चक्रम्

प्रत्येक कर्म के लिए तिथि और नक्षत्र का भी ध्यान रखना चाहिये।

षट्कर्म	शांतिक	वशी	स्तम्भन	विद्वेषण	उच्चाटन	मारण
देवी	रति	सरस्वती	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रका०
दिशा	ईशान	उत्तर	पूर्व	नैऋत्य	वायव्य	आग्ने०
ऋतु	हेमन्त	बसंत	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद
रंग	श्वेत	लाल	पीला	लाल	धूम्र	काला

दिशाशूल

शुक्रवार एवं रविवार को पश्चिम में, शनि एव सोम को पूर्व में, मंगल एवं बुध को उत्तर में और वृहस्पति को दक्षिण दिशा में दिशाशूल रहता है।

दिशाशूल चक्र
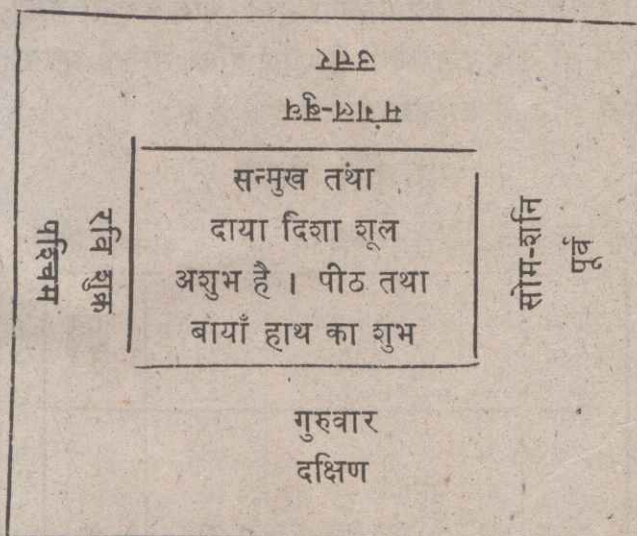
मंगल बुध उत्तर दिशि कालू, सोम शनिश्चर पूर्व न चालू।
रवि शुक्र पश्चिम नहिं जाना, बिफै न दक्षिण करै पयाना ॥

अथ योगिनी विचार

योगिनी का विचार तन्त्र सिद्धि में बहुत आवश्यक समझ कर बताते हैं। योगिनी का वास परिवा के दिन पूर्व में, द्वितीया को उत्तर में तृतीया को अग्नि कोण में, चतुर्थी को नैऋत्य कोण में, पंचमी को दक्षिण में, षष्ठी को

पश्चिम में, सप्तमी को वायव्य कोण में और अष्टमी को ईशान कोण में रहता है।

यह ज्ञातव्य है कि योगिनी यदि पीठ पर या बाईं ओर हो तो शुभ फल देती है एवं यदि सन्मुख अथवा दाहिनी ओर हो तो अशुभ फल देती है।

योगिनी चक्रम्

दक्षिण पाद वायव्य पश्चिम वामपाद नैऋत्य

ईशान ३०।८	पूर्व १।९	अग्नि ३।११
उत्तर २।१०	वायें योगिनी सुख बहु देवै। दाहिन दिशि सुख सम्पति खोवै पीठ पिछाड़ी है सुखदाई। सन्मुख मृत्यु देव दरसाई।	दक्षिण ५।१३
वायव्य ७।१५	पश्चिम ६।१४	नैऋत्य ७।५

ऊपर योगिनी का चक्र देकर भली भाँति समझा दिया गया है, ध्यान से समझ लेवें।

राशि जानने के लिये नीचे के खाने में अपने जन्म राशि का पहला अक्षर देख लेवें क्योंकि और बातों के साथ ही साथ स्त्री पुरुष को प्रत्येक कर्म की सिद्धि में अपनी राशि का ज्ञान आवश्यक है। अतः थोड़ा सा वर्णन चक्र द्वारा समझाया जाता है।

राशि चक्रम्

रशि	अक्षर और उसका स्वामी नक्षत्र		
मेष	अश्विनी के ४ चरण चू. चे. चो. ला.	भरणी के ४ चरण ली. लू. ले. लो.	कृति का १ चरण आ
वृष	कृतिका के पिछले ३ चरण ई. ऊ. ए.	रोहणी के ४ चरण ओ. वा. वी. वू.	मृगशिरा के प्रथम दो चरण वे. वो.
मिथुन	मृगशिरा के पिछले २ चरण का. कीं.	आद्रा के ४ चरण कृ. घ. ङ. छ.	पुनर्वसु के ३ चरण के. को. हा.
कर्क	पुनर्वसु का १ चरण हो.	पुष्य के ४ चरण हु. हे. हो. डा.	आश्लेषा के ४ चरण डी. डू. डे. डी.
सिंह	मघा के ४ चरण मा. मी. मू. मे.	पूर्वा फाल्गुनी के ४ चरण मो. टा. टी. टू.	उत्तरा फाल्गुनी का १ चरण ठे.

कन्या	उत्तरा फाल्गुनी के पि० ३ चरण टो. पा. पी	हस्त के ४ चरण पू. ष. ण. ढ.	चित्रा के २ चरण पे. पो.
तुल	चित्रा के २ चरण रा. री.	स्वाती के ४ चरण रू. रे. रो. ता.	विशाषा के ३ चरण ती. तू. ते.
वृश्चि	विशाखा का पिं० १ चरण तो.	अनुराधा के ४ चरण ना. नी. नू. ने.	ज्येष्ठा के ४ चरण नो. या. यी. यू.
धनु	मूल के ४ चरण ये. यो. भा. भी.	पूर्वाषाढ़ के ४ चरण भू. धा. फा. ढा.	उत्तराषाढ़ का १ चरण भे.
मकर	उत्तराषाढ़ के ३ चरण भो. जा. जी	श्रवण के ४ चरण खी. खू. खे. खो.	धनिष्ठा के २ चरण गा. गी.
कुम्भ	धनिष्ठा के पि० २ चरण गू. गे.	शतभिषा के ४ चरण गो. सा. सी. सू.	पूर्वा भाद्रपद के ३ चरण से. सो. दा.
मीन	पूर्वा भाद्र पद का पि० १ चरण दी.	उत्तराभाद्रपद के ४ चरण दू. था. भ. ञ.	रेवती के ४ चरण दे. दो. चा. ची.

तिथि विचार

नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता और पूर्णा ये तिथि पाँच प्रकार की मानी गई हैं ।

यदि शुक्रवार के दिन नन्दा, बुधवार को भद्रा, मंगलवार को जया, शनि के दिन रिक्ता और बृहस्पति के दिन पूर्णा तिथि हो तो यह समझ लो कि सिद्धि योग है-अन्यथा उसे मृत्यु योग जानिये । सिद्धि योग में कार्य करने से लाभ एवं सिद्ध प्राप्त होती है । मृत्युयोग में कष्ट एवं हानि होती है सो विचार लेवें ।

आसन विचार

प्रयोग करने से प्रथम आसन का विचार आवश्यक है क्योंकि कार्य में यदि सिद्धि की इच्छा हो तो उसीप्रकार के आसन का प्रयोग करना चाहिये ।

यथा--पुष्टि कार्य के लिये पद्मासन, शांति कार्य के लिये स्वस्तिकासन, विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन में अर्द्ध स्वस्तिकासन तथा शान्ति में भद्रासन से बैठ कर सिद्धि प्राप्त करे ।

आसन भेद

(क) मारण प्रयोग में भैंसे के चर्म का आसन

(ख) विद्वेषण में अश्वचर्म का आसन

(ग) वशीकरण में मेंढा के चर्म का आसन
(घ) आकर्षण में बाघम्बर ,, ,,
(ङ) उच्चाटन में ऊँट के ,, ,,
(च) शान्ति में हाथी चर्म के आसन पर बैठ कर जप करने से सिद्धि होती है। ये सब अत्यन्त विचारणीय हैं।

अब यहाँ ध्यान रहे---आसन पर बैठने से पहले उसे कूर्म चक्र की भाँति बिछाना आवश्यक है।

ध्यान रहे कूर्मचक्र के अनुसार आसन न बिछाने से कार्य की सिद्धि नहीं होगी।

चक्र

ईशान दक्षिण हस्त	पूर्व मुख	आग्नेय हस्त
क्ष त्र ज्ञ	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
		ट
अं	अ इ	
	आ ई	ठ
श	ओ उ	
	कर्म	
ष	चक्र	ड
स	ओ ऊ	ढ
	ए लृ ऋ	
ह	ऐ लॄ ॠ	
य र ल व	प फ ब भ म	ण
		त थ द ध न
दक्षिण पाद वायव्य	पश्चिम	वामपाद नैऋत्य

अथ दिशा विचार

वशीकरण में पूर्व की ओर, मारण व उच्चाटन आदि में दक्षिण तथा विद्या, धन, शान्तिपुष्टि तथा आयु की रक्षा में उत्तर मुख बैठकर जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है।

अथ जप विचार

जप तीन प्रकार के होते हैं। वाचिक, उपांशु और मानसिक।

जोर से बोलकर जप करने को वाचिक, स्वयं को सुनाई दे ऐसा जप उपांशु एवं जिस जप में बिलकुल आवाज न हो मानसिक कहलाता है।

मारण में वाचिक, शान्तिमें उपांशु तथा मोक्ष क्रिया के हेतु मानसिक जप किया जाता है।

मन्त्रों का लिंग भेद

मंत्र भी संज्ञा की तरह तीन प्रकार के होते हैं। स्त्री-लिंग, पुलिंग और नपुन्सक-लिंग

जिन मंत्रों का 'स्वाहा' में अंतहो वे स्त्री-लिंग, जो मंत्र 'नमः' पर समाप्त होवे नपुंसक लिंग एवं जो 'हुँ फट्' पर समाप्तहों पुलिंग होते हैं।

वशीकरण शान्तिकरण में पुलिंग मंत्र का व्यवहार होता है।

क्षुद्र एवं नीच क्रियाओं में स्त्री-लिंग मंत्र व्यवहृत होते हैं। एवं इसके पश्चात वाली अन्यान्य क्रियाओं में नपुंसक-लिंग वाले मंत्र काम आते हैं।

शुभ कार्य चक्र

ईशान पूर्व आग्नेय

उत्तर

दक्षिण

वायव्य पश्चिम नैऋत्य

उपर्युक्त चक्र के अनुसार बैठकर मंत्र-तंत्र सिद्ध करे।

अब हम आगे रविवार के दिन आरम्भ होने वाले प्रयोग के लिए चक्र बताते हैं।

ईशान पूर्वरवि उत्तम अग्निकोण सोम उत्तम

उत्तरशनि अति निकृष्ट
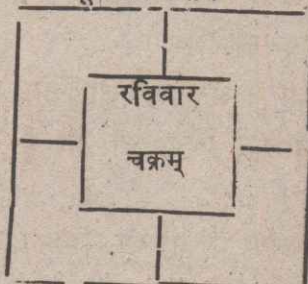
दक्षिण मङ्गल कनिष्ठ

वायव्य शुक्र सामान्य, पश्चिम वृ० उत्तम, नैऋतबुधवारसामान्य

उपर्युक्त चक्र के अनुसार जिस प्रकार के कार्य के लिए बैठना चाहे उधर ही मुँह करके बैठे।

मन्त्र के लिए प्रकृति वर्णन

मन्त्र की प्रकृति जैसी हो फल भी वैसा ही होता है। यदि शीघ्र कार्य सिद्धि अभीष्ट हो, तो शनिवार से जाप प्रारम्भ करे। पश्चिम मुख बैठे। जैसा कि नीचे चक्र में बताया है।
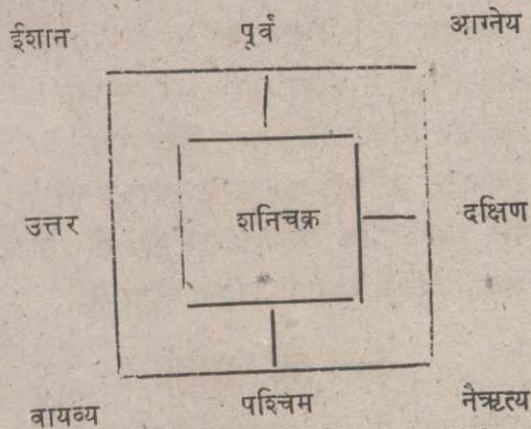
तिथि वर्णन

कृष्ण और शुक्ल पक्ष की तिथियों में चन्द्रमा और सूर्य का अधिकार रहता है। इसलिए सूर्य के अधिकार

में तात्कालिक कार्य करें और चन्द्रमा के अधिकार में स्थिर अर्थात् बहुत काल तक रहने वाला कार्य करना उचित होता है।

कुम्भ स्थापन की विधि

शान्तिकर्म में नौ रत्नोंसे सजाकर सुवर्ण का कलश स्थापन करे यदि सुवर्ण का न हो तो रौप्य या ताम्र से काम चलावे।

अभिचार कर्म में लौह का कुम्भ स्थापित करे।

मोहन कार्य में रौप्य का कुम्भ स्थापित करे।

उत्पादन में काँच का कुम्भ स्थापन करे।

उच्चाटन में मिट्टी का कुम्भ स्थापन करे।

यदि कलश ठीक उपलब्ध न हो तो ताम्र का कलश सब कार्यों में समान उपयुक्त होता है।

हवन की सामग्री

शान्ति कर्म में दूध, घी, तिल, गूलर तथा पीपल की लकड़ी लावे।

पुष्टि कर्म में घी, बेलपत्र अथवा चमेली के पुष्पों से हवन करे।

कन्या की प्राप्ति के लिए खीर का हवन करे।

लक्ष्मी प्राप्तिके लिये कमलगट्टा, दही और घृत-युक्त अन्न का हवन करे।

समृद्धि के लिये घी, विल्वपत्र और तिल हवन करे।

आकर्षण की इच्छा वाला चिरौंजी और बिल्वपत्र का हवन करे।

वशीकरण में राई और लवण का हवन करे।

उच्चाटन में कौवे के पंख का हवन करे।

मोहन प्रयोग में धतूरे के बीजों का हवन करना चाहिये।

मारण में विष को खून में भिगोकर उसका हवन करें।

हवन के लिये शुद्ध मुद्रा

मुद्रा तीन प्रकार की होती है। हवन करते समय इसका ध्यान रखना चाहिये।

हाथ को सिकोड़कर जो आहुति डाली जाय उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं।

कनिष्ठा उंगली को छोड़ कर जो हवन में आहुति डाली जाय उसे हंसी मुद्रा कहा जाता है।

जो आहुति कनिष्ठा एवं तर्जनी उँगलियों के योग से डाली जाय उसे मृगी मुद्रा कहा जाता है।

माला का निर्णय

आकर्षण कार्य में मतवाले हाथी के दाँत की माला वशीकरण में और पुष्टि में मूँगा, हीरा तथा मणि की माला विद्वेषण तथा उच्चाटन में सूत अथवा मनुष्य के बाल में घोड़ेके दाँत पिरोकरबनाई हुई माला चलती है।

मारण प्रयोग में मृतक पुरुष के दाँत या गदहे के दाँत की माला प्रयोग होती है, पर मृतक कीमृत्यु युद्ध में न हुई हो।

सर्व प्रकार की कामनाओं में मणि शंख और कमल गट्टे की माला बनानी चाहिये। रुद्राक्ष की माला से जप किया हुआ मन्त्र फलदायी होता है।

स्फटिक, मणि मुक्ता, रुद्राक्ष की माला से जप करने पर सरस्वती की प्राप्ति होती है।

तुलसी की माला

यह माला बहुत शुद्ध होती है। इस माला से शुद्ध मन्त्रों का ही उच्चारणकरना चाहिये। केवल साधक को स्तम्भन का प्रयोग ही इस पर करना चाहिये। जो भी मन्त्र बोले जायँ उनका उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये और उनके लिये भावना भी शुद्ध होनी चाहिये।

मूँगे की माला

लाल रङ्ग के दानों को मूँगा कहा जाता है। यह एक प्रकार के स्तर द्रव्य से तैयार की जाती है। इसको शुद्ध नहीं माना गया है। इसका उपयोग मारण की सिद्धि करते समय किया जाना चाहिए। मूंगे की माला को पहले लोहबान की धूनी दे देनी चाहिये। धूप की धूनी कभी भूलकर भी न दी जाय। लोहबान की महक से मारण प्रेत आत्मायें प्रसन्न होती हैं और कहा जाता है कि मूँगे की माला में छियासी दाने होने चाहिये।

रुद्राक्ष की माला

रुद्राक्ष एक किस्म का जंगली फल होता है। जो ऊँचे पहाड़ी स्थानों में पाया जाता है। इसको वैदिक रीति से बहुत पवित्र माना गया है और इसके गुणों की व्याख्या कई तरह से की गयी है। कहा जाता है कि असली रुद्राक्षपर जापकरनेसे जीवनकी तमाम इच्छाओं की पूर्ति बड़ी ही उत्तम रीति से होती है। नैपाल की ओर रुद्राक्ष अधिक मिलता है। वशीकरण और आकर्षण की साधनाके लिए रुद्राक्षकी माला होनी चाहिये। रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ दाने होने चाहिये। मंत्र का जाप करते समय ध्यान रखना चाहिए कि माला का कोई भा

अंग पैर से न छुवाये। पैर के पास तक आने से भ
सिद्धि में गहरी कमी हो सकती है और उसका फल बहुत
अंश तक उल्टा हो जाने की सम्भावना होती है। रुद्राक्ष
की माला को पहले शुद्ध जल से धोना चाहिये, फिर कपड़े
से पोंछ कर उनके दानों पर सिंदूर का हाथ फेरना चाहिए
और धूप इत्यादि देकर उसकी शुद्धि करना लाभदायक
है। इसकी माला का प्रयोग रक्त चाप की बीमारी में भी
लाभदायक सिद्ध हुआ है।

भेषज की माला

एक प्रकार का काला फल जिसका आकार गोल बेर
की तरह होता है। उसकी भी माला बनाई जाती है। इस
माला का प्रयोग अधिकतर विद्वेषण की सिद्धि करते समय
करना चाहिये। द्वेष कराने के लिए इष्ट की साधना करनी
पड़ती है। वह इष्ट काली आकृति वाले पदार्थों से बहुत
प्रसन्न होता है। इस माला में गिनकर ३९ दाने डलवाने
चाहिये। इसके दानों को काले डोरे में ही पिरोना
चाहिये। क्योंकि काले दाने यदि किसी और तरह के
डोरे या तार से पिरोये जाँयगे तो उनका कार्य एक हद
तक समाप्त हो जायेगा। माला में हर चीज का ध्यान
रखना चाहिये। क्योंकि सिद्धि के लिए मालायें विशेष
रूप से तैयार करायी जाती हैं। इस काम में आने वाली
मालायें बाहर से नहीं मिल पातीं। मालायें बनवाते समय

इन तमाम बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। तन्त्र मन्त्रों में जरा सी बातें भी बहुत काफी महत्व को होती हैं। अन्य कई तरह की मालाओं का उपयोग भी किया जा सकता है। जैसे शंख और कौड़ी इत्यादि की बनी हुई मालायें जो मिल सके।

स्थावर माला

कठिन प्रयोग के करने के लिए जैसे मारण सिद्धि के लिए हड्डियों की माला बनाई जाती है। इस माला का बनाना बहुत कठिन है और बहुत ही बड़े तान्त्रिक ही इसे बना पाते हैं। माला बनाने के लिए उस तेली के गुर्दे के पास वाली हड्डियाँ चाहिये जो पंचकों में शनिवार के दिन मरा हो। उसकी हड्डियाँ नीचे लिखे मन्त्र से एक लाख पच्चीस हजार बार फूँकी जाती है।

'ॐ बृह्माण कालैय: नमैः दातव्यः'

इस मन्त्र का पाठ करके उन हड्डियों को गङ्गाजल या नदी के जल से धोने के बाद उन्हें गूगल की इक्कीस बार आहुति देनी चाहिये। आहुति देने के बाद इन हड्डियों को गोल-गोल काट कर दाने बनाकर ताँबे के तार में पिरोने चाहिये। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जाय कि माला में केवल तेरह ही दाने हों, न तो एक भी ज्यादा होने पाये और न कम ही।

माला फेरने में अँगुली निर्णय

आकर्षण में अंगूठे और अनामिका उँगली से, शान्ति, स्तम्भन और वशीकरण में अँगूठे और बीच की उँगली से विद्वेषण और उच्चाटन में अँगूठा और तर्जनी से और मारण प्रयोग में अँगूठा और कनिष्ठा उँगली से माला फेरने से सिद्धि प्राप्त होती है—यह तान्त्रिकों का मत है।

मन्त्र सिद्धि के पूर्व कर्म

अव्वल तो जो मनुष्य मन्त्रों को नित्य प्रति लिखता रहता है, उसके घर में—भय, चोर, भूत-प्रेत, पिशाचादि कदापि प्रवेश नहीं करते। मन्त्रों में विश्वास होना चाहिये तथा मन्त्र शुद्ध और तरीके से हों तो अवश्य ही सिद्ध हो जाते हैं।

प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो करके एकान्त स्थान में मन्त्रों को लिखे और विधिपूर्वक एक दिन पूजन करता रहे। तीन रात तक पृथ्वी पर ब्रह्मचर्य रख कर शयन करे। तीसरे दिन मन्त्र का देवता या देवी स्वयं कह जायेगी कि मन्त्र—सिद्ध होगा या नहीं। यदि न आवे तो समझो मन्त्र सिद्ध नहीं होगा।

❀ प्रथम अध्याय समाप्त ❀

द्वितीय अध्याय

अथ मन्त्र-तन्त्रों का वर्णन

स्तम्भन प्रयोग

अग्नि स्तम्भन

वसां गृहीत्वा माण्डूकी कौमारी रस मिश्रिता।
लेपमात्र शरीराणामग्निस्तम्भं प्रजायते॥ १॥
अर्क दुग्ध समादाय कुमारी सह मेलयेत।
लेपमात्रे शरीराणि अग्नि स्तम्भं प्रजायते॥ २॥
कदली रस समादाय कुमारी रस पेषितम्।
अर्क दुग्ध समायुक्ताग्निस्तम्भं प्रजायते॥ ३॥
पिप्पली मरिचं शुण्ठी चर्वयित्वा पुनः पुनः।
दीपांगारे नरैर्भुक्ते स न दह्यते क्वचित्॥ ४॥

अर्थात् :—

घीक्वार के गूदे के रस में मेढक की चर्बी मिलाकर शरीर पर लेप करने से आग का असर नहीं होता।१॥

आक के दूध में घीक्वार का गूदा मिलाकर शरीर पर लेप करले तो आग से शरीर नहीं जल सकता॥२॥

केले के रस में घीक्वार का रस मिला कर लगाने से शरीर नहीं जलता ॥३॥

पीपल, मरिच, सोंठ चबाकर मुँह में अंगार रखने से नहीं जलता ॥४॥

शत्रु मारण यन्त्र

ॐ नमः कालरुद्राय शत्रु भस्मी कुरु कुरु स्वाहा.

विधिः—

यह मन्त्र किसी त्योहार के दिन एक लक्ष जाप करके सिद्ध करे फिर प्रयोग करने से पहले इसका अष्टोत्तर शत जप करे। जप करते समय मन्त्र में शत्रु के स्थान पर उसका नाम कहे।

सर्वोपरि मन्त्र

ॐ पर ब्रह्म परमात्मने नमः उत्पत्ति स्थिति प्रलय-कराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकान् दर्शय दर्शय दत्तात्रेयायनमः तन्त्रसिद्धि कुरु स्वाहा।

विधिः—

उपर्युक्त मन्त्र को प्रथम किसी त्योहार या दिवाली के अवसर पर आरम्भ करे, उसका एक लक्ष जप और हवन आदि करके सिद्ध करके किसी कार्य के आरम्भ में अष्टोपचार सहित जप करे तो सिद्धि मिले।

मोहन मन्त्र

ॐ उडामारश्वराय सर्व जगत मोहिनाम हुँ फट स्वाहा।

सिद्धि करने की विधि :—

इस मन्त्र को एक लक्ष बार जप कर सिद्धि कर लेवे फिर आवश्यकता पड़ने पर सात बार पढ़ के तिलक करे तो सर्वजन मोहन होय।

शराब नष्ट होय

कृतिका नक्षत्र में आक की जड़ लाकर सोलह अंगुल की एक कील लेकर शराब वाले के घर में डाले तो उसकी मदिरा नष्ट हो जावे।

धोबी के कपड़े नाश होवे

ॐ कुम्भे स्वाहा।

विधि :—

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में चमेली की लकड़ी उँगली के माप की कील लावे और धोबी के घर में गाड़े व सौ बार मन्त्र से उस कील को अभिन्त्रित करे तो वस्त्रों का नाश होय। मगर नक्षत्र और क्रिया ठीक होनी चाहिये।

सर्व मोहिनी तिलक

कुंकुम और सिन्दूर लाकर गोरोचन के साथ मिलावे फिर आँवले के रस में मिलाकर सुन्दर और बाँका तिलक लगाकर निकले तो सब लोग वश होंय।

दूसरे प्रकार का तिलक

सहदेई के रस में तुलसी के बीज मिलाकर रविवार को तिलक करे सब देखने वाले वश में होवें।

तीसरा तिलक

मन: शिला और कपूर लाकर केले के रस में मिला कर तिलक करे तो सब लोग वस में होंगे।

सभा-मोहिनी

केसर, गोरोचन, पत्रज, मन:शिला इन्हें जल में पीस कर तिलक लगावे फिर जिससे बात करे वही वश में होय।

स्त्री मोहिनी

कच्छप का नख, किरगल लाकर मुर्गे के पंख

और सिंगरफ के साथ मिला कर रक्खे । किसी सुन्दरी के सिर पर डालते ही वह वश में होय ।

दूसरी मोहिनी

जीरा, कुटकी, आक की जड़ और मोथा—इन सब को खून के साथ पीसे और तिलक लगावे तो स्त्री देखते ही वश में होय ।

राज मोहिनी

नील कमल, गूगल और उसके बराबर अगर मिलाकर अपने सब बदन पर धूनी दे फिर सभा में जाय तो राजकुल वश में होय ।

मोहिनी तिलक

बेलपत्र को लाकर छाया में सुखाले फिर कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली बाँधे फिर जब इच्छा होय उस गोली को घिस कर तिलक करके निकले तो लोग वश में होय ।

पशु-पक्षी मोहिनी तन्त्र

कूट बच काकड़सिंगी लाय, धूप बनावे इन्हें मिलाय ।
देह वस्त्र मुख लेय लगाय, पक्षी, पशु मोहित हो जाय ॥

* अथ स्तम्भन प्रयोग *

वसां गृहीत्वा माण्डूकी कौमारी रसमिश्रिता ।
लेप मात्रशरीराणि स्तम्भन च प्रजायते ।।

घीक्वार के रस में मण्डूक की चर्बी मिलाकर लेप करे तो अग्नि से न जले ।

बुद्धि स्तम्भन

मगरा, ओंगा, सरसों (सफेद) और सहदेई, जमीकन्द बन अकबन (सफेद) लाकर दो दिन लोहे के वर्तन में धरे फिर पीस छान कर लुगदी बनाकर तिलक लगावे, तो देखने वाले की बुद्धि नष्ट हो जावे ।

शस्त्र स्तम्भन

शुभ नक्षत्र में लावे ओंगा की जड़, ताको पीसे लेप बनावे ।
तन पर लेप युद्ध में जावे, ता वह शस्त्र-घात ना खावे ।।

तलवार की धार बाँधे

मन्त्र :—

ॐ नमो धार अधर कधार बाँधो
सार बार बाँधो—तीन कटे
बार न भागे---चोर खाँड़ा की धार में
ले गया हनुमत वीर।

उपर्युक्त मन्त्र को पढ़कर रास्ते की धूल उठाकर तलवार की धार पर डाल दे तो तलवार बँध जायेगी।

* लोक वशीकरण तन्त्र *

बेलपत्र, नमक और बिजोरा लेकर बकरी के दूध में पीसें फिर तिलक लगावे तो त्रिलोक वशीभूत हो जायगा इसमें सन्देह नहीं।

श्रेष्ठ वशीकरण

घी कुमारी को जलावे, भाग के बीज मिलावे।
मस्तक पर तिलक लगावे, जगत को वश में करावे।।
इसके साथ यह मन्त्र भी पढ़े :---

मन्त्र :--

बिसमिल्लाह दानाकुल्हु अल्लाह यथाना, दिलह सख्त तुम हो दाना, हमारे बीच फलाने को करो दीवाना।

ऊपर जहाँ फलाना शब्द है---वहाँ प्रेमी का नाम कहे।

—::o::—

मोहिनी पुतली का वशीकरण मन्त्र

बाँधू इन्द्र को बाँधू तारा।
बाँधू बिन लोहे को धारा।
उठे इन्द्र न बोले गाँव।
लेख साख पूरी हो जाय।

बन ऊपर लोका कड़ सियाँ ऊपर लौं सूत।
मैं तो बन्धन बाँध्यो सासु ससुर जाया पूत॥

मन बाँधू मनयन्त् बाँध, विद्या दे साथ। चार खूँट लो फिर आय फलानी फलाने के साथ कुरु कुरु स्वाहा।
प्रयोग विधि :---

विद्वेषण, मारण, स्तम्भन और उच्चाटन में कमकेद कट का जाप किया जाता है और अग्नि ग्रह में केवल हुँ फट् और अग्नि कर्म में स्वाहा यह कह कर होम-जाप करना चाहिये।

विधि:—

इकतालीस बिनौले लाकर एक एक को एकतालीस मंत्रों के साथ अर्द्ध रात्रि के समय अग्नि में डालता जावे तो मनोरथ पूर्ण होवे। प्रथम इक्कीस दिन तक इक्कीस बिनौले पर इक्कीस बार मन्त्र पढ़ कर जलावे तो सिद्धि होवे।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का।
जिला बाँधू, शहर बाँधू, अग्नि बाँधू
बारबन बाँधू शिव-पुत्र प्रचण्ड बाँधू
राजा का इकरसा आसन छोड़ मुझे
बेसन देशी अलसी जौ को चन्दन ललाट
टीको काढ़ी सिसत्रर्न कहाऊँ, पीर गुरु की।
उक्ति मेरी कवित्त करो मंत्र इश्वरो वाच।

विधि:—

धूप, दीप, नैवेद्य लाय रख पार्वती का ध्यान धरे। और शनीचर के दिन इसका १२१ जाप करे। इसी तरह २१ शनीचर जपे सिद्धि को प्राप्त करे।

इसके बाद कुंकुम, चन्दन, गोरोचन मिलाय गाय

के दूध में पीस तिलक लगाय राणा के पास जाय तो वह वश में होवे ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ धुं धुं वीन धा धा
लवजन्त द्रवित दहा जान कहता,
वह मातंगी मयान अमा अमा,
आंक्ष क्ष ।

श्वेत रेशमी वस्त्र को धारे। फिर एक अच्छे मोती की माला से जप करे,पुनः श्वेत दुर्गा और कामिनी पुष्प की अग्नि—आहुति करे तो राजा वश में होवे ।

वेश्या वशीकरण मन्त्र

ओ कनक कानी आठा बाठ शूल राजा पांचाल पांचाल ओं यं यं यं यं ।

विधि—

बेल के पेड़ के तले काले रङ्ग के हरिण के चर्म पर बैठकर श्वेत काँसनी के पुष्प और बेल पत्र के मन्त्र पढ़ अग्नि में आहुति डाल वेश्या का ध्यान करे तो वश में होय ।

स्त्री वशीकरण

चिता की भस्म, बच कूट, केशर और गोरोचन यह सब बराबर लावे चूर्ण बनावे—जिस नारी के सिर पर डारे सो नारी तुझ पर अपना सब कुछ वारे।

द्वितीय स्त्री वशीकरण

काला लवण भौंरे का पंख लावे तगर मूल लावे श्वेत काग कौड़ी लावे। तीनों का चूर्ण बनावे स्त्री के सिर पर जा डारे। स्त्री अपना तन मन वारे।

तृतीय स्त्री वशीकरण

सफेद आक की जड़, हरताल, उल्लू का रक्त तथा अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर गोली बनाये। पुरुष नक्षत्र वाले रविवार के दिन इसका तिलक लगाकर स्त्री के पास जाने से स्त्री वश में हो जाती है।

स्त्री वशीकरण लेप

सेंधा नमक, कबूतर की बीट व शहद पीस कर लेप बनावे और इसे फिर रमण काल में अपनी इन्द्रिय पर लगावे।

रमण करे यदि नारी से तो आकर्षण में होवे बृद्धि।
नारी दासी होवे रति में मिले पुरुष को पूरी सिद्धि॥

द्वितीय लेप

गोरोचन, कुरुप, केशर चंदन लेकर धतूरा का रस लाय
पीसे भली भाँति इन सबको रस में लैले लेप बनाय
रमण समय इन्द्रिय पर लेप रमण करे तो मस्ती छाय
नारी वशी भूत हो जावे, दिन दिन फिर आनन्द बढ़ाय

नवीन वशीकरण

सरसों, देवदारु को एकत्र करके पीस कर गोली बनावे फिर मुँह में रखकर जिससे बात करे वह वश में हो जावे।

वशीकरण पुतली का भेद

शनिवार के दिन एक पुतली बनावे। फिर उसी पुतली के उदर में प्यारी का नाम लिखे। फिर १०८ बार मन्त्र पढ़कर उसको दिखावे और पुतली को छाती से लगाये रक्खे तो मन चाही स्त्री बेचैन होकर पहुँचे।

मन्त्र निम्नलिखित है:—

ओ३म् छुं छुं छां छ।

स्वामी वशीकरण

गाँधली के फल की गुठली लेकर माला बनावे फिर सूर्य के पर्व के अवसर पर नदी के किनारे अनारस के पेड़

के नीचे सोमवती अमावस्या के दिन कुशासन पर बैठकर जप करे तो स्वामी वश में हो।

पति वशीकरण

※ मंत्र ※

ॐ ह्रीं धोक्री क्रो, ठ ठ

पड़ँवा परेवा (फाख्ता) पक्षी वश में करके इस मंत्र को पढ़कर उसका माँस खावे तो पति वश होय।

द्वितीय वशीकरण

उल्लू का माँस तथा बकरे का माँस दोनों को जल में मिलावे तो पति वश में रहे।

वशीकरण बुकनी

चिता की राख, कूट, वच, मगर की चर्बी और कुसुम को पीस कर स्त्री के सिर पर छोड़े तो वह जन्म भर दासी रहे।

※ इति द्वितीयो अध्याय: ※

तृतीय अध्याय

* यन्त्र वर्णनम् *

शत्रु का शरीर फूलने का यन्त्र

६७	७४	२	७
४१	६३	५३	७३
७६	२१	३२	५
५	५	२२	७५

इस यन्त्र को कागज़ पर लाल स्याही से लिखकर उस कागज को आक (मदार) के पेड़ में धागे से बाँध आवे। ग्यारह दिन के बाद उस कागज को खोल लावे तथा उसकी पीठ पर उसका नाम लिख कर उसी के घर फेक आवे तो उसका पेट फूल जावे।

बाजार नष्ट करने का यन्त्र
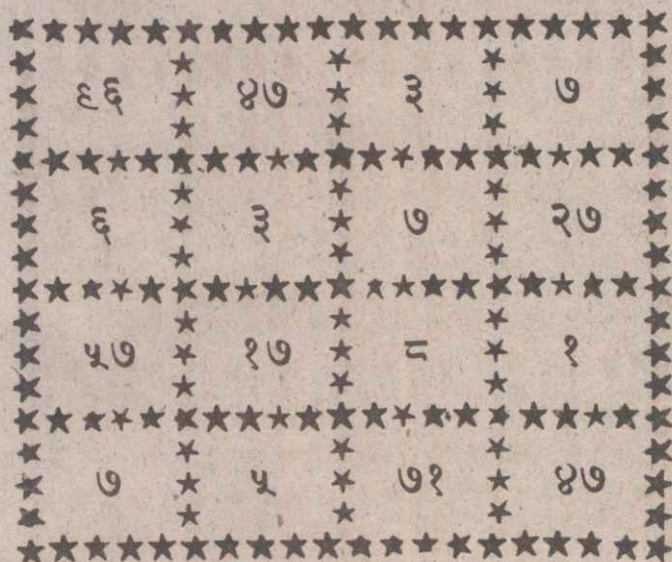
विधि :—

(१) इस मन्त्र को अश्लेषा नक्षत्र में दुश्मन की दुकान पर बैठकर लिखे तो दुकान नष्ट होय।

(२) इस यन्त्र को १०८ पीपल के पत्तों पर हथिनी के दूध से लिख कर उन पत्तों को महीन-महीन पीस कर एक घड़ा जल में मिलावे और बाजार में छिड़क देवे तो बाजार नष्ट हो जावे।

ढोल फूटने का यन्त्र

७	४७	४	७
६	६	१७	३७
६७	६८	२६	४
५	८	२	५७
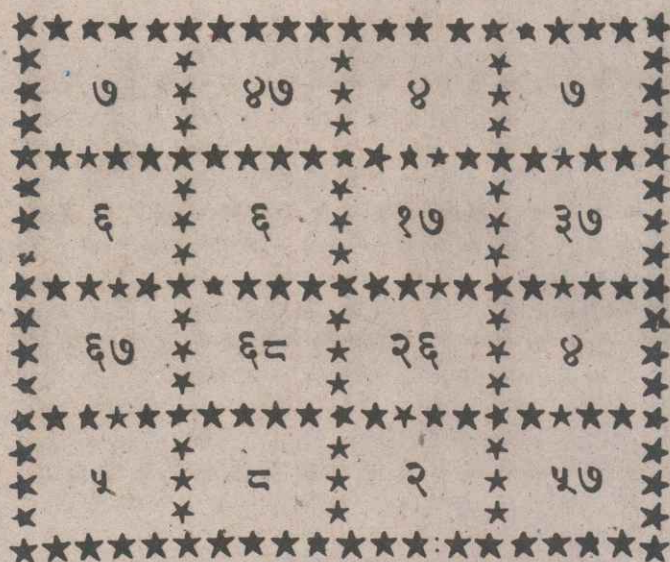
विधि :—

इस यंत्र को चमड़े पर किसी पोखरे की मिट्टी से लिख कर बजती हुई ढोल को दिखाने से ढोल फूट जायेगी ।

परदेशी को बुलाने का यन्त्र

३८	६५	१	२१
०	६३	६२	१६
४५	५	८१	६१
८	६९	२८	५८
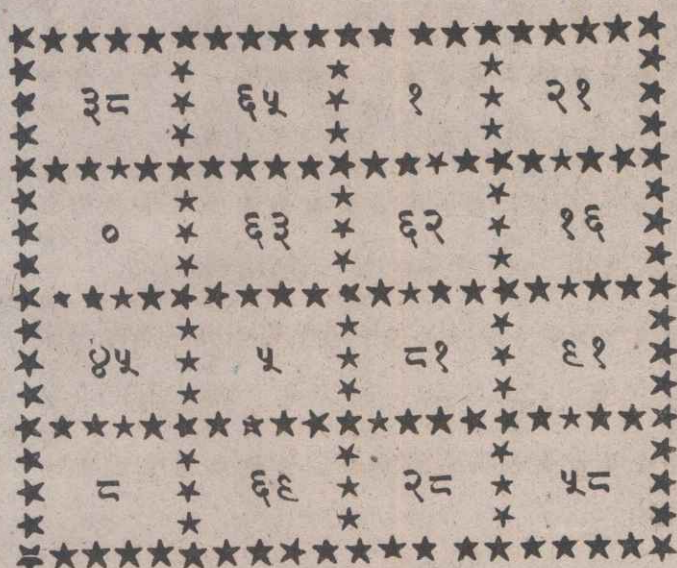
विधि :—

(१) इसी यंत्र को मार्ग की धूल से कागज पर लिखे और कोड़ों से उस पर मारे तो आदमी आ जावे ।

(२) इसी यंत्र को तालाब की मिट्टी लेकर बड़ के पत्ते पर लिखे और परदेशी का नाम भी लिखे व आने वाले की दिशा में गाड़ दे तो फौरन चला आवे ।

मस्त होने का यन्त्र

९६	४७	४	७
६	६	१७	७३
६७	६८	८	९
५	८	६	५७
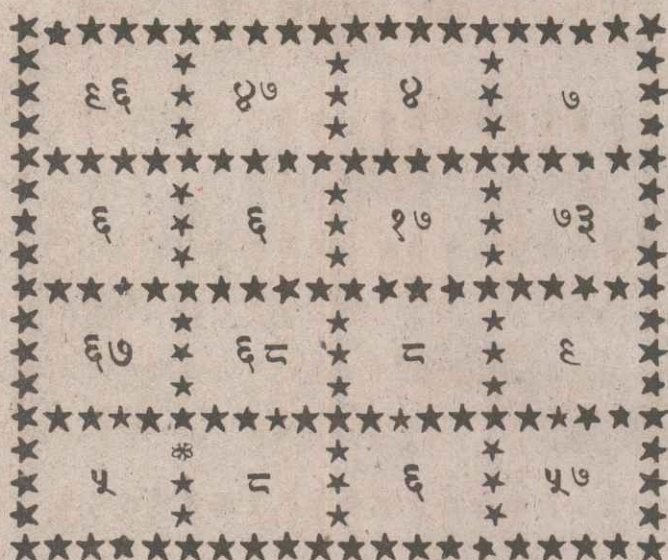
विधि :—

(१) इस यन्त्र को स्वाती नक्षत्र में भोजपत्र पर शूकरी (सुअरी) के दूध से लिख कर पुरुष कमर में बाँध कर स्त्रीसे भोग-विलास करे तो मस्ती अधिक आवे।

(२) अगर कोयले से किसी ठीकरे पर लिख कर दूध के साथ दही में जमा दे, फिर सुबह निकाल कर पीस कर आटे में मिला कर देवे। जो उस आटे की रोटी खावेगा मस्त हो जावेगा।

स्त्री वशीकरण यन्त्र
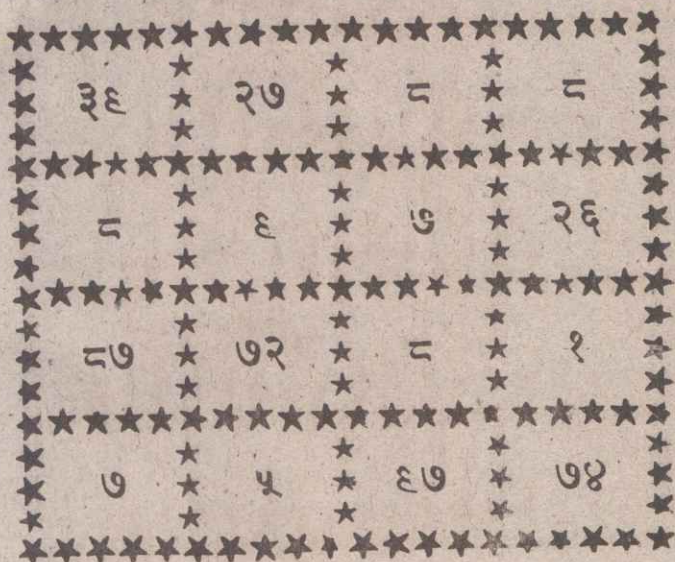
विधि :—

(१) इस यन्त्र को चन्दन अथवा स्त्री की योनि-रज से कागज पर या हथेली पर लिख कर जिस स्त्री को दिखावे तो वह अवश्य वशीभूत हो जावे ।

(२) इस यन्त्र को चन्दन से लाल रङ्ग के कागज पर लिख कर तथा इनमें भिगो कर रक्खे । जिस औरत को वश में करना हो उसकी साड़ी में पिन के साथ लगा दे तो वह औरत वश में हो जावे ।

वचन सिद्धि यन्त्र

६८	३७	८	८
८	६	२७	२६
८७	२७	१	८
७	५	७७	६४
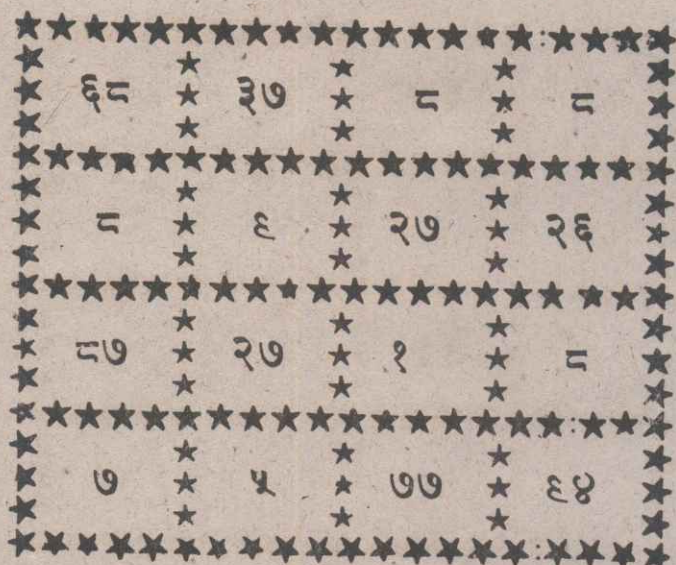
विधि :—

(१) इस यन्त्र को कुलंजन के रस से भोजपत्र पर लिखे सोने के मादुली (ताबीज) में भर कर गले में बाँधे तो वाक-सिद्धि प्राप्त हो।

(२) इस यन्त्र को दूध से लाल रङ्ग के कपड़े पर लिख कर तथा उसका ताबीज बनाकर बाँधे तो अवश्य वचन सिद्धि हो जाये।

बुद्धि उत्पन्न होने का यन्त्र
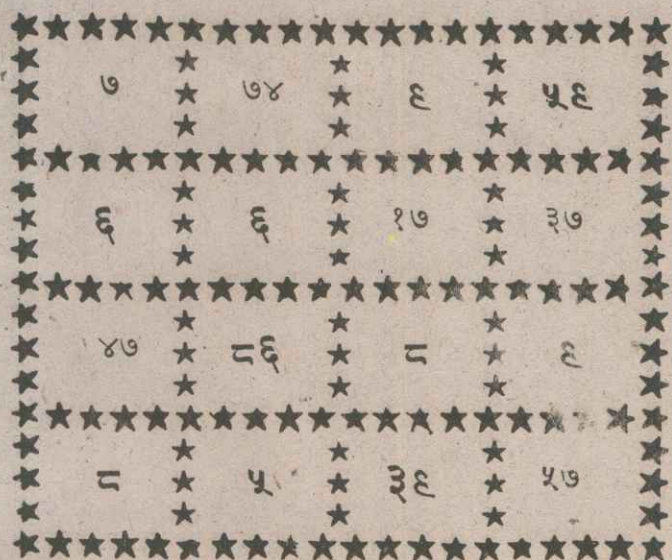
विधि :—

(१) इस यन्त्र को शुक्लपक्ष की चतुर्दशी की रात्रि में अपनी जीभ पर लिखे तो बुद्धि उत्पन्न हो।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर गुलाब की कलम से लिखे और उसका ताबीज बनाकर दायें हाथ में बाँधे तो बुद्धि बढ़े।

मसान जगाने का यन्त्र

९०	७४	९	९
६	६	७१	७३
६७	८६	८	९
५	८	९३	७५
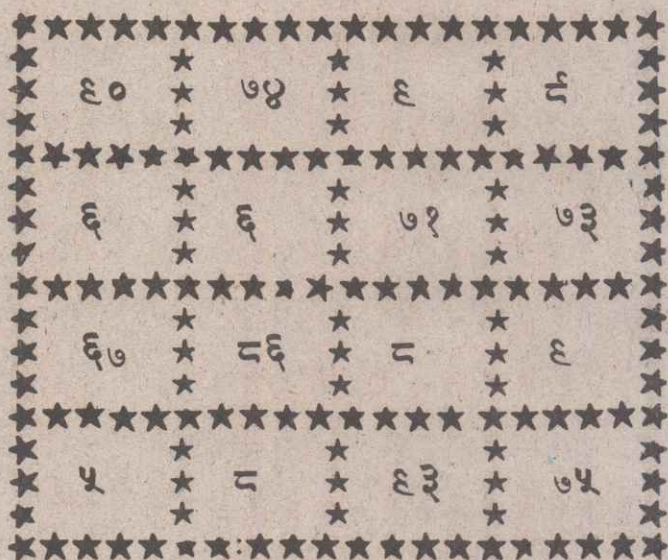
विधि :—

(१) इस यन्त्र को मदिरा से मुर्दे की खोपड़ी पर लिखे तो आवाज हो और मसान जागे ।

(२) इस यन्त्रको कागज पर स्मशान की राख से लिखे और उसे मुर्दे के नीचे रख कर ऊपर से मदिरा की धार लगावे तो मसान जाग जावे ।

डाकिनी यन्त्र

८०	६४	२१	१
३६	१३	६४	५३
६६	६१	१२	११
३४	२५	५६	६५

विधि :—
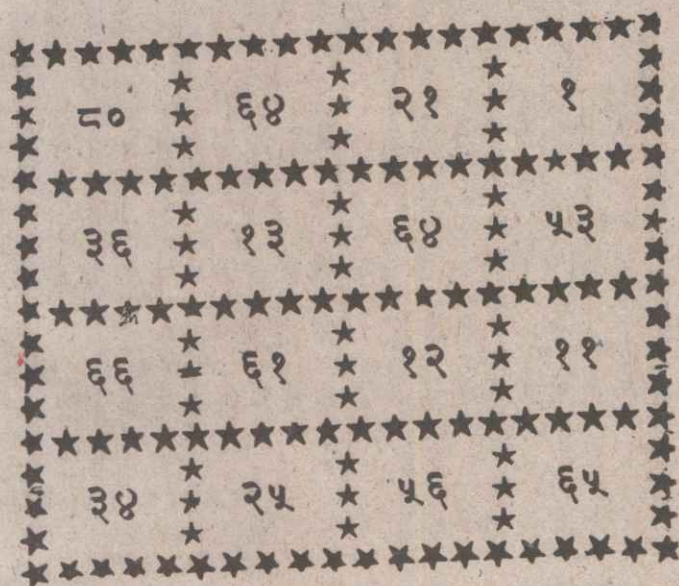
(१) इस यन्त्र को खैर की लकड़ी के कोयले से चर्म पर लिखे तो समस्त डाकिनियाँ लिखने वाले के पास आ जावें।

(२) इसी यन्त्र को नीबू के रस से कोरे कागज पर लिख कर मशान के स्थान में पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ देवे तो प्रयोग कर्त्ता के पास डाकिनियाँ आवें।

विरोध होने का यन्त्र

८५	६५	९	२१
६	३०	६२	१३
६४	५	८८	११
५	८३	७४	८५
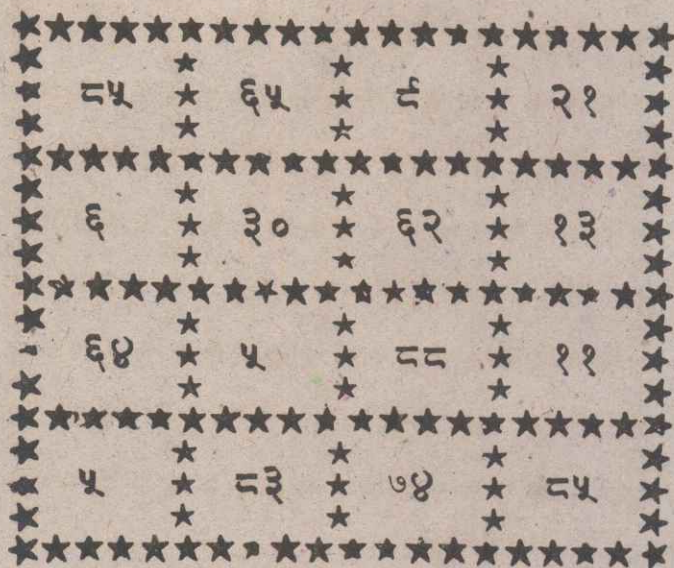
विधि :—

इस यन्त्र को ढाक के पत्ते पर चावल के माँड़ से लिखे। ढाक के पत्ते को २१ दिन तक स्मशान में गाड़ कर दबा दे। फिर जिस घर में विरोध कराना हो उस घर में फैंक कर पश्चिम दिशा में मूत्र-त्याग करे तो विरोध हो जावेगा।

भूत-प्रेत नाशक यन्त्र
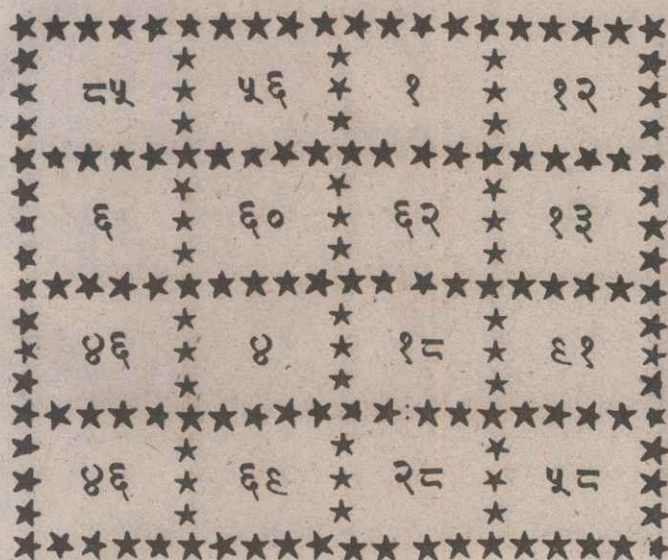
विधि :—

(१) इस यन्त्र को असगन्ध से भोजपत्र पर लिखे। ग्रर में लिखे तो भूतप्रेत का भय जाता रहे।

(२) इसी यन्त्र को रौप्य [चाँदी] की तश्तरी पर स्मशान की मिट्टी लाकर उससे लिखे फिर भूत के सताये हुए रोगी के सिर पर दो मिनट रख कर तालाब में फेंक आवे तो भूत-प्रेतादि भाग जावें।

जुआ जीतने का यन्त्र

८	६४	८	१६
४६	१४	६४	५४
६४	५१	१२	१२
४४	१५	६५	६५
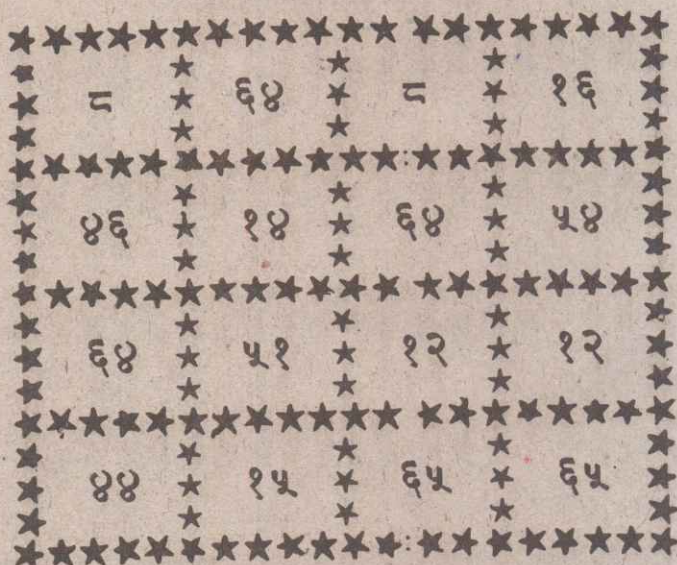
विधि :—

(१) इस यन्त्र को गोरोचन, केशर और असगंध से भोज पत्र पर स्वाती नक्षत्र में लिखें और धूप दीप देकर पूजा करें फिर दाहिने हाथ में बाँधे तों जुआ जीते।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें फिर विरोधी पक्ष के पैर के नीचे रख दे और कागज पर लिख कर अपने पैर के नीचे रख लें तो अवश्य जीते।

कुत्ता भूँकने का यन्त्र

विधि :—
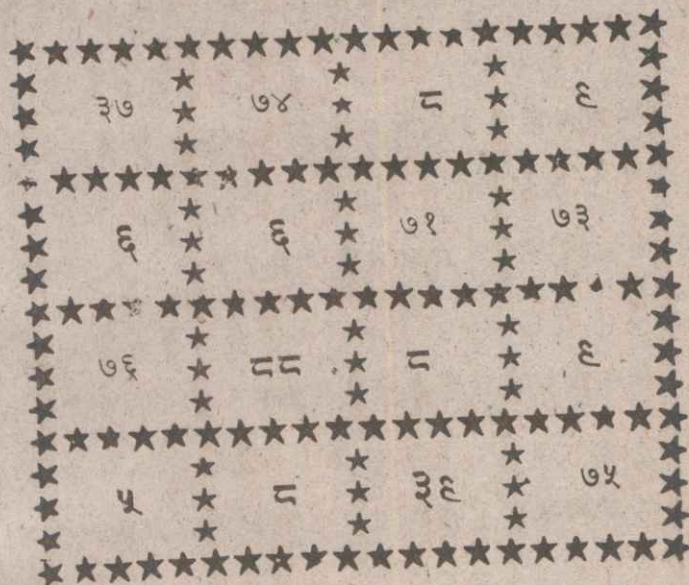
(१) इस यन्त्र को शनिवार के दिन काली स्याही से कुत्ते के कान पर लिख दे तो कुत्ता भूँकता फिरे।

[२] इस यन्त्र को बेल के पत्ते पर पजावे [ईंट के भट्ठे] की मिट्टी से लिख कर जिस कुत्ते को बेल का पत्ता खिला दे तो वह कुत्ता भूँकता फिरे। [पत्ते को पीस कर दूध में मिलाकर कुत्ते को पिलावे]

मोहनी यन्त्र
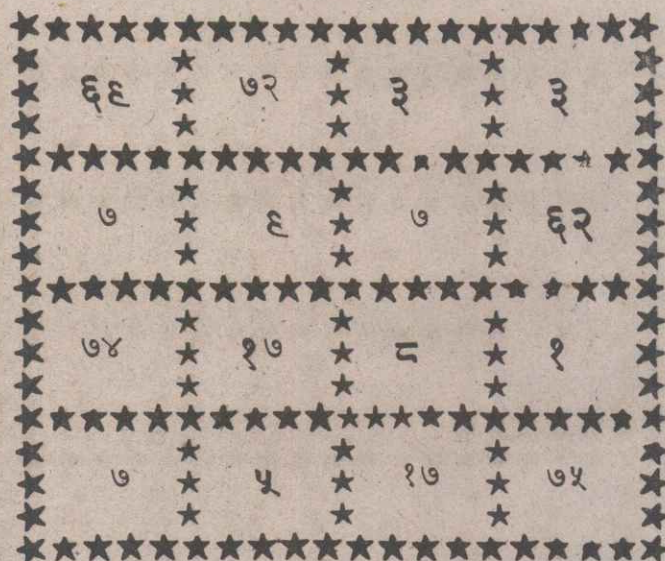
विधि :—

(१) इस यन्त्र को नारी के दूध से भोजपत्र पर पुष्य नक्षत्र में लिख कर बायें हाथ पर बाँधे तो नारी दासी हो जावे।

[२] इस यन्त्र को चंदन से लाल रंग के कागज पर लिख कर तथा इत्र में भिगो कर जिस नारी को वश में करना हो उसकी साड़ी में लगा दे तो वह वश में हो जावे।

कलह होने का यन्त्र

८०	१२	८	९
४६	६४	११	७४
६४	१२	८	६५
४४	५५	५५	७५
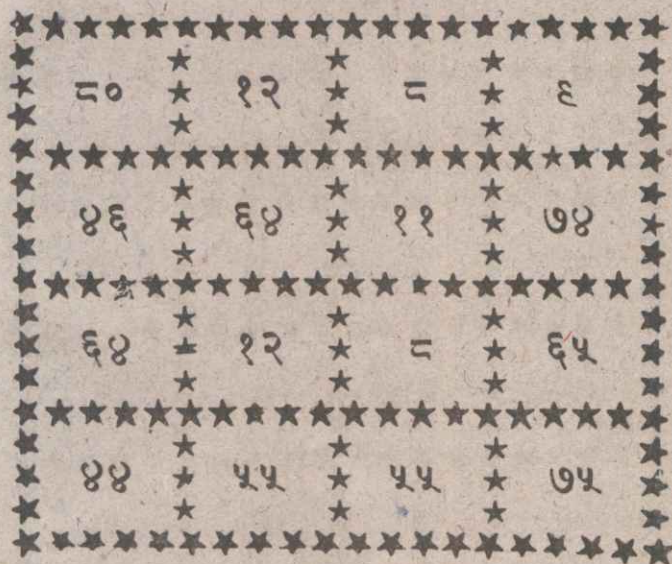
विधि :—

(१) इस यन्त्र को मंगलवार के दिन कुम्हार के आँवे से निकले हुये ठीकरे पर उल्लू के पंख की कलम से अपने खून से लिखकर विरोधी के घर में फेंक दे तो अवश्य कलह हो।

(२) इस यन्त्र को आक पत्र पर कपिला गाय के गोबर से लिखे और दुश्मन के छत पर फेंक दे तो अवश्य कलह हो।

व्यापार वृद्धि यन्त्र

६०	७२	८	८
८	६	७	६०
७७	२७	८	१
७	५	७६	७४
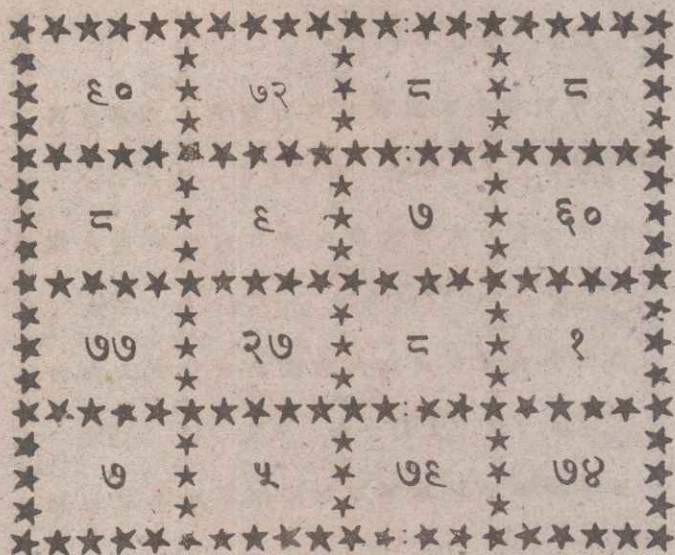
विधि :—

(१) इस यन्त्र को दीवाली के दिन दूकान पर लाल चंदन से लिख दे तो व्यापार में अधिक लाभ हो।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर असगन्ध से शुभ दिन में लिखकर दूकान पर अपने गल्ले में डाल दे तो व्यापार में अधिक लाभ हो।

नामर्द बनाने का यन्त्र

९३	२६	६१	१७
३६	४३	३७	४५
६३	११	१२	९१
२४	२५	५६	७५
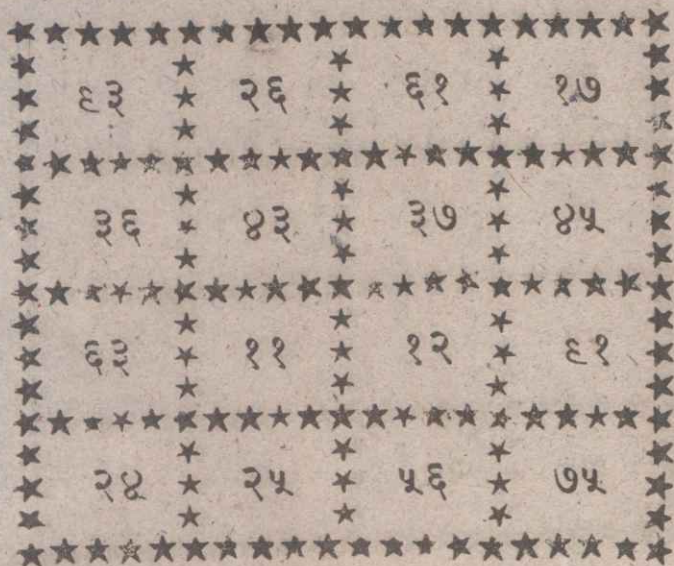
विधि :—

(१(इस यन्त्र को रेशम के कपड़े पर गौरोचन से जिस आदमी का नाम लिखकर उसके पैर के नीचे रख दे तो वह पुरुष नामर्द हो जाये।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर तालाब की मिट्टी लाकर लिखें और अष्टगंध आदि देकर जिस मनुष्य को दिखावे तो वह नामर्द हो जाये।

अधिक भोजन खाने का यंत्र

३८	६६	१	१७
०	१३	६२	५३
४५	४१	८१	१७
८	२५	५६	७५
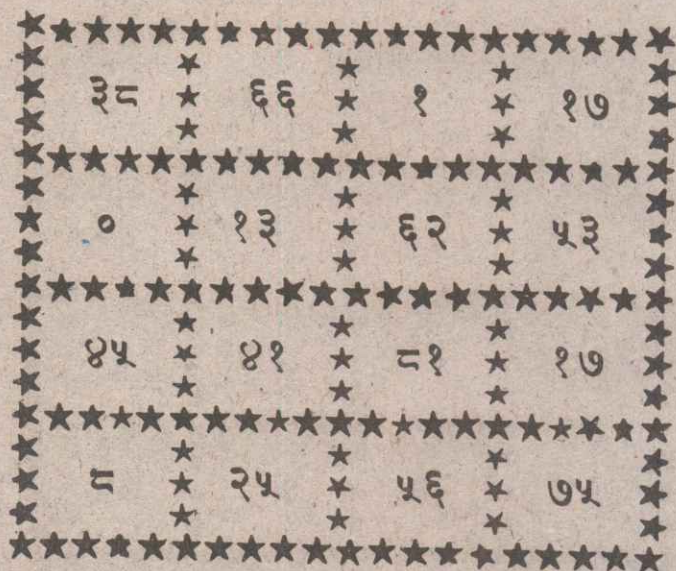
विधि :—

(१) इस यन्त्र को करकेटी के रक्त से भोजपत्र पर लिखें और चूल्हे के पीछे गाड़ दें तो सब खा जावें।

(२) इस यन्त्र को चन्दन से भोजपत्र प लिखे और भोजन करते समय अपनी थाली के नीचे रखे तो अधिक भोजन करे।

चाक पर बासन सटने का यंत्र

विधि :—
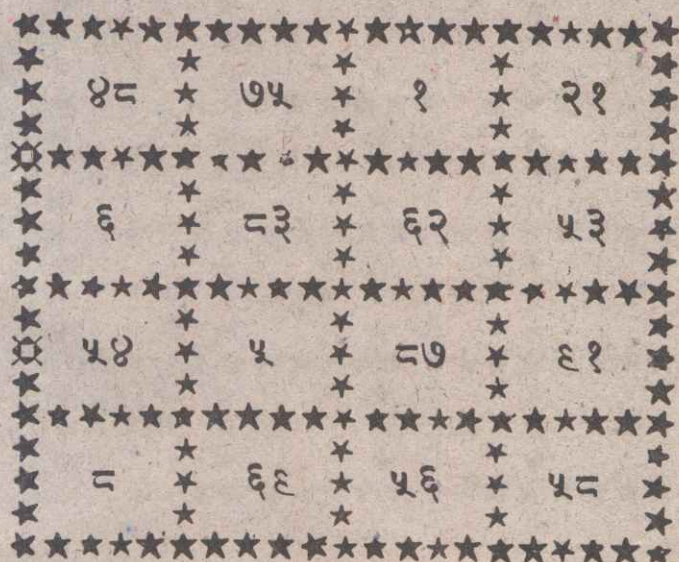
(१) इस यन्त्र को खैर की लकड़ी के कोयले से कुम्हार के चाक पर लिख दें तो बासन चाक ही पर सट जाय।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर मौलश्री के रस स लिखे और कुम्हार के चाक के नीचे गाड़ आवे तो उसका बासन एक भी साबूत न उतरे, अर्थात् फूट जावे।

रति कार्य में पराक्रमी होने का यंत्र

९७	७५	१	२६
१	४७	६२	१६
५४	५	८७	९१
८	८९	६८	५८
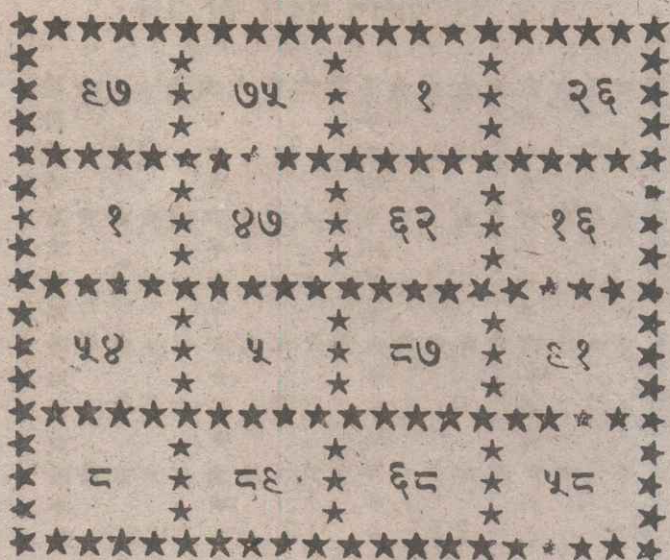
विधि :—

[१) इस यन्त्र को स्त्री की योनि से छुटे हुये पानी से लिखकर विषय करे और यन्त्र को देखता जाये तो अधिक पराक्रमी हो।

(२) इस यन्त्र को जच्चाखाने की मिट्टी लाकर लिखे तथा रात को खाट के नीचे भोग करते समय रक्खे तो पराक्रमी बने।

पुरुष वशीकरण यन्त्र
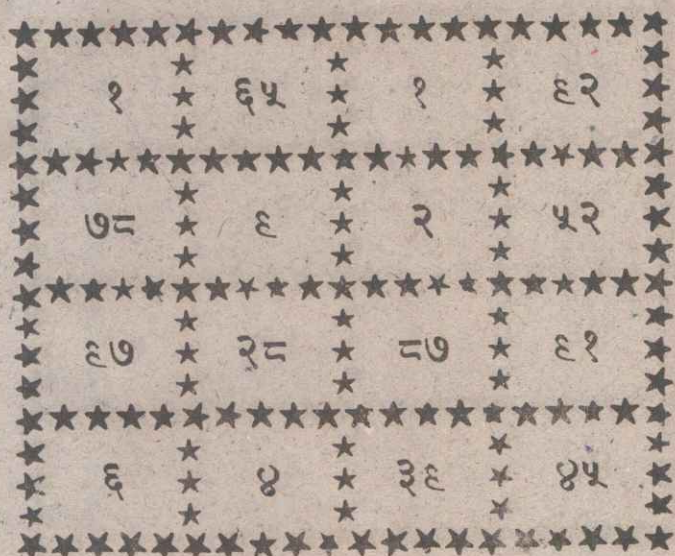
विधि :—

(१) इस यन्त्र को पान के रस से लिखें और जिस पुरुष की बाँह पर बांध दे तो वह पुरुष स्त्री के वश में हो जावे।

(२) इस यन्त्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखे और जो स्त्री अपनी साड़ी में बाँधे तो उसका पुरुष उसके वश में हो जाय यह मेरा निश्चय है।

काम नाशक यन्त्र

६३	२६	१६	१८
३६	४३	३४	४६
४६	११	१२	६१
४४	५२	६५	७५
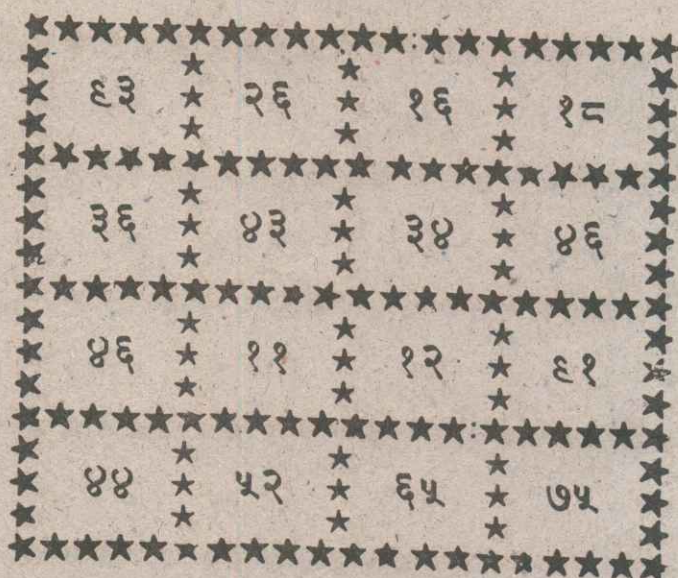
विधि :—

(१) इस यन्त्र को अपने रक्त से पुष्य नक्षत्र में लिखें और अपने पास रख लें तो काम वासना न सतावे।

(२) इस यंत्र को सफेद कागज पर औरत के रक्त से शुभ घड़ी में लिखे और स्त्री के पास जाते समय अपने पास रक्खें तो काम (विषय वासना) न सतावे।

शत्रु मारण यन्त्र
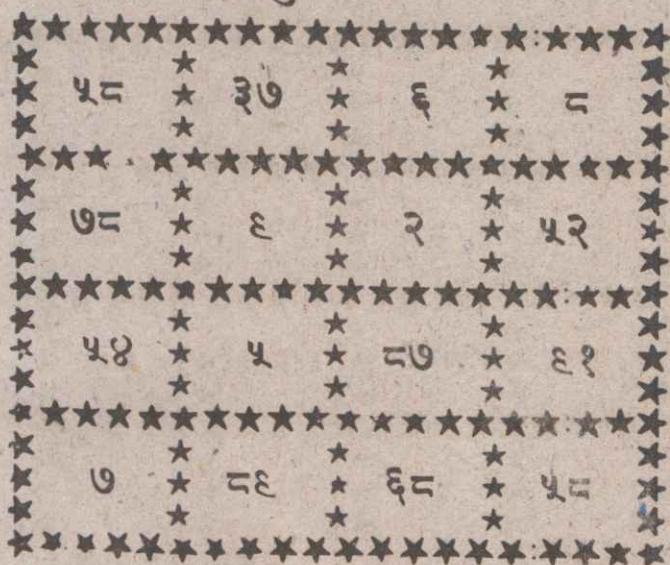
विधि:—

(१) इस यन्त्र को हाथी के दाँत से सफेद कागज पर लिखे और मरघट में गाड़ दे तो शत्रु की मृत्यु हो।

(२) इस यन्त्र को पेड़ के नीचे की जड़ लाकर सफेद कागज पर लिखे और उसके रहने के स्थान पर गाड़ दे तो अवश्य दुश्मन मर जाय।

यदि जीवित बच जावे तो अमल करने की रीति की कमी समझो।

शत्रु मुख भंजन यन्त्र

विधि:—
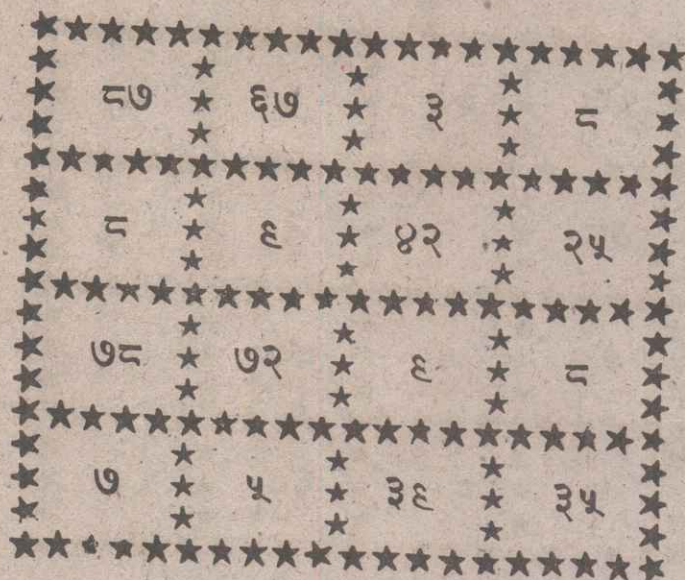
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लोहे की कलम से लिख कर शत्रु का नाम लिखे और उस पर जूता मारे जावे तो शत्रु का मुख भंजन हो जावे।

(२) इस यन्त्र को गधे की लीद से सफेद कागज पर लिखे और उसे भुजा पर बांधे तो शत्रु का मुख अवश्य भंजन हो जाय।

शत्रु भय नाशक यन्त्र

६	४४	६	५१
७४	४	४	५२
३	२८	८७	६१
६	५	३६	४५

विधि :—
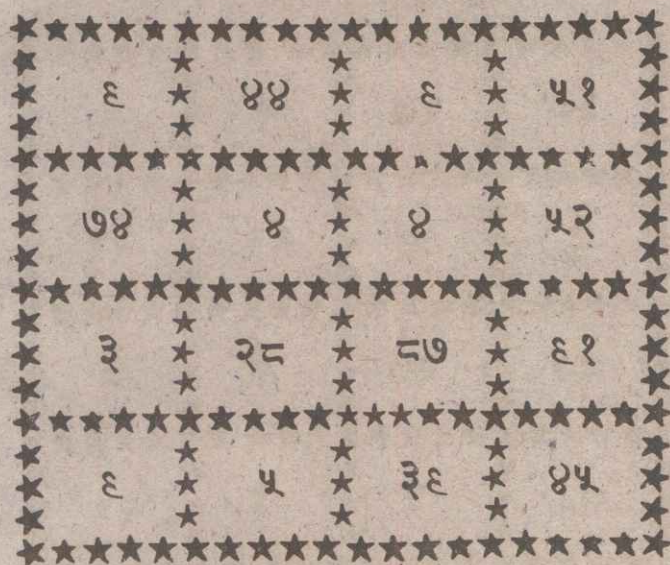
(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर धतूरे के रस से लिखे और गले में बाँधे तो शत्रु का भय न रहे।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर आक के दूध से लिखे और सिद्धि के नियमानुसार सिद्ध करके अपने पास रक्खे तो कभी शत्रु से भय न रहेगा।

कष्ट छूटने का यन्त्र
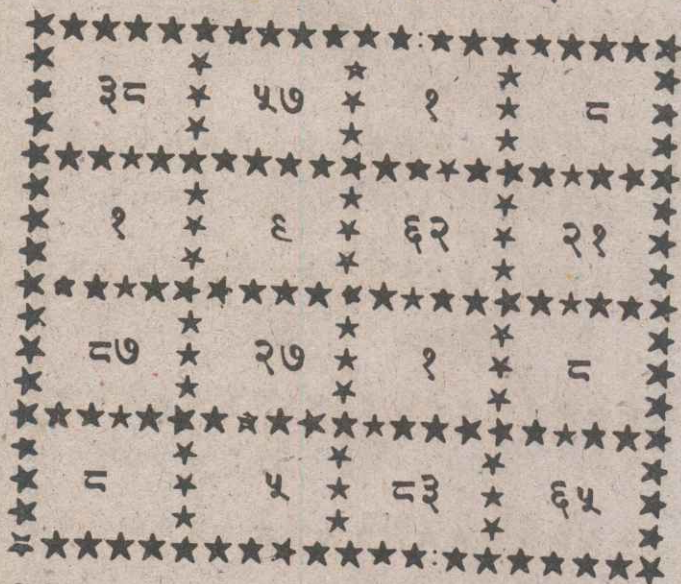
विधि :—

(१) इस यन्त्र को काँसा के पात्र पर गुलाब के रस से लिखें और उसको धो दे, उस पानी को गर्भवती स्त्री को पिलावें तो उसका कष्ट चला जावे।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर गुलाब की कलम भैंस के दूध से लिखे और गुग्गुल की धूप देकर जिस स्त्री को दिखावे तो उसका कष्ट दूर हो जावे।

राज-मान यन्त्र

३६	५८	१	३८
१	६	६२	६१
८७	४५	१	८
८	५	८३	८५

विधि:—
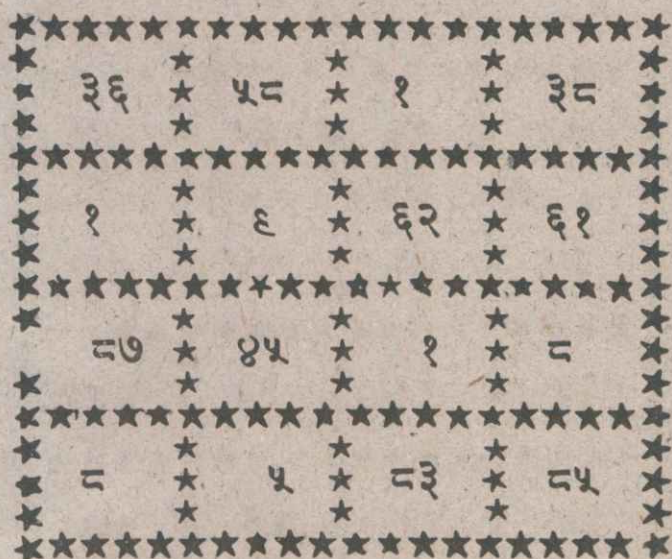
(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर चमेली की कलम से लिख कर अपनी भुजा पर बाँधे तो राजा से प्रतिष्ठा प्राप्त हो।

(२) इसी यन्त्र को भोजपत्र पर गुलाब के रस से लिखे और अपनी भुजा पर बाँधे तो राजदबार में जाने से मान और आदर हो।

कान दर्द नाशक यन्त्र

विधि:—
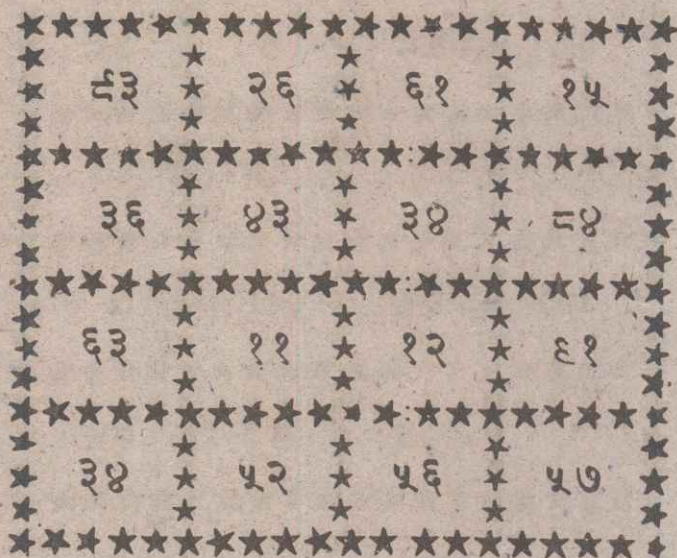
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर अनार के रस से लिखे और लिखकर कान में बांधे तो कान का दर्द जा ा रहे।

(२) इस यन्त्र को तुलसी के पत्ते पर लिखे और इसका रस निकाल कर तथा गरम करके कान में डाले तो कान का दर्द जाता रहे।

शत्रु वशीकरण यन्त्र

७	४६	९	९६
६	४	४	१७
६७	६८	८	९
८	६	९३	७५
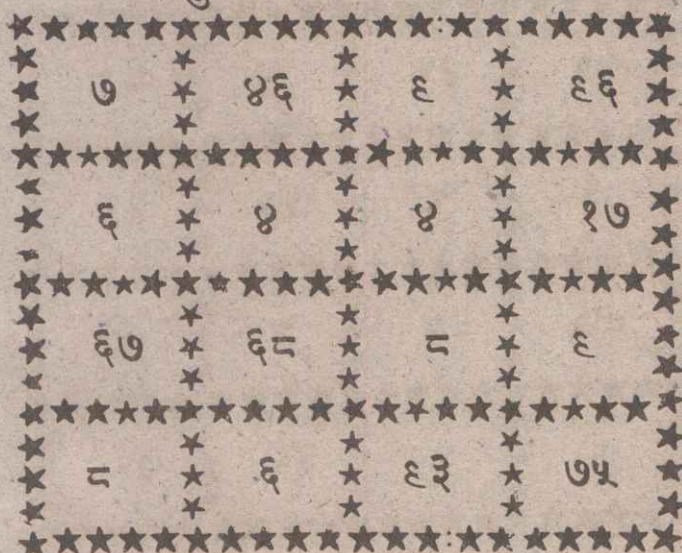
विधि:—

(१) इस यन्त्र को नगाड़े पर लिख दें और नगाड़ा बजावे तो शत्रु वश में हो जावे।

(२) इसी यन्त्र को लहू से कागज पर लिख कर शत्रु के घर के पीछे गाड़ दे और सात रोज तक उसको पानी देता रहे तो शत्रु वशीभूत हो जावे।

फिर भी यदि किसी कारण से वश में न होवे तो उस कागज को लाकर आग में जला दे।

शूल होने का यन्त्र

७	४५	९	८१
३	५	७७	१६
८७	६८	८	२
९	५	३९	७५
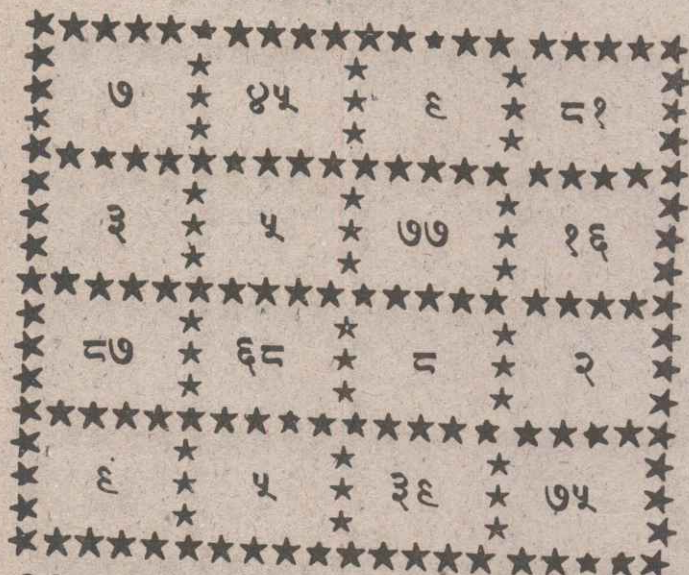
विधि:—

(१) इस यन्त्र को स्याही से कनेर के पत्ते पर लिखकर तथा दुश्मन का नाम लेकर उसे कील से छेद दे तो उसको शूल उठने लगेगा।

(२) ऊपर के यन्त्र को सफेद कपड़े पर साही का काँटा लाकर हरी रोशनाई से लिखकर दुश्मन को दिखावे और जमीन में गाड़ दे तथा उस जगह तीन दिन तक धूप वगैरह देता जावे तो दुश्मन को शूल उठे।

अर्द्ध कपारी का यन्त्र

३८	८५	१	३२
५	६	६२	५२
५५	८४	१	११
८	८६	८३	८५

विधि :—
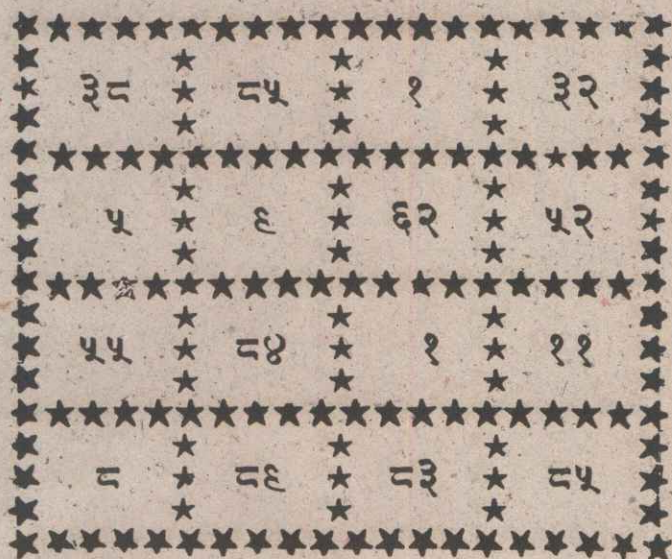
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर स्याही से रविवार के दिन लिखे और सुअर के बैठने की जगह पर गाड़ दे और वहाँ की मिट्टी लगावे तो अर्द्ध कपारी दूर हो।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर सुरमे से शुभ नक्षत्र में लिखे और किसी पेड़ के नीचे गाड़ दे तथा कुछ दिन के बाद उसको उखाड़ कर जला दे तो अर्द्ध कपारी दूर हो।

शत्रु का मुँह सुजाने का यन्त्र

१६	१५	३६	१६
२६	४३	३४	६३
७४	११	२१	६४
८	५२	५६	५४

विधि :—
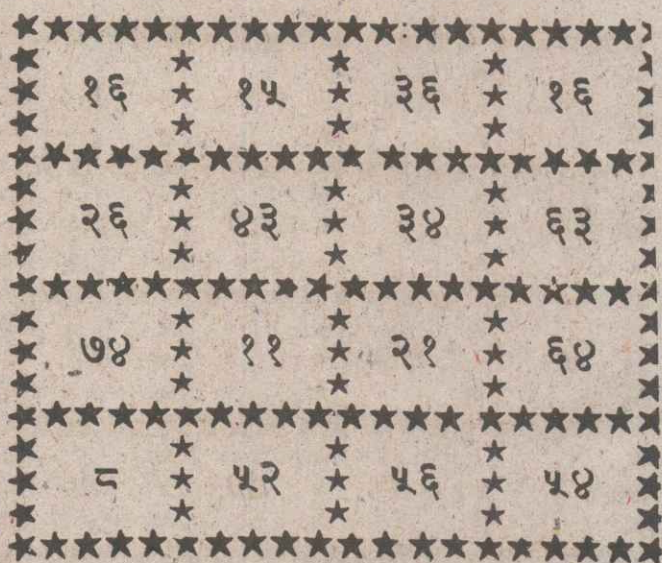
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर रविवार के दिन शत्रु का नाम सरसों के तेल से लिखे और जमीन में गाड़ दे तो शत्रु के मुख पर सूजन आ जावे।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लोहे की कलम से बकरी के दूध से शत्रु का नाम लिखकर उस पर जूता मारे तो शत्रु का मुख फूल जावेगा।

नारी कष्ट निवारण यन्त्र
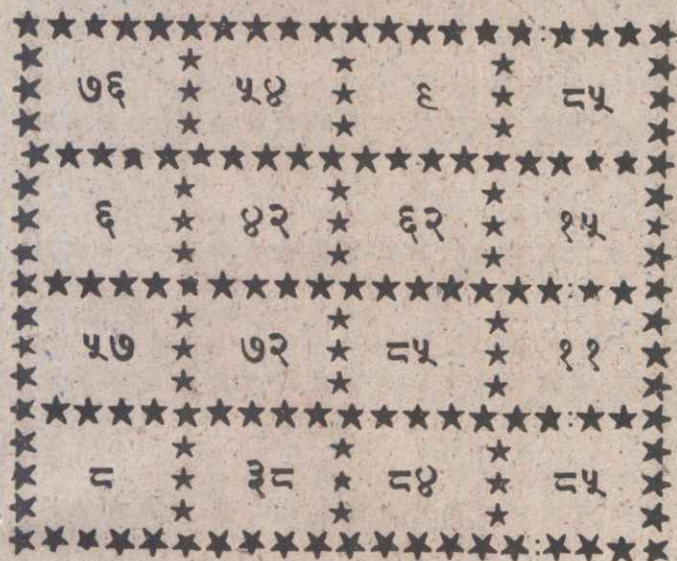
विधिः—

(१) इस यन्त्र को हाथी के हाड़ पर लाल स्याही से लिखे और स्त्री की कमर में बाँध दे तो उसे किसी भी तरह का कष्ट न होगा।

(२) इस यंत्र को गदहे की हड्डी पर हरी स्याही से लिख कर उसे स्त्री के निवास स्थान पर बाँध दे तो उसका कष्ट दूर होगा।

गर्भ स्तंभन यन्त्र

६७	५८	१	५४
५	२३	६२	५१
६५	८	८५	११
८	८३	४८	८५

विधि :—
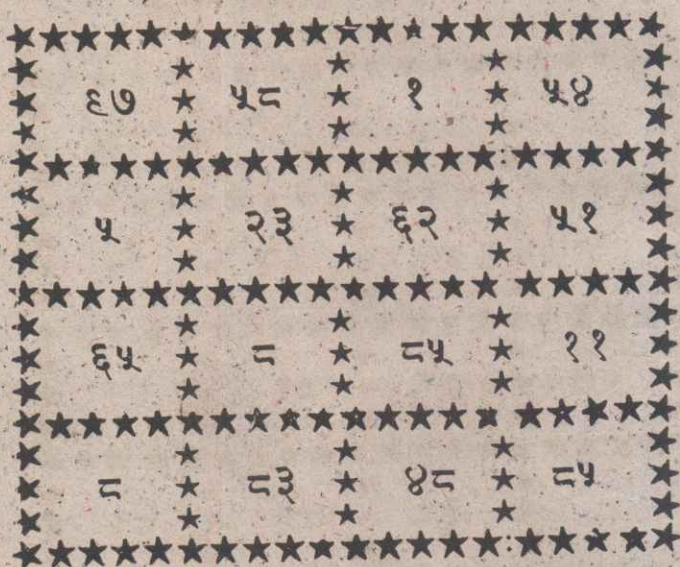
(१) इस यन्त्र को शनिवार के दिन भोजपत्र पर लाल स्याही से लिख कर स्त्री के बायें हाथ में बाँधने से उसे अवश्य ही गर्भ रह जायेगा।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर रोली से रविवार के दिन लिखे तथा उसे ताबीज बनाकर स्त्री गले में बाँधे तो उसे निश्चय गर्भ रहेगा।

आधा शीशी का यन्त्र

५६	८५	१	४५
५	२३	६२	५१
६५	८	८५	११
८	८३	७४	८५
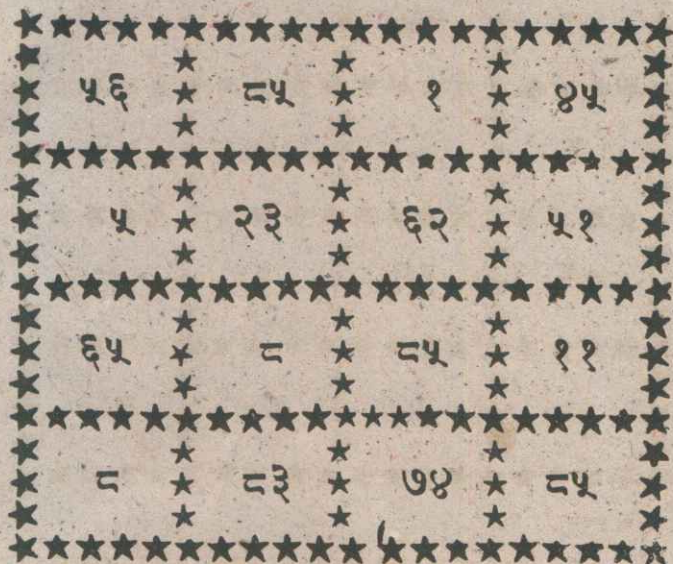
विधि :—

(१) इस यन्त्र को सोमवार के दिन सफेद कागज पर लिखे और माथे पर बाँधे तो आधा शीशी जाय।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर सफेद चन्दन से लिख कर गुग्गुल आदि की धूप देकर भुजा में बाँधे तो आधा शीशी जाय।

सर्प विष नाशक यन्त्र

७७	५५	०	९
६	६	४५	५३
७६	३६	९	८
७	५	७४	५४
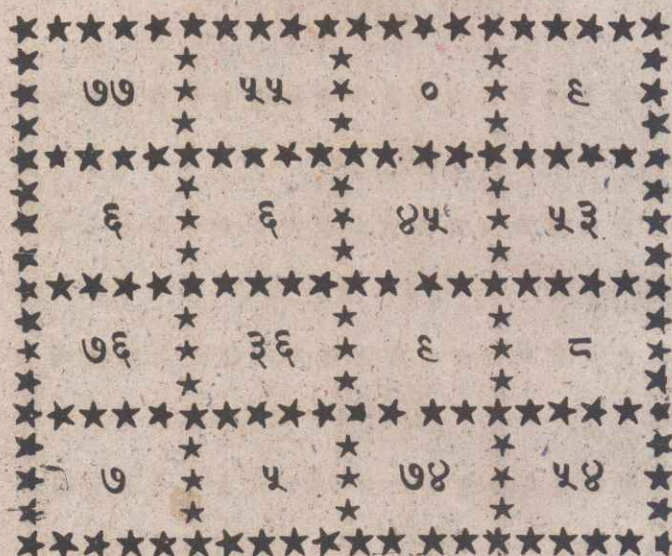
विधि:—

(१) इस यन्त्र को लाल चन्दन से हरे कागज पर लिखे और गंगाजल में धोकर जिसे साँप ने काटा हो उसे सिद्ध करके पिलादे तो विष दूर हो जाय, लोग ऐसा विश्वास करते हैं।

(२) इस यन्त्र को नीबू के रस से पान के पत्ते पर लिखे तथा सिद्ध करके हल्दी की घोल में मिलाकर पिलाने से फौरन विष दूर हो जायेगा, यह ऋषियों का कथन है।

राजा वशीकरण यन्त्र

३९	३३	५२	४६
१४	३६	५३	६१
४४	११	३२	७५
५४	४५	२२	४६

विधि :—
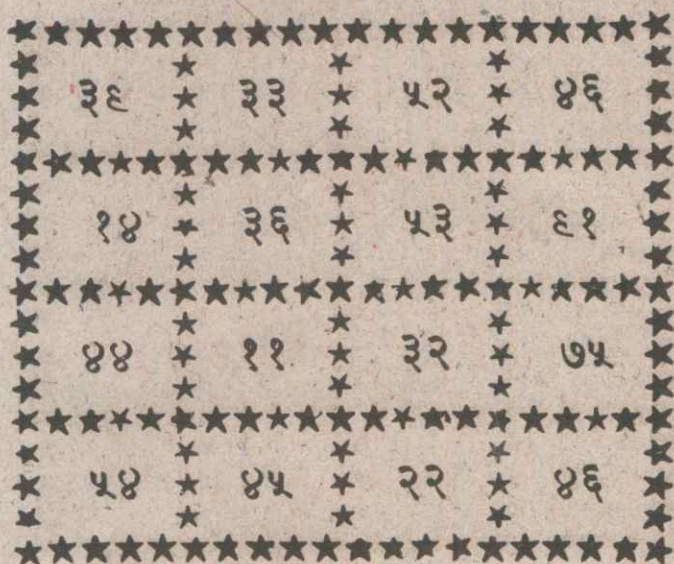
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर चीड़ की लकड़ी से हरी स्याही से लिखे तो चक्रवर्ती राजा भी वशीभूत हो जावे।

(२) इस यन्त्र को सफेद चन्दन से भोजपत्र पर लिखे और सिद्धि प्रयोग अनुसार सिद्ध करके अपने साथ जिस राजा के पास ले जावे वह अपने आप वश में अवश्य हो जाय।

गायों से दूध बढ़ाने का यंत्र

६३	९०	१८	१९
९३	४३	३४	४९
७४	११	२१	६१
४४	५९	५२	५७
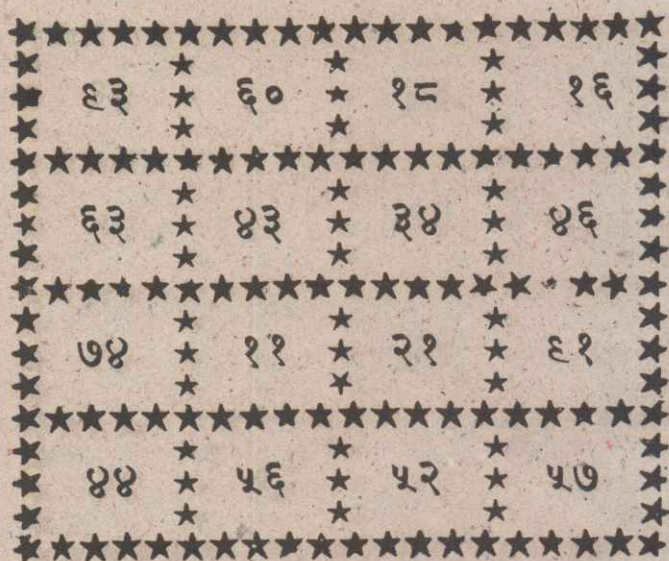
विधि :—

(१) इस यन्त्र को किसी भी कागज पर गोरोचन से लिखे और तावीज बनाकर गाय के गले में बाँधे तो दूध बढ़ जाये।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर कोयले से लिखकर नीले कपड़े में तावीज बनाकर गाय के गले में बाँधने से दूध अवश्य बढ़ेगा।

बुरे स्वप्नों का यन्त्र

२	५५	१	२४
८	७	८१	७५
८६	८५	२	३
५	६	३२	७५

विधि:—
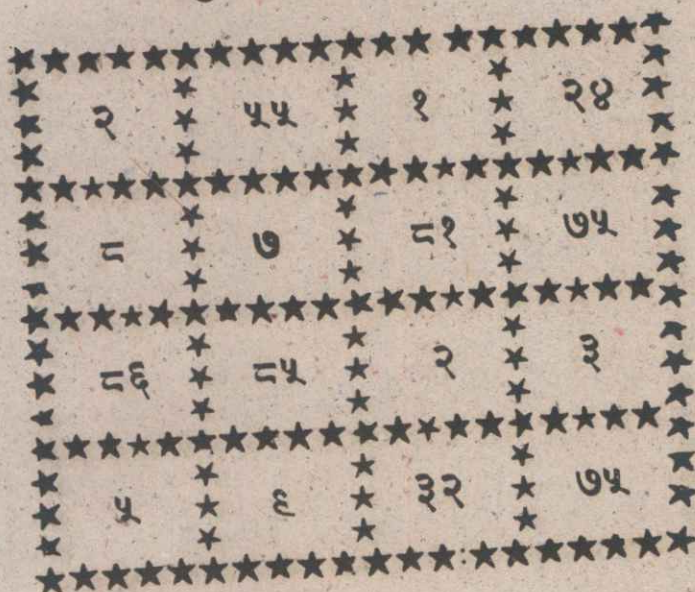
(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर रोली से मंगलवार के दिन लिखकर ताबीज बनावे और गले में बाँधे तो उसको बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लिखकर सोते समय अपने सिरहाने में रखने से बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे। ऐसा हमारा विश्वास है।

शत्रु उच्चाटन-यन्त्र
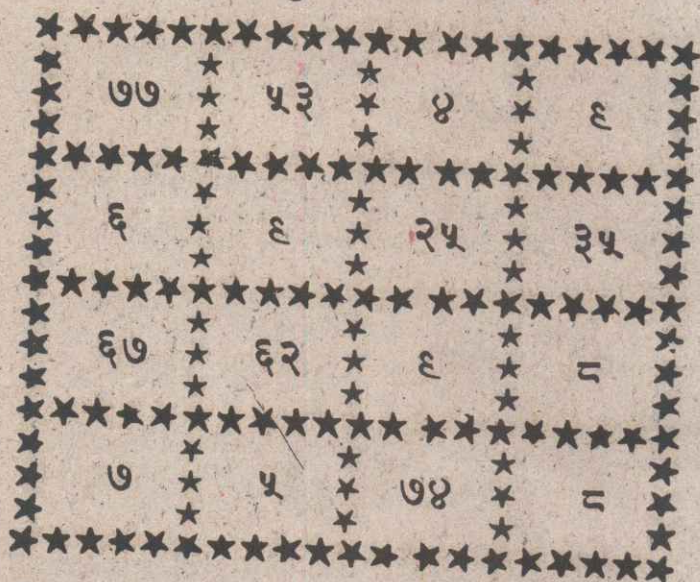
विधि :—

(१) इस यन्त्र को लोहे की कलम से ताँबे के पत्र पर लिखे और अपने पास रक्खे तो शत्रु को उच्चाटन हो ।

(२) इस यन्त्र को रेशम के कपड़े पर लिखे और ताँबे की ताबीज बनाकर दुश्मन के हाथ में किसी के द्वारा बँधवाये तो उसको अवश्य उच्चाटन हो ।

तिजारी ज्वर का यन्त्र

३५	६५	१	४५
६	२३	६२	५१
६५	८	८५	११
८	८३	७४	८५
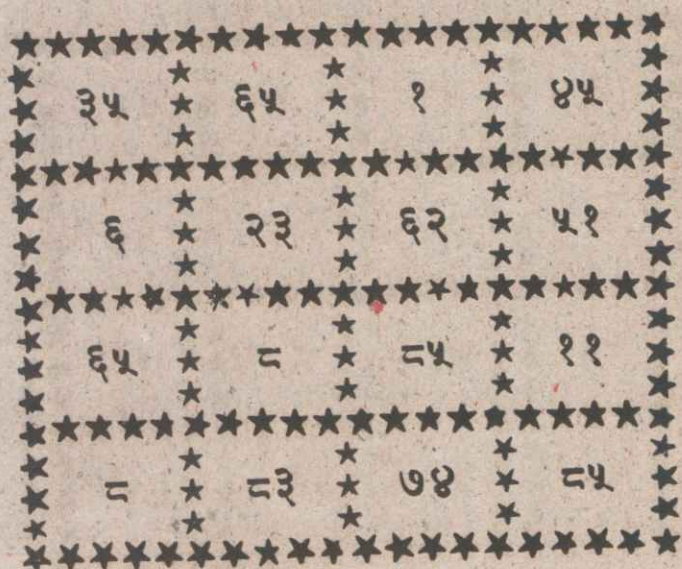
विधि :—

(१) इस यन्त्र को असगन्ध से शनिवार के दिन लिखे और रोगी की बाँह पर बांधे तो ज्वर छूट जाय ।

(२) इस यन्त्र को कुम्हार के यहाँ की मिट्टी लाकर भोजपत्र पर लिखे और रोगी से कुँये में डलवा दे तो तिजारी ज्वर अच्छा हो जाय ।

सर्व सिद्धि-यन्त्र

७	५५	१	५१
८	४	८१	५७
८६	७८	२	१
५	६	२३	७५
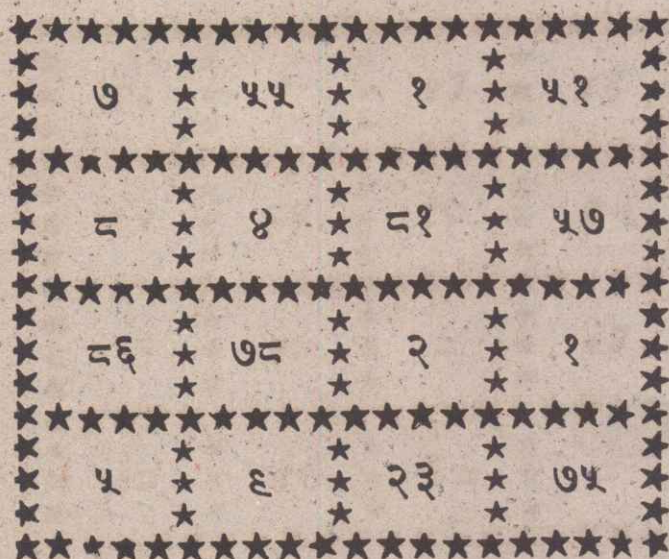
विधि :—

(१) इस यन्त्र को गुलाब से रस से कागज पर लिखे और सिद्धि प्रयोग द्वारा सिद्ध करके अपने पास रखने से मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी ।

(२) इस यन्त्र को कागज पर लाल चन्दन से लिखे असगन्ध की धूप देकर जिसको भी पढ़ने के लिये देवे उसी से कार्य सिद्धि होवे ।

दुश्मनी कराने का यन्त्र

विधिः—
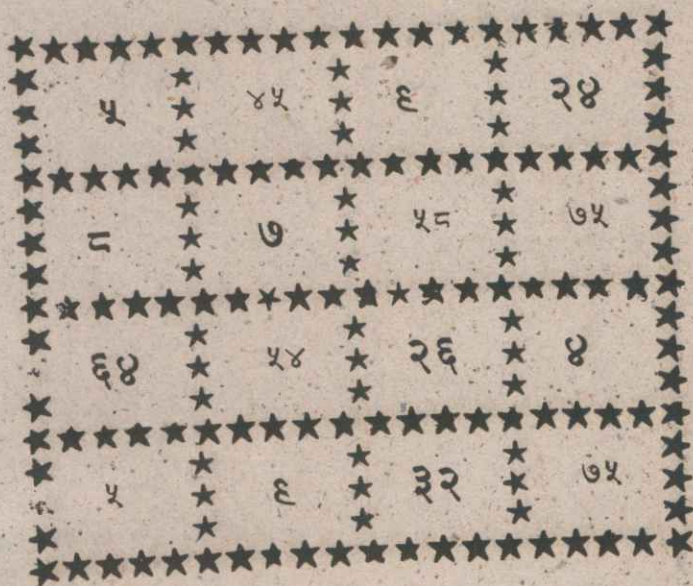
(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लिखें और जिन दो आदमियों के बीच झगड़ा लगाना हो उनके रहने के स्थान पर गाड़ दे तो उन दोनों में जरूर झगड़ा हो।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर घोड़े की लीद से लिखकर जिसके घर में झगड़ा लगाना हो उसके घर में फेंक दे तो उस दिन जरूर झगड़ा हो।

शीतला माता का यंत्र
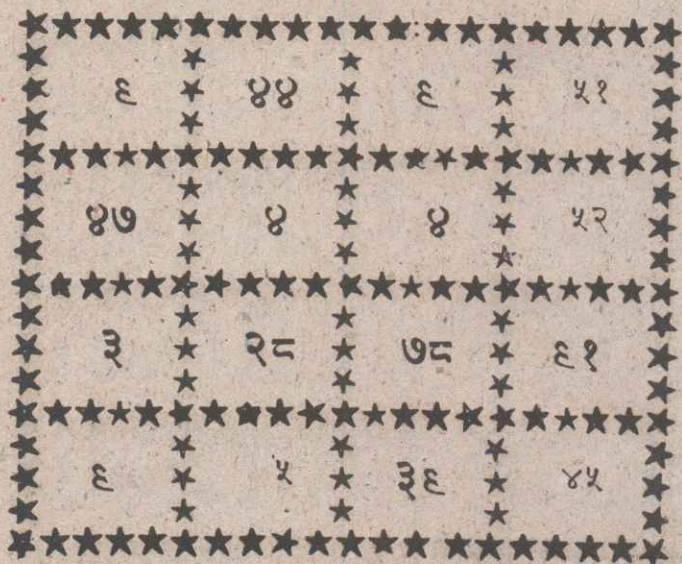
विधि :—

(१) इस यन्त्र को स्याही से सफेद कागज पर लिखे और जिस बालक को शीतला निकली हो उसके गले में बाँध देने से शीतला शमन हो जाती हैं।

(२) इस यन्त्र को चन्दन से सफेद कागज पर लिखे और गुग्गुल से धूप देकर जिसको शीतला निकली हों ताबीज बनाकर उसके गले में बाँधे तो शीतला शीघ्र ही शमन हों।

भूत दिखाई पड़ने का यन्त्र

६३	३३	२५	४६
४१	६३	५३	६१
४४	११	३२	७५
६४	४५	२२	४६

विधि :—
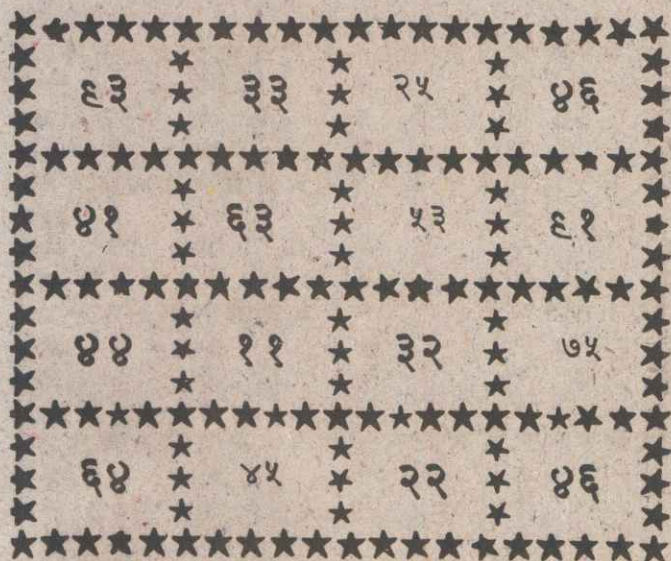
(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर गिलोय के रस से लिख कर शनिवार की रात को रोली और धूप से पूजा करे तथा रात को सोते समय सिरहाने रख दे तो सारी रात भूत दिखाई दे।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर श्मशान की राख से लिखकर अपनी चारपाई के नीचे रक्खें तो रात भर भूत नजर आयेगा।

प्रेम बढ़ाने का यंत्र

विधि :—
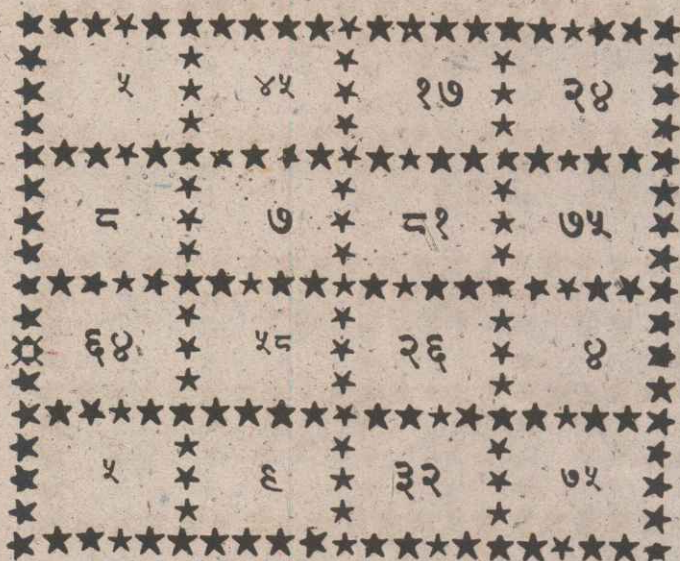
(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर कपूर के रस से लिखे और फुलेल से जलावे तो प्रेम बढ़ेगा।

(२) इस यन्त्र को रेशम के कपड़े पर लाल चन्दन से लिखे और जिसे आप चाहते हों उसी से उस कपड़े को जलवा दें तो वह आपसे प्रेम करने लग जावे।

मसान का यन्त्र

५६	५७	६	९
६	९	४५	४३
७६	३६	९	८
७	५	७५	५४

विधि :—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें और बाँह में बांधे तो मसान न सतावे ।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से पीत वस्त्र में तावीज बनाकर बाँधे तो मसान का भय जाता रहे ।

क्लेश दूर करने का यंत्र

५६	५७	६	९
६	४	९५	५३
७६	२३	९	८
७	५	७६	५४
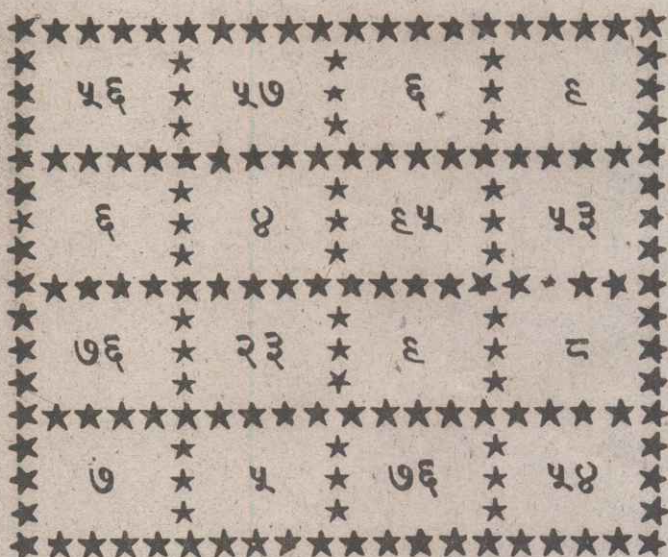
विधि :—

(१) इस यन्त्र को चन्दन से लाल कागज पर लिखें और विधि पूर्वक पूजा करे और घर में गाड़ दे तो घर की सब बलाय दूर हो।

(२) इस यन्त्र को लाल चन्दन से सफेद कागज पर लिखे और धूप वगैरह देकर जो मनुष्य अपनी बाँह पर बांधे तो उसके सब क्लेश दूर हो जांय।

आकर्षण यन्त्र

इस यन्त्र को सफेद वस्त्र पर तुलसी के रस से लिखे और जिसे बुलाना हो—सात दिन तक उसका नाम लेकर पूजन करे, नित्य ब्राह्मण को खिलावे तो कार्य सिद्ध होय।

घर लौटाने का यंत्र

जो घर से रूठ कर गया हो तो निम्नलिखित यन्त्र को गोरोचन से लिखकर जङ्गल में दबा दे और सात दिन वहाँ पानी दे तो गया आदमी जल्दी लौटे।
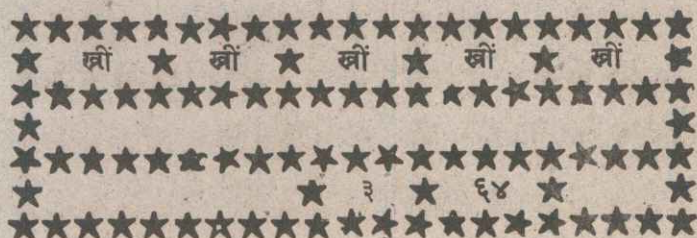
वाचा स्तम्भन यंत्र
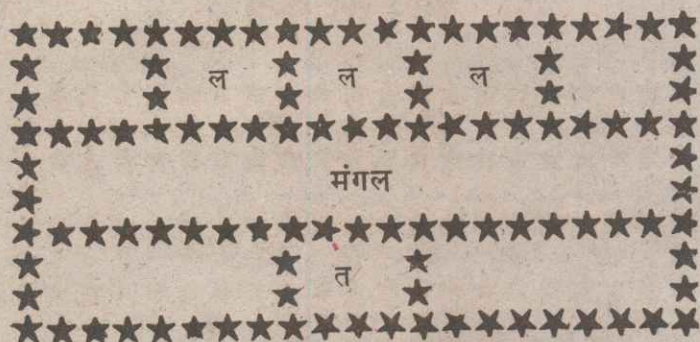
विधि :—जहाँ मंगल लिखा है वहाँ उसका नाम लिखे तो उसकी वाक्शक्ति रुक जावे ।

गुप्त लेख

पहला

कबूतर के खून और संतरे के अर्क को बराबर-बराबर मिलाकर लिखे तो रात में चमके ।

दूसरा

पतङ्ग का पत्ता, स्वान का पत्ता, बाज का रक्त सबको मिलाकर स्याही बनाकर लिखे । दिन में न दिखे किन्तु रात को हीरे सा झिलमिलावेगा ।

❀ इति तृतीय अध्याय समाप्त ❀

* चुटकुले *

सर्प आदि विषैले कीड़े अकरकरा, बारहसिंगे का सींग और बकरी के खुर की धूनी देने से भाग जाते हैं। यदि सरसों व नौसादर पीस कर घर में डाले तो सर्प फौरन भाग जायगा। सरसों सर्प नाशक है।

बिच्छू काटने की औषधि

(१) अगर किसी को बिच्छू काटे तो तुरन्त इन्द्रायन का ताजा फल खाले तो फौरन आराम होगा।

(२) नीबू के पत्ते के रस में हींग रगड़ कर बनावे और बिच्छू के काटे हुये स्थान पर लगाने से फौरन आराम होता है।

(३) गुड़ खिलावे और प्याज मले तो तुरन्त आराम हो जाता है।

(४) चिरचिड़े के पत्ते को पीस कर मले तो फौरन आराम हो जायगा।

(५) कौंच के बीज कों पीस कर हथेली पर रगड़े तो बहुत जल्द आराम हो जायगा।

(६) नीम की सूखीपत्ती चिलम में रख आग डाल तमाखू की तरह पिये तो तुरन्त आराम होगा।

(७) बिच्छू को मार कर घर में अगर जलावें तो वहाँ से बिच्छू भाग जाय।

अगर आप बिच्छू साँप आदि विषैले कीड़े से बच कर रहना चाहते हैं तो निम्न मन्त्र रोज प्रातःकाल धरती पर पैर रखते ही पढ़ना आरम्भ कीजिये।

"ओ३म् काली माई सुखं सिर स्वाहा"

आपका मन सारा दिन ऐसा करने से खुश रहेगा और कोई भी जीव-जन्तु नहीं काट सकता।

—※—

※ इति चतुर्थ अध्याय समाप्त ※

पञ्चम अध्याय

यक्षिणी साधन

यक्षिणी सिद्धि हो जाने से कार्य बड़ी सरलता पूर्वक हो जाता है और बुद्धि तीव्र होती है। मनुष्य कठिन से कठिन समस्याओं को क्षण मात्र में पूर्ति कर सकता है। दूसरे के मन का गुप्त हाल पहिचान जाता है। जो कुछ मुँह से कहता है वह सत्य होता है। अनेक प्रकार के चमत्कार यक्षिणी द्वारा दिखाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है। संसार में कोई उसका दुश्मन नहीं रहता सब उसको मान और प्रतिष्ठा से बुलाते हैं।

यक्षिणियों के नाम

यक्षिणी चौदह प्रकार की हैं यथा—

१—महा यक्षिणी २—सुन्दरी ३—मनोहारी ४—कनक यक्षिणी ५—कामेश्वरी ६—रतिप्रिया ७—पद्मिनी ८—नटी ९—रागिनी १०—विशला ११—चन्द्रिका १२—लक्ष्मी १३—शोभना १४—मदना।

यक्षिणी सिद्ध करने का समय

महर्षि दत्तात्रेय का मत है कि आषाढ़ सुदी पूर्णमासी शुक्रवार के दिन अथवा गुरुवार के उदय में क्षौर कर्म (हजामत) बनवा कर और पवित्र होकर यक्षिणी साधन क्रिया करे अथवा श्रावण कृष्ण परीवा के दिन चन्द्र बली होने पर साधन क्रिया प्रारम्भ करे।

यक्षिणी साधन क्रिया

शंकर आराधना

निर्जन वन में बिल्वपत्र अथवा केले के वृक्ष के नीचे बैठकर प्रथम श्री शंकर महादेव की आराधना निम्नलिखित मन्त्र से करे।

ॐ रुद्राय नमः स्वाहा, ॐ त्रयम्बकाय नमः स्वाहा।
ॐ यक्षराजाय स्वाहा, ॐ त्रयलोचनाय स्वाहा॥

क्रिया—एकाग्र चित्त होकर इस मन्त्र का पाँच सहस्र बार जाप निर्जन वन में करे, तत्पश्चात घर पर आकर खीर के भोजन करे और कुआरी कन्याओं को खीर का भोजन करावे।

दूसरी क्रिया—वट वृक्ष या पीपल की जड़में शिवजी की स्थापना करके जल चढ़ावे और एकाग्र चित्त से पाँच सहस्र मालायें उक्त मन्त्र की जपे।

कुवेर आराधना मन्त्र

ॐ कुवेराय नमः

ॐ यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरो प्रिय बान्धवः।
काला काले महा काले यक्षिणी वशगां कुरु ॥

क्रिया—इस प्रकार श्री कुवेर की आराधना एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से करे। तत्पश्चात् यक्षिणी साधन क्रिया करे।

साधन नियम

सदैव हल्की खीर का भोजन करे, सत्यवादी और ब्रह्मचर्य से रहे। दिन में कदापि न सोवे तथा एक बार भोजन करे, मौन ब्रत धारण करे, रात्रि को कुछ भी न खाये और भूमि पर सोवे। रक्त चन्दन विशेष रूप से लगावे और श्वेत रङ्ग के पदार्थ का सेवन करता रहे।

(१) महायक्षिणी सिद्धि

सिद्धि करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है, रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मणानाड़ी के चलते समय वट वृक्ष के ऊपर चारों

ओर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे मन्त्र का पांच हजार बार जाप नित्य करे।

साधन मंत्र—

ॐ ह्रीं क्लीं महा यक्षिणी प्रदात्र्यैनमः।

महायक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी अनेक रूप धारण कर साधक को भय दिखाती है। आतेसमय भैंसेका रूप धारणकर लेती है। जिस समय यह आती है प्रथम अन्धकार और आँधी लाती है और हवा बड़े वेग से चलती है। बादल की घटा इतनी जोर की चारों ओर उठती हुई दिखाई देती है कि हाथों हाथ कुछ नहींदिखाई देता। फिरएक दम उजाला हो जाता है फिर काले रंग के बाल बिखेरे हुये एक स्त्री नाचती हुई आती है जिसके दाँत आगे को निकले हुये सिर पर लाल रंग का कपड़ा लिपटा हुआ, मस्तक पर सिंदूर का टीका लगा हुआ, जिसकी सूरत देखते ही यह अनुमान हो जाता है कि हूबहू काल की यही निशानी है।

ऐसे अनेकों उपद्रव एक सप्ताह तक बराबर होते रहते हैं। यदि साधक भयभीत न हुआ तो फिर महा-यक्षिणी अपना दर्शन देती है।

महायक्षिणी का स्वरूप—

पीत वर्ण वाली, तीस वर्ष की आयु वाली, श्वेत रङ्ग की साड़ी पहिने हुये, जिस पर मोतियों की झालर लगी होती है मस्तक पर कस्तूरी और केशर की बिन्दी लगी होती है। एक हाथ में कमल का पुष्प दूसरे में तीर कमान धारण किये हुये साधक के सामने दिखाई देती है उस समय साधक जो जबरन माँगता है वही देती है।

प्रभाव—भयभीत हो जाने पर पागल बना देती है इससे भय न करना चाहिये। सिद्ध किया हुआ धन सुकर्म में लगाया जाय, कुकर्म में लगाने से सिद्धि निष्फल हो जाती है।

(२) सुन्दरी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय--

यह यक्षिणी रात्रि के दूसरे पहर में सिद्ध की जाती है। इसको श्मशान भूमि में अस्थियों पर बैठ कर सिद्ध करे और मुर्दे की चिता पर पके चावल इसको बलिदान में दे। जब यह प्रसन्न होती है तब अपने बलिदान को स्वयं उठाकर ले जाती है और उसको भक्षण कर लेती है।

सिद्ध करने का मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं यक्षिणी सुन्दर्यै नमः ।

क्रिया--इस मन्त्र को पाँच हजार बार जाप करे और प्रत्येक मन्त्र के साथ घृत और कपूर की आहुति दे ।

आहुति हवन कुण्ड बनाना—

विशाषा नक्षत्र में रविवार के दिन कपिला गाय के गोबर में सिंदूर मिलाकर त्रिभुजाकार चौका दे । उसके मध्य में त्रिभुजाकर एक बालिश्त नीचा गड्ढा खोदे उसकी जगह पर सिंदूर के पाँच बिन्दु इस प्रकार लगावे कि चारों ओर चार बिन्दु रहें और मध्य में एक आवे उसके ऊपर क्वांरे मुर्दे की हड्डियों को चुन कर अग्नि दीपक करे, उसमें कपूर की आहुति उपरोक्त मन्त्र के साथ दे । इसके पश्चात् यक्षिणी प्रकट होगी ।

सुन्दरी का आगमन—

जिस समय यह आती है चारों ओर धुयें का अंधकार हो जाता है । साधक को कुछ दिखाई नहीं देता, कभी ऐसा भी होता है कि अग्निकुन्ड में से आग की लपटें उठकर साधक की ओर आती हैं । उस समय साधक को भयभीत नहीं होना चाहिये ।

सुन्दरी यक्षिणी का स्वरूप—

गोरे बदन वाली षोडश वर्षीया बालिका के रूप में, बसन्ती साड़ी पहिने हुये गले में सफेद पुष्पों की माला धारण किये हुये भुजाओं में लाल रंग की चुस्त चोली पहिने नाक में झलकदार नथ पहिने हुये साधक को दर्शन देती है।

(३) मनोहारी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

ठीक रात्रि के बारह बजे स्वाती नक्षत्र में शनिवार के दिन से सिद्धि आरम्भ की जाती है। साधक प्रारम्भ करने के दिन प्रातःकाल क्षौर कर्म करा कर छोटे-छोटे बच्चों को मिष्ठान्न दही का भोजन करावे और यथाशक्ति उनको दान देकर बरदान माँगे जिससे साधन निर्विघ्न समाप्त होवे। फिर निर्जन वन में जाकर बट बृक्ष की जड़ में कालभैरव की मूर्ति स्थापित कर उसको स्नान करावे फिर धूप दीप से पूजन कर नित्य प्रति एक हजार बार नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्री ह्रू ह्रू फट् स्वाहा ॐ फट् स्वाहा।
ॐ ह्रीं फट् स्वाहा मनोहरी यक्षिण्यै नमः॥

मुर्दे की आँतो की डोरी और उसमें मुर्दे की अस्थियों के दाने डाल कर माला बनावे फिर एकाग्र चित्त होकर जाप करे। प्रत्येक सहस्त्र जप होने पर एक आटे का पुतला रखता जाय और जैसे साधन समाप्त करे सबको इकट्ठा बना कर अपने मकान के पीछे गाड़ दे।

मनोहारी का आगमन--

जिस समय यह यक्षिणी आती है फूलों की सुगन्धि साथ लाती है। इसके आगे-आगे अनेक प्रकार के पशु शेर, चीते इत्यादि अपना-अपना स्वरूप बदलते हुये दिखाई देते हैं। किसी-किसी पशु पर दैत्य सवार होता है, पीछे चन्द्र मुखी शंखनी हाथों में पुष्पों की माला लिये हुये आती है।

मनोहारी का स्वरूप—

श्वेत वर्ण की अनुमानतः षोडश वर्षीया कन्या के अनुसार चार शंखिनियों के कन्धे पर सिंहासन पै बैठी हुई दर्शन देती है। गले में फूलों का हार पड़ा होता है, हाथों में कमल के फूल धारण किये हुये होती है, माथे पर सिंदूर का टीका लगा होता है, सिर के बाल खुले हुये पीछे लटके रहते हैं। यदि यह प्रसन्न हो जाय तो अपना परिचय तीन प्रकार से देती है अर्थात् धन, जन

और मानस । विमुख हो जाने से सकुटुम्ब नाश कर देती है । इससे प्राप्त किया हुआ धन अच्छे कामों में लगाया जाय । पुण्य भी अधिक किया जाय । यदि ऐसा धन व्यभिचार तथा मदिरा पान में खर्च करे तो पुत्रादि सहित नष्ट कर डालती है ।

प्रभाव—चित्त शान्त करती है, किसी बात की इच्छा प्रगट नहीं होने देती है । जिस कार्य की आवश्यकता हो तत्क्षण कर लाती है । साधक को किसी प्रकार का भय क्लेश नहीं होने देती । इसकी साधना में भय नहीं करना चाहिये ।

(४) कनक यक्षिणी

साधन का समय—

यह रात्रि के एक बजे एकान्त व निर्जन वन में सिद्ध की जाती है ।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः ।

ॐ ह्रू कुरु ठः ठः स्वाहा ॐ क्लीं फट् स्वाहा ॥

क्रिया—इस मन्त्र को सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे इस प्रकार साधन करने से तीस दिन बाद दर्शन देगी ।

कनक यक्षिणी आगमन—

यह यक्षिणी आते ही चारों ओर से मल मूत्र की वर्षा करती आती है। हाड़ माँस की मालायें धारण किये रहती है। एकान्तवास इसको पसन्द है। यदि इसको अधिक तंग किया जाय तो साधक की मति भ्रष्ट कर देती है।

कनक यक्षिणी का स्वरूप

स्वरूप इसका साठ वर्ष की बुढ़िया के समान होता है। शिर पर समस्त बाल सफेद होते हैं। हाथ पैरों में केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है, मुँह में एक दाँत नहीं दीखता है, समस्त बदन व कपोलों पर झुर्रियाँ पड़ी दीखती हैं, बदन की लम्बाई अधिक होती है।

प्रभाव—जब तक यह साधक के पास रहती है तब तक किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती और जब जाती है उसको अनेक प्रकार के दुःखों में फँसा जाती है।

यह यक्षिणी ज्योतिषियों के बड़े काम में आती है इसके सिद्ध हो जाने से ज्योतिषी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सही देता है। इस यक्षिणी की सिद्धि को 'कर्ण पिशाचिनी' सिद्धि कहते हैं। क्योंकि यह जो कुछ कहती है साधक के कानों में कहती है। साधक के कान सदैव ऊपर को ओर रहा आता है।

यह यक्षिणी संसार में अपने साधक का प्रभाव बढ़ा देती है परन्तु भ्रष्ट अधिक रखती है। यहाँ तक कि कोई कोई कर्ण पिशाचिनी कान में विष्टा तक लगाये रहती है और अन्त में मरने पर साधक केशरीर में दुर्गन्ध पैदा कर देती है जिससे उठाने वाले भी घृणा करते हैं।

(५) कामेश्वरी यक्षिणी

साधन का समय

यह यक्षिणी रात्रि के आरम्भ काल में सिद्ध की जाती है और जब तक रात्रि समाप्त नहीं होती बराबर जप करना पड़ता है। इसकी साधना गूलर के वृक्ष की छाया के नीचे की जाती है और घृत का चौमुख दीपक जलाकर साधक अपने आमने सामने रख लेता है उसकी 'लौ' बिना पलक के मूँदे एकटक बराबर तमाम रात देखता रहता है। जिस समय साधक में एक रात बिना पलक लगाये दीपक ज्योति देखने की शक्ति उत्पन्न हो जावेगी उसी दिन से यक्षिणी अनेक रूपों से दर्शन देने लगेगी।

कामेश्वरी सिद्धि मन्त्र—

ॐ कामेश्वरी काम सिद्धेश्वरी स्वाहा।
ॐ फट् स्वाहा ॐ ह्रीं कुरु स्वाहा॥

उपरोक्त मन्त्र को एकाग्र चित्त से रुद्राक्ष की माला

लेकर सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे। तीस दिन बाद स्वप्न में यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देगी।

कामेश्वरी आगमन—

जिस समय यह यक्षिणी आती है, उस समय चारों तरफ सफेद फूलों का मार्ग बन जाता है, चारों तरफ से शीतल मन्द सुगन्ध वायु बहने लगती है। एक हाथ में इत्रदान लिये होती है। रास्ते में फूलों की वर्षा होती आती है।

कामेश्वरी का स्वरूप--

चन्द्रमा के समान उज्वल वर्ण वाली हंस की सवारी धीरे-धीरे आती है। गले में मोतियों की माला धारण किये होती है। इसके पीछे चार स्त्रियाँ हवा ढोरती आती हैं और दो आगे चँवर ढोरती दिखाई देती हैं। साथ की सब स्त्रियाँ पीताम्बर साड़ी पहिने होती हैं और स्वयं यक्षिणी गुलाबी रङ्ग की पोशाक में होती है।

प्रभाव—शीतलता लिये हुये साधक के चित्त को प्रसन्न करने वाली किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाने वाली सब की सहायक होती है।

[६] रति प्रिया यक्षिणी

साधन का समय—

इस यक्षिणी की सिद्धि रात्रि के दस बजे चाँदनी

रात में की जाती है। इसका जाप उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में शुक्रवार के दिन से प्रारम्भ होता है। इसके अग्र भाग में सुगन्धित पदार्थ तथा अनेक प्रकार के खिले हुये पुष्प रक्खे जाते हैं। जिस समय यह प्रसन्न होती है फूलों की मालाओं को अपने आप गले में धारण कर लेती है।

इसके जाप की माला तुलसी के दानों को रेशम में पिरोया जाता है और निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है।

साधन मन्त्र—

ॐ रति वल्लभे रति प्रिये कामन्तु वल्लभोः।
महा देवी महा माया काया कंचनम्॥

यह यक्षिणी पैंतालीस दिन में अपना प्रभाव स्वप्न में देती है। सिद्धि हो जाने पर मन इच्छित फल की दाता है। अधिकतर इसका प्रभाव स्त्रियों पर अधिक पड़ता है। कारण कि इसका संबंध कामदेव से अधिक है।

यक्षिणी आगमन—

कामेश्वरी यक्षिणी की भाँति इसका भी आगमन होता है इसको गुलाबी रङ्ग के पुष्प अधिक प्रिय हैं। फूलों की सड़क मखमल के समान पृथ्वी पर बिछ जाती है, उस पर अचक पचक पैर रखती हुई आती है। दास

दासियाँ विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पदार्थ लिये सामने खड़ी रहती हैं।

रतिप्रिया का स्वरूप—

सुन्दर गौरांग नवल नवेली चन्द्रबदनी जिसके हाथों की नाजुक कलाई हवा के झोंके से हिलती हुई दीखती है। अपने उपासक को सदैव मुस्कराती हुई दर्शन देती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य कड़ुवे से कड़ुवे मिजाज वाली स्त्री को वशीभूत कर लेता है।

(७) पद्मिनी यक्षिणी

साधन का समय—

इसका साधन आषाढ़ पूर्णिमा गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में रात्रि के चौथे पहर में निर्जन स्थान में प्रारम्भ होता है।

साधन का मन्त्र—

अनंग वल्लभौ देवि, कामारि प्रिय सेविका।
नमस्ते पद्मिनी माया, महामाया नमस्कृतै॥

पीपल के बृक्ष के नीचे बटुकनाथ की मूर्ति स्थापित कर काश के आसन पर बैठ कर दक्षिण की ओर मुंह करके सवा लक्ष बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे।

पद्मिनी का आगमन—

जिस समय यह आती है आने के पहिले एक बार अपनी झलक दिखला कर अन्तर्ध्यान हो जाती है। फिर अनेक प्रकार के बाजे बजने शुरू हो जाते हैं, परन्तु बाजे वाला कोई किसी तरफ दिखाई नहीं देता। उसी बाजे की ताल पर एक बड़ी बारात सी आती हुई दिखाई देती है। इसी को मनुष्य 'साहबा' आसेव की आमद कहते हैं। सबको पद्मिनी अपना रूप दिखाती है।

पद्मिनी का स्वरूप—

गोरे अङ्ग पर सिर के बाल एड़ी तक लम्बे लटके हुए दिखाई देते हैं। बाँह चम्पे की डाल के समान छोटी-छोटी और मुलायम होती है। पैर कदम कंदली के समान सुडौल और सीधे होते हैं। हाथों में कमल के फूल और गले में फूलों के हार पड़े होते हैं। इस प्रकार के वेष में साधक को दर्शन देती है।

प्रभाव–जब इसकी सिद्धि हो जाती है तब साधक के यहाँ धन की कमी नहीं रहती।

(८) नटी यक्षिणी

साधन का समय—

इसके साधन करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक का है।

साधन मन्त्र—

ॐ नमो ह्रीं फट् स्वाहा ॐक्लीं फट् फट् स्वाहा ।
ॐ नटी यक्षणी स्वाहा ॐ कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥

सुनसान जंगल में जहां चौरस भूमि हो और सूर्य की किरण पूरी पड़ती हों वहाँ पर सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा होवे और प्रति घंटा एक सहस्र मन्त्र जाप करता जावे जब तक सूर्य अस्त न होवे तब तक बराबर ज्ञाप करता रहे । सूर्य अस्त होने के पश्चात घर आकर केवल दूध पीकर सो रहे और रात्रि को कुछ भोजन न करे ।

नटी यक्षिणी का आगमन—

जिस समय यह आती है भैंसे के समान हुँकार भरती हुई आती है, और साधक को अनेक विकरालरूप दिखला कर डराती है । यदि इस पर भी साधक डटा रहा तो तैंतालिस दिन में सिद्धि होवेगी ।

नटी का स्वरूप—

सुन्दरी गौरांग स्त्री सिर पर सुर्ख रंग की चुनरी ओढ़े गले में मुण्डों की माला धारण किये नव पल्लव बदन पर लपेटे हुये हँसती खेलती साधक के सामने खड़ी हो जाती है ।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने पर हर साधक प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार कर सकता है ।

(६) अनुरागिनी यक्षिणी

साधन का समय—

शाम के पांच बजे निर्जन स्थान में जहाँ की भूमि समतल हो वहाँ पर साधन करे। सत्ताइसवें दिन जाकर यक्षिणी अपना प्रभाव दिखावेगी।

साधन मन्त्र

ॐ नमः अनुरागिनी यक्षिणी नमः हनि हनि हनि पचि पचि फट् स्वाहा।

ऊँट के बालों की माला बनाकर तीस हजार जाप नित्य प्रति करे। सत्ताइस दिन पीछे यक्षिणी स्वप्न में दिखाई देगी।

अनुरागिनी का आगमन—

इन्द्र की अप्सरा के आने से पहले लालरङ्ग का फर्श बिछा हुआ दिखाई देता है। बैलों के झुण्ड के झुण्ड आते हुए दीखते हैं जिन पर अनेक रूप धारण किये विकट खोपड़ी वाले भूत दिखाई देते हैं। सबके पीछे अनुरागिनी यक्षिणी की सवारी आती है। यह ऊँट पर बैठी हुई पीछे की ओर मुंह किये हुये होती है।

अनुरागिनी यक्षिणी का स्वरूप—

लाल रङ्ग के वस्त्र धारण किये मुख में पान

खाये नाक में नथ झलकाती हुई लम्बी भुजायें हाथों की अँगुली एक एक बालिस्त लम्बे नाखून चार इंच चौड़े, पैर नाटे, बिना पंजे वाली, एक हाथ में कृपाण और दूसरे में मुण्डमाल लिए होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक की ओर सीधी चढ़ी हुई चली आती है। यदि साधक भयभीत हो गया तो पागल बना देती है वरना इच्छानुसार काम करती है।

(१०) विशाला यक्षिणी

साधन का समय–

रात्रि के तीसरे पहर में काले धतूरे के वृक्ष के नीचे छाया में गधे के चर्म का आसन बिछा कर उस पर बैठे और आहुति देने के हेतु अष्ट धातु का हवन कुण्ड त्रिभुजाकार बनवाये और उसके मध्य में आदित्य देव की मूर्ति स्थापित करके उस पर तेल मर्दन करे। निम्न-लिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार प्रति दिन जाप करता रहे।

ॐ अनंत वल्लभो देवि, विशालस्य नमितः।
स्वयं प्रिया महा वश्यम कुरु फट् फट् स्वाहा॥

आषाढ़ बदी १५ आदित्यवार के दिन बिशाषा

नक्षत्र में रात्रि के तीन बजे स्मशान भूमि में जावे और उपरोक्त मंत्र का जाप करे। प्रत्येक मंत्र के अन्तिम अक्षर पर तेल और चावलों की आहुति दे। अन्तिम आहुति मदिरा और माँस की देकर सीधा चला आवे पीछे को न देखे।

विशाला यक्षिणी का आगमन—

इसके आने से पूर्व अनेकों हिंसक जानवर शोर करते हुये दिखाई देते हैं। फिर वह अंतर्ध्यान हो जाते हैं केवल दक्षिण दिशा में मनुष्य से बातचीत करने का शब्द सुनाई देता रहता है। साधक को उस समय अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये। यदि उसका ध्यान उस ओर से हट गया अथवा भयभीत हो गया तो घर आते ही बीमार हो जायगा। अथवा जिधर जावेगा उधर ही उसको वह शब्द सुनाई देगा। इसीलिये साधक को चाहिये कि हृदय को कड़ा करके इसकी साधना करे।

विशाला यक्षिणी का स्वरूप—

इसकी लम्बाई एक पीपल के पूरे और ऊँचे पेड़ के बराबर होती है। पैरों को पृथ्वी पर बड़े जोरोंसे मारती है और अनेक प्रकार के उपद्रव उठाती हुई जाती है। सिर के बाल आगे की ओर लटके हुये होते हैं। लम्बाई के कारण इसके उमर की तादात नहीं होसकती। जितनी यह

लम्बी होती है उसी के अनुसार हाथ पैर लम्बे व चौड़े होते हैं। सिर इसका बड़ा और दाँत आगे को निकले हुये और बड़े होते हैं।

प्रभाव—साधक इसको यदि प्रसन्न रक्खे तो माला माल कर देती है और अप्रसन्न होने पर सकुटुम्ब उसका नाश कर देती है।

(११) चंद्रिका यक्षिणी

साधना का समय—

इसका साधन समय रात्रि के ११ बजे चाँदनी रात्रि में होता है । साधक स्मशान भूमि में जाकर मुर्दे की चिता वाली भूमि अर्ध चन्द्राकार मुर्दे की हडियों का बनावे और आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रवार के दिन से मन्त्र की आराधना करे और तीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। जब स्वाति नक्षत्र में सुषुम्णा नाड़ी चलने लगे उस समय जाप की समाप्ति करना चाहिये।

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चैसि स्वाहाः।
ॐ चंडिका यक्षिणै नमः स्वाहाः ॥

इस मन्त्र को पचास हजार दफा जाप करे और इसके जाप के लिये मुर्दे की हडियों के दाने की माला उनमें पिरोवे और प्रत्येक दाने पर ऊँश्रीं, ऊँक्षीऊँक्षी, बीच

में अंकित करे और प्रति एक जाप पर घी गुड़ की आहुतियाँ देता जाय। भोग के लिए चावल काले उर्द का बलिदान तैयार रखे। हवन की अन्तिम आहुति दही दूध, घृत और शहद की देवे और जाकर ब्राह्मणों को खीर के भोजन करावे। यथा शक्ति उनकी पूजा करे और दान दे।

यक्षिणी का आगमन

पैंतालिस वर्ष के उम्र की स्त्री काले वर्ण की, हाथों पर मेंहदी रचाये, मुँह में पान चबाये, दातों को आगे निकाले हुये एक हाथमें लड्डू दूसरे से अग्नि जलाती हुई साधक के पास सीधी चली आती है और रखे हुए बलिदान को ले जाती है।

प्रभाव—अगर साधक उस समय भयभीत नहीं हुआ तो भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है। मान और प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती है।

(१२) लक्ष्मी यक्षिणी

साधन का समय—

इसकी साधना प्रातःकाल चार बजे की जाती है। इसकी साधना के लिये पवित्रस्थानकी आवश्यकता पड़ती है। जिस जगह पर इसकी आराधना की जावे उस मकान में कोई अपवित्र मनुष्य न जाने पावे और न कोई स्त्री उस

मक़ान का स्पर्श करे। साधना करने से प्रथम मकान की सफाई लिपाई पुताई कराकर उसको धूप चन्दनादि की धूनी देकर पुष्पों की मालाएँ लटका दे और सुगन्धित इत्र की खूशबू उसमें बसा कर जाप आरम्भ करे।

साधन मंत्र

लक्ष्मी कान्तम् कमल नयनं सिंदूर शोभावरम्।
भालेन्द्रतिलकललाट मुकुटम् वाणीवरमवरदायकम् ॥

उत्तरा भाद्रपक्ष नक्षत्र में लक्ष्मी की मूर्ति अष्टधातु की बनाकर स्थापित करे औरप्रात:काल उसको गङ्गाजल से स्नान कराकर उसके मस्तक पर केशर और कस्तूरीका तिलक लगावे और स्वयं कुशासन पर बैठकर पीताम्बर वस्त्र धारण करे। फिर स्नान कराये हुये जल का भक्ति भाव से पान करे और हृदय में मूर्ति का चित्र धारण कर तुलसी की माला हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जाप करे और भाँग के लड्डू बना कर सामने रखे। इस प्रकार इकत्तीस दिन तक जाप करता रहे। इकतीसवें दिन यक्षिणी दर्शन देगी।

लक्ष्मी आगमन

जिस समय यह आती है उससे पूर्व राजा महाराजाओं की भाँति आगमन की तैयरियाँ देवगण कर जाते है चारों ओर शांति स्थापित हो जाती है। भय का

कुछ काम नहीं रहता। इसका स्वरूप साक्षात आंखों से दिखाई नहीं देता। तीसवें दिन स्वप्न में आकर साधक को दर्शन देती है।

लक्ष्मी का स्वरूप

सुन्दर गोरे वर्ण की अठारह उन्नीस वर्ष के अनुमान वाली स्त्री चन्द्रवदनी मृगलोचनी, बाहें चम्पे की डाल के अनुसार, नाक में स्वर्ण की नथ पड़ी हुई, साक्षात देवी अवतार, दोनों हाथों में कमल का फूल धारण किये हुये आती है।

प्रभाव—जब यह प्रसन्न होती है तब साधक को मालोमाल कर देती है और जब इसकी पूजा ठीक नहीं होती तो दरिद्री बना कर चली जाती है।

(१३) शोभना यक्षिणि

साधन का समय–

इसके सिद्ध करने का समय रात्रि के एक बजे का है। आषाढ़ बदी १५ गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में इसको सिद्ध करना प्रारम्भ करके और बलिदान के हेतु तेल और गुड़ में आटा गूँध कर लड्डू बनावे। प्रति दिन जाप समाप्त कर काले कुत्ते को एक सौ आठ लड्डू नित्य प्रति खिला दिया करे। इस प्रकार तीसदिनतक रोज तेल और गुड़ के १०८ लड्डू बनावे। अन्तिम दिन तेल, बेसन

और गुड़ के १०८ लड्डू बनाकर कुत्तों को खिला दे।

साधन का मन्त्र

ॐ शोभनाय: शोभनाय: शोभनाय नमः।
निराकारो निरामासो वश्यं कुरु कुरु स्वाहा॥

कैथ बृक्ष की छाया में बैठकर तीन दिन तक जाप करता रहे। जाप करने की माला चिकनी मिट्टी के दानों की बनावे और उसमें क्वारी कन्या के हाथ का काता हुआ सूत डाले। यह सूत विशाखा नक्षत्र में काता जाता है। इसकी कपास प्राकृतिक रूप से पैदा होती है इसको कोई जोतता बोता नहीं स्वयं बरसात में अपने आप इसके पेड़ उग आते हैं और पंचक त्याग कर इसकी कपास लाई जाती है, फिर उसको क्वाँरी कन्या के हाथ से कतवाते हैं। इस जाप की माला सवा लक्ष एकाग्रचित्त से जपी जाती है। समाप्ती होने पर कन्या व लाँगुराओं को भोजन हलुआ और चनों का साक कराया जाता है फिर उनको लाल रङ्ग के वस्त्र पहिना कर यथाशक्ति दान दिया जाता है।

शोभना यक्षिणी का स्वरूप

जब यह आती है अनेक प्रकार के रूप बदलती हुई आती है। किसी-किसी समय तो भयंकर शब्द तक सुनाने

लगती है। कभी २ इसके साथ में अनेक स्त्रियाँ आती हुई दिखाई देती हैं कभी स्वयं अनेक प्रकार से नाचती हुई दीखती है। कभी रोती हुई आती है। इसका प्रचंड कोप बड़ा भयानक होता है। साधक को चाहिये कि सावधानी के साथ बैठा रहे और चित्त को विचलित न करे वरना पागल हो जायेगा।

शाभना यक्षिणी का स्वरूप

कुरूपिणी, एक आँख ऊपर को चढ़ी हुई, माथा टेढ़ा देखते ही घृणा उत्पन्न होती है। मदिरा मास में अधिक रुचि रखती है। गले में अनेक प्रकार को खोपड़ी लाल रङ्ग से रङ्गी हुई पड़ी हुई होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक को पटक देती है। अनेक प्रकार के दुर्व्यवहार करती है। यदि इसको साधक सह गया तो मालामाल कर देती है।

(१४) मदना यक्षिणी

साधन का समय

इसका साधन रात्रि के पिछले पहर में किन्तु दिन के आरम्भ काल में किया जाता है। निर्जन बन में जहाँ किसी मनुष्य की आवाज सुनाई न दे वहाँ पर छोंकरा की कोंपल

लावे और उसमें बरगद की टहनी लगाकर हवन सामग्री तैयार करे, और पृथ्वी पर षट चक्र काट कर कुन्ड बनावे प्रत्येक चक्र पर (ऊँह्नी) बीज अंकित करे बीच में मदना यक्षिणी का नाम लिख दे फिर उसके ऊपर बरगद और छोंकरा की कोंपल वाली सामिग्री रखकर अग्नि में प्रवेश करे और निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ओम् श्री मदनाश्वरी यक्षिणी स्वाहा ॥

ओम् कालभैरवाय नमः फट् फट् स्वाहा ॥

इस प्रकार मन्त्र का पाँच हजार जाप बृक्ष के नीचे बैठ कर करे। जिस स्थान पर जाप करना प्रारम्भ करे उसी जगह पर हवन कुन्ड स्थापित करे जाप की माला के दाने मोर पंख के बनावे प्रत्येक दाने के बीच में एक एक गाँठ काली ऊन की लगावे। जब माला तैयार कर चुके तब नियमित समय पर स्यार के खाल के आसन पर बैठकर दक्षिण की ओर मुँह करके जाप करना आरम्भ करे। इक्कीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। इकत्ती-सवें दिन यक्षिणी स्वप्न से आकर दिखाई देगी।

मदना यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी सताइसवें दिन से सिद्ध होने की सूचना देती है। साधक से स्वप्न में अनेक प्रकार की मनोहर

बातें करती है अपने हाव भाव कटाक्ष से साधक को मोहित करती है। हर प्रकार से उसकी सेवा करती है तथा सर्वदा उसकी सेवा करती रहती है। स्वप्नावस्था में जो कुछ साधक कहता है उस काम को तत्काल कर लाती है। जब जाती है तब हर प्रकार से साधक को प्रसन्न कर तसल्ली देकर जाती है।

मदना यक्षिणी का स्वरूप—

रूपवती सुन्दर स्त्री मीठे बचन कहने वाली मन्द मन्द मुस्काने वाली, कभी हँसती, कभी नाचती गाती है। पोशाक सदैव काशनी रंग की पहिरे रहती है। जवानी के मद में चूर रहती है, नूर उसके चेहरे से टपकता रहता है, काम कला में अति निपुण होती है। सदा साधक की इच्छानुसार काम करती है। कभी उससे अप्रसन्न नहीं होती।

प्रभाव—उसके सिद्ध हो जाने से साधक का मन एक जगह पर एकाग्र हो जाता है। फिर उसको किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती।

❀ इति पंचम अध्याय समाप्त ❀

——

अथ छवाँ अध्याय

मन्त्रों से रोगों का इलाज

आधाशीशी का मंत्र

ॐ बन में बसी बानरी उछल पेड़ पर जाय कूद कूद शाखन पर फल खाय। आधा तोड़े फोड़े आधी शीशी जाय।

कागज पर स्याही से हथपाई खींचे और सात आड़ी रेखायें काटती चली जाय। इसी तरह कई बार करे तो आधा शीशी जावे। (साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जावे)

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरु की काली चिड़ी चिग २ कर बोली आवा बासे हारे सजी हनुमान हांक मारे आधा शीशी हरे गुरुशक्ति मेरी प्रजा फूरो मंत्र बाबा ईश्वरी।

इस मन्त्र को नौ बार पढ़े और पढ़ कर चाखने से आधाशीशी चली जाती है।

आँख दुखने का मंत्र

ओम् नमो झलमल जहर नली तलाई अस्ताचल पर्वत से आई। जहां जा बैठा हनुमान जाई। फूटे ना पाके करे न पीड़ा, यती हनुमान ठाके पीड़ा।

विधि :—

बरगद के पत्ते से तेरह बार झाड़े और साथ ही साथ मन्त्र पढ़ता जाये।

पीलिया का मंत्र

ओम् नमो बार बैताल असुराल नारसिंहदेव जो स्वादतुखादी सुभाल सुभाल पीलिया की झारे चाटे रहे न पीलिया निशान। जो रह जाये तो हनुमान की आन।

विधि :—

रोगी के माथे पर नारियल का तेल कटोरी में लेकर सात बार चन्दन से मले।

मलते समय ऊपर लिखे इस मंत्र का उच्चारण करें और दिन में दो दफे इसका प्रयोग करें।

कुत्ता काटने का मंत्र

ओम् नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहां रहे इस्मायल योगी, योगी ने पाली कुत्ती दस काली दस पीली दस लाल दस काबरी। रङ्ग बिरङ्गी दस खड़ी दस माल ठिकावें। रक्षा करे इनका विष हनुमान हरे गुरु गोरखनाथ।

विधि :—

इस मन्त्र को ग्रहण की रीति से १०० दफे जपे। घी

का दीपक जला कर मीठे का भोग लगावे इस प्रकार सिद्ध करे और जिसे कुत्ते ने काटा हो उसके घाव के चारों तरफ गोइठा की राख लेकर २७ बार मन्त्र पढ़कर लगा दें तो दो ही दिन में ठीक हो जायगा।

बिच्छू के विष उतारने का मंत्र

ओम् नमो सुरहगाय पर जाय हरी दूब खाती फिरे ताल तलैया पानी पिये सुरहगाय ने गोबर किया बिच्छू सात जिसमें उपजे हरा लाल पीले काले उतरे बिच्छू का उतर जा या नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम आदेश गुरु का शब्द फूरो साँचा मंत्र।

इस मन्त्र को १०८ बार दीवाली के दिन जपे और सिद्ध करे और जिसको बिच्छू ने काटा हो, इस मंत्र को पढ़े और उसे पानी पिलावे तो विष उतर जाये।

पहला मन्त्र

ओम् भुं हुँ चं कं नं लं ओ ओं हं हं।

विधि :—

इस मंत्र को पढ़ कर जहां बिच्छू काटा हो वहाँ पर मौलश्री को छाल पीस कर लेप करने से सारा विष दूर हो जायगा।

ओम् नमो आदेश गुरु का समुद्र २ है खाई ।

इस मन्त्र को सिद्ध करले फिर जिसे बिच्छू ने काटा हैं उसे इस मन्त्र को पढ़ कर पानी पिलाया जाय तो विष उतर जायेगा ।

प्रेत वशीकरण मंत्र

ओम् स ल सृनोता सोसलबाई काग पढ़न्नाधाई आई ओल ठ: ठ: ।

विधि :—

रविवार के दिन आधी रात को नङ्गा होकर बबूल के पेड़ के नीचे आक की लकड़ी जलावै और मंत्र पढ़े फिर काला तिल और चने की आहुति दे तो प्रेत बातें करे उस समय दृढ़ होकर अपना हाथ काटे और चार बूँद खून धरती पर गिरा देवे तो प्रेत हमेशा वश में रहे।

आयु बढ़ने का मंत्र

ओम् आरी मेडा हार राई गें पहरा कारहार पुतली वह स्थी स्थी ।

विधि :—

इस मंत्र को कौए के पंख पर रविवार के दिन पढ़े और सिर पर बाँधे तो आयु बढ़े ।

फोड़ा झारने का मंत्र

ओम् रहती लहलूमीयां आव भूता ग्रहतनो ओं ठः ठः।

विधि :—

शनिवार के दिन रास्ते की धूल से यह मन्त्र पढ़ कर सात बार झाड़े तो फोड़ा में आराम हो।

पानी से दूध होने का मन्त्र

ओम् बिहश्त सादियाम सहाल अह अह रः।

विधि :—

शनिवार के दिन हिंगुआर के बाल ले आवें और मन्त्र पढ़ कर पानी में डालें तो पानी दूध हो जाय।

आँख की फूली कटने का मंत्र

ओम् हजार ज्वाला थः।

विधि :—

इस मन्त्र को शनिवार के दिन पढ़े और छूरी से जमीन पर रेखा खींचें तो आंख की फूली चली जाय।

भूख न लगने का मंत्र

ओम् गुजाह दरवांउन मखसुख मांस रघिलतबी आहूम आहूम।

विधि :—

रविवार के दिन इस मन्त्र को पढ़ कर चर्खी का फल खाले तो कभी भी भूख न लगे।

डबके का मन्त्र

ॐ नमो खांगरी खांगरी कहाँ एक लाख पर्वती पर गया सवा लाख पर्वती पर जाय कर क्या किया घुसेड़ा छूरा घुसेड़कर छूरा क्या किया डबकि का हाथ पैर काट काले कम्बल में लपेट खाया समुद्र में बहाया।

विधि :—

रविवार के दिन आधी रात के समय में छै अंगुल का टुकड़ा एक बाण (तीर) को लेकर रास्ते में खड़ा कर दो तो डबके की बीमारी अच्छी हो जायेगी।

तिजारी ज्वर का मन्त्र

ॐ नमो महाउद्दष्टि योगिनी प्रकोर्णदष्ठाखादती वर्ग वतिनसित भक्षित ओं ठः ठः ठः।

विधि :—

इस मन्त्र को गूलर के पत्ते पर पढ़े और इसे बायें भुजा पर बांधे तो तिजारी ज्वर चला जाय।

चौथिया निवारण मन्त्र

ॐ ऐं ओं महमह द्रव्य ओं ऐं बहनओं हीं ।

विधि :—

रविवार को किसी भी नदी में खड़े होकर इस मंत्र को १०५ दफें जपे तो चौथिया दूर हो जाय ।

बर्राने का मन्त्र

ओ कं कं कं कं कं ठं ठः ।

शनिवार मंगलवार को नीलकंठ के पंख पर मंत्र पढ़ कर शिखा में बाँध ले तो रात में सोते समय बर्राने लगे ।

प्रेत निवारण का मन्त्र

ॐ नमो आठ खाठ खाट की लाकड़ी मुजवनी का मुवा मुरदा नहीं तो महावीर की आन :—

विधि :—

अमावस के दिन लोबान छालछबीली चमेली के फूल लौंग असगंध कपूर आदि लेकर श्मशान में जाय तो मशान उठे और आवाज निकले ।

गर्भ धारण मंत्र

ॐ हीउल जालल्य ठ ठ ओं हीं।

विधि :—

ऋतु काल में स्त्री और पुरुष शेर की खाल पर दोनों ही बैठे और पुरुष स्त्री के कान में इस मन्त्र को १०३ दफे कहे तो स्त्री को गर्भ रहे।

गर्भ रक्षा मंत्र

ॐ रुद्रा मींद्रव ही हा हा हा ओं ही।

विधि :—

शनिवार की रात को गुग्गुल की धूप दे और गर्भवती स्त्री के पास २११ दफा जपे तो उस स्त्रीं को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो सकता और गर्भरक्षा हो।

शिशु रोदन मंत्र

ओम् नमो दहवायरफे रस्ट ही।

विधि :—

स्नान करे और किसी भी पवित्र स्थान पर बैठ कर आठ कोरी सींक से मन्त्र पढ़ते हुये झाड़े तो रोता हुआ बालक चुप हो जाय।

टोना का मंत्र

ओम् बज्र प्रहार कपाट कलक अलक पल लंका का फलक पलांग वती की वाचा ।

विधि :—

इस मन्त्र को २३ दफे पढ़ कर चमेली के फूल से पानी नारसिंह के ऊपर फेंके तो नारसिंह बँध जायगा

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

ओम् अगली गगाली अताक पत्ताल मर्द गर्द अदार कार फट फट उत्कट हूँ ठः ।

विधि :—

शनिवार के दिन नीम के पत्तों को लेकर उसी से झाड़ दे और २४ दफे इस मन्त्र को जपे तो आँख की बाधा दूर हो ।

कर्ण बाधा निवारण मंत्र

ऊंकननप सार धांवर धां २ प्रवेश कर डार डार झार झार मार मार पात हुँकार शब्द साँचा ।

विधि :—

साँप की बाँबी रज से २३ दफे इस मन्त्र को पढ़े और झार कर मिट्टी कान से लगावे तो सब प्रकार का रोग दूर हो जावे ।

कण्ठ कष्ट मंत्र

ओम् नमो नरसिंहाय आदेश गुरु का घाई कराई का करता चलतां वज्रबेदन भेदत ओं उ: उ: ।

विधि :—

उत्तर दिशा में बैठे तथा कुएँ पर की घास को लेकर मन्त्र पढ़कर रोगी को देने से कंठ बाधा दूर हो ।

मस्तक पीड़ा का मन्त्र

सहस्त्र घर वाले एसरबाय चले आगे तो पीछे मन्त्र सांचा फूरो बाच ।

इस मन्त्र को मंगलवार के दिन पढ़े और उसे सिद्ध कर ले अगर किसी के सर में दर्द हो तो इस मन्त्र को पढ़कर फूँक मारे तो सिर का दर्द आराम हो जाता है ।

नकसीर निवारण मन्त्र

ओम् लारती मारती दसो दिशा धवला पर्वत खंड खंड करवा मन्त्र सांचा फूरो बाच ।

विधि —

इस मन्त्र को पढ़े और पानी में फूक मारता जाय फिर उस पानी को नाक से सुरक ले तो नकसीर बन्द हो ।

ज्वर निवारण मन्त्र

ओम् भैरव भूतनाथे विकराल काये अग्नि वर्ष धाये सर्व ज्वर बन्द बन्द मोचय त्रयम्बके ती हुँ ।

विधि :—

इस मन्त्र को गुलाब के हरे पत्ते पर पढ़ कर दाहिने हाथ में बाँधे तो ज्वर चला जाय ।

बवासीर का मंत्र

ओम् छई छलक आई आहुम आहुम कं कां कीं हूँ ।

विधि :—

शनिवार और सोमवार के दिन इस मन्त्र से पानी फूँक कर आबदस्त ले तो बवासीर चला जाय ।

विदेशी को घर बुलाने का मंत्र

ओम् ग्वला ग्लीं ग्लुं ओं श्रीं ह्रां हः ।

विधि :—

काले मृग की छाल पर पीपल के नीचे बैठ रुद्रवन्ती और श्रीफल की खीर मनाकर मन्त्र पढ़कर आहुती दे तो विदेश गया हुआ आदमी फौरन घर आ जाये ।

सुई निकालने का मन्त्र

ओम् नमो चढ़कर चुना लोहार सारे गढ़े लोहार लोहे का तोड़ तोड़ के किया पानी लोहा जार भस्म कर हानी राम वीर तो जाया माटी लक्षमन वीर मुद घाव पाव फूटे वीरडा करे तो राम चन्द्रही रक्षा करे। शब्द सांचां पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो बाच।
विधि—

जहाँ सुई गड़ी हो वहाँ पर हाथ फेरे और भभूत की चुटकी भर कर मन्त्र पढ़ता जाय तो सुई अपने आप वहाँ से निकल जायगी।

नजर झाड़ने का मम्त्र

ओम् नमो सत्यनाम आदेश गुरु को ठाम नगर जहां बोले छल से अमृतवानी पर पीर न जानी जहां से आई कौन जाति तेरी कहाँ की टेरे की अबताई। कहाँ धाम किसकी बेटी क्या है नाम अब वास करले तेरी माया कहाँ से उड़ी कहां जाय मेरी बातें सुन चित्त लाय जैसी हो सुनाऊँ, जाय। तेलिन तमोलिन चमारिन खतरानी मेहतरानी कुम्हारिन कायथिन राजा की रानी जाको दो

सवाही के सिर पड़े पार नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरोबाच ।

विधि :—

सुबह के समय बालक को सिर से पैर तक झाड़ दे और साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जाय ।

पशु रोग नाशक मन्त्र

ओम् नमो बेली देहली बाँधी दहलाय राम सारी खाट की पशु नीको हो जाय ।

विधि :—

चारों तरफ की चार खाँटगो खिड़कीं में खड़े होकर पढ़े तो रोग आपसे आप भाग जाये और पशु भी ठीक हो जाय ।

पशुओं के कीड़े झारने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ारे कुंडु कुंड़ालो लाल पूंछ तेरा मुँह काला । हैं तोहिं पूझा कहखे आका तूने सब मास खाया । अब तू जाय भस्म हो जाय । गुरू गोरखनाथ करे सहाय ।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आम की डाली से सात बार झाड़े तो सब कीड़े मर जायें ।

दाढ़ दर्द का मन्त्र

ओम् नमो कामरू देस कामनी देवी जहां बसे इस्माइल योगी। इस्माल योगी ने पाली गाय, नित उठ वन में चरने जाय, चरे सूखे घास खाय जिसने गोबर किया जा में उपजा मुताला पूंछ पुछाला धड़ है पीला मुँह काला दाँत गले मसूड़ा पीड़ा करे तो गुरु गोरख नाथ की दुहाई।

विधि—

इस मन्त्र को लोहे की पिरेग पर पढ़े और उसे काठ में ठोंक दे तो मसूड़े की पीड़ा दूर हो जाय।

दाढ़ के कीड़े झारने का मन्त्र

सकोरा सामे में सीसे में लींची में पानी में कीड़ा कीड़ा करे पीड़ा हरे। शब्द साँचा में पिंड काँचा फूरो मंत्र इश्वरो बाचा।

इस मन्त्र को लोहे के कीले पर पढ़कर तथा दाढ़ के कीले को कुँआ में डाले तो सब कीड़े मर जाँय।

॥ इति छठाँ अध्याय सम्पूर्णम् ॥

—:०:—

अथ सातवाँ अध्याय

विविध चमत्कार

शास्त्रार्थ जीतने का मन्त्र

ओम् जीव जीव जीव उत्तर में वामहप्रसार मसुष्म आताल रसना ठः ठः ठः ।

सोमवार के दिन सुबह एक हाथ से कूद कूद कर किसी भी पक्षी को गोली मारे और उसका पंख, कस्तूरी और सफेद चन्दन में घिस कर माथे में टीका लगाकर जिससे शास्त्रार्थ में जाय तो वहाँ जरूर जीते ।

मदारी को पछाड़ने की विधि

थोड़ी सी सरसों लेकर नौ दफे मन्त्र पढ़े और मंत्र पढ़कर मदारी को मारे तो वह मुर्छित हो जाय ।

मन्त्र

ॐ नमो गदाधारी हनुमन्त बीर, स्वामी का तेज बरी का शरीर; अदृष्टि चक्र मातु कालका चलाया चला बैरन कर थैर में करिहों तेरे जीवन का भ्रात मैं न डरूं तेरे गुरु पीर से मारे तुझे एक ही तीर से मारे मारा-एल घूमे जैसे भुजंगी सर्प की लहर पैर तो सिहिरत मारू बाण से बचले तो गुरु गोरखनाथ की आन ।

दामिनी (बिजली) नाशक मन्त्र

ॐ प्रज्वलित जो गर्जती ता ता ता ।

विधि:—

मसूर की दाल को जिस तरफ मन्त्र पढ़कर फेंके उस तरफ बिजली नहीं गिरेगी ।

चोरी निकालने का मन्त्र

ॐ नमो पतरसौ पीर चौंसठ योगनी ५२ सौ भैरो तेरह सौ बीर बहत्तर सौ तन्त्र १६ सौ मन्त्र ७२ सौ पहाड़आठ सौ नाला नदी गुरु गोरख रखवाला काँसी की कटोरी अंगुलवार चौड़ी कहा वीर से आई गिरीनार पर्वत से मँगाई । अठारह बार वनस्पति चल कावी कुम्हारी लौ नाच भारी कहाँ २ जाय चोर के जाय चन्डाल के जाय क्या लावे चोर को पकड़ लावे गढ़ा । धन जाय बताय चला न जहाँ हनुमन्त वीर बसे ।

विधि :—

एक अंगुल चौड़ी ताँबे की कटोरी लेकर दिवाली की रात्रि को कटोरी की पूजा करे और इसी मन्त्र से उड़द पढ़ कर चौक में रक्खे, जिधर कटोरी जाकर रुके वहीं चोरी का माल निकलेगा, प्रतिदिन १०७ बार मन्त्र पढ़े तो एक हजार एक दिन में सिद्ध होगा ।

डाकिनी मूँड़ने का मन्त्र

ॐ नमो लोह सिंहासनी लोहुलाऊ सिंहनाद नस्तर गठा राम वीर ने नस्तर लक्ष्मण वीर ने सबसे बजिया मूँठ तेरा गुरु पीर जिन दिया मासकरा मन्ड तेरा मात पिता हनुमन्त ले आबी जा लंका जारी मारि मुँडि कातिठ महाबीर ध्वज धीवती देख्य सिर मुंडिरे भैरो छप्पन गाँव वापस संग से हरू मुंड मुंड रे हनुमन्त वीर जाका जिया धरे न धीर धर बैठा मैं घोड़ामुड़ु गाँव बन काहे की ठुड्या मन्त्र से मुंड डाकिनी सिंहार हनुमन्त पती ध्यान तुम्हारी।

विधि:—

उस्तरा को गाड़ दे और शिवरात्रि के दिन एक सौ सात दफे मन्त्र पढ़े और अपना गोडां मुड़ों तो डाकिनी का सिर मूंडे।

भूत प्रेत बोलने का मन्त्र

ओम् घों घों ध्यान करता अलख पती हांकदेत हाक रात बोल २ शब्द साँचा।

हींग को लहसुन के रस में मिलाकर जिसे भूत प्रेत लगा हो उसकी आंख में लगा दे तो वह बोलने लगे।

बीन बाँधने का मन्त्र

ओम् नमो वादी प्रायराड़ करने को बैठा बड़ पीपल की छाया और बादीन की जे बाँधूँ तेरा कण्ठ अरु काया बाँधूँ बैन अरु योगी और मसान की बानी अब तो रह बिन सुजान वाले नरसिंह ऊपर हनुमन्त गाजे तो न बजेगी।

विधि :—

इस मन्त्र को १००० बार जप कर सिद्ध कर लें और जब बीन बाँधनी हो तो नौ बार मन्त्र पढ़ लें और बीन पर मारे तो बीन नहीं बज सकती।

साँप निकालने का मन्त्र

ओम् नमो सर्पावे थूल मथूल मुख बना तेरा कमल का फूल सर्पा तेरी बाँधूँ दासी जिसने तू गोद खिलाया और बांधूं स्तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया। बीस की लती ऐसा करे जो घाव तेरी दाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय जलाय। आँदेश गुरू को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी बाचा।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से आरम्भ करें और छः

महीना तक पहर भर जप करें और जब सिद्ध हो जाय तो गोइठा की राख लेकर पाँच बार मन्त्र पढ़ें और साँप के ऊपर डालें तो तुरन्त वह बँध जाय।

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो भई कीलन बासा भया कुवास जाहु साँप घर अपने घूम फिर चारों मासा।

विधि :—

इस मन्त्र को पढ़े और ऊपर से मिट्टी डाले तो कीला हुआ साँप खुल जायगा।

पानी पर चलनें का मंत्र

ओम् नमो काल भैरू कालिका पूत पागा खड़ाऊँ हाथ गुरजघो भन प्रभात श्रान्तु अग्रसु भरा तेरा न्योता मैं मारूँ दिन राति जो तू मन चीता काम कर दे मोव कुशुम केशर से पूजा करूँ तुम्हारी ओर मन काम करो गुरु गोरखनाथ की वाचा फूरो।

विधि :—

पुष्य नक्षत्र में रविवार के दिन आग की पूजा करें। सात दिन बाद उसे जड़ समेत उखाड़ लावे। फिर जड़ को पाँव की खूँटी बनवाये और उसे पैर में डाल पानी के ऊपर चलें तो पानी की लहरें न लगेगी।

रात के समय साँप दिखाई देना

विधि :—

बुधवार के दिन कपास (बिनौले) का बीज ले कर उसे मरे हुए सर्प के मुख में डाल दे और दूसरे दिन उस बीज को निकाल ले और उसे जमीन में बो देवे, जब उसमें रूई पैदा हो तो उसकी बत्ती बनावे और गाय के घी में रात के समय जिस घर में जलावे उस घर में चारों ओर सर्प ही सर्प दिखाई पड़ेगा। बत्ती को बुझा देने से साँपों का दिखाई देना बन्द हो जावेगा।

बिच्छू दिखाई देना

विधि :—

कपास का बीज शनिवार के दिन मरे हुये बिच्छू को उसके ऊपर रख दे। फिर उसे हटाकर उस बीज को जमीन में बो दे। जब उसमें रूई पैदा हो तो उसे बत्ती बनावे और रेंडी के तेल में भिगोकर जिस घर में जलावे तो उस घर में बिच्छू ही बिच्छू दिखलाई पड़ेगा।

बिना दीपक के अक्षर दिखाई देना

रविवार के दिन उल्लू की खोपड़ी में घी डाल कर दिया जलावे और उसके कालिख से काजल बनाकर अपने

आँखों में लगावे तो रात में बिना दिया क अक्षर दिखाई पड़ेंगे।

गुप्त होने की विधि

सरसों के तेल में हरिन का माँस मिला दे और जिसके ऊपर एक बूँद तेल डाल दे वह गायब हो जावे।

दूसरी विधि

खिड़ेखी पंछी को लाकर एक साल पिंजरे में रक्खे तो वह कुग्रम हो जायेगा और इतने समय में इसके एक कलँगी (चोटी) उत्पन्न हो जायेगी और वह इतनी लम्बी होगी कि उससे सारा बदन ढँक जायगा। फिर उस चोटी को उखाड़ ले और उसका ताबीज बनावे और जब भी उसे पहने तो फौरन गायब (गुप्त) हो जाये तथा उसको कोई न देख सकेगा।

सिद्धि तेल

नारियल के तेल में कुसुम का बीज डाल दे और उस तेल को धूप में रख दे। अगर इस तेल में कमल का बीज मिलाकर किसी तालाब में डाले तो कमल पैदा होगा। अगर जामुन के बीज में डाले तो उसी वक्त जामुन का पेड़ लगे और साथ-साथ फल लग जाय।

अन्धा बनाने की विधि

अकोहर का फल और बिलाई कन्द मुख में रख लेने से दूसरे मनुष्य की निगाह बन्द हो जाती है और वह मनुष्य इस प्रकार नजरबन्द करके जो चाहे करके दिखा सकता है।

शत्रु का पेशाब बन्द हो

विधि :—

दुश्मन ने जहाँ पर पेशाब किया हो वहाँ की मिट्टी को लेकर चमगादड़ के मुँहमें डाल दे फिर उसे जङ्गल में किसी जगह मिट्टी के अन्दर गाड़ दे तो उसका पेशाब बन्द हो जाय।

सूर्य का रथ दिखाई देना

विधि :—

अगर नींबू के बीज का तेल निकाल कर तांबे के पात्र में लगाये और दोपहर या सन्ध्या से समय उससे सूर्य को आकाश में देखेंतो रथ सहित उनका पूराआकार दिखलाई पड़ेगा। यह सिद्धि योग बिना प्रयोग का है।

दिन में तारे दिखाई देना

विधि :—

काला सुरमा को गुलाब के रस में तीज के दिन

मिलाकर खरल करे और आठवें दिन अपने आँख में लगावे तो दिन में आपको तारे दिखाई देंगे ।

अनोखा खड़ाऊँ

विधि :—

सादा छूही मिट्टी लाकर पीस ले और खड़ाऊँ पर लेप करके उसे सुखा दे, फिर जब खेल करना हो तो अपना पैर धोकर पहन ले तो बिना खूँटी के खड़ाऊँ पर चलता देख कर सब आश्चर्य करेंगे ।

कच्चे मटके में पानी भरना

कच्चा घड़ा लेकर उसमें नौ दिन तक घीक्वार और चन्दन का लेप करे और सूख जाने के बाद उसमें पानी भरे तो घड़ा नहीं टूट सकता ।

अण्डा उछालने की विधि

मुर्गी का अन्डा लेकर उसमें पारा और राई भर दे फिर उसका मुँह मोम से बन्द कर दे और उसे धूप में रख दे, थोड़ी देर बाद वह अन्डा अपने आप उछलने लग जायेगा ।

चलनी में पानी भरना

विधि :—

चलनी में घीक्वार और सरसों का लेप नौ दिन तक

करे, जब वह सूख जाये तो चलनी में पानी भरे। ऐसा करने से एक बूँद भी पानी नीचे नहीं गिर सकता।

अण्डा उछालना

विधि :—

मुर्गी के अंडे का सब रस निकाल कर उसका छेद बन्द कर उसे फव्वारे पर छोड़ दे तो वह अपने आप उछलने लगेगा। वह खेल ऐसी जगह करे जहाँ हवा न लगने पावे।

बबूल का काँटा चबाना

विधि :—

अनारस और द्रोणपुष्पी का पत्ता चबाकर उसका रस मुख में रक्खे और काँटा को लेकर चबावे तो कोई भी कष्ट नहीं हो सकता है और देखने वाले लोग भी अचरज में पड़ जाएँगे।

मुँह में आग रखना

विधि :—

कुलन्जन, अकरकरा और नौसादर मुँह में डालकर खूब चबावे और गरम पानी से कुल्ला करके मुँह में आग रखने से वह कभी असर नहीं कर सकती।

खुद आग का पैदा होना

विधि :—

हाथी और ऊँट की लीद लेकर उसे जब वह जल

जाय तो उसमें मधु मिलाकर अपने पास रखें, जब खेल करना हो तो उसे हवा में रख दे तो उसमें से चिनगारी निकलने लगे।

खेत की रखवाली हो

विधि :--

इतवार के दिन किसी बरतन में पान, असगंध, गाय का घी, तुलसी का पत्ता और मिठाई वगैरह भर दे तथा लाल कपड़े से मुँह ढंक दे और जिस खेत में गाड़ दे, उस खेत में चोर सियार आदि कोई जानवर नहीं जा सकता तथा किसी तरह का नुकसान नहीं होगा और उपज भी बढ़ जायेगी।

शीशी आग से भरी दिखाई देना

विधि :-

शीशी में शराब गन्धक और सोरा डाले और उसे अँधेरे में रख दे तो शीशी आग जैसी चमकने लगेगी गैर कोई देखने वाला ताज्जुब करेगा।

दीवार पर आग दिखाई देना

विधि :-

दीवार पर मिट्टी का तेल और शराब मिलाकर पुतवा दें फिर सबके सामने आग लगा दें तो दीवार जलती हुई दिखाई पड़ेगी।

शीशी में अण्डा उतारना

विधि :--

बिलायती वियर में मुर्गी का अंडा भिगो दे, और जब वह नरम हो जाये तो उसे निकाल कर एक शीशी में उतारें और ऊपर से पानी भर दें तो वह बड़ा हो जायगा और देखने वाले ताज्जुब मानेंगे।

नीबू उछालने की विधि

विधि ;—

नींबू को लेकर उसका रस निकाल लें और उसमें पाल असगंध और नौसादर भरें फिर उसे धूप में रख दें तो थोड़ी देर में नींबू उछलने लग जायगा।

हाथ में सरसों जमाना

विधि :—

स्त्री के दूध में सरसों भिगोकर उसे छाया में सुखा दे और जब खेल करना हो तो हाथ पर नदी की रेता और सरसों रखकर पानी का छीटा मारे तो सरसों तुरन्त जमेगी।

कोयले को हरा करना

विधि :-

जलते हुये कोयले को किसी बर्तन में रख कर ऊपर से कास्टिक सोडा डाले तो कोयला का रङ्ग हरा

हो जायगा। ऐसा करने से भयंकर आवाज होगी। उस समय सावधान रहना चाहिये।

जले हुये डोरे में अँगूठी लटकाना

विधि :--

नमक, नौसादर के पानी में डोरे को भिगो दे फिर उसे सुखाकर रख ले और जब खेल करना हो उस समय डोरे में अँगूठी बाँध ले, दूसरा सिरा दीवार के सहारे खूँटी में बाँध कर सलाई से आग लगा दे। डोरी जल जायेगी मगर अँगूठी नहीं गिर सकती है।

अग्नि से बिस्तर न जले

विधि :--

कपूर और चीनियाँ हल्दी को पान के रस में मिलाकर पीसे और उसकी छोटी २ बत्ती बनाकर छाया में सुखावें। जल खेल करना हो उसी वक्त उसमें आग लगाकर बिस्तर पर रखें तो वह कभी नहीं जलेगा।

आग से उँगली न जले

विधि :

चीनियाँ हल्दी अर्सनिक दो भाग पारा भी ले डाले इनका आधा कपूर पीसकर तत्काल डाल दें।

इनको उँगली में लेप करके लो अजमाय ।
जलती आग में उँगली जलेगी नाय ॥

बन्दूक की गोली मुँह से छूटना

विधि :—

मिट्टी की गोली बनाकर आग में पका लो और उस पर काला रङ्ग लगा दो जिससे वह गोली जैसा नजर आवे । जब तमाशा करना हो तो पहले से ही अपने साथी को कांच की गोली दे । तो उस गोली को वह मुँह में रख ले और तुमसे वह चालिस कदम पर जाकर खड़ा हो जावे । तुम जिस हाथ से बन्दूक पकड़ो उसी हाथ में मिट्टी की गोली रक्खो और दूसरे हाथ में वही कांच की गोली रहे, तब तमाशा देखने वालों से कहो कि--'देखो मैं सामने वाले आदमी पर गोली चलाता हूँ ।' इसी तरह बातों में लगाकर काँच की गोली को छिपा लो तथा मिट्टी की गोली छोड़ दो और तुम्हारे साथी को चाहिये कि बन्दूक का फायर होते ही अपने गोली को दाँतों के नीचे दबा ले । यह देख सब लोग चकित हो जायेंगे ।

नोट :--वह गोली मोम की बनाई जाय तो और भी ठीक रहेगा ।

लोहे का ताँबा बनाना

विधि :—

नीला थोथा कपूर पीसकर लोहे पर मलदेय ।
रंगत अपनी त्यागकर, लोहा ताँबा होय ॥

कपड़ों में आग न लगना

विधि :—

पीतल का कटोरा लेकर उसकी पेंदी में कपड़ा लगावे और ऐसा बाँधे कि पेंदी में चिपट जाय, फिर मधु, कपूर, रीठा और शराब इन सबको मिलाकर गोली बनाकर सुखा ले और कटोरी की पेंदी पर गोली रख फिर उसमें आग लगावे तो कपड़ा नहीं जल सकता ।

तोप के समान आवाज करना

विधि :—

क्रीक, गंधक, टाटरी, असगंध, जवाखार इन सबको बराबर मिलाकर हुक्के में भर कर आग लगा दे तो उसकी आवाज तोप के समान निकलेगी ।

आग खुद जले

विधि :—

चूना बुझा और बिना बुझा में फास फोरस मिला दें और कपड़े में रख कर काँसे के बरतन में रखकर ऊपर से पानी छिड़के तो अपने ही आप आग लग जाय ।

घड़ी को गायब करना

विधिः—

एक ही रंग की दो घड़ी ले लो जिसमें एक घड़ी आँठवें नम्बर के खाल के सन्दूक से गायब करो और दूसरी घड़ी को तीसवें नम्बर, खेल की तरकीब लगाकर घड़ी को डबल रोटी से निकाले। तमाशा देखने वाले यह देखकर चकित होंगे।

छाते पर गिलाफ चढ़ाना

विधिः-

इस खेल में सबसे पहले टीन का एक नल जरूरी है। नल लम्बा होना चाहिये, उस नल के एक खाने में गिलाफ लगे हुये छाता को छिपाकर रख दे। फिर जब खेल करना हो तो एक छाता बिना गिलाफ का तान कर दिखा दे, और एक छाता का कपड़ा भी उसी नल के दूसरे सिरे पर रख दे तथा छाता का फर्मा तभी वहीं रख कर दिखा देगे।

कुछ देर बाद बन्दूक का फायर करके जनता का ध्यान बैठा दे फिर पहले वाले छाते को जो पहले ही से रखा हुआ है। उसे खींच कर लोगों को दिखा देवे। लोग यह देख कर अचरज में आ जायेंगे।

अक्षर रंगबिरंगे करना

विधिः—

(१) कोरे कागज पर नीबू के रस से जो चाहे लिखे, फिर आग दिखाये तो उसका रङ्ग लाल दिखाई पड़ेगा।

(२) अगर किसी कागज पर लहसुन के रस से लिखकर आग दिखावे तो पीला रङ्ग हो,

(३) दूध से लिखकर अग्नि दिखावे तो भी पीला रङ्ग हो।

(४) गाजर के रस से लिखकर आग दिखावे तो दूसरे प्रकार का पीला हो।

(५) हरे रङ्ग के अक्षर लिखना हो तो गेंद की पत्ती के रस से लिखे।

(६) अनार के पत्ते के रस से लिखकर आग दिखाने पर भी हरा रंग हो जाता है।

(७) दूध से लिखकर यदि पानी का छींटा मारे तो नीले रङ्ग के अक्षर दिखाई पड़ेंगे।

वर्षा में दीपक जले

विधिः—

समुन्दर शोष डालकर बत्ती बनाकर दीपक में जलावे तो वह वर्षा में भी न बुझे।

फुलझड़ी

विधि :-

कलमी शोरा ५६ तोले, बन्दूकी बारूद ५६ तोले इन दोनों को मिलाकर उसमें उम्बाबीड मिलाकर फुलझड़ी बना सकते हो।

बिना रंग का नीला होना

विधि :-

पानी से गिलास भरो उसमें पीर्सयेट आफ पोटाश नाम की दवा की कुछ बूंदे डाल दो।

एक दूसरे गिलास में सल्फेट आफ आयरन डालो। अब दोनों गिलास मिला दो तो गहरा नीला रङ्ग हो जायेगा।

जादू का लाल रंग बनाना

विधि :-

एक गिलास में चुकन्दर की जड़ का रस निकाल कर भर दें और थोड़ा सा चूने का पानी लेकर डाल दे तो वह बिल्कुल सफेद हो जायेगा।

अब एक रूमाल उसी पानी में डुबा कर सुखा दें तो रूमाल लाल रङ्ग का हो जायेगा।

अंडे का नाच

विधि :—

अण्डा कोई लेय मँगाय, सूई छेद पारा भरवाय।
मोम लखावे छेद को, भली भाँति कर बन्द।
जासे पारा बन्द हो, निकले नहीं अमन्द।
इतने करके राखे पासा, तब फिर करे अजीब तमाशा।
खेल समय एक रकाबी लावै, थोड़ी आँच जलाय तपावै।
अण्डा करके गरम रखे फिर, उसी रकेबी माँहि।
चटपट वह नाचन लगे, जनता रहे सराहि॥

सुनहरे सितारे

विधि :—

(१) क्लोरेट आफ पोटाश २० भाग। (२) नाइट आफ ब्रिटा ३० भाग। (३) सोडा १५ भाग (४) गंधक ८ भाग (५) शिल्लेक ३ भाग। (६) कोयला १ भाग। इन सब चीजों को पीस छान कर शिल्लेक में भिगो दे। ये सितारे बड़े खूबसूरत और पूँछदार होते हैं।

लाल बारूद

विधि :—

(१) नाइट्रेट आफ स्टेनिया ४० भाग (२) गन्धक

१३ भाग। (३) आफ क्लोरेट आफ पोटाश ५ भाग। (४) सल्फ्यूरिक इन्टोयन ४ भाग।

इन सब को मिलावें तो लाल रंग की बारूद बनें।

नीला बारूद

विधि :—

(१) गन्धक १३ भाग (२) भुनी फिटकरी १३ भाग। इसमें क्लोरेट आफ पोटाश मिलाकर बनावें।

जर्द बारूद

विधि :—

(१) गन्धक १६ भाग। (२) कार्बोनिट आफ पोटाश ३० भाग। (३) क्लोरेट आफ पोटाश ६१ भाग।

उपर्युक्त सबको मिलाकर बारूद बना लें।

गोल फुलझड़ी

विधि

(१) कलमी शोरा १२ तोला, (२) गन्धक १ तोला, (३) लोहे की बारूद ३ तोला, (४) कोयला ३ तोला। इन सब को मिलाकर गोल फुलझड़ी बनालें।

महताबी

विधि :—

शोरा २८ तोला। गन्धक १० तोला। हरताल ४ तोला। कपूर ५ तोला : इन सब को मिला कर महताबी बनालें।

नकटी महताब

विधि :–

शोरा एक सेर, हरताल १ पाव, मुर्गी के अन्डे की सफेदी १ पाव, बीर बहूटी ६ पाब और नील सिंगरफ ६ पाव, उपरोक्त सबको लेकर महताब बनावें, इसे जलाने पर जिस २ पर रोशनी पड़ेगी सबकी नाक नकटी दिखेगी ।

रंगीन महताबी

विधि :–

शोरा दसवां हिस्सा १।१०, गन्धक तिहाई हिस्सा १।३, हरताल आधा हिस्सा १।२ और नील चौथाई हिस्सा १।४ ।

उपरोक्त मिलाने से जर्द रंग की महताबियां बनेंगी । अगर लाल रंग को चाहो तो हरताल की जगह सिंगरफ डाल दो । अगर हरे रंग की बनानी हो तो तूतिया डाल दो ।

बाण बनाना

वधि :–

शोरा ३० तोला, कोयला १४ तोला और गन्धक १० तोला ।

उपरोक्त को अलग-अलग कूट छान लेंवे । याद रखिये, शोरा आग को बढ़ाता है, गन्धक मन्दी करता है और कोयला चिनगारी उत्पन्न करता है ।

नारंगी रंग वाली बारूद

विधि :—

कोयला चार भाग, शोरा १७ भाग, गन्धक १० भाग, क्लोरेट आग पोटास ५२ भाग। इन सब को मिला दें तो नारंगी रंग का बारूद बनेगा।

नीलामीला बनाना

विधि :—

यह चीज बड़ी उम्दा होती है। इसकी तरकीब यह है—

सिन्दूर व शोरा, दस-दस भाग, आक्साइड आफ कोबाल्ट १ भाग और सफेद शोरा २ भाग।

सबको मिलाने से नीलामीला बारूद बनेगा।

अँगूठी कबूतर में से निकालना

विधि :—

एक किस्म की दो अँगूठियाँ लेकर एक अँगूठी को कबूतर के गले में बाँध दो। फिर उस कबूतर को एक चौड़े काले रंग के बोतल में डाल कर उसका मुँह बन्द कर दो। फिर दूसरी अंगूठी अपने साथी को देकर कहो कि उसे कुंए में डाल आवे। अब बाते करते हुए उस काले बोतल का मुँह तोड़कर कबूतर निकाल लो। लोग उसके गले में अँगूठी देखकर हैरान हो जायेंगे।

भूत प्रेतादि दोष निवारण योग

विधि :—

कूट, बच, चन्दन, सेंधा नमक, गिलोय का सत, तेल, चर्बी—इन्हें मिलाकर धूप में सुखावें तो भूत प्रेतादि ग्रह आदि न सतावे, बालक तथा माता दोनों सुरक्षित रहें।

अन्य

हरा मस भांग, मोम चूहे की लेंड़ी यह सब सम भाग लेकर बकरी के पेशाब में सात दिन खरल करके बारीक अंजन बनाकर नेत्रों में अपने डाले तो भूत-प्रेतादि दोनों का शमन हो।

पुत्र ही पैदा होय

किसी को अगर कन्या होती हो तो बिलाव और सिह का नाखून ताबीज में मढ़वा कर दाहिनी भुजा में बाँधे तो अवश्य पुत्र हो।

प्रसव दुःख निवारण

पति यदि अपनी पगड़ी में कंकर बाँध कर स्त्री के बांध दे तो बालक शीघ्र हो।

अन्य

इन्द्रायन तथा इमली के पत्ते को पीस कर नाभी पर लेप करे तो प्रसव जल्दी हो।

वशीकरण प्रयोग के नुस्खे

लघु सूक्ष्मेण लिगेन नैव तुष्यन्ति योषित: ।
तस्मत्तत्प्रीतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ---छोटे और पतले लिंग से स्त्री प्रसन्न नहीं हुआ करती है । अत: स्त्री जनों को प्रसन्न करने के लिये पुरुषों के लिये अति उत्तम लिङ्ग स्थूली करण नामक प्रयोग वर्णन करता हूँ ।

[१]

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध पत्र पीपल, कन्नेर यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर कूट-पीसकर मक्खन के साथ मिलाकर लेप करने से काम-ध्वज मूसल के समान कड़ा हो जाता है ।

[२]

लोध, केशर, असगंध, पीपल, शालपर्णी यह सब वस्तुयें समान भाग में मिलाकर तेल में पकाकर काम-ध्वज पर लेप करने से वह कामध्वज लम्बाई में बढ़ता है और वह स्त्री जनों के मन को प्रसन्न करता है ।

[३]

बच, खरैंटी, पारा यह तीनों वस्तु समान भाग ले कर कूट-पीसकर मिलावे और फिर इसको भैंस के मक्खन

के साथ (मक्खन ताजा इस्तेमाल करें) मिला कर लेप करने से मनुष्य का कामध्वज लोह दण्ड के समान कठोर (दृढ़) हो जाता है। (यह देखा हुआ प्रयोग है।)

[४]

भिलावे की मिंगी, सेवार, कमल का पत्ता, यह सब वस्तुये अग्नि में जलाकर बराबर भाग लेवें और सेंधा नमक मिलाकर बड़ी कटहली के साथ पानी में मिला कर लेप बनाकर कामध्वज पर लगावें। तो कामध्वज घोड़ा के समान कठोर (दृढ़) और मोटा हो जाता है।

[५]

सुअर की चर्बी के साथ शहद को मिलाकर कामध्वज पर नित्य एक महीने तक लेप करें। तो वह स्थूल, कठोर और लम्बा हो जाता है।

[६]

असगंध, सतावरी, कूट, जटामांसी और कटेहली का फल वह सब समान भाग लेकर किसी बर्तन में रख चौगुने दूध और तिलों के तेल में पका कर रखें। इसको मर्दन और भक्षण करने से स्तन, कामध्वज कान और हाथ इन सबको वृद्धि होती है।

[७]

मूसली के चूर्ण को घी के साथ साथ मिलाकर

लेप करने से कामध्वज में कठोरता उत्पन्न होती है।

[८]

पीपल, सेंधा नमक, दूध, मिश्री इन सबको मिलाकर लेप करने से भी कामध्वज कठोर हो जाता है।

[९]

जटामासी, बहेड़ा, कूट, असगंध, शबारी यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर तेल में पकाकर लेप करने से कामध्वज अवश्य स्थूल हो जाता है।

[१०]

पारा, असगंध, हल्दी, गज पीपल और मिश्री यह सब वस्तुये समान भाग लेकर जल के साथ खूब महीन पीसकर (घोटकर) एक महीने तक किसी बर्तन में रखकर मुँह बन्द करके रखा रहने दे। फिर इसका लेप करे तो रति सेवक, कान और स्तनों की वृद्धि हो।

[११]

दोनों हल्दी, कमल, केशर और देवदारु इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर रतिमन्दिर पर लेप करने से स्त्री का कामाशय संकुचित हो जाता है।

[१२]

धाय के फूल, त्रिफ़ला, (हर्र, बहेड़ा, आंवला)

जामुन बृक्ष की छाल, लोह सार, घी, मुलहठी इन सभी वस्तुओं को कूट-छानकर लेप करने से बूढ़ी स्त्री भी सुकुमारी के समान बन जाया करती है,

[१३]

नील कमल, कटेली, बच, काली मिर्च, कन्नेर आसन हल्दी इन सब वस्तुओं को मिलाकर रतिमन्दिर पर लेप करने से स्त्री का कामालय तुरन्त (तत्काल) संकुचित हो जाता है।

[१४]

वीर बहूटी को पीसकर स्त्री अपनी रति निकेतन पर लेप करे तो, उसका कामालय कठिन और गाढ़ हो जाता है। इसमें संदेह नहीं है।

[१५]

नीम के पत्तों को जल में डाल कर औटाकर काढ़ा बनाके उस काढ़े से रति मन्दिर को धोवे अथवा नीम, हल्दी, घी, काला अगरु और गूगल इन सब बस्तुओं को धूप बनाकर रात में कामालय (रति मन्दिर) को धूप देने से स्त्री पति को प्रसन्न करती है।

[१६]

नीम के पानी में कामालय को स्त्री जन धोकर नीम की छाल का लेप करें तो बहुत काल तक के लिए कामालय की दुर्गन्ध दूर हो जाय, इसमें संशय नहीं है!

[१७]

ढाक की भस्म और हरताल की भस्म को पानी के साथ पीसकर लेप करते रहने से स्त्रियों के कामालय के मैदान में रोम कभी नहीं जमते हैं।

[१८]

हरताल की भस्म १ भाग, शंख की भस्म ५ भाग सब तरू (पिलखन) की भस्म ५ भाग इन सब वस्तुओं को लेकर केले के जल में मिलाकर-सानकर किसी पात्र में रखे और लगातार सात दिन तक इसका कामालय के मैदान पर लेप करे। इससे कभी रोम नहीं जमते हैं।

[१९]

हरताल, शंख चूर्ण, मजीठ केसू की भस्म यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर जल के साथ मिलाकर लेप करने से रोम नष्ट हो जाते हैं।

[२०]

उपरोक्त दोनों वस्तुओं को खारे जल के साथ पीसकर धूप में बैठकर लेप करने से शीघ्र ही भग भाग पर उगने वाले रोम उखड़कर अलग हो जाते हैं।

[२१]

सुगाड़ी के पेड़ के पत्तों को काटकर रस निकालकर उसमें गंधक पीसकर धूप में बैठकर लेप करने से काम-

लय के मैदान में जमे रोम शीघ्र ही उड़ जाते हैं।

यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदितं, कार्कोऽगनानां सदा।
नीयतिद्रवता तथापि झटिति स्त्री कामना संगमे॥
तस्माद्भेषजस प्रयोग विधिना संक्षेपतो द्रावणं।
किंचित्पल्लबयामि नीरजदृशां प्रीत्या परं कामिनाम्।

यद्यपि पुरुषों से स्त्रियों में अठगुना कामवेग होता है, किन्तु फिर भी स्त्रियाँ पुरुष के संगम से शीघ्र स्खलित नहीं होती है। अतः स्त्रियों को स्खलित करने वाली औषधियों का वर्णन संक्षेप में किया जाता है। जिसके द्वारा कामिनियों और कामी जनों को अत्यन्त प्रसन्नता (आनन्द) प्राप्त होती है।

१—सिंदूर, इमली के फूल, शहद इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर लेपकर स्त्री के साथ संगति करे तो स्त्री शीघ्र स्खलित हो जाती है।

२—त्रिकुटा (सोंठ, मिर्च, पीपल) के चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर कामालय के अन्दर रख देवे और फिर पुरुष प्रसंग करे। तो इस योग के कारण स्त्री एकदम द्रवीभूत हो जाती है। यह योगराज सदा सिद्धि देने वाला निहारा गया है।

३—पीपल, चन्दन, कटेहली, पकी इमली इन सब वस्तुओं को लेप कामध्वज के ऊपर करने से स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं।

४—अगस्त के पत्तों का रस निकाल कर उसमें शहद और सुहागा (बोरेक्स) पीसकर मिलावे और इसका लेप बनाकर कामध्वज पर लेप करके जो पुरुष स्त्री के साथ प्रसंग करते हैं, तो इस योग के कारण स्त्री शीघ्र ही स्खलित हो जाती है।

५—लोध, धतूरा, पीपली, कटेहली, पीपल मूढ़ इन सब वस्तुओं का चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर काम पताका पर लेप करने के पश्चात जो मनुष्य स्त्री से प्रसंग करता है, तो स्त्री अत्यन्त शीघ्र स्खलित हो जाती है।

६—उड़द, मिर्च, मुलहठी, पीपल इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर असगंध के रस के साथ मिला कर पीस लेवे। इस लेप को जो पुरुष अपने कामास्त्र पर लेप करके जिस स्त्री के साथ प्रसंग करे वह स्त्री अति शीघ्र स्खलित हो जाती है।

७—बेल का फूल, मुण्डी का फूल, कपूर इन तीनों औषधियों को बारीक पीसकर कामास्त्र पर लेप करने से प्रसंग करने में स्त्री शीघ्र द्रवित हो जाती है।

८—केतकी के फल और जड़ तथा पीपल, काली-मिर्च, शहद, गोरोचन इन सब वस्तुओं का लेप बना-कर कामास्त्र पर लेप लगाने से स्त्री स्खलित हो जाती है।

९—काली मिर्च,धतूरे के बीज,पीपर लोध इन सब को पीसकर महीन चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर कामपताका पर लेप करे तो कामी पुरुष रति युद्ध में कष्ट से जीतने योग्य स्त्री को भी अवश्य पराजित कर सकता है ।

नोट-उपरोक्त नौ योग स्खलित करने के लिखे गये हैं इन सबको करने से प्रथम लेप आदि को नीचे लिखे इस मन्त्र से योग सिद्धि के लिये १०८ बार जप कर अभिमंत्रित करके प्रयोग करे । मंत्र यह है ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय उड्डामरेश्वराय । स्त्रीण मद द्रावय द्रावय ठः ङः इति द्रावणम ।।

नोट—इस पुस्तक के अन्दर जितने तंत्र-मंत्र-यन्त्र आदि अथवा औषधियों के योग जो लिखे गये हैं वह सब इन्द्रजाल व दत्तात्रेय तंत्र आदि पुस्तकों में से अनुवाद करके संग्रह किये गये हैं । इनमें अनेक प्रयोग आयुर्वेद ग्रंथों से संग्रहीत किये गये प्रतीत होते हैं—अथवा यह भी संभव है कि किसी अन्य यन्त्रान्तर से इस प्रकार की तांत्रिक पुस्तकों में लिये गये हों । यह संग्रह प्राचीन हस्त लिखित प्रतियों में भी प्राप्त होता है । अतः हमने भी कुछ तब्दीली न करके अनुवादित करके संग्रहीत कर इस पुस्तक में संग्रहीत

किया है। इसी लिये हमने ज्यों का त्यों यहाँ पर रख दिया है।

इस प्रकार के योग जिनमें कि औषध्रियों का वर्णन दिया गया है, यह कुछ तांत्रिक ग्रन्थों की रचना से भिन्न प्रकार की होती हैं। जिन उपरोक्त बड़ी पुस्तकों से इनको संग्रहीत किया गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब आयुर्वेद के ग्रन्थों से संग्रहीत किये गये हैं, क्योंकि तंत्रों के श्लोकों की रचना कुछ विलक्षण होती है। यह सब वैलक्षण्य तांत्रिक की भाषा का ही है। जैसे हुनेत-खाने-सांपिष्ठा वैष्णव तंत्रों में भी हुनेत क्रिया पद है। जो जुहुयात के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। इसके लिए प्राचीन हस्त लिखित प्रति में स्तनों ष्यारत्यतितौ न चैव, ऐसा पाठान्तर है।

जिस स्थान पर चूर्ण आदि का प्रयोग सिर आदि पर डालना लिखा गया है। उसके लिंये—किसी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में तो शिरसोपरि—ऐसा पाठ है और किसी में मस्तकोपरि ऐसा पाठ है। उत्तमांग'शिरशीर्षमूर्धानामास्तकोऽस्त्रियाम'इत्याम'इत्यमरः

अथ स्तन दृढ़ीकरणं स्तनवर्द्धनं च

अब प्रसंग वश ग्रन्थान्तर से स्तनों के दृढ़ करने तथा बढ़ाने का प्रयोग कहते हैं।

१—अन्डी का तेल, मछली का तेल, कच्चे बेल का रस इन तीनों को मिलाकर स्तनों पर मर्दन करने से स्तन नवीन हो जाते हैं।

२—खंभीरा का रस और कैकड़ा को मिलाकर तेल में डालकर पकावे। फिर उस तेल को ठन्डा करने के पश्चात् यदि स्त्री अपने स्तनों पर लगावे तो स्तन कठिन और पुष्ट हो जाते हैं और गिरे हुए स्तन उठ आते हैं।

३—बूढ़ी स्त्री या कन्या के स्तन यदि ढीले हो गये हों तो सफेद मोथा के फूल गौ के दूध के साथ मिलाकर खूब महीन पीस लेवे और उनको स्तनों पर मले अर्थात् दोनों स्तनों के ऊपर उपरोक्त पिसी हुई औषधि का लेप करे तो वे स्तन जो ढीले हो गये हैं, पुष्ट हो जाते हैं।

४—बच, असगंध के पत्ते, गज, पीपल इन सब वस्तुओं को सम भाग मिलाकर निर्मल (स्वच्छ) जल (पानी) से पीसकर विधियुक्त स्तन मन्डल पर लेप करे। इस लेप के करने से गिरे हुए स्तन आम के फल तथा ताल फल के समान ऊँचे उठ आते हैं।

६—गँभीरी के पत्तों का रस निकाल कर जितना रस हो उतना ही तिल का तेल लेवे और

फिर इन दोनों के बराबर ही जल ले ले। फिर इन सबको अर्थात् गंभीरा के पत्तों का रस और तिल का तेल कड़ाही में डाल आग के ऊपर रखकर औंटा लेवे जब यह रसायन औटते-औटते पानी और रस जलकर केवल तेल मात्रा ही शेष रहे। तब उस तेल को निकाल कर किसी बर्तन में (शीशी में) भरकर रख लेवे। इस तेल को स्तनों पर लेप करे तो स्तन लोहे के समान कड़े हो जाँय।

लाल स्याही बनाने की रीति

सज्जी, ऐलूआ और कत्था इन तीनों को मँगाकर अलग अलग कूट कर पानी में मिला कर ताँबे से बर्तन में कत्था का पानी चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे आग जला दो। जब उबाल आने लगे तब सज्जी का पानी और ऐलूआ उसमें मिला दो, जब तीनों एक हो जायें तब नीचे उतार लो इस प्रकार लाल स्याही तैयार होगी।

अंग्रेजी नीली स्याही

सल्फेट और इंडिगो को पानी में घोलने से नीली स्याही बन जाती है, यदि रंग गहरा न चाहो तो पानी अधिक डाल कर पतली कर लो।

हरी स्याही

मैथालय ग्रीन डब्ल्यू एस० ६६ ग्रेन, शुगर १६२२ ग्रेन, डिस्टिल्ड वाटर १६१।। ग्रेन, सबको मिला कर १ औंस ठंडे पानी में डालिये और दो घंटे तक एक तरफ रख दीजिये, फिर उसमें पानी मिला दीजिये. जब कुछ गरम हो, तब उसमें खाँड डालिये और उसे तब तक हिलाइये, जब तक कि वह सब घुलकर एक रस न हो जाए। बस फाउन्टेन पेन की हरी स्याही बनकर तैयार हो जायेगी।

पत्थर पर सुनहरी मुलम्मा

शोरा छह भाग, एलुआ रेजिया छत्तीस भाग में गलाकर एक भाग रांगा साफ मलकर सलफर तीन भाग, आयल आफ टरपेन्टायन में मिलाकर धीरे-धीरे खरल में घोटा जाये यहाँ तक खरल में घोटा जाए कि सख्त हो जाय फिर उसमें आइल आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिलाकर काम में लावें।

बिना कल चाँदी का मुलम्मा

दो तोले नाइट्रेट सिलवर को पानी में भिगो दो जब गल जावे उसमें हाइपोसलफेट डाल दो जब यह भी गल जावे तो पानी में स्पंज भिगोकर जिस चीज पर

मुलम्मा करना चाहो उस पर खूब रगड़ो थोड़ी देर में चांदी का बहुत उम्दा मुलम्मा बन जायेगा ।

सोने की चीज को चमकाना

गेरू दो हिस्सा नौसादर एक हिस्सा । दोनों को पानी के साथ पत्थर पर पोतो फिर सोने की चीजों पर लगाकर आग पर रखकर सुखा लो । धुआं बन्द होने पर निकाल कर ठंडे पानी में बुझाओ फिर साफ पानी से धोकर और पिसे गेरू में घिसकर उन चीजों पर लगाओ और आग पर सुखाओ फिर बुरश या साफ कपड़े से पोछ कर चमका दो ।

नीलम बनाना

पोटाश ४६०८ ग्रेन तथा आक्साइड आफ कोबाल्ट ३८ ग्रेन दोनों को मिलाकर आग पर चढ़ा दो तो नीलम बन चमका दी ।

हीरा बनाना

सिलिका आठ औंस, कारबोनाइट आफ पुटाश २४ औंस, दोनों को मिलाकर गरम कर लो फिर ठंडी करके उसको डाइल्यूटेड नाइट्रिक ऐसिड में डाल दो, जब खदकना बन्द हो जाय तो पानी को ऐसिड से धो डालो तथा सुखा कर कारब्रोटेड बारह औंस मिला लो

और एक औंस सुहागा मिलाकर चीनी के खरल में घोट डालो और गरम करके दो तीन बार बुझा लो अन्त में शोरा डाल कर रख दो। बस हीरा बन जायेगा।

फिरोजा बनाना

आक्साइड आफ कोवाल्ट दस ग्रेन, ग्लास आफ ऐन्टीमनी २४ ग्रेन, पोटाश ३१ ग्रेन इन सबको आग पर पिघला कर ठंडा कर लो, बस फिरोजा बनाने की यह सरल रीति है।

पुखराज बनाना

पोटाश १०५ ग्रेन, ग्लास आफ एन्टीमनी ४० ग्रेन, एपिल आफ केस एक ग्रेन, इन सबको आग पर चढ़ा दो तो पुखराज बन जायेगा।

नेवला दिखाई देना

मङ्गलवार के दिन मरे हुए नेवले के मुख में कपास का बीज लाकर दे फिर निकालकर बो दे उससे जो रूई पैदा हो उसकी बत्ती बनाकर रात्रि में जलावे तो चारों ओर नेवले ही नेवले दिखाई देंगे।

बिना आग का ज्वार भूनना

थू के दूध में थोड़ी सी ज्वार भिगोकर छाया में सुखाकर रख लो जब खेल दिखाना हो तब उसको धूप

दिखाओ तो वह खिल उठेगी। ऐसा मेरा पक्का विश्वास है।

गरम जंजीर को हाथ से खींचना

पहले हाथों में घीग्वार का अर्क या मुर्गी के अंडे की जर्दी या मुलहठी पानी में घिसकर लगा लो। फिर जंजीर खूब गरम करके किसी जगह पर लटका दो, फिर थोड़ा सा तेल उस पर छोड़ दो फिर पोले-पोले हाथ से खींचो हाथ कभी न जलेगा।

बिना रंग के पानी को नीला करना

एक पानी भरे गिलास में पीसंयेट आफ पोटाश की थोड़ी-सी बूँद डाल दो, दूसरे में सल्फेट तथा आयरन को डाल दो। अब दोनों गिलासों को एक जगह मिला दीजिये तो गहरा नीला रङ्ग बन जायेगा।

सोने के वर्क बनाना

असली सोना लाकर बारीक तार खिंचवा लो तथा जितना चाहो उतने-उतने वजन के साँचे में टुकड़े कटवा लो। इन टुकड़ों को हथौड़े से जितना बढ़ा सको चौकोर बढ़ा लीजिये फिर इनको हिरन की खाल की एक एक तह में रख दो फिर एक चौरस पत्थर पर एक एक तह वाले थैले में रक्खो हथौड़े से चौकोर बढाओ तत्पश्चात

उनको खोलकर कागज पर लगाओ तथा गड्डियाँ बना डालो। बस वर्क बनाने की सरल रीति यही है। इस प्रकार के चाँदी के वर्क भी तैयार हो सकते हैं।

मुलम्मा करना

असली चाँदी पाँच भाग, नमक का तेजाब सत्रहवाँ भाग, शोरा का तेजाब बीस भाग इन सबको बड़े चीनी के बर्तन में रक्खो, फिर सोना डालकर आग पर रखकर पिघलाओ। जब धुआँ निकलना बन्द हो जाए तो दूसरे बर्तन में उल्टा कर ठंडा करने को रख दो थोड़ी देर बाद जिस वस्तु पर मुलम्मा करना हो उसके तार में बाँध कर बर्तन में लटका दो तथा नीचे आग लगा दो। ऐसा करने से मुलम्मा चढ़ जायेगा। फिर धोकर साफ कर डाले।

लोहे की नीली मोहर

शलेक दो भाग, डियामेरेजट दो भाग, व रंग एक भाग, वैनिस टरपेन्टाइन एक भाग, अल्ट्रामेरीन तीन भाग। इन सबको मिलाकर बनाओ अगर हल्का नीला चाहो तो शुद्ध सल्फेट एक भाग और मिला दो।

गुलदस्ता हरा रखना

ताजा फूलों का एक गुलदस्ता बनाओ और उस

पर पानी में कारबोनेट आफ सोडा मिलाकर छिड़कते रहो तो गुलदस्ता बहुत अर्से तक हरा भरा बना रहेगा।

कपड़े पर की चर्बी दूर करना

लाइकर अमोनिया और अल्कोहल इन दोनों को बराबर लेकर मिलाओ। कपड़े के नीचे ब्लाटिंग पेपर रख लो, फिर स्पंज के टुकड़े इन दो चीजों से तर करके दाग पर खूब फेरो तो चर्बी निकल जायेगी तथा नीचे लगा कागज सोख लेगा।

लोहे को गलाना

इस्पात का एक टुकड़ा आग पर खूब तपाओ। जब लाल हो जाए तो थोड़ा गन्धक डाल दो ऐसा करने से लोहा पानी हो जायेगा।

बालक कवि होवे

बच का चूरन पीस के पिये दूध के संग।
खीर भात भोजन करे कविता करे निशंक ॥

"ॐ सरस्वत्यै नमः" इसका प्रतिदिन १०८ बार जप करे जाए।

काला रंग बनाना

एक गिलास में डाईल्यूट हाईड्रोफोस्त आफ एमोनिया भर दो और दूसरे में एसीटेट आफ लीड का अ

धर दो फिर दोनों को एक जगह मिलाने से काला रंग बन जायेगा।

एक अंगूठी और जले हुये रूमाल को साबित करके डबल रोटी से निकालना

दो अँगूठियाँ और दो रूमाल एक ही सूरत के लो इनमें से एक अँगूठी को एक रूमाल के किसी कोने में बांधो और डबल रोटी गूँथे हुए आटे में रखकर तन्दूर में पका लो। जब तमाशा करना हो तो यह डबल रोटी अपने एक साथी को दे रक्खो कि छिपाये रहो। फिर समाज में आकर दूसरा रूमाल, जो पहले अँगूठी और रूमाल के समान हो तमाशाइयों को दिखाकर, जलाकर और उसकी राख बन्दूक में भरकर फायर कर दो। बाद में तमाशा देखने वालों से एक डबल रोटी माँगो तो तुम्हारा साथी बाजार की तरफ जाकर लौट आवे और डबल रोटी तमाशा करने बाले को देवे तथा तमाशा करने वाला वह रोटी तमाशा देखने वालों में से किसी एक आदमी को तोड़ने की आज्ञा दे दे। जिस समय वह आदमी डबल रोटी तोड़ेगा तो उसके अन्दर वह रूमाल अँगूठी सहित निकल आवेगा देखने वाले आश्चर्य करेंगे।

कलाबत्त बनाने का सहज रीति

पालिस (विशुद्ध) चाँदी का जितना चाहे उतना

पतला व मोटातार जन्त्री में खींचकर और बाद में हथौड़े से पीटकर चपटा कर लोहार इलैक्ट्रिक बैट्री, अर्थात् विद्युत यन्त्र के जरिये पतला या मोटा सोना चढ़ाना चाहो चढ़ा लो और फिर उसको पीला करके बटे हुए पीले रेशम पर चढ़ा लो, कलाबत्तू बन जाएगा।

कलाबत्तू बनाने की दूसरी रीति

केवल चाँदी की कड़ी बनाकर ठोकना या और किसी चीज से ठोककर खड़बड़ी कर दे, फिर उस पर पारा लगाकर मोटा या पतला सोने का पत्तर लपेट कर आग में धर ताव दे इससे पारा उड़ जावेगा। सुनहरी पत्तर चाँदी से लिपटा हुआ रह जावेगा। अगर पत्तर कम हो तो उस रीति से जितना चाहे उतना लगा दो फिर उसकी कड़ी और बारीक सलाइयाँ बनाकर जन्त्री से तार खींचकर जितनी जरूरत हो उतनी लम्बी कर ले और हथौड़े से चपटी करे। पींछे उसको लेप और देकर चमका दे फिर सटे रेशम पर तार को चढ़ा दे। इस रीति से कलाबत्तू बनाने में परिश्रम बहुत नहीं होता।

अंडे का नाच तथा जल पर तैरना

मुर्गी अथवा हंस का, अंडा लेय मँगाय।
किंचित् पारा देय भर, सूक्ष्म छेद कराय॥
बन्द करे जब छेद को ऊपर मोम लगाय

जासे अंडा रस कहीं बाहर न निकल जाय ।।
यह सब धर राखे जतन पहले अपने पासा ।
जान सके नहीं कोई यह फिर करे तमाशा ।।
खेल करने के समय फिर कांच रकेबी लाय ।
थोड़ी आँच जराय के गरम करावे ताय ।।
अंडा को गरम कर धरे रकेबी मांहि ।
धरत धरत 'नाचन लगे देखे वही सराहि ।।
एक रकेबी गरम जल फिर देवे भरवाय ।
छोड़े तब अंडा यही, सब को वही दिखाय ।।
छोड़त ही तैरन लगे अचरज की यह बात ।
विस्मित सब देखन लगे धर होठन पै हाथ ।।

कुएँ में डाली अँगूठी को कबूतर में से निकालना जो कि बोतल में पैदा हुआ है

एक ही तरह के दो अंगूठी लो, इनमें से एक अँगूठी को कबूतर के गले में बाँध दो और काली शीशी काटकर उसमें बन्द कर दो तथा इसका मुँह सरेस आदि से बन्द कर दीजिये। जब खेल दिखाना हो, तब उसी बोतल को मेज पर रख दो फिर दूसरी अँगूठी को किसी आदमी को देकर कहो कि इसको कुएँ में डाल आवे। अब ऐसी बातें करो कि "यार सचमुच डाल आये। भला अब कैसे निक-

लेगी पर खैर देखो मैं परिश्रम करता हूँ शायद वापस आ जाए।" यह कहकर बोतल तोड़कर कबूतर निकाल दो। कबूतर के गले में अँगूठी को देखकर सब लोग ताज्जुब करेंगे।

देखते ही देखते एक पासे के दो पासे कर दिखाना

एक ही लम्बाई के दो पासे, जिसमें एक ठोस और दूसरा पोला हो टीन या लकड़ी के बनाओ। मगर पोला पासा इस कदर पोला हो कि जिसमें दूसरा ठोस पासा उसके अन्दर चला जावे। जब तमाशा दिखाना हो तो पहले ठोस पासे को पोले पासे के अन्दर छिपा दो, इसके बाद तमाशा देखने वालों से कहो कि यह एक पासा है, हम इसको रूमाल में रखते हैं। जब तुम पासे को रूमाल में रक्खो तब पहले पासे के अन्दर का ठोस पासा रूमाल ही के अन्दर से निकाल कर दो पासे कर दिखाओ बस इसी तरह दो पासे का एक पासा कर सकते हो।

सब्ज मोम बनाना

जगार एक औंस, मोम असली दो रतल, सौन रस इसप्टिराइन पाँच रतल और कुछ सुगन्धित तेल डालने से उम्दा सब्ज मोम बनेगा।

ताँबे का पानी बनाना

आधा किलो नीला थोथा बारीक पीसकर उसमें छह मेजर पानी डाल दो तथा छानकर चीनी के बर्तन में भर दो और उसमें आधा पाव सज्जी का तेल डाल दो। अब इसमें ताँबा डालो तो ताँबे का पानी हो जायेगा।

जले हुये रूमाल का बन्दूक का फायर होते ही साबूत होकर बोतल के अन्दर से निकालना

एक सफेद बोतल लेकर उसकी पेंदी काट डालो और उसकी पेंदी के बीच एक बारीक सूराख करो। इसके बाद एक छोटी मेज डेढ़ फुट लम्बी चौड़ी और ८ इंच ऊँची बनाओ और मेज के तख्ते की सतह धरातल के बीचोबीच एक गोल सुराख आर-पार इस अन्दाज से बनाओ कि उसमें ऊपर बयान की हुई बोतल पेंदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसकर खड़ी हो जावे। जब तमाशा करना चाहो तो पहले एक बड़ी मेज के चारों तरफ चार इंच लम्बी लटकती हुई रंगी कपड़े की झालर (परदा) लगाओ बाद में इस पेंदी कटी हुई बोतल को छोटी मेज के सुराख में पेंदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसाकर खड़ा करो फिर एक रूमाल उसके नीचे रखकर एक बारीक रेशम के सूत का एक सिरा

उस रूमाल के बीच में टाँग दो और दूसरा सिरा बोतल के अन्दर पेंदी के बीच से डाल बोतल के बीच वाले सुराख की राह बाहर निकाल कर अपने साथी को (जो जादू की झोपड़ी में छिपा बैठा है) दे दो इसके बाद तुम भी एक दूसरा रूमाल जो कि पहले रूमाल की सूरत का है समाज में दिखाकर जला दो और उसकी राख बन्दूक में भर वन, टू, थ्री की आवाज देकर फायर कर दो तो तुम्हारा साथी बन्दूक का फायर होते ही थ्री की आवाज के साथ उस रेशम के सूत को जल्दी मगर सहारे से खींचेगा तो यह पहला रूमाल रेशम की डोरी के कारण बोतल में आ जावेगा।

काँच के प्याले में चुरट का धुआँ फूँकने से घूमता रहे

काँच के दो गोल जोड़े (पल्ले) होते हैं। जब वे दोनों पल्ले जोड़े जावें तो एक पूरा गोला बन जाता है। अब एक पल्ले में सज्जी और सोडा पानी में मिलाकर लगाओ और दूसरे में हाइड्रोक्लोरिक एसिड (नमक का तेजाब) का लेप करो फिर दोनों पल्लों को जोड़ दो तो उन तेजाबों के संयोग से गोले में गुब्बारा उठेगा। तुमको चाहिये कि इसी मौके पर चुरट का धुआँ भी छोड़

दो, सो तमाशा देखने वालों को गोले के अन्दर चुरट का धुआँ घूमता दिखाई देगा।

काली लाख

बेनिस टरपेन्टाइन ग्यारह तोले, शैलेक ३२ तोले, कोलोफनी डेढ़ तोला और अन्दाज का कागज। इन सब को टरपेन्टाइन के तेल में मिलाकर तैयार कर लो।

चाँदी के जेवरों से काले दाग दूर करना

क्लोरेट आफ लाइम में थोड़ा-सा पानी मिलाकर कंघी या बुरुश से धो डालो, जेवर चमकने लगेगा।

जर्मन सिल्वर बनाने की विधि

लोहा एक भाग, निकिल दस भाग, ताँबा बीस भाग सीसा दस भाग सबको मिलाकर गला दो, बहुत सुन्दर जर्मन सिलवर बन जायेगा।

मुहर के वास्ते नरम लाख

जरद राल एक भाग, सख्त चर्बी एक भाग, बैनिस टरपेन्टाइन एक भाग और जैसा रंग करना हो वैसा रंग डाल कर धीमी आग में पकावें।

सोने को सफेद करना

शोरा २ औंस, फिटकरी १ औंस, नमक १ औंस इन सब को बारीकपीसकर मिला लो और जिस सोने को

सफेद करना हो उसे पानी में भिगो कर ऊपर लिखे हुए चूर्ण में डुबाओ। पीछे ईंट या मिट्टी का ठीकरा ले ऐसा गरम करो कि लाल हो जाए, तब उसके ऊपर सोने को चिमटे से पकड़े रहो जब तक लगे हुए चूर्ण का पानी सूखे तब तक उसको दूसरी तरफ फिराओ। जब सूख जाये, तब सोना जर्द रंग के जैसा दिखाई देगा उसको साफ ईंट पर रखकर ठंडा कर लो, फिर एक बड़ी मूस लेकर उसमें साफ पानी, एक मुट्ठी पिसा हुआ नमक और पिसा हुआ टार्टर डालकर ७-८ बूँद नौसादर के तेजाब को टपका दो और जोश देकर सोने को उसमें उस समय तक डाल रक्खो जब तक वह सफेद न हो फिर उसको बाहर निकाल कूँची से धोकर साफ कर लो।

तलवार जोरदार करना

तेजाब फारूख ८ तोले और गरम पानी चार तोले मिला कर कर तलवार को ताव देकर उसमे बुझाओ तो तलवार जौहरदार हो जाएगी।

पन्ना बनाना

आक्साइड आफ क्रोमियम दो ग्रेन, आक्साइड आफ कापर दो ग्रेन, सबको गलाकर धीरे-धीरे ठन्डा कर लो तो पन्ना बन जायेगा।

सुनहरी स्याही

हरताल तबकिया चार तोले, सोने के वर्क ४२ तोले अक्षीर चौथाई तोला अन्डे की जरदी चार तोले इन सबको घोटकर गर्म पानी में मिला लो। थोड़ी देर पीछे जब ऊपर निथरकर पानी आ जाये तब उसे धीरे-धीरे निकाल लो। नोंचे की गोंद को कीकर गोंद में आठ दिन तक घोंटने के बाद शीशी में भरकर चार-पांच दिन धूप में रक्खो। इस तरह तैयार होने पर लिखो तो उम्दा सुनहरी स्याही तैयार हो जाएगी।

मूंगे को साफ करना

हाइड्रोक्लोरिक एसिड को पानी में मिलाकर काम में लावें अथवा एक बुरश से मूंगे को ताजे पानी में नमक मिलाकर धो दें और उसमें थोड़ा-सा साबुन का घोल मिला दो। क्लोराइड आफ़ लाइम मिलाने से अधिक सुन्दरता आ जाती है, उसमें धोकर धूप में रख देने से मूंगे सूख कर साफ-साफ हो जाते हैं।

कपड़े पर निशान करने की स्याही

जूंस आफ सुंलोस आधा बोतल, गोंद २॥ तोले। इन दोनों को मिलाने से अमिट स्याही बन जाती है, मोरडैन्ट मिलाने की कुछ आवश्यकता नहीं है। धोबी से कोरे कपड़े धुलवाने में यह स्याही बहुत काम देती है।

दूसरी विधि

सोने का वर्क लगाकर शहद के संग पिसवाकर एक कटोरे में रखकर पानी भर दें और कटोरे को खूब हिलाकर पानी गिरा दे नीचे जो पानी रह जावे उसको निकाल कर ऊपर की सी क्रिया दो बार करें फिर उसमें गोंद मिलाकर स्याही तैयारकरलें। इससे जो अक्षर लिखे जायेंगे वे सोने के समान होंगे। जो इन अक्षरों को पढ़ेगा वह बहुत प्रसन्न होगा।

लाल बनाने की रीति

पुटास १४४० ग्रेन, आक्साइट आफ मेगनीज ३६ग्रेन। इन सबको मिलाकर आग पर गला लो तथा चरख पर चढ़ाओ तो नकली लाल बनेगा।

हीरे की परीक्षा करना

हीरे की पुश्त पर जरा-सा असली मोम लगादें। अगर हीरा असली होगा तो पहले जैसी चमक देगा और यदि नकली होगा तो चमक कम हो जाएगी।

सब्ज और काली रोशनाई

जैकुट और माजूफल पन्द्रह भाग को दो सौ भाग पानी में चढ़ाकर एक घंटे तक खूब जोश दो, पीछे इसको छानकर पाँच भाग सल्फेट आफ आइरन और

चार भाग लोहे का चूरा डालकर मिलाओ, इसमें आधी बोतल नीम का पानी, तीन भाग सलफेरिक ऐसिड इन सबको मिलाकर तैयार करलो। यह रोशनाई लिखते समय हरी मलूम होती है परन्तु पीछे स्याह होती जाती है। यह लिखने में अच्छी होती है।

लड़ी जोड़ने की लेई

अवलाइड़ आफ आइरन चूरा कलई मंगाय।
पीस सान के नीर में, लड़ी लेहु जुड़वाय।।

पिस्सुओं को मारना

रात के समय एक बड़े बरतन में पानी भरकर उसमें दो बूँद सरसों का तेल डालकर और एक बूंद मिट्टी का तेल डाल दो फिर अपनी खाट के नीचे उस पानी से भरे हुये बर्तन को रख दो। सुबह पिस्सू उस पानी में मरे हुए मिलेंगे।

क्रोक्स सीमेंट

क्रोक्स सीमेंट को थोड़े से तीसी के तेल में मिला लें, अच्छा जोड़ने का मसाला तैयार हो जाता है।

कलाबत्तू से सोना चाँदी निकालना

पुराने कलाबत्तू को दीपक जलाकर ताँबे के चौड़े बर्तन में रखकर एक पत्थर से पीस लो। ऐसा करने से

रेशमी राख कलाबत्तू से अलग हो जाएगी, पीछे जल में धोकर साफ करलो और मुस में लगाकर लकड़ी से टुकड़े बनाओ तथा उनको काट-काट शोरे के तेजाब में डाल दे और शीशी को बालुका यंत्र में आधी गाड़कर उसे गरम करो तो इन टुकड़ों का पानी हो जायगा, जब खदकना बन्द हो जाये तब शीशी को निकाल लो, उसके पेंदे में जो काली गाद जम जाएगी उसके ऊपर से एक दूसरे चीनी के प्याले में तेजाब निथार लो और उस धोये हुए पानी को उस निथारे हुए पानी में डाल दो फिर उस काली तलछट को सुखाकर भुस में गलाने से सौ नम्बर का खालिस सोना नकल आवेगा फिर उसको धोकर निकाले हुए पानी और तेजाब में और थोड़ा पानी मिलाकर उसमे साफताँबे के थोड़े टुकड़े डाल दो ओर फिर उस शीशी को बालुका यन्त्र में रखकर आग दो, जब पानी का खदकना बन्दहो जावे तब नीचे उतार लो ।ताँबा गलकरउसमें मिलजायेगा और गाद नीचे बैठ जायेगी । ठंडा हो जाने पर तेजाब को दूसरे चीनी के प्याले में निथार लो । उस नीचे की गाद को पानी से धोकर साफ कर लो और सुखा लो, साफ चाँदी निकल आवेगी ।

मुहर की स्याही

चन्दरस २५ भाग, आयल आफ लवेण्डर २००

भाग, काजल दो भाग, नील एक भाग, इन सबको मिला कर गला लो, मुहर की स्याही बन जायेगी ।

दूसरी विधि

१० ग्राम मेजेन्ट लाकर ६० ग्राम ग्लैसरीन मिला दो मुहर छापने की उम्दा स्याही बन जायेगी ।

तीसरी विधि

ऐसफेल्सर एक भाग, काजल चौथाई भाग इन दोनों को मिला लो और छापने के स्याही के लिए जो अलसी का तेल तैयार किया जाता है उसका डेढ़ भाग उसमें डालकर पकाओ । जब तार बँधने लगे तब स्प्रिट आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिला दो । जितना टरपेन्टाइन कम मिलाया जाएगा, उतनी ही स्याही अच्छी बनेगी । जिस पर एक बार मुहर लगा दोगे फिर वह किसी प्रकार दूर न होगी । ऐसिड या अल्कोहल के डालने पर भी मुहर वैसी ही रहेगी ।

लकड़ी के छेद भरने का मसाला

जापानी तीसी का गरम तेल और तारपीन बराबर आधा स्टार्च मिला दो और स्पंज या ऊन लगाकर छेद बन्द कर दो, अगर उसपर अखरोट की वार्निश करो तो थोड़ा अब्बर मिला लो ।

सोने का रंग हरा करना

नौसादर चार औंस जंगार चार औंस, शोरा दो ग्रेन, इन सबको खरल करके सिरके में मिला आग पर रख दो।

सब्ज रोशनाई

केलसिन्ड एसिडनाइट्रेट आफ कीमका में अन्दाज से पानी मिला दो, सब्ज स्याही बन जायगी।

हाथी दाँत या कप जोड़ने का मसाला

मछली का सरेस एक भाग ह्वाइट उल्लू दो भाग इन दोनों को तीस गुने पानी में गला लो और छानकर आग पर चढ़ा दो। जब छह भाग रह जाये तब तीसवां भाग गमनासिक आधा भाग अल्कोहल आधा भाग और ह्वाइट पत्रक मिलाकर उसमें शामिल करे जब काम में लाना चाहो तब थोड़ा गरम पानी करके जोड़ दो।

संगमरमर जोड़ने की विधि

प्लास्टर आफ पेरिस फिटकरी के पानी में जितना मिल सके उतना मिला लेवे, भट्ठी में पकाकर रख छोड़ें। जब सङ्गमरमर को जोड़ना चाहो तो उसमें पानी मिला कर छोड़ दो। जोड़ के इस मसाले का रङ्ग सङ्गमरमर के समान ही होगा।

पारे को काम के लायक बनाना

पारा रांगा मिलाकर भाई, सम्पा दूध खरल करवाई ।
बनि है तब यह ऐसा पारा, चाहे जो करिये तैयारा ।।

दूसरी विधि

लोहे की मंगवाय कढ़ाई । असली तेल डारिये भाई ।।
पारा डाल पकाओ उसको । पारा जमे उतारो उसको ।।
ऐसा पारा जमिहै भाई । चाहो जो लीजो बनवाई ।।

उपर्युक्त दी हुई दो रीतियों से चाहे जो बेला-बेली कटोरा-कटोरी बनाओ और यदि उनको बहुत कड़ा करना चाहो तो कुछ दिन तक बनी बनाई चीज को नीब के रस में डाल दो तो बहुत कड़ी हो जाएगी ।

मुहर की लाल स्याही

सिगरफ चार भाग, सल्फेट आफ आईरन एक भाग, सूख जाने वाला तेल थोड़ा सा डाल कर खूब मिलावें तो इससे मुहर की लाल स्याही बनती है ।

नीम का स्वाद मीठा लगे

अजवाइन को खाय कर, पीछे नीम चबाय ।
फिर कड़वा लागै नहीं, यह है सहज उपाय ।।

खजाने पर से साँप हटाना

गिरिणा अरु लाय चमेली, श्वेत आक लता में ले मेरीं।
मूली बच अरु लाय कटेरी, सबकू पोस कीजिये ढेरी ॥
पावन लेप कुंकरे जाय, बिच्छू सब जाय पराय ।
बिना रोके ले आय खजाना हीरा अरु स्वर्ण बनाना ॥

दो कड़ी चीजों को पानी कर देना

नाइट्रेट आफ ऐमीनियम' अरु ग्लोवर साल्ट मंगाय ॥
डाल खरल के बीच में ले धीरे घुटवाय ॥
धीरे—धीरे घुटत सो अद्‌भुत अचरज दिखाय ॥
कड़ापन दूर हो पानी सम बन जाय ॥

जुंए भगान की विधि

श्याम धतूरे का रस ले लो । उसमें मरदन करलो ।
वस्त्र एक बीच भिगोलो । सोते समय शरीर पर धरलो ॥
दीन पहर में देखो भाई । जुंआ एक रहने की नाहीं ॥

मेंढक पैदा करने की विधि

भादों में रविवार को, पीला मेंढक लाय ।
उसके माथे दही को, दीजे तिलक लगाय ॥
धूनी गूगल ताहि दे, हँडिया में भरवाय ।
रखिये अपने पास में सूखे पर पिसवाय ॥

वर्षा ऋतु आवे जो, वर्षन लागे नीर।
थोड़ी—सी वह राख ले, गेरे जल नीर।
दो घटे के बीच में अद्भुद दीखे खेल॥
लाखन उपजें मेंढक मचै रेल अरु पेल॥

गरम तेल से हाथ न जले

रजस्वला का लोदू लावे। तामें गदहा मूत मिलावे॥
बगुला की फिर चर्बी लावे। चुल्है चढ़ाकर सबहिं पकावे॥
करे हाथ पर लेप जो य को गरम तेल से जलें न वाको॥

बिच्छू विष निवारण

बीट लाय ढिग राखिये मुरग कबूतर मोर।
आक मूल पिसवाय के धरो पीस एक ठौर॥
बिच्छू काटे जहाँ कहि इसकी धूनी देय।
धूनी लागत विष नशे मन पावत सुख होय॥

आग पर अन्न न सके

लकड़ी बम्बई लेय जलाई। गधा मूत दो उसमें मिलाई॥
जलती आग में दीजे डार। तो अभी अन्न न सिकने पाय।
सो मन लकड़ी देहु जलाय। तो भी अन्न न सिकनेपाय॥

जलती आग पर चलना

केला कन्द भाँगरा लावें। मेढक चर्बी फेर मिलावे।
मन्द आग पर लेय पकाई। पावन लेप अग्नि परजाई॥

लड़के लड़कियों की गणना करना

अगर कोई मनुष्य पूछे कि मेरे कितने लड़के और कितनी लड़कियाँ है तो उससे कहो जितने तुम्हारे लड़के हैं उनको दूना करके पाँच से गुणा कर दो और गुणनफल में जितनी लड़कियाँ हैं उनको जोड़ दो जब वह ऐसा कर चुके तो तुम उससे जोड़ा हुआ अंक पूछ लो। जो ईकाई की ओर का अंक है उतना लड़कियाँ है और जो दहाई की ओर का अंक हैं उतने लड़के हैं बस बता दो।

मच्छर भगाने को विधि

जा दिन मच्छर रात में अधिक दुःख दे देय।
तेल लौंग को खाट पर छिड़कत जाय पलाय॥

खालिस दूध की पहचान

मोजे बुनने को सुई (किरोंसिया) को नोंक को दूध के बर्तन में डूबा दो जो खालिस दूध होगा तो उसकी बूंद सुई की नोंक से लिहटी रहेगी अगर जरा-सा पानी होगा तो बूँद ढलक पड़ेगा।

मकान की दुर्गन्ध दूर करने की विधि

जिस मकान में दुर्गन्ध भर गई होंउसके किवाड़ एकदम खोल दो फिर एक लोंहे के बर्तन को खूब गरम

करके उस पर एक बूंद सिरके का रस डाल दो शीघ्र ही उस मकान की दुर्गन्ध दूर हो जायेगी ।

एक गोली और दो आवाज

शीशे की एक गोली लेकर उसे भीतर से पोली कर लो फिर उसमें चाँदी की बारूद भर के लकड़ी की डाट लगा दो फिर जैसे बन्दूक में गोली को भर कर चलाया करते हैं उसी रीति से उस गोली को भर चलाओ तो एक आवाज मामूली गोली चलातें समय होगी और दूसरी आवाज गोली निशाने लगने के पीछे होगी ।

गुलेल की गोली से आवाज निकालना

एक कागज में थोड़ी सी बारूद चाँदी की और मूंग के बराबर थोड़े कांच के टुकड़े डालकर गोली बनाओ और उस पर गिली मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो। जब तुम गुलेल पर रखकर गोंली चलाओंगे या जमीन पर मारोगे तो लगते ही बन्दूक के समान आवाज होगी।

सिंहनख-विष निवारण

जहाँ सिंह को नख लगे, कीजे यही उपाय ।
खंजा तेल कढ़ाय के, दीजे लेप कराय ।।

दूसरी विधि

लाल नीम अरु सेमर लाय लेय गरम जल सङ्ग पिसवाय।
नख अरु दंत लग्यो जहँ होय लेप किये दुख दूरही होय।।

दन्त कृमि हर विधि

गुँजा की जड़ लाय के कानन में बँधवाय।
बाँधे से कीड़ा डाढ़ के एक एक झर जाय।।

कान का लौर बढ़ाना

सरसों ओंगा और कटेरी, दूध मिलावे इनमें छेरी।
लेप करे लौर लौर में जोई, लौर बड़ी ताही छिन जोई।।

दूसरी विधि

गज पीपल बच कूट मंगावे, इनमें फिर असगंध मिलावे।
भैंस के घी में लेप मिलाय, लेप करत कान बढ़ जाय।।

आँख की रोशनी बढ़ाना

सुन्दर वर्षा ऋतु जब होय, लाय धरे जड़ सहित मकोय।
ताहि तेल में लेय पकाय, एक मास नितप्रति वह खाय।।
वाकी नजर हो जावे ऐसी, हो गिद्ध की दृष्टी जैसी।

आँख की जलन दूर करना

श्वेत सोंठ की जड़ घी में लेय मिलाय।
आँजे आँखन गुण करे, टपकत जल रुक जाय।।

भिलावा विष निवारण

तेल मिलावे लगे, फूट देह जो खाव ।
माख अरु तिल पीस के, ऊपर देहु लगाय ।।

मन की बात जानना

रवि दिन जहाँ जू घुग्घू पावे । ताके काढ़ कलेजा लावे ।
ताको धूप-दीप दे राखे । सोवत नार के हिरदय नाखे ।
गुप्त बात जो मन में होई । ज्यों की त्यों कहे वो सोई ।

मकड़ी का विष निवारण

केशर नाम मंजीठ अरु दोनों हल्दी लाय ।
लेप किये तत्काल ही विष मकड़ी का जाय ।।

मूषक निवारण विधि

सरसों केशर अरु मटर घृत सम भाग मिलाय ।
पीयत विष जाये नशय, इन्द्रजाल यह गाय ।।

पागल कुत्ता विष निवारण

जाटा गुड़ तेल मिलाय । लेप किये कुकुर विष जाय ।।

दूसरी विधि

ओंगा की जड़ लेय मँगाय । पीस शहद संग देव चटाय ।
मुर्गी बीट लेप कर दीजे । कुकूर विष तत्काल हरीज ।।

वृक्ष का पतझड़ कर देना

कूकर झिल्ली लाय कर, छाया माहिं सुखावे ।
सोंठ मिरच पीपर लेकर के तीनों कूट रखावे ॥
मेंहदी समफिर घोल नीर में बाँयें हाथ लगावे ।
ताही हाथ सो छुए वृक्ष को, तब यह खेल दिखावे ॥
है फल फूल पात अरु कोपल, सब जर परिह चो धरनी ।
धन्य विधाता कौतुक तेरा, धन्य गुरू की करनी ॥

दाँत के कीड़े को दूर करना

हरड़ा चूर्ण मिलाय के ताम्र पत्र छिन भर भुजवाय ।
गुटका बना दाँत तर दाबे, कीड़ी ठाढ़े सभी मर जावे ॥

वाणी सुधार

पीपर सोंठ बहेंड़ा लाय, त्वच अरु सेन्धा नमक मिलाय ।
गोमूत्र संग पीस पिलावै किन्नर संग सभा में गावे ॥

दूसरी विधि

मिसरी सोंठ अरु शहद मिलाय दिन में तीनबार जो खाय
भिन्न खरल गजवान वह नांगे, कंठ कोकिला सम हो जाय ।

तीसरी विधि

निगुण्डी को चूर्ण कर, तिल के तेल पकावे ।
आटे आही अनोजा औषधि, कोकिला सम सो गावे ॥

रक्तगुंजा कल्प

गुंजा की गति कहत कौतुक चरित अपार।
रावन्ते शिर कहत हैं सब कल्पन को सार॥
मारण तारण वशीकरण राजा मोहन अंग।
उच्चाटन यह कहत हैं बचन सिद्ध दल भंग॥
भूत प्रेत डाकिनी यक्ष बीर बेताल।
गुंजा की जड़ का सुना, कौतुक माया जाल॥
बहु चरित्र अगणित करे, सकल सिद्ध की खान।
जो चाहो सोई करो साधन केर बखान॥
दशमल आनन्द के हैं जुगत गुप्त अरु ज्ञान।
तो सतगुरु सो भेद लख साधों सन्त सुजान॥
अब याके साधन कहत यथा योग्य उपदेश।
जो साधे सो सिद्ध करे, कसर नाय लवलेश॥
पुष्प होय आदित्य को तब लीजे गुंज मूल।
शूकर बाला रोहणी ग्रह सु होय अनुकूल॥
कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय।
चौदह स्वाती शतभिषा पूजा ले वह सोय॥
अर्द्ध निशा कारज मने, को करे संज्ञा खोय।
धूपदीप करलो जो काहू नर नारी विषहोय॥
विष उतरे झट जड़ी जो पीस पिलावे धाय।

जो घिस लावै भाल पर सभा मध्य नर जाय ।।
मान मिले अस्तुति करे सब ही पूजे पाय ।

मेढक विष निवारण

त्रिकुटा अरु चौलाई पिसवावे, छान पिये मेंढक विष जावे

चित्र के रोकने की विधि

बालक पैदा होय जब, ताकी झिल्ली लाय ।
रखिये अपने पास में, पहले ताहि सुखाय ।।
चित्र सारा जाय कर, दीजे खेल दिखाय ।
झिल्ली धर के आग पर, धूँआ देव उठाय ।।
धूआ लागत ही चित्र में, आँसू बहुत दिखाय ।
फिर गूगल की धूनी दीजे, सूखे आँसू अरु सुखलीजे ।।

बहुत चलने की विधि

पहले सेत करारा ढूँढ़े ताकी मूल मंगावे ।
काकमूल जो जंघा सरफों का दोनों सेतु जो पावे ।।
बाँध पोटरी इन तीनन की, जाकी कमर बंधावे ।
चलें पंथ सो जहाँ चलावे पशु पक्षी नहिं पावे ।।
जुनु तन जान जो चूके नहीं, तब यह करे तमाशा ।
कोस पचास जाय फिर आवे, बीच न माँगे बासा ।।

—:०:—

★ ॐ नमः शिवाय ★

वशीकरण मंत्र

लेखक -

तांत्रिक श्री पं० श्रीमणि शुक्ल

प्रकाशक -

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए / २, कक्कड़ नगर इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३ ।

मूल्य : रु० ३५.००

* अनुक्रमणिका *

विषय	पृष्ठ

—::—

जय जय श्री महाकाली

ॐ महाकाल्यै नमः

श्री भूतभावन भगवान शंकर

ॐ नमः शिवाय

श्री रुद्र यंत्रम्

ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय

इसे भोजपत्र में लिखकर तावीज बनाकर बाँधने से शिवजी की विशेष कृपा तथा धन धान्य की वृद्धि होती है ।

श्री भैरव यंत्रम्
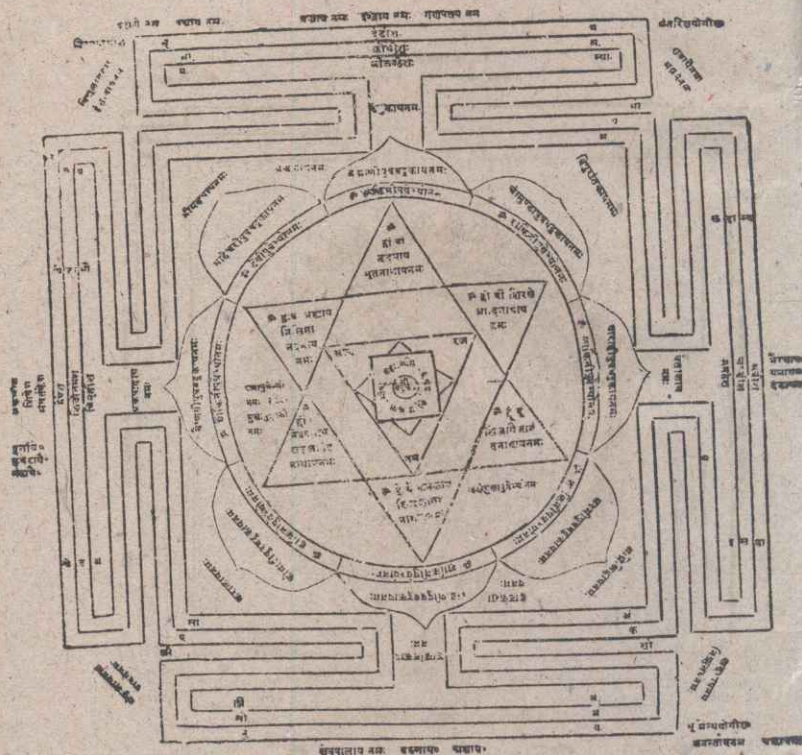
इस यंत्र को भोजपत्र में लिखकर ताबीज में रखकर बांधने से सब प्रकार की बाधायें दूर होती हैं।

श्री गणेशाय नमः

विनम्र निवेदन

मुझे यह "वशीकरण मंत्र" आपके सामने रखते हुये जहाँ प्रसन्नता है वहाँ यह भी मैं जानता हूँ कि मैं यह बड़ा कठिन कार्य कर रहा हूँ किन्तु क्यों कर रहा हूँ ? मैंने बहुत सी वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ीं, बहुत से शास्त्रों का अध्ययन किया है जिनमें वशीकरण सम्बन्धी अनेक अध्याय दिये गये हैं, इन सब पुस्तकों में वशीकरण की विधियाँ तो बतलाई गई हैं किन्तु यह नहीं बतलाया गया कि वशीकरण कब और क्यों करना चाहिये ? मुझे यह बताना नितान्त आवश्यक है।

अन्य कारण मेरे इस पुस्तक को लिखने का यह है कि जितनी भी मैंने वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ी हैं, उनमें मैंने कुछ ऐसी बातें पाई हैं जो कि हमारे धर्म के सर्वथा प्रतिकूल हैं। उन बातों को पढ़कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे बातें ईश्वर कृत हैं ही नहीं अपितु किसी विधर्मी ने उन्हें बनाकर हमारी धार्मिक पुस्तक में इस प्रकार डाल दिया है कि कई बेचारे हमारे भोले भाले सहधर्मी भाई उन बातों को भी ईश्वर की रची अथवा ईश्वर के मुख से निकली हुई समझ बैठे हैं। आवश्यकता है कि संस्कृत के बड़े २ विद्वान इन पुस्तकों का अध्ययन करें। इन पुस्तकों में से जो ग्रहण न करने योग्य बातें हों, जिनमें अश्लीलता की पुट हो और जो ईश्वर की रची नहीं बल्कि दुराचरी मनुष्यों की रची लगती हों निकाल दें और इन पुस्तकों में से अशुद्ध बातें निकाल कर केवल शुद्ध बातों को ही जन साधारण के सामने रखना चाहिये।

संसार में जितनी वस्तुयें हैं यदि आप उन पर ध्यान दें तो आपको लगेगा कि उनमें न कोई हानि है और न कोई लाभ। प्राय: संसार की प्रत्येक वस्तु हानि लाभ से रहित है। आपने अपने जीवन में कई बार ऐसा भी देखा होगा कि एक ही वस्तु जब किसी एक को लाभ पहुँचाती है तब उसी ही वस्तु से एक दूसरा व्यक्ति हानि उठाता है। हम मलेरिया से पीड़ित किसी व्यक्ति को कोनीन देते हैं तो उसको यह कोनीन स्वास्थ्य प्रदान करती है, उसी कोनीन की कृपा से वही व्यक्ति अरोग्य लाभ प्राप्त करता है। यदि कोनीन हम किसी भले चंगे को दे दें तो यही कोनीन वरदान के स्थान पर उसके लिये अभिशाप बन जायेगी। मद्य का हम कितना बुरा कहते हैं और मद्यपान करने वाले को भी दुराचारी की उपाधि प्रदान करते हैं तो क्या वास्तव में मद्य इतना बुरी वस्तु है? क्या वास्तव में मद्य मानव के शरीर को हानि पहुँचाता है? ऐसा नहीं है। जो मद्यपान करता है वह मद्य सेवन की विधि नहीं जानता। वह यह नहीं जानता कि मद्य को क्यों और कब प्रयोग में लाना चाहिये। प्रत्येक वस्तु की अच्छाई बुराई उस वस्तु के ग्रहण करने की विधि पर आधारित है। जब तलवार एक वीर सैनिक के हाथ आकर शत्रुओं और दुष्टों का सर्वनाश करता है, यदि वही एक अनाड़ी के हाथ में पड़ जाय तो उसके अपने ही शरीर की इतिश्री कर देता है। संसार की किसी वस्तु में भी किसी प्रकार की अच्छाई बुराई नहीं पाई जाती। अच्छाई तथा बुराई किसी वस्तु के ग्रहण करने की विधि में है। यहाँ तक कि धर्म को भी यदि उचित रूप में ग्रहण न किया जाये तो वह भी अपना दुष्परिणाम दिखाये बिना नहीं रह सकता। कहने का अभिप्राय यह है कि संसार में जितने भी पदार्थ हैं उनमें किसी प्रकार की कोई भलाई बुराई

नहीं पाई जाती, भलाई बुराई उस वस्तु के उपयोग करने की विधि में है और किसी वस्तु का सदुपयोग किया जाय तो लाभ होता है ठीक यही स्थिति वशीकरण मन्त्रों और विधियों की है, क्योंकि ये विधियाँ और मन्त्र ईश्वर कृत हैं और ईश्वर किसी प्रकार के दुष्कर्म का करने की आज्ञा नहीं देता। अतः जो व्यक्ति इन वशीकरण की विधियों को जानकर इसको दुरुपयोग में लाते हैं उन्हें लाभ के स्थान पर हानि उठानी पड़ती है और साथ ही पाप भी लगता है। मैंने बहुत से ऐसे व्यक्ति देखे हैं जो कि वशीकरण की विधियों द्वारा दूसरों की स्त्रियों को फाँसने का यत्न करते रहते है। उनको यह समझ नहीं आती कि पर नारी संगम करने वाले व्यक्ति को जिस ईश्वर ने दण्ड देने का विधान बना रखा है, वही ईश्वर आपके इस कुकर्म में किस प्रकार सहायक बन सकता है? यदि ध्यान से देखा जाय तो बेचारे उन व्यक्तियों का भी कोई दोष नहीं होता, क्योंकि उनको कुछ पता नहीं होता कि हम जो वशीकरण आदि मन्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं वे मन्त्र वास्तव में हैं क्या? मन्त्रों के सम्बन्ध में तो वे लोग जानते ही नहीं और उनको कुमार्ग पर लाने के लिये पुस्तकों के मुख पृष्ठ ही पर्याप्त हैं। लोग पुस्तकों के मन्त्रों में कुछ ऐसी बातें लिख देते हैं कि बेचारा भोला भाला साधु पुरुष भी इन बातों में आकर कुमार्ग की ओर चल पड़ता है। मैंने वशीकरण सम्बन्धी एक पुस्तक देखी थी जिसके मुख्य पेज पर लिखा था, इस किताब में वशीकरण की वे विधियाँ और वे मन्त्र लिखे गये हैं जिन पर कार्य करने से किसी भी स्त्री को वश में किया जा सकता है। राजे महाराजे, मजिस्ट्रेट आदि को उन मन्त्रों से अपने वश में करना तो बायें हाथ का खेल है…। जब सीधे साधे आदमी किताबों के मुख पृष्ठों को पढ़ते हैं तो

उनमें पापरूपी चिनगारी उसी समय जा पड़ती है। मनुष्य कमजोरियों का पुतला है और यह भी सब जानते हैं कि धर्म की अपेक्षा पाप अधिक मीठा होता है। ऐसी पुस्तकों के कुछ पृष्ठ पढ़ते ही उसकी पाप-वासना भड़क उठती है। सूखे घास पर एक छोटी चिनगारी पड़ने की देर है कि बस वह छोटी सी चिनगारी महा भयंकर ज्वाला का रूप धारण कर लेती है। भोले भाले व्यक्ति ऐसी किताबों को देख तुरन्त खरीद लेते हैं। फिर उन किताबों के लिखे अनुसार कार्य करते हैं। ये अपना समय और धन के नष्ट करने में लगे रहते हैं और ऐसे कामों में लगे रहते से उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वे फिर न इस लोक के रहते हैं न परलोक के और व्यर्थ के उधेड़ बुन में पड़े रहते हैं। अतः आपको साधारण वशीकरण की पुस्तकों की बातों में न आना चाहिए। वशीकरण शास्त्र की जितनी भी विधियाँ हैं वे सब उचित कार्यों के लिये हैं अनुचित कार्यों के लिये नहीं! जो मनुष्य स्त्री वशीकरण के मन्त्रों का प्रयोग दूसरों की स्त्रियों पर करते है वे केवल असफल ही नहीं होते, अपितु पाप के भागी भी होते हैं। अतः आपको यह बात सदैव याद रखना चाहिये कि यदि आप वशीकरण मन्त्रों का दुरुपयोग करेंगे तो आप कदापि सफलता प्राप्त नहीं करेंगे। अतः आपको इन मन्त्रों का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। वशीकरण मन्त्रों का सदुपयोग हम बताते हैं।

वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग अपनी स्त्री पर उचित समझा जाता है। मान लीजिये कि आपका विवाह एक ऐसी स्त्री से हुआ है, जिसकी आपके साथ नहीं पटती, आपका उससे प्रेम है और चाहते हैं कि वह भी आपसे प्रेम करे, किन्तु वह आपसे विमुख रहती है, तो ऐसे समय में आपका उस पर वशीकरण के मन्त्रों

का प्रयोग उचित समझा जाएगा। ऐसे समय में आपके लिए उस पर वशीकरण का प्रयोग करना भी आवश्यक है, क्योंकि इस स्त्री के साथ जो कि आपकी धर्मपत्नी है और आपसे विमुख रहती है, आपको एक दो दिन व्यतीत नहीं करना है अपितु सारा जीवन उसके साथ निभाना है। स्त्री के वशीकरण की रचना इसलिये ही की गई है कि जिससे पति पत्नी को और स्त्री पति को अपने प्रेमपाश में बाँध सके तथा अपने गृहस्थ जीवन को सुख-मय बना सके। अपनी धर्म-पत्नी को छोड़कर किसी अन्य स्त्री पर किया गया वशीकरण अपना कोई प्रभाव नहीं दिखायेगा। यह आप भली भाँति समझ लें।

यह स्थिति राज वशीकरण में है। आपका किसी के साथ मुकदमा चल रहा है और मुकदमे का निर्णय अपने पक्ष में कराने के लिये आप राजवशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करते हैं, किन्तु इन वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करने से पूर्व आपको यह जान लेना चाहिये कि आप झूठे हैं अथवा सच्चे। यदि आप सच्चे होंगे तो आपके पक्ष में निर्णय होगा, किन्तु यदि आप झूठे होंगे तो आपके इन मन्त्रों का प्रभाव अनुकूल न होगा। आजकल वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकों में कुछ दुराचारियों द्वारा अश्लील और गन्दी बातें ठूंस दी गई हैं, और जिनका नवयुवकों तथा भोले-भाले लोगों को पथ-भ्रष्ट करने में कितना बड़ा हाथ है यह नहीं कहा जा सकता। यहाँ मैं केवल दो-चार श्लोकों को उदाहरण के रूप में ही देता हूँ और आशा करता हूँ कि इन उदाहरणों की सहायता से पाठकगण अन्य किसी प्रकार की वशीकरण की पुस्तक में कौन सी बात सत्य है तथा कौन सी मिथ्या इसका निर्णय बड़ी सरलता से स्वयं कर सकेंगे।

स्त्री वशीकरण का एक श्लोक नीचे दिया जाता है, देखिये यह कितना मिथ्या और अश्लील है।

जिह्वामलं दन्तमलं नाशाकर्णमलं तथा।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥

इसका अर्थ है—जिह्वा, नाक, कान, और दाँत का मैल पान में रखकर जिस स्त्री को दे वह वश में हो जावे।

इसी श्लोक में ऊपर लिखा हुआ है 'ईश्वरोवाच' अर्थात् भगवान कहते हैं।

कितना पाखण्ड है! इतने गन्दे और मलिन कर्म को भगवान की आज्ञा कहना क्या भगवान का अपमान करना नहीं है। क्या यह सम्भव है कि सर्व शुद्ध आत्मा इतने भद्दे और मलीन कर्म करने की आज्ञा देगा? पाठकगण! तनिक अपने मस्तिष्क पर बल देकर विचार तो कीजिये कि भला भगवान कभी ऐसे मलीन कर्म की आज्ञा दे सकते है? पुनः सोचें।

स्त्री वशीकरण का एक उदाहरण और लीजिये—

भौमवारे क्षबङ्गं च लिंग छिद्रे विनिक्षिपेत्।
बुधे निष्कास्य तांबूले दद्यात् सा वशगा भवेत् ॥

इसका अर्थ है मंगल के दिन लिंग के छिद्र में लौंग रखे और बुधवार को निकाल ले फिर इस लौंग को पान में रखकर जिस औरत को दे वह वश में हो जाय।

ऐसा लिखने वाले पाखण्डियों से पूछिए तो सही कि क्या ऐसे मलिन कर्म करने की आज्ञा ईश्वर दे सकता है? एक और उदाहरण देखिए जो कि पुरुष वशीकरण का है—

गोरोचनं योनिरक्तं कदली रस संयुतम्।
ऐभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिवश्य करं परम् ॥

इसका अर्थ यह है—श्री शिवजी बोले कि गोरोचन, योनि का रक्त और केला का रस एकत्रित करके इसका तिलक करने से पति वश में हो जाता है, यह उत्तम वशीकरण है।

शिवजी का नाम देकर योनि रक्त लगाने की बात कहना निःसन्देह एक बड़ा भारी पाखण्ड है और फिर आश्चर्य यह है कि कई बड़े विद्वान् भी इस पाखण्ड को पाखण्ड न जान कर सत्य मान बैठे हैं।

मैंने आपके आगे पाखण्ड के दो-तीन उदाहरण दिये हैं और जहाँ तक मेरा विचार है कि यह आपके जागरण के लिए पर्याप्त है। आप स्वयं इन उदाहरणों के सत्यासत्य की परख कर सकते हैं। समय बदल चुका है आपको भी उसके साथ बदलना होगा। अपने आपको जगाना होगा, पुस्तकों की प्रत्येक लिखी बातों पर विश्वास नहीं करना होगा, अपितु अपनी बुद्धि की कसौटी पर परखना होगा कि कौन सी बात सत्य है तथा कौन असत्य। कौन सी बात ग्रहण करने योग्य है और कौन सी नहीं, किस वस्तु को किसी प्रकार से ग्रहण करना चाहिये आदि आदि। मनुष्य को प्रत्येक कार्य चाहे वह धार्मिक हो, चाहे व्यक्तिगत पहले अपनी बुद्धि के कसौटी पर कस करके तभी करना चाहिये।

श्री गणेशायनमः

वशीकरण मन्त्र

मंगलाचरणम्

वन्दे देव उमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नग भूषणं मृगधर वन्देपशूनाम्पतिम् ।।
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं चवरदं वन्दे शिवंशङ्करम् ।।

विषय प्रवेश

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय ।
मीठे वचन सुनाय के, जग अपनो करि लेय ।।

तन्त्र शास्त्र सात्वकी, राजसी, तामसी तीन भागों में विभक्त है, जिसके गुण, कर्मस्वभावानुसार लोग कार्य में लाते हैं। ऐसे मन्त्र-तन्त्र शास्त्र से प्राचीन ग्रन्थ असफल नहीं होते। वर्तमान समय में लोगों के अविश्वास और साहस हीनता, अकर्मण्यता के कारण चाहे जो कुछ हो जाय। किन्तु यह शास्त्र बड़ा ही प्रयोजनीय तथा मनोकामना सिद्ध करने का उत्तम साधन है।

इसमें तीन भाग हैं, १—मन्त्र, २—यन्त्र, ३—तन्त्र।

अक्षरों को कोष्ठक और कमल आदि में लिखकर बांधना यन्त्र कहलाता है और बारम्बार जप करने को मन्त्र तथा जड़ी बूटी आदि उपायों से कार्य सिद्ध करने को तन्त्र कहते हैं।

मन्त्र तन्त्र सिद्धि के नियम

किसी गुरु द्वारा मन्त्र की पूर्ण विधि प्राप्त करके सदाचार, ब्रह्मचर्य तथा एकान्तवास द्वारा इसे सिद्ध करना चाहिए, परन्तु ऐसा उपर्युक्त समागम न मिल सके तो इस पुस्तक में जैसी कुछ विधि बतलाई जाती है, उसे ठीक ठीक करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी।

षटकर्म वर्णन

इस मंत्र-शास्त्र के नियमानुसार—

शान्तिवश्यं स्तभनानि विद्वेषोच्चाटने तथा।
मारणांतानि शसति षटकर्माणि मनीषिणः ।।

अर्थात्—शान्तिकर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण उच्चाटन तथा मारण इन छः प्रयोगों को पण्डित जन षटकर्म कहते हैं। यथा—

१—किसी यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि क्रिया द्वारा किसी को मार देना मारण है। २—किसी का चित्त मोह लेना

मोहन है। ३-एक देश और स्थान छोड़कर दूसरे स्थान के व देश में चला जाना या वहाँ से बुला लेना उच्चाटन है। ४-अपने स्वभावानुसार किसी जीव को अधीन कर लेना वशीकरण है। ५-हाथ, पांव अथवा सब अंगों का बँध जाना स्तम्भन है। ६-किसी में परस्पर बैर उत्पन्न हो जाना विद्वेषण है।

इनके सिवाय इन्हीं प्रयोग के अन्तर्गत और भी बहुत से प्रयोग-उपप्रयोग हैं जो यहाँ विस्तार से लिखे नहीं जा सकते। आगे इन्हीं छः कर्मों एवं प्रयोगों को मन्त्र, यन्त्र और तंत्र द्वारा सिद्ध करने को बतलाते हैं।

ऋतु दिन नक्षत्रानुसार षटकर्मों के करने का चक्र

कर्म	मारण	मोहन	उच्चाटन	वशीकरण	स्तम्भन	विद्वेषण	शांति
इष्ट	भद्रकाली	अजि०	दुर्गा	सर०	लक्ष्मी	वग०	मग०
दिशा	दक्षिण	अग्ने०	वायव्य	उत्तर	पूर्व	नैऋत्य	ईशान
ऋतु	शरद	बसन्त	वर्षा	हेमन्त	शिशिर	ग्रीष्म	हेमन्त
दिन	शनि	रवि	शनि	बुध	शनि०	भौम	चन्द्र
तिथि	कृष्ण चतु	अष्टमी	चौथ०	त्रयोद०	प्रतिपदा	छठ	लौंद द्वाद०
नक्षत्र	पर०	मघा०	श्लेषा	ज्येष्ठा	विशा०	आर्द्रा	उ०रो०
वस्त्र	लाल या कृष्ण	पीला०	लाल	तपी	धूम्र	लाल	श्वेत

षटकर्मों के करने का समय

प्रथम प्रहर में शांतिकर्म। दूसरे प्रहर में वशीकरण स्तंभन और मोहन। तीसरे प्रहर उच्चाटन विद्वेषण और चौथे प्रहर में मारण कर्म किया जाता है। इतना दीर्घ विचार को न समझ सके, या न ग्रहणकर सके, तो यह कोई उतना आवश्यक भी नहीं है और कर सके तो बहुत अच्छा है। कहा है—

श्लोक—

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः।
न ब्रतो नियमो होमः काल वेला विवर्जितम्।
केवल तंत्र मात्रेण ह्न्होषधि सिद्धिरूपिणि।
यस्य साधन मात्रेणक्षणास्सिद्धिश्च जायते ॥

अर्थात्—उड्डीशतन्त्र के अनुसार इसके प्रयोगों के करने में न तिथि का नियम है न नक्षत्र का नियम है, और न वार का नियम है, न व्रत का नियम है न हवन का नियम है और न समय का हो कुछ नियम है केवल तन्त्रमात्र करके सब औषधियाँ सिद्धि रूपिणी हैं, जिसके साधन मात्र से क्षण में सिद्धि प्राप्त होती है।

मन्त्र-जप-माला-निर्णय

प्रमाण-श्लोक

प्रवाल लजमणिभिर्वश्य पौष्टिकयो जपेत्।

मत्तें मदन्त मणिभि जपेदाकृषिकर्मणि ॥ १ ॥
साध्य केश सूत्रयुक्तिस्तरंग दशनोद्‌भवै : ।
अक्षमालां परिष्कृत्य विद्वेष्योच्चाटने जपेत् ॥ २ ॥
मृतस्य युद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च ।
कृत्वाक्ष मालां जप्तव्यंशत्रौर्मारणमिच्छता ॥ ३ ।
कियते शङ्खमणि:धर्मकामार्थ सिद्धये ।
पद्माक्षै : प्रजपेन्मन्त्र सर्व कामार्थ सिद्धये ॥ ४ ॥
रुद्राक्ष मालया जप्तो मत्र: सर्व फलप्रद: ।
स्फाटिकी मौक्तिकी वापि रौद्राणी वा प्रवालजा ।
सारस्वताप्तये शस्ता पुत्रजीवै स्तथाप्तये ॥ ५ ॥

उड्डीशतंत्र में कहते हैं मूंगा हीरा रत्न इनमें किसीकी भी माला हो तो उससे वशीकरण और दुष्टकर्म में जप करे ॥ १ ॥ मनुष्य के बालों से घोड़े के दाँत की माला गूँथकर उससे विद्वेषण और उच्चाटन कर्म में जप करे ॥ २ ॥ युद्ध के बिना अन्य प्रकार से मृतक पुरुष के दाँत अथवा गर्दभ के दांतों की माला से मारण कर्म में जप करे ॥ ३ ॥ शंख व मणि की माला बनाकर धर्म अर्थ सिद्धि के अर्थ उससे जप करें अथवा पद्माक्ष की माला से जप करे ॥४॥ रुद्राक्ष की माला सब कार्यों का उत्तम फल देता है । फिर स्फटिक, मोती, रुद्राक्ष मूंगा

और पुत्र ओवा की माला विद्या प्राप्ति एवं सरस्वती के प्राप्ति के लिये ग्रहण करना चाहिये ।। ५ ।।

माला जपने में दिशा निर्णय

जपेत्पूर्व मुखं वश्ये दक्षिणे चासिधारके ।
पश्चिम धनद विद्यादुत्तरं शान्तिकं भवेत् । १ ।।
आयुष्य रक्षां शान्ति च पुष्टिवापि करिष्यति ।

भावार्थ—वशीकरण मन्त्र जपते समय पूर्व मुँह बैठना चाहिये । मारणादिक अभिचारकर्म में दक्षिणाभिमुख बैठकर मन्त्र जपे और धन के निमित्त पश्चिम मुख, शान्ति कर्म में उत्तर मुख बैठकर मन्त्र जपना चाहिये ।। १ ।। आयुरक्षा, शान्तिकर्म व पुष्टिकर्म में भी उत्तर होकर मन्त्र आदि जपना चाहिये ।

जप-भेद और लक्षण

यंश्रूयतेऽन्यः स तु वाचिकः स्यादुपांशु संज्ञोनिज देह वेद्यः ।। निष्कम्पन्तौष्ठ मथाक्षराणां यच्चिन्तयन स्यादिह मानसांख्यः ।। पराभिचारे किल वाचिकः स्यादुपांशु सक्तोऽप्यथ शान्ति पुष्टयो ।। मोक्षेषुचापः किल मानसाख्य स्मिधा जपः पापनूदे तथोक्तः ।।

भावार्थ—जप तीन प्रकार का होता है। वाचिक, उपांशु, मानसिक।

जिस मन्त्र को जप करते समय दूसरा सुन लेवे उसको वाचिक कहते हैं और जो अपने आपको ही सुन पड़े उसको उपांशु कहते हैं तथा जिस मन्त्र जाप में ओठ और जिह्वा न चलती रहे और केवल मन से ध्यान पूर्वक जप किया जावे उसे मानसिक जप कहते हैं। मानसिक जप में अक्षर का ध्यान किया जाता है।

मारण आदिक प्रयोग में वाचिक जप सिद्धिदायक होता है और शान्ति व पुष्टिकर्म में उपांशु जप तथा मोक्ष के साधन में मानस जप श्रेष्ठ कहा जाता है परन्तु यह तीनों प्रकार के जप नाशक और सिद्धिदायक दोनों है।

जप करने की माला किस २ धागे की हो

प्रमाण-श्लोक

पद्मसूत्र कृता रज्जुः शत्ता शान्तिक पौष्टिके ॥
आकृष्ट मृच्याटयोर्वाजि पुच्छवाल समुद्भवा ॥
नरत्नायुर्विनेर्वैस्तु मारणे रज्जुरुत्तमा ॥
अन्यासां चाक्षमालानां रज्जु, कार्पासि कीमता ॥
सप्त विंशति संख्याकैः कृता सिद्धि प्रयच्छति ॥

अर्हैस्तु पंचदशभिरभिचार फल प्रदा ।।
अक्षमाला विनिर्दिष्टा मंत्रादौ तत्वदर्शभिः ।।
अष्टोत्तरं शतोनैव सर्व कर्मेषु पूजिता ।।

भावार्थ—शान्ति और पुष्टिकर्म में पद्मसूत्र के डोरे से माला को गूँथे और आकर्षण व उच्चाटनकर्म में घोड़े की पूँछ की बालों मे गूँथी माला शुभ होती है और मनुष्य की नसों से गूँथी माला मारणकर्म में शुभ होती है तथा अन्य कर्म में कपास से गूँथी हुई माला से मन्त्र जप करना चाहिये। सत्ताइस दानों की माला समस्त सिद्धियों को प्रदान करती हैं। अभिचार कर्म में पन्द्रह दानों की माला पूर्ण फलदायक होती है और तत्वदर्शी पण्डितों ने तांत्रिक कर्म में एक सौ आठ दानों की माला को सर्व कर्मों में पूजित माना है।

मन्त्र जप में बैठने का आसन

वशीकरण में भेंड़ा के चर्म का आसन, आकर्षण में मृगचर्म उच्चाटन में ऊँट के चमड़े का आसन, मारण में कम्बल के आसन पर तथा अन्य सब मन्त्रों के सिद्ध करने के लिये कुश का आसन होना चाहिये।

हवन सामग्री

शांति कर्म में दूध, घी, तिल गूलर और पीपल की

लकड़ी पर अमरबेलि और खीर का हवन करे। पुष्टि-कर्म में घी बेलपत्र और चमेली के फूलों का होम करे। कन्या की इच्छा करने वाला खीर का हवन करे। लक्ष्मी की इच्छा करने वाला कमलगट्टा दही और घृत का या घृत से मिले हुये अन्न का हवन करे। समृद्धि के लिए बिल्वफल और तिल का। आकर्षण के लिये चिरौंजी और बेलफल। वशीकरण के लिये राई और लवण का हवन करना चाहिये। उच्चाटन में कौवे के पंख का, मोहन में धतूरे के बीज का हवन करे।

शान्ति स्तम्भन और वशीकरण में अंगूठे और बीच की अँगुली के माला को फेरे तथा आकर्षण में अंगूठा और अनामिका से विद्वेषण और उच्चाटन में अंगूठा और तर्जनी से। मारण में कनिष्ठिका और अँगूठे से माला के दाने फेरने चाहिये।

आसन

मन्त्र जपने के अनेक प्रकार के आसन होते हैं। पुष्टिकर्म में पद्मासन शान्ति कर्म में स्वास्तिक आसन, विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन में ऊर्द्धस्वस्तिक मारण और स्तम्भन में विकटासन, और वशीकरण में रुद्रासन से बैठना चाहिये।

अब हम श्री महर्षि दत्तात्रेय विरचित वशीकरण के प्रयोगों का वर्णन नीचे लिखते हैं।

प्रथमः पटलः

कैलाशशिखरासीनं देवदेवं महेश्वरम्।
दत्तात्रेयस्तु पप्रच्छ शंकर लोक शंकरम् ॥१॥

कैलाश पर्वत के शिखर पर विराजमान देवदेव महादेव जी से जो कि लोक के कल्याण करने के कारण शंकर नाम से प्रसिद्ध हैं दत्तात्रेय जी पूछने लगे ॥१॥

कृताञ्जलिपुटौ भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सलम्।
भक्तानांचहितार्थायतन्त्रकल्पश्चकथ्यताम् ।२।

भक्तवत्सल (शिवजी) से हाथ जोड़कर पूछा कि भक्तजनों के हित के लिये तन्त्र कल्प—वर्णन कीजिये ॥२॥

कलौ सिद्धं महाकृत्यं तंत्रविद्या विधानकम्।
कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ॥३॥

कलियुग में सिद्धतन्त्र विद्या का विधान करने वाला महान् कार्य है, हे देव! महादेव! आप उसे कहिये ॥३॥

सन्ति नानाविधा लोके यन्त्रमंत्राभिचारकाः।
आगमोक्ताःपुराणोक्तवेदोक्ता डामरे तथा॥४॥

जगत् में वेद, वेदांग, पुराण तथा डामरतन्त्र में अनेक प्रकार के यन्त्र मन्त्र अभिचार वर्तमान हैं ॥४॥

उड्डीशे मारितन्त्रे च कालीचण्डीश्वरे मते।
राधातन्त्रे च उच्छिष्टे धारातन्त्रे मृडेश्वरे॥५॥

उड्डीश और मारितन्त्र; कालितन्त्र तथा चण्डीश्वर मत में राधातन्त्रउच्छिष्टतन्त्र धारा तन्त्र और मृडेश्वर तन्त्रमें ॥५॥

ते सर्वे कीलनं कृत्वा कलौ वीर्यविवर्जिताः।
ब्राह्मणःकामक्रोधाढ्यास्तस्य कारणहेतवे॥६॥

मन्त्र तन्त्र आदि सब जितनी क्रियायें हैं वे सब कीलित करके कलियुग में निर्बल कर दिये हैं इस कारण ब्राह्मण लोग काम और क्रोध से युक्त हो गये हैं ॥६॥

विनाकीलकमंत्राश्च तंत्राश्च कथिताः शिव।
तंत्रविद्या क्षणात्सिद्धिःकृपांकृत्वावदस्वमे॥७॥

बिना कीले हुये जो मन्त्र और तन्त्र कहे हैं उनमें से हे शिवजी जो तन्त्र विद्या क्षण में सिद्धि प्रदान करती है उस विद्या को कृपा करके मुझसे कहिये ॥७॥

ईश्वर उवाच

शृणुसिद्धिं महायोगिन् सर्वयोगविशारद।
तंत्रविद्यां महागुह्यां देवानामपि दुर्लभाम् ॥८॥

शिवजी बोले, कि हे महायोगिन्! हे सर्वयोगविशारद श्रीदत्तात्रेयजी! वह तन्त्र विद्या अत्यन्त गुप्त है अतः देवताओं को भी दुर्लभ है उस सिद्धि को तुम सुनो ॥८॥

तवाग्रे कथिता देव तंत्रविद्याशिरोमणिः ।
गुह्याद्गुह्यामहागुह्या गुह्यागुह्या पुनः पुनः ।९।

अतः हे देव ! तुम्हारे आगे तन्त्र विद्या जो कहा वह सब विद्याओं में शिरोमणि है, इस गुप्त से गुप्त महागुप्त विद्या को बारम्बार छिपाना योग्य है ॥९॥

गुरुभक्ताय दातव्या ना भक्ताय कदाचन ।
ममभक्तयकेमनसे दृढ़चित्तयुताय च ॥१०॥
शिरो दद्यात्सुतंदद्यान्न दद्यातंत्रकल्पकम् ।
यस्मै कस्मैनदातव्यं नान्यथामम भाषितम् ।११।

वह तन्त्रविद्या गुरुभक्त के लिये देनी चाहिये, असाधु को कदापि नहीं दे तथा जो मेरा पूर्णभक्त हो, दृढ़चित्त हो, उसको दे ॥१०॥ शिर दे दे, पुत्र दे दे, परन्तु तन्त्र विद्या जिस किसी को नहीं दे, अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को नहीं देना, यह मेरा कहना अन्यथा नहीं है ॥११॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा शृणु ।
कलौ सिद्धिर्महामंत्रं विना कीलेनकथ्यते॥१२॥

अब इसके बाद हे दत्तात्रेयजी ! जिस तरह तुमने पूछा उसी प्रकार सुनो कलियुग में सिद्धि देने वाले जो महामन्त्र बिना कीले हुए हैं उनको मैं कहता ॥१२॥

न तिथि र्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।
नव्रतंनियमो होमः काल वेलाविवर्जितम् ।१३॥

केवलं तंत्रमात्रेण ह्योषधी सिद्धिरूपिणी ।
यस्य साधनमात्रेण क्षणात्सिद्धिश्च जायते।१४॥

इस तन्त्र ग्रंथ में न तिथि का नियम है न नक्षत्र का और न वार का। केवल तन्त्र मात्र से ही औषधि सिद्धि रूपिणी है, साधन मात्र से क्षण में कार्य की सिद्धि हो जाती है ॥१३-१४॥

मारणं मोहनं स्तंभो विद्वेषोच्चाटनं वशम् ।
आकर्षणंचेन्द्रजालंयक्षिणी च रसायनम्॥१५॥

मारण, मोहन स्तम्भन विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण आकर्षण, इन्द्रजाल और यक्षिणी साधन व रसायन ॥१५॥

कालज्ञानमनाहारं साहारं निधिदर्शनम् ।
बन्ध्यापुत्रवतीयोगंमृतवत्सासुतजीवनम्॥१६॥

कालज्ञान, अनाहार, आहार, खजाने का दर्शन, बन्ध्या के पुत्रवती का योग तथा मृतवत्सा स्त्री के पुत्रका जिलाना ॥१६॥

जयवादं बाजिकरणं भूतग्रहनिवारणम् ।
सिंहव्याघ्रभयं सर्ववृश्चिकानांतथैव च ॥१७॥

जयवाद, बाजीकरण भूतग्रहों का निवारण, सिंह व्याघ्र के भय तथा सर्प बीछू आदिकों का भय ॥१७॥

निवारणं भयात्तेषां नान्यथा मम भाषितम् ।
गोप्यंगोप्यंमहागोप्यंगोप्यंगोप्यंपुनःपुनः ।१८।

उनके भय का निवारण करने वाले सब प्रयोग इस तन्त्रग्रन्थ में हैं, ये मेरा कहा हुआ अन्यथा नहीं है यह तन्त्र ग्रन्थ छिपाने योग्य है ॥१८॥

अथ सर्वोपरिमंत्रः ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहरायत्रिगुणात्मने सर्वकौतुकानिदर्शय दर्शय दत्तात्रेयायनमः तंत्रसिद्धिं कुरु कुरुस्वाहा ॥ अयुतजपात्सिद्धि ॥ अष्टोत्तरशतजपात् कार्यसिद्धिर्भवति ॥

सर्वोपरि मन्त्र कहते हैं ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः इत्यादि मन्त्र हैं। इसको दस हजार बार जपने से सिद्धि होती है। और १०८ बार मन्त्र जपने से कार्य सिद्धि होती है ॥१८॥

द्वितीयः पटलः

तन्त्र सर्वजनवशीकरणम्। ईश्वर उवाच—

अथाग्रे सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमम्।
यत्प्रयोगाद्वशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः॥१॥

अब दूसरे पटल में सर्वजन वशीकरण प्रयोग वर्णन करते हैं। शिवजी बोले अब आगे उत्तम रीतिसे वशीकरण प्रयोग वर्णन करूंगा जिसके प्रयोग से नर-नारी सब वशीभूत हो जाते हैं॥१॥

ब्रह्मदण्डीवचाकुष्ठचूर्णं तांबूलमध्यतः।
दाययेद्य रवौवारे सर्ववश्यो वर्तते सदा ॥२॥

रविवार को ब्रह्मदण्डी, वच और कूट इन सबका चूर्ण जिसको पान में रखकर दे, वह सदैव वश में रहता है ।।२।।

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घर्षयेत् ।
विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत्।।३।।

बड़ की जड़ को लेकर जल के साथ पीसे और भस्म मिलाकर मस्तक पर तिलक लगावे तो लोगों को वश में करे ।।३।।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे समभिमन्त्रितम् ।
वध्वा सर्वत्र पूज्यन्ते सर्वलोकवशंकरम् ।।४।।

पुण्यनक्षत्र में पुनर्नवा (सांठ) की जड़ को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर हाथ में बांधे तो सर्वत्र पूजनीय हो और सब लोग वश में हों ।।४।।

कपिलापयसा युक्तपिष्ट्वापामार्ग मूलकम् ।
ललाटे तिलकंकृत्वा वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ।।५।।

ओंगा की जल को कपिला गाय के दूध में पीसे और मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ।।५।।

गृहीत्वा सहदेवीं च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूलेन ततश्चूर्णं सर्वलोकवशंकरम् ।।६।।

सहदेवी को लेकर छाया में सूखा कर चूर्ण बनाकर पान में दे तो सर्व लोगों को वश में कर सकता है ।।६।।

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत् ।
गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ॥७॥
प्रियो वैभवति सर्षां दृष्टमात्रे न संशयः ।
ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥८॥

गोरोचन और सहदेवी का तिलक सब लोगों को वश में करता है। गूलर की जड़ को लेकर मस्तक पर तिलक लगावे ॥७॥ तो दर्शन मात्र से निस्सन्देह सबका प्रिय होता है और पान में देवे तो सब लोग वश में हों ॥८॥

सिद्धार्थ देवदाल्योश्च गुटिकां कारयेद्बुधः ।
मुखे निक्षिप्य भाषेत वंसलोकवशंकरम् ॥९॥

सरसों और देवदाली (घघरबेल) की गोली बना कर यदि बुद्धिमान् मुख में रक्खे और सम्भाषण करे तो सब लोग वश में हों ॥९॥

कुंकुमं नागरं कष्ठं हारतालं मनः शिला ।
अनामिकायाःरक्तेन तिलकंसर्ववश्यकृत् ॥१०॥

केशर, सोंठ, कूट, हरताल, मैनासल और अनामिका अँगुली का रुधिर मिलाकर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१०॥

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगू रक्तचन्दनम् ।
एषां तु तिलकं भालेसर्वलोकवशंकरम् ॥११॥

गोरोचन, कमलपत्र, कांगनी और लाल चन्दन इन सबका तिलक मस्तक पर लगावे तो सब लोग वश में हों ॥११॥

गृहीत्वा श्वेतगुंजां च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्धंतिलकंलोकवश्यकृत ॥१२॥

सफेद घुंघुची को लेकर छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध से तिलक लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१२॥

श्वेतार्कं गृहीत्वा छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसासार्धं तिलकं लोकवश्यकृत्॥१३॥

सफेद आक को लेकर छाया में सुखावे और, कपिला गाय के दूध के साथ तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१३॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धमिश्रिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणां सर्वलोकवशंकरम् ॥१४॥

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध के साथ शरीर पर लेप करे तो सब लोग वश में हों ॥१४॥

बिल्वपत्रं तु संग्राह्य मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन तिलकं सर्वलोकवशंकरम् ॥१५॥

बेल की पत्ती लेकर विजौरा नीबू और बकरी के दूध में पीस कर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१५॥

कुमारी मूलमादाय बिजयाबीजसंयुतम् ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१६॥

घीक्वार की जड़ लाकर भांग के बीज मिलाकर मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१६॥

हरितालं चाश्वगन्धा सिंदूरं कदलीरसः।
एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१७॥

हरताल, असगन्ध और सिंदूर इन सबको केले के रस में पीस कर मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हो जांय ॥१७॥

अपामार्गस्यबीजानि छागदुग्धेन पेषयेत्।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१८॥

ओंगा के बीज बकरी के दूध में पीसकर मस्तक पर तिलक करे तो सब लोग वश में हों ॥१८॥

ताम्बूलं तुलसीपत्रं कपिलादुग्धपेषितम्।
अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१६॥

पान और तुलसीपत्र को कपिला गाय के दूध में पीसकर इसका तिलक मस्तक पर लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१६॥

मंत्रस्तु-ॐनमोनारायणाय सर्वलोकान्मम वशं कुरुकुरु स्वाहा अयुतजपात्सिद्धिः ॥

ॐ नमो नारायणाय० इत्यादि मन्त्र दस हजार बार जप कर पहिले सिद्ध कर लेवे ॥

तृतीयः पटलः

तत्र स्त्री वशीकरणम्

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम्।
शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च।१।

अब तीसरे पटल में स्त्री वशीकरण कहते हैं। रविवार को काले धतूरे के फूल, डाल तथा बेल पत्र और जड़ लेकर ॥१॥

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलकं स्त्रीं वशं कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥२॥

उन सबको पीसे और उसमें समान भाग केशर तथा गोरोचन मिलाकर तिलक बना कर मस्तक पर लगावे तो यदि साक्षात् अरुन्धती भी हो तो भी उस स्त्री को वश में कर सकता है ॥२॥

काकजंघा तु तगरं कुंकुमं च मनः शिलाम् ।
चूर्णं क्षिपेत शिरसिस्त्रि वशीकरणमद्भुतम् ॥३॥

कौआगोड़ी, तगर कुंकुम और मैन शिल का चूर्ण इनको स्त्री के शिर पर डाल दे तो यह ही अद्भुत वशीकरण होता है ॥३॥

चिताभस्मवचाकुष्ठं रोचनाकुंकुमैः समम् ।
चूर्णं स्त्री शिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥४॥

चिता, भस्म, वच, कूट, केशर और गोरोचन इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाकर स्त्री के शिर पर छोड़े तो अद्भुत वशीकरण हो ॥४॥

ब्रह्मदण्डी चिता भस्म यस्यांगे निशिशयेन्नरा ।
वशी भवति सा नारी नान्यथा मम भाषितम् ॥५॥

चिता की भस्म और ब्रह्मदण्डी का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के शरीर पर मनुष्य छिड़क दे वह स्त्री उसके वश में हो जाये। मेरा कथन मिथ्या नहीं है ॥५॥

कर पाद नखानां च भस्म ताम्बूल पत्रके ।
रविवारे प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥६॥

हाथ पांव के नाखून लेकर उनका भस्म करके रविवार के दिन पान में रखकर स्त्री को दे तो अद्भुत बशीकरण हो ॥६॥

घूकमांसं गृहीत्वा तु खाने पाने प्रदापयेत् ।
सिद्धयोगमिमं ज्ञेयं वशीकरणमद्भुतम् ॥७॥

उल्लू पक्षी का मांस लेकर खाने और पीने में दे तो इस सिद्धयोग को अद्भुत वशीकरण जानना चाहिए, परन्तु यह आसुरी प्रयोग होता है ॥७॥

वामपादतलात्पांसं वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्य पुत्तलिकां कुर्यात्तस्यःकेशान्नियोजयेत् ।८।
नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिन्दूरेण समायुक्तं निखनेद्द्वारदेशके ॥९॥
उल्लंघनाद्वशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञःस्ववश कुर्यान्मोदते च चिरं भुवि ॥१०॥

शनिवार को स्त्री के बांये पैर के तले की धूल को लेकर उसकी पुतली बनावे और फिर उस स्त्री के केश पुतली के केश स्थान में लगावे ॥८॥ और उस पुतली को नीले कपड़े से लपेट कर उसकी भग में अपना वीर्य डाले और उस पर सिंदूर लगा उस स्त्री के द्वार पर गाड़ दे ॥९॥ उस स्थान को लांघते ही

वह स्त्री प्राण और धन से भी वशीभूत हो जाती है, कृतज्ञ पुरुष इस प्रकार उसको अपने वश में करके बहुत काल तक पृथ्वी पर आनन्द करता है ॥१०॥

ताम्बूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनः शिला।
भौमेचतिलकंकृत्वा वशीकुर्याच्चियोषितः ।११।

पान के रस में तालमखाना और मैनसिल पीसकर मंगलवार के दिन तिलक लगावे तो स्त्री वशीभूत हो ॥११॥

गोरोचनं पद्मपत्रे लिखित्वा तिलकं कृतम्।
शनिवारेकृतेयोगे वशीभवतिनिश्चितम् ।१२॥

गोरोचन से कमल पर जिस स्त्री को वश में करना हो उसका नाम लिखे और फिर उसी लिखे हुये गोरोचन का तिलक शनिवार को करे तो निश्चय ही वह स्त्री वशीभूत हो जाती है ।१२

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कृत्वा तु पटवर्तिकाम्।
भृगुवारे नृकपाले एरण्डतैलकज्जलम् ॥१३॥
अञ्जयेन्नेत्रयुगले दृष्टिमात्रे वशी भवेत्।
विनामंत्रेण सिद्धिःस्यान्नान्यथाममभाषितम्।१४

मालती (चमेली) के फूल और कपड़े की बत्ती बनाकर शुक्रवार के दिन मनुष्य के कपाल में ऐरण्ड के तेल से काजल पारे ॥१३॥ और दोनों नेत्रों में आँजे तो उसके देखने मात्र से ही स्त्री वशीभूत हो जाती है यह बिना मन्त्र से सिद्ध होती है, यह हमारा कथन अन्यथा नहीं है ॥१४॥

ॐ नमः कामाख्यै देव्यै अमुकीं मे वशं ।
कुरु कुरु स्वाहा । सपादलक्षजपात्सिद्धिः ॥

ॐ नमः कामाक्ष्यै० इत्यादि मन्त्र को सवालक्ष जपकर प्रथम सिद्ध करले । दत्तात्रेय तन्त्रमें तीसरा पटल समाप्त हुआ ॥३॥

चतुर्थः पटलः

तत्र पुरुषवशीकरणम् । आदौ पतिवशीकरणम्

गोरोचन वशं नेत्रे मत्स्यपित्तं च कुमकुमम् ।
चन्दनं काक जंघा च मूलं भाग समं नयेत् ॥
वाप्यादिकजनव पेशयित्वा कुमारिकाम् ।
हस्तेन गुटिका कृत्या छायायां चविशातेत् ॥
ललाटे तिलकं कुर्यात य पश्यति वशो भवेत् ।
राजद्वारे न्याय युद्धे सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१॥

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर चंदन और जघा की जड़ ये सब बस्तुयें सम मात्रा में लेकर बावली आदि के जल में कुमारी कन्या के हाथ से पिसवा कर गोली बनवा ले फिर इसको छाया में सुखा करके माथे पर इसका तिलक करे तो उसको जो औरत देखे वह वश में हो जाये इसका तिलक लगाने वाला राजसभा तथा न्यायालय में भी विजय प्राप्त करता है ॥१॥

पंचांगदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपसंयुताम् ।
योनिलेपे पतिं दासं करोत्येव च दुर्भगा ॥२॥

अनार का पंचांग पीसकर सफेद सरसों में मिलाकर योनि पर लेप करे तो दुर्भगा स्त्री भी अपने पति को अपना दास बना लेती है ॥२॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कटुतैलेन पाचितम् ।
भगे यल्लेपयेन्नारी रतौ मोहयते पतिम् ॥३॥

चमेली के फूल को कड़वे तेल में पकाकर जो नारी उस तेल को अपनें काममन्दिर में लेपन करले तो सम्भोग काल में वह अपने पति को मोहित करले ॥३॥

चम्पाकस्य तु वन्दाकं करे बध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य तु भरण्यर्कें पुष्यार्कें वा विधानतः ।
स्त्रीणां तत्क्षणादेव पुरुषा वशमानयेत् ॥४॥

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक चम्पा का बन्दाक लाकर जो हाथ में बांधता है, उसके देखते ही स्त्री अथवा पुरुष उसके वश में हो जाते हैं ।।४॥

मन्त्रस्तु ॥ ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ नमो महायक्षिण्यै० इत्यादि मन्त्र को पहिले जप ले ॥

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरस्तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरंपरम् ॥५॥

अब राजवशीकरण लिखते हैं कि—कुंकुम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल इन सबको गाय के दूध में पीसकर तिलक बनाकर मस्तक पर लगाने से राजा वश में हो जाता है ॥५॥

हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरश्च मनश्शिला ।
अजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरंपरम् ॥६॥

हरिताल, असगंध कपूर और मैनसिल इनको बकरी के दूध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से राजा वश में हो जाता है ॥६॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ।
सिद्धर्थतैले निक्षिप्य कज्जलं नर मस्तके ॥७॥
पातयेदं जनात्तस्मात्सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥८॥

तालीस, कूट और तगर इनसे लेप की हुई रेशमी वस्त्र की बत्ती बनाकर सरसों के तेल में मनुष्य के कपाल में काजल पारे ॥७॥ उस अंजन को लगाने से जो कोई भी उसकी दृष्टि के संमुख आवेगा वह सब प्रकार से दासवत् हो जायेगा ॥८॥

करे सौदर्शनं मूलं बध्वा राजप्रियो भवेत् ।
सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः ॥९॥

हांथ में सुदर्शन की जड़ बांधे अथवा कांकरासिंही की जड़ पुष्यनक्षत्र में लेकर कमर में बांधे तो राजा का प्रिय हो ॥९॥

हरेत्सौदर्शनं मूलं पुष्यभे रविवासरे।
कर्पूरं तुसीपत्रं पिष्ट्वा तु वस्त्रलेपने ॥१०॥
विष्णुक्रान्ताबीजतेले तस्य प्रज्वाल्य दीपकम्।
कज्जलं पारयेद्रात्रौ शुचिपूर्वसमाहितः ॥११॥
कज्जलं चांजयेन्नेत्रे राजवश्यकरंपरम्।
चक्रवर्ती भवेद्वश्यो ह्यन्यलोषु का कथा ॥१२॥

सुदर्शन वृक्ष की जड़ को पुष्य नक्षत्र रवि वार के दिन लाकर कपूर और तुलसी पत्र मिलाकर वस्त्र पर लेपन करे ॥१०॥ फिर उस वस्त्र की बत्ती बनाकर विष्णुकान्ता के बीजों के तेल को दीपक में जलाकर पवित्रता से सावधानी पूर्वक काजल पारे ॥११॥ उस काजल के अंजन को नेत्रों में लगावे तो राजा वश में हो। इससे चक्रवर्ती तक वश में हो जाता है, फिर औरों का तो कहना ही क्या है ॥१२॥

भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्यक्रियां शुचिः।
वने गत्वा ह्यपामार्गं वृक्षं पश्ययेदुदङ्मुखः।१३।
तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथाविधि।
कर्षमेकंसुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥१४॥
यस्य हस्तेनगृण्हीयादपामार्गस्य बीजकम्।
मौनेनस्वगृहंगच्छेत्कृत्वाबीजांस्तुनिस्तुपान्।१५

रमेशं हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवे भवेद्वशम् ॥१६॥

मङ्गलवार युक्त अमावस्या के दिन पवित्रता से स्नान पूजनादि नित्य कर्म करके वन में जाय और वहाँ उत्तर मुख होकर ओंगा का वृक्ष देखे ॥१३॥ फिर वहाँ ब्राह्मण को बुलाकर यथा बिधि से उस बृक्ष का पूजनकरे और एक कर्ष (१६माशा) सुवर्ण उस ब्राह्मण को दान करे ॥१४॥ बाद में उस ब्राह्मण के हाँथ से ओंगा के बीजों को निकलवा ले और उन (बीजों) की भूँसी निकाल कर साफ करले ॥१५॥ और रमानाथ (भगवान) का ध्यान करके जिस किसी उपाय से राजा को खिला दे तो वह राजा जीवन पर्यन्त उसके वश में रहता है ॥१६॥

अपामार्गस्य बीजं तु गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाने पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ॥१७॥
मन्त्रस्तु ॥ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मकं अमुकं महीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा॥ लक्ष जपात्सिद्धिर्भवति ।

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार को ओंगा के बीज लाकर जि राजा को खाने और पीने में दे तो वह राजा वश में हो ज ॥१७॥ पहिले ॐ नमो भास्कराय० इत्यादि मन्त्र को एक ल जप कर सिद्ध करले ।

पंचमः पटलः

तत्राकर्षणप्रयोगः ॥ ईश्वर उवाच—

**आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिप्रयत्नतः ।
राज्ञः प्रजायाःसर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥१॥**

अब दशवें पटल में आकर्षण प्रयोगों का वर्णन किया जाता है। शिवजी बोले ! अब आकर्षण प्रयोग विधि का वर्णन करता हूँ, हे दत्तत्रेयजी ! उसकी सिद्धि को तुम सावधान होकर सुनो, जिससे राजा-प्रजा आदि सबका ठीक २ आकर्षण होता है ॥१॥

**कृष्णधत्तूरपत्राणां रसे रोचन संयुतम् ।
श्वेतचण्डातलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेत्ततः ॥२॥
मन्त्रे नाम लिखेन्मध्ये तापयेत्खदिराग्निना ।
शतयोजनगोवापि शीघ्रमायाति नान्यथा ॥३॥**

काले धतूरे के पत्तों के रस में गोरोचन मिलाकर भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से मन्त्र को लिखे ॥२॥ जिसका आकर्षण करना हो उसके नाम को मध्य में लिखे और खैर की लकड़ी की आग से उसे तपावे तो सौ योजन तक पहुँचा हुआ पुरुष भी शीघ्र आ जाता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥३॥

**नृकपाले लिखेन्मंत्रं गोररोचनसकुंकुमैः ।
तापयेत्खदिरांगारे त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ॥४॥**

मनुष्य के कपाल में गोरोचन के सहित केशर से मन्त्र लिखे फिर उसे खैर की आग में तपावे परन्तु जिसके नाम से आकर्षण प्रयोग किया जा रहा है उसके नाम से तीनों काल सावधानी पूर्वक तपावे ॥४॥

मन्त्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।
ब्रह्मदण्डीं समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत्॥५॥
कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगेविनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथाममभाषितम् ।६।

अनन्तर मन्त्र जपे तो सिद्धि होवे और उर्वशी अप्सरा को भी खींच लेवे। पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी को लाकर चूर्ण करे ॥५॥ काम पीड़ित कामिनी को देख कर उसके उत्तमांग (शिर) पर उस चूर्ण को छोड़ दे तो मृगनयनी पीछे २ चली आवेगी। यह हमारा कथन अन्यथा नहीं है ॥६॥

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मंत्रं तु भूर्जके ।
यस्यनामलिखेन्मध्ये मधुमध्येच निक्षिपेत् ॥७॥
तदा आकर्षणं याति सिद्धयोगं उदाहृतः ।
यस्मैकस्मैन दातव्यं नान्यथाममभाषितम् ॥८॥

अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र सहित जिसका नाम लिख कर शहद के बीच रख दिया जाय ॥७॥ तो उसका आकर्षण होता है, यह सिद्ध योग जिस किसी अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को नहीं देना चाहिये क्योंकि यह हमारा कहा प्रयोग असत्य नहीं है ॥८॥

मन्त्रस्तुॐनमो आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं कुरु कुरुस्वाहा ॥आयुतजपात्सिद्धिः ॥

ॐ नमो आदि रूपाय० इत्यादि मन्त्र को पहिले दस हजार बार जपे। यह दत्तात्रेय मन्त्र में आकषण नाम का पाँचवा पटल समाप्त हुआ।

वशीकरण तिलकः

"ॐ ह्रीं अमुकीं में वशमानय स्वाहा।"
पूर्व सहस्त्रजप्त्वानेन मन्त्रे सप्ताभिमन्त्रितं तिलकं कार्यम्।

विधि–उपर्युक्त मन्त्र का पहिले एक हजार जप करके इसको सिद्ध कर ले। पश्चात् सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक लगाना चाहिये।

अन्य वशीकरण मन्त्र

"ॐनमः कामाक्षी देव्यै अमुकीं में वशं कुरु कुरु स्वाहा।"
एकलक्ष जपात् सिद्धिः। अष्टात्तर शत जपात् प्रयोग सिद्धिः।

यह मन्त्र एक लाख बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। जब प्रयोग करना हो तो प्रयोग से पूर्व एक सौ आठ बार जप कर लेना चाहिये। प्रयोग करते समय 'अमुकीं' शब्द के स्थान पर जिस औरत पर प्रयोग करना हो उस औरत का नाम लेना चाहिये।

वशीकरण की कुछ अन्य विधियाँ

॥ विधि नं० १ ॥

यह मन्त्र एक महात्मा की वर्षों तक सेवा करने से प्राप्त हुआ था। पाठकों के लाभार्थ नीचे लिखा जाता है। यह बिल्कुल सत्य है। अनुचित कार्यों से दूर रहें, अन्यथा आपको जीते जी नरक कष्ट उठाना पड़ेगा।

सामग्री—नील वस्त्र सवा गज, चौमुखे दीपक ४० मिट्टी का लोटा एक, श्वेत वस्त्र का आसन, २३२ बत्तियाँ ५ दाने छोटी इलायची, एक छुहारा, एक नील वर्ण की रुमाली, एक माचिस, ८ दाने लौंग, देशी तेल १० सेर, एक इत्र की शीशी, ५ फूल, गेरू की डली एक।

कृष्ण पक्ष में मङ्गलवार के दिन रात को १२ बजे स्नान करके नीले रङ्ग की रुमाली पहनकर साफ सफेद कपड़े का चौरस आसन बिछाकर उस पर पूर्व की ओर मुख करके बैठे और अपने सामने दूर नीला कपड़ा बिछाये और उसके निकट चौमुखा दीपक जलाये और कपड़े के चारों कोनों पर लड्डू, लौंग और छुहारा बाँधे। जितनी संख्या ऊपर कही है और लोटे में जल डालकर उस पर सात बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर उसके चारों ओर रेखा खींचे।

यह मन्त्र है—

ओम आदेश, गुरु जी को आदेश,
बजर का कोठा समुन्दर की खाई।
हनुमान की चौकी, श्री रामचन्द्रजी की दोहाई॥

तत्पश्चात् माला उठाकर ११ माला निम्नलिखित मन्त्र को फेरे।

काला भैरों काला केश
कन्नों मुन्दरां भगवा भेष
हाथ डगोरी, मोण्डे मढ़ा
जहाँ सिमरूँ तहाँ हानर खड़ा
ग्यारह सरसों, बारह राई
चौरस्ते की मिट्टी, मकान की छाई
पढ़ कर मारूँ मंगलवार
कबहुँ न देखे घर का बार
हमारी भगति गुरू की शक्ति

नोट—पानी में जो ईश्वर का प्रतिबिम्ब पड़ता है उसमें जिसको वश में करना हो उसका छाया चित्र रक्खे अर्थात् जिसे वश में करना है उसका ध्यान करते हुये मन्त्र पढ़ने वाले को लोटे के जल में उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देना चाहिये और मन्त्र करने के पश्चात् दीपक को बहते जल में छोड़ आये, आते जाते कोई न टोके अन्यथा सारा कार्य जाता रहेगा। यदि प्रेम शुद्ध व पवित्र होगा तो जिसको वश में करने के लिये ये प्रयोग किया गया है वह औरत अवश्य ही वश में हो जायेगी।

नारी वशीकरण विधि नं० २

मन्त्र

'खेती सरसों, बारा राई, चौरस्ते की मिट्टी मसान को छाई कम्बे खड़ी देवे कालका माई खड़ी देवे दोहाई होन नूँ वेख के जले मैंनू देख के हँस पड़े।'

चालीस दिन तक २१ माला प्रति दिन फेरनी चाहिये, ४० दिन के बाद प्रेयसी पीछे२ फिरने लगेगी। यह प्रयोग मंगलवार के दिन से आरम्भ करना चाहिये। प्रयोग काल में सदा साफ और पवित्र रहना पूर्व कथित विधियों में बहुत आवश्यक है।

नोट--यदि कोई भयावना दृश्य दिखाई दे तो भयभीत नहीं होना चाहिये अन्यथा प्राणों का भयहै। इसका उत्तरदायित्व कर्ता पर हैं। बिना गुरु के कार्य करना मूर्खता है। अच्छा या बुरा कार्य करने के उत्तरदायी आप स्वयं होंगे, जैसा करोगे वैसा भरोगे। ईश्वर को सदासर्वव्यापक सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान समझ कर करो। वह हमारे दुष्कर्मों तथा सत्कर्मों का निर्णय कर रहा है।

किसी के धन का हरण करना, किसी नारी को पाप की दृष्टि से देखना, जनता को धोखा देना आदि सभी सम्प्रदाय में पाप कहे गये हैं। जहाँ तक हो सके मनुष्य दुष्कर्मों से बचे और दूसरों की भलाई करने पर तत्पर रहे। किसी की आत्मा को न दुखाये।

नारी वशीकरण विधि नं० ३

तेल तेल महा तेल
देखूं मोहनी माई तेरा खेल
राजा घर बकरी घर बलाय न की १ ककरी
गये अपते के मारी शम कों प्यार
जै गुरु चढ़ें ता चढ़े
जै उतारें ता उतरें
नहीं मचावी धुन्धकार
राम लछन मोहीं सीला सौदानी
मोहें तक्त वैठी रानी
मोहे पीढ़े बैठी खतरानी
जब तक हमारा काम न करें
तुमको गुरु अपने की आन फिरे
मन्त्र श्री महादेव का वाचा
गुरु को शब्द सांचा

चालीस दिन तक प्रति दिन १४ माला फेरें, सिद्धि होगा। प्रेयसी का ध्यान अवश्य होना चाहिये। ब्रह्मचर्य का पालन करें। चालीस दिन तक किसी भी नारी की छाया अपने ऊपर न आने दें। यह मन्त्र बिल्कुल सच्चा और परीक्षित है।

विधि नं० ४

नीचे दिये गये यन्त्र को यदि रविवार के दिन हाथ पर लिख कर प्रणाम करे तो नारी तुरन्त ही वश में हो जाय और प्रेम करने लगे।

६१	१७	१६
७१	कु	१७
४॥	६	१००

यन्त्र लिखने की विधि

शुद्ध पवित्र ब्रह्मचारी रहे अपना वास अलग कमरे में रखे। सूर्यग्रहण अथवा दिवाली की रात को मन्त्र को लिखे, और पूर्व कथनानुसार सब कार्य करे अन्यथा कोई प्रभाव न होगा। यन्त्र लिखने से पहले यन्त्र को सिद्ध करना भी अति आवश्यक है। जिस यन्त्र को सिद्ध करना हो उस यन्त्र को १०८ बार भोज पत्र पर लिखकर हवन की आहुति देवे फिर अनार की कलम से इसे लिखे यह यन्त्र बिलकुल सच्चा है।

विधि नं० ५

यदि कोई आदमी उल्लू की टांग के निचले भाग की हड्डी तथा नखों को अपने कमर में बांध कर किसी नारी अथवा प्रेमिका के निकट जाय तो वह कितनी ही

पाषाण हृदय क्यों न हो उस पर आसक्त हो जायगी और सदा के लिये उसकी दासी बन जायेगी, किन्तु यह याद रहें कि उस नारी के निकट जाकर यह विम्नलिखित मन्त्र तीन बार अवश्य पढ़े। मन्त्र यह है—

का यौनी है चार युत स्त्रिय।तरीयते,नस्नोनि युक्त ॥

इस मन्त्र के बिना नारी अथवा प्रेमिका पर पूर्ण रूपेण प्रभाव नहीं पड़ सकता।

विधि नं० ६

भ्रमरके पंख पुष्य नक्षत्र में लेकर काले धतूरे के रस में रगड़े और गोरोचन, सफेद आक, केसर, मछली इन सब चीजों को सम भाग में लेकर मिला दें, और रविवार को सूर्योदय से पूर्व निम्नलिखित मन्त्र इन सब वस्तुओं पर पढ़े और तिलक लगा कर नारी के सामने जावे तो मोहित हो जावे, मन्त्र यह है—

ॐ भूर्भुवस्व: यज्याना मालिनी जातवेदामुक ते वश्या स्वाहा ॥

विधि नं० ७

उल्लू के परों को लेकर जिस नारी को वश में करना हो और जिस मार्ग से वह गुजर रही हो वहां फेंक दें उल्लू के पर इस प्रकार से फेंकने चाहिये कि उसके पैरों के

पीछे अवश्य आये। जब वह उन परों को रौंदती हुई चली जाय तब उन्हें उठा कर जला दे और उसकी राख बनाये। फिर उस राख को जब भी वह उस मार्ग पर आये उसके सर पर डाल दे। कैसी ही पाषाण हृदय नारी क्यों न हो तुरन्त आपके वश में हो जायेगी।

विधि नं० ८

उल्लू के कलेजे में शुद्ध गोरोचन मिलाकर निम्न-लिखित मन्त्र का एक सहस्र जप करके काजल बनाकर आँखों में लगाये और जिस नारी से भी आँखे मिलाये वही नारी उस पर आसक्त हो जायेगी और उसको छोड़कर जाने का उस नारी का मन न चाहेगा।

मन्त्र यह है—

"ॐ नमः कालरात्री त्रिशूलहस्त हस्तिणी हंस वाहिनी आगच्छ आगच्छ भगवती अमुकीं मम बशम् कुरु कुरु स्वाहा।"

विधि—एक लक्ष जपात् सिद्धिः अष्टोत्तर जपात् प्रयोग सिद्धिः।

अर्थ--यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। जिस पर प्रयोग करना हो मन्त्र का जप करते समय 'अमुकी' के स्थान पर उस नारी अथवा प्रेमिका का नाम लेना चाहिये।

विधि नं० ९

उल्लू की चर्बी को पिघला कर उसी मात्रा में चमेली का तेल डाल दें और उस तेल को लेकर आप जिस भी नारी अथवा प्रेमिका के पास जायेंगे तो वह आप पर आसक्त हो जायेगी और आपके वश में होकर आपकी दासी बन जायेगी।

स्त्री वशीकरण-मन्त्र नं० १०

जो व्यक्ति तगर, चन्दन, कूंगू, गोरोचन, उल्लू का मांस, कस्तूरी और केशर इन सबको सम मात्रा में पीस कर और निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिसको भी खिलायेगा वह उसके वश में हो जायेगी। मन्त्र यह है—

"ॐ नमः भास्कराय तिलकात्मने अमुकीं मम वश्य कुरु कुरु स्वाहा। एक लक्ष जपात् सिद्धि अष्टोत्तर शत जपात् प्रयोग सिद्धिः।"

विधि—यह मन्त्र एक लाख बार जप करने से सिद्ध होता है और प्रयोग करने के पूर्व इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। प्रयोग करते समय 'अमुकीं' के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये।

स्त्री वशीकरण नं० ११

उल्लू की पसली की आस्थि को जलाकर उसकी राख बना ले और उसको अंजन के रूप आखों

में लगा कर जो भी पुरुष जिस स्त्री के सम्मुख जायेगा वह उस पर आसक्त हो उसके वश में हो जायेगी और अपनी लज्जा को एक ओर रख कर उससे प्रेम की याचना करने लगेगी।

स्त्री वशीकरण नं० १२

जो कोई यह चाहे कि अमुक स्त्री उससे प्रेम करे तो उसे चाहिये कि एक पावल का पत्तरी ले और उस पत्तरी के ऊपर निम्नलिखित यन्त्र खुदवाये। फिर उस पत्तरी को एक चीनी के बर्तन में डालकर उसमें दो माशा उल्लू को बाट तथा आधा सेर माठा पानी डाल दे और फिर ऊपर से उस बर्तन का चीनी के एक और बर्तन से ढांक दे और इक्कीस दिन तक उसे वैसे ही पड़ा रहने दें, इक्कीस दिन बाद उस पत्तरी को निकाल कर जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उस स्त्री का नाम पत्तरी की दूसरी ओर लिखकर उस पत्तरी को कुएं में डाल दे जिस कुएं का पानी वह सुन्दरी पीती हो। ठीक इक्कीस दिन के बाद जिस किसी दिन वह सुन्दरी उस कुंए का जल पियेगी साधक की ओर आकर्षित होकर उसके चरणों पर गिरेगी।

पत्तरी पर यंत्र खुदवाने के साथ २ निम्नलिखित मंत्र भी अवश्य खुदवा लेना चाहिये। मंत्र और तंत्र यह है—

मन्त्र

रास्ट्रबे मयावना रे मरत्यात

१००	७०	६	२११
२००	१००	३०	६१
१००	४	१००	१००
१००	६	६	१००

वशीकरण नं० १३

पुष्य नक्षत्र में गिद्ध तथा उल्लू की आँखों को निकाल कर सरसों के तेल में घिसायें और उसी दिन मिट्टी के बर्तन में उसी तेल से दिया जला कर काजल तैयार करे। उस काजल को आंखों में लगा कर स्त्री के पास जाने से स्त्री तुरन्त आसक्त हो जाती है।

वशीकरण नं० १४

उल्लू की गर्दन मरोड़ कर उससे जो रक्त निकले उसे एक नीली शीशी में सुरक्षित रखे। उसके रक्त का अंजन आँखों में लगा कर साधक जिस भी स्त्री के पास

जाय वह उस पर तुरन्त आसक्त हो जायगी और वह उसे यदि छोड़ना चाहेगी तब भी वह उसे न छोड़ेगी।

वशीकरण नं० १५

जो व्यक्ति कबूतर की पन्चाल, केशर, कस्तूरी कुंगी तथा गोरोचन को चन्दन में घिसकर उसका मस्तक पर तिलक लगा कर जिस स्त्री के पास जाता है। वह उस पर आसक्त हो जाती है और उससे प्रेम करने लगती है।

वशीकरण नं० १६

रविवार की शाम को उल्लू की आंख का अंजन अपनी आँख में लगाने से कोई भी स्त्री अन्जन लगाने वाले की ओर शीघ्र आकर्षित हो जाती है।

वशीकरण नं० १७

रविवार के दिन नागकेशर, गाय का घी, सफेद आक की जड़ और उल्लू की चोंच इन चारों वस्तुओं को पीसकर माथे पर इसका तिलक लगाकर जिस स्त्री के पास जाये वह उसके वश में हो जाये।

वशीकरण नं० १८

उल्लू के हृदय को लेकर ४० दिन सुखाने के लिये चांदनी में रखे जब वह सूख जाय तब इसका चूर्ण बनाले। अब इस चूर्ण को प्रतिदिन चावल भर पान में रख कर

खाये और इस पान को खाते हुये प्रेमिका या जिस औरत को अपने वश में करना हो उसके घर से गुजरे। इसी प्रकार ४० दिन तक पान खाते हुये उसके घर से गुजरता रहे ४१वें दिन वह औरत यानी प्रेमिका बेचैन होकर आपका मार्ग रोककर खड़ी हो जायेगी और कई प्रकार से अपने अंग प्रत्यंगों का प्रदर्शन कर आपको मोहित करने का यत्न करेगी। उस दिन साधक को चाहिये कि केवल मुस्कराता हुआ चला जाय। इसी प्रकार निरन्तर चार दिनों तक इस मार्ग से गुजरता रहे और प्रेमिका रोजाना उसकी राह ताकती रहेगी। जब साधक वहाँ से पांचवें दिन निकलेगा तो वह औरत उससे बार २ बोलने तथा उसके स्थान आदि का पता पूछने का प्रयत्न करेगी। ऐसे समय में साधक को चाहिये कि उसको अपना पता ठीक २ बता दे और फिर उसके बाद वहाँ से निकलना बन्द कर दे, एक सप्ताह के बाद वह प्रेमिका उसके पास खुद पहुँच जायेगी।

वशीकरण नं० १९

बकरी के मांस में एक रत्ती उल्लू का मांस मिला कर और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर जिस औरत को खिलाया जाय वह औरत वश में हो जाती है।

मन्त्रः

ॐ श्री काली महाकाली तिदा स्वाहा नमः।

विधि—यह मन्त्र दीपावली की रात को व्रत रख कर जागरण काल में सवा लाख जप करने से सिद्ध होता है, सिद्धि के बाद प्रयोग से पूर्व इसका १०८ बार जप करना चाहिये।

वशीकरण नं० २०

उल्लू के रक्त तथा अपनी दाहिनी अंगुली के रक्त को मिलाकर उसे पान में रखकर निम्नलिखित मन्त्र को इक्कीस बार पढ़े और उस पान को जिस औरत को खिलाये वह औरत उसके वश में हो जाय।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुर को मोहनी जग मोहिनी, मोहनी मेरा नाम ऊँचे टीले बसूं बस करूँ प्रजा गास तक मोहूँ ठाकुर मोहू वाग मोहूँ कामनी पंसारी मोहूँ महल बैठी रानी वश करूँ तब मोहनी कहाऊँ।

वशीकरण नं० २१

उल्लू की तथा बन्दर की विष्ठा बराबर मिलाकर निम्नलिखित मन्त्र से एक सौ आठ बार पढ़कर जिस

औरत के सर पर डाला जाय वह फौरन ही वश में हो जाती है मन्त्र यह है—

ॐ नमोद्यानी भद्राय अश्राय अतल पलम्परा कर्माय विकला माय ॐ उर्धज्ञाय क्रयकाय माथे छाती दुष्ट दुर्जन छेदे २ कुरु २ स्वाहा ।।

विधि—दीपावली की रात को एक लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है ।

वशीकरण नं० २२

सफेद आक की जड़, हरताल, उल्लू का रक्त तथा अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर गोली बनाये । पुष्य नक्षत्र वाले रविवार के दिन इसका तिलक लगाकर औरत के पास जाने से औरत वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० २३

नौचन्दी रविवार के दिन नीम के अढ़ाई पत्ते लेकर उसमें उल्लू की जिह्वा तथा भेरे की जिह्वा मिलाकर पीस लें और भोजपत्र पर चौतीसियाँ यन्त्र सिद्ध करके लिख दें और फिर चूर्ण उसमें रखकर लपेटकर रुई का फलीता बनाकर काजल तैयार करें इस काजल को लगा कर किसी भी नारी पर दृष्टिपात करने से वह औरत वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० २४

यदि किसी स्त्री को वश में करना हो तो एक रत्ती केशर, एक रत्ती कस्तूरी और एक रत्ती लौंग इन तीन वस्तुओं को अच्छी तरह पीस लें और इनमें छः माशा कपूर का अर्क मिलाकर खरल करें इसके बाद कोई एक रत्ती इसमें कियोसी आयल का फुल्ला मिला दें। यह एक प्रकार की स्याही तैयार हो जायेगी। इस स्याही से निम्नलिखित यन्त्र लिखे, लेकिन यह स्मरण रहे कि बनाकर निम्नलिखित यन्त्र को उल्लू की खाल पर लिखे और इसके साथ ही नीचे दिये गये मन्त्र को लिख देना चाहिये, अब गधी के दूध में दो बताशे डालकर इसको दो घण्टा के रख दें वह मन्त्र केवल उल्लू के पर की कलम से ही लिखना चाहिये अन्यथा इस यन्त्र का कोई लाभ न होगा। अब इस यन्त्र को लिखने के बाद भूमि में एक फुट गढ्ढा खोदे, इस गढ्ढे को गधे की लीद से से भर दे, फिर इसके ठीक बीच में इस यन्त्र को रख दे और ४० रोज तक इसी दशा में पड़ा रहने दे। चालिस रोज के बाद इसे निकाल कर एक शीशे के गिलास में दस तोले पानी डालकर इसमें इसको डाल दें। इसके बाद एक घण्टा पड़ा रहे, आप देखेंगे कि क्या आश्चर्य होता है।

यन्त्र

४००	३००	१००	१००
१००	८	३७	१००
१००	८	८२	१००
१००	५००	२००	४००

वशीकरण नं० २५

केशर १ माशा, सीसम के फूलों का जल २ माशा ले। इनको काँच के बर्तन में डालकर खरल करके स्याही तैयार करें। फिर स्याही से उल्लू के पंख की कलम बनाकर निम्नलिखित यन्त्र को उल्लू की खाल पर लिखे और इसके साथ ही नीचे दिये गये यन्त्र को लिख देना चाहिये। अब गधी के दूध में दो बताशे डाल कर इसको दो घण्टे के लिये डाल दे, फिर इस दूध को सफ़ेद कपड़े से छान कर जिस औरत को वश में करना हो उसको दे, वह और वश में हो जायगी।

यन्त्र

१०१	३५	५०	१०	३७	१००
१७	१००	१७	४१	१००	६७
४०	१०	१००	१००	१०	४४
२३	७	१०	१००	५३	२३
१०	१००	४७	५	१००	७
१	८	५०	८	१७	१००

मन्त्र—'नमस्ते आसीन विदला वन्दे सर्वास्तु'

वशीकरण मन्त्र नं० २६

उल्लू के मांस को छाया में सुखा कर निम्नलिखित मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के सिर पर डाला जाये, वह वश में हो जाती है।

मन्त्र

काला दलवा काली बुलाऊं, आधी रात उठ शैतान

सोती को जा लाग, आवे तान फूटे नहीं तो सिर कलेजा फूटे फुरो मन्त्र ईश्वर का वाचा।

पहले इस मन्त्र को सूर्यग्रहण के दिन दस हजार जप करके सिद्ध करे, सिद्ध करने के बाद प्रयोग में लावे।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० २७

एक खद्दर का कपड़ा लेकर उसको लाल रङ्ग में रङ्ग दें।-इसके पश्चात् उसको तीन दिन तक चाँदनी में रखे और उसके दोनों ओर से नीले रङ्ग का कागज लपेट दे। अब इस कागज पर नागौरी केशर का लेप करे। जब लेप सूख जाये तब इसको बेरी की लकड़ी के कोयले के ऊपर रखकर जला डाले। उसकी एक माशा राख और उल्लू के पर की एक रत्ती राख मिलाकर इसमें से दो रत्ती राख लेकर जिस स्त्री को खिलाये वह आपके वश में हो जायेगी और आप उसे जैसा भी कहेंगे वैसा ही करने को तैयार हो जायेगी।

वशीकरण मन्त्र नं० २८

३ माशा ग्लीसरीन में उल्लू के नखों का चूर्ण मिला कर रूई से बत्ती तैयार करें और उस बत्ती को जला कर उसका काजल तैयार करें। इस काजल को अपनी आँखों में लगाकर अपनी प्रेमिका अथवा किसी

स्त्री के सामने जाने से वह कैसी भी पाषाण हृदया क्यों न हो प्रेम पाश में फँस जाती है और स्वयं को न्योछावर कर देती है।

वशीकरण मन्त्र नं० २६

सूर्य ग्रहण के दिन शिकरे का मांस तथा उल्लू की जिह्वा, भ्रमर की दोनों बाहें, कान का मैल, दाये हाथ की कनिष्ठिका अँगुली का रक्त इन सबको मिलकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बनाये। मन्त्र यह है—

'सुन उल्लू शैतान, मेरा कहना मान; गनकर शकल मेरी अमुक छाती पर चढ़ बैठा! आवे तो छूटे नहीं तो सिर कलेजा फूटे फट फट के होवे स्वाहा।'

यह मन्त्र ५० हजार जप करन से सिद्ध हो जाता है और प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जप करना चाहिये। जप करते समय 'अमुक' के स्थान पर जिस पर वशीकरण का प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिए।

इस प्रकार से तैयार की हुई गोली जब आप प्रेमिका को खिलायेंगे तो वह आपके वश में हो जायेगी और आयु पर्यन्त आपकी दासी बनकर रहेगी।

वशीकरण मन्त्र नं० ३०

चील की आँखों तथा उल्लू की आँखों को मिला कर एक बत्ती बनायें और कपास को उल्लू के रक्त में तर करके उसकी बत्ती लपेट दें और उसे जलायें। उल्लू के सिर में उस काजल को एकत्रित करें। किन्तु यह काजल सूर्य ग्रहण के दिन ही तैयार करना चाहिए। इस काजल को आँखों में डालकर जिस स्त्री के पास भी जाये वह आपके वश में हो जायेगी।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० ३१

यदि कोई व्यक्ति सूर्य ग्रहण के दिन सूर्य निकले ग्रहण के समाप्त होने तक चौतीसिये का यन्त्र मन्त्र के साथ पढ़ता तथा सीखता रहे उसके पश्चात् अमावस्या के दिन जितनी घड़ी पल अमावस्या हो उसके ध्यान में उल्लू के रक्त का तेल बनाकर भोजपत्र पर लिखकर जलाये और उल्लू की खोपड़ी में उसका काजल उतारे। उस काजल को आँख में लगाकर जिस स्त्री की ओर वह देखे वह उसको ओर आकर्षित होकर चली आवे और सर्वस्व उसको अर्पण कर देवे। यह कार्य उसके लिए है जिसका प्रेम सच्चा हो, झूठा प्रेम करने वाला यह कार्य करने से हानि उठायेगा।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० ३२

एक खाली शीशी में पिसी हुई पोटास परमैंगनेट डाल दो और इसके पश्चात उसको ग्लैसरीन से भर कर ऊपर के कार्क लगा दो और शीशी को जोर २ से हिलाओ। शीशी में तुरन्त ही आग लग जायेगी और कार्क भक से उड़ जायेगी। इस आग को जलने दें। जब आग तनिक मद्धिम हो जाये तो उसमें थोड़ी सी ग्लैसरीन और डाल दें और किसी लकड़ी के तिनके से इसको हिलावें। इस क्रिया को उस समय तक जारी रखना चाहिये जब तक कि पोटाश परमैंगनेट पूर्ण रूप से भस्म न हो जाय, भस्म हो जाने पर इसको शीशी से बाहर निकाल लें जितनी भस्म हो उसी मात्रा में केशर शुद्ध काश्मीरा लेकर उसमें मिला दें। उसमें उल्लू का दो रत्ती सूखा हुआ रक्ततथा चार दाने टोपी वाले लौंग पीसकर उस राख में मिला दे। फिर बीहड़ के दो पत्ते लाकर उसको पीस कर इस भस्म में मिलायें और केलों के पत्तों का रस थोड़ा सा पानी मिलाकर थोड़ी सी स्याही बना लें। अब इस स्याही से आप जिस प्रेमिका को पत्र लिखेंगे वह आपके नगर की हो अथवा बाहर की रहने वाली हो, विवाहिता हो अथवा अविवाहिता, परिचित हो अथवा अपरिचित आपके पत्र को देखते ही

तुरन्त आपके वश में हो जायेगी और आपसे मिलने की इच्छा प्रगट करेगी।

वशीकरण मन्त्र नं० ३३

कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कुगू, कबूतर का पंचाल और उल्लू के शरीर का कोई भाग इन सब वस्तुओं को सम मात्रा में लेकर खरल करे। निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उसका तिलक लगाकर जिस स्त्री को भी देखे वह उसके वश में हो जाये, मन्त्र निम्नलिखित है—

ओं टु ह्वीं ह्वीं स्वाहा

इस मन्त्र को प्रयोग में लाने से पूर्व एक लाख बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये। सिद्ध हो जाने के पश्चात् प्रयोग करने से पूर्व अभिमन्त्रित करते समय इसका १०८ बार जप कर लेना चाहिये।

वशीकरण मन्त्र नं० ३४

बुधवार के दिन यदि कोई व्यक्ति उल्लू के मांस चावल और नौचंदे बुधवार के दिन बगुला के शरीर की भस्म चावल मिलाकर नौ—रविवार के दिन अपनी थूक में मिला कर जिस भी स्त्री को खिलावे वह कितनी ही पाषाण हृदया क्यों न हो उसकी ओर तत्काल आकर्षित हो जायेगी। जिस स्त्री के ऊपर साधक इसका प्रयोग

करेगा वह उसकी दासी हो जायेगी और उसे जैसा कहेगा वह वैसा करेगी ।

वशीकरण नं० ३५

उल्लू के कुछ नखों को छाती से बाँधकर तथा कुछ को अपने मुख में रख जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उसके द्वार पर जाकर निम्नलिखित मन्त्र को नौ बार पढ़े तो वह स्त्री कैसी भी पाषाण हृदया क्यों न हो, उससे घृणा क्यों न करती हो तत्काल वश में हो जायेगी और उससे प्रेम करने लगेगी और आयु पर्यन्त उसकी दासी बनकर रहेगी और एक क्षण के लिए भी उसका विरह न सहन कर सकेगी ।

यह मन्त्र है—

'अबोम्योकछ ईश्वराय भूतासिथा सा अमुकं अहजां प्राप्नोत मया स न निष्ठतिस्या मयांदा सह मित्रता न भूण्ड ईश्वर यदि त्वं माँ प्रतिज्ञा स्वीकारोति अहमपित्वं प्रतिज्ञां न स्वीकरोमि'

इसके पश्चात् यदि साधक उससे रुष्ट होकर भी बात करे तो भी वह बुरा न मानेगी और उसको छोड़कर अन्य किसी से भी प्रेम न करेगी ।

वशीकरण नं० ३६

उल्लू के नखों की भस्म को अपने होंठों पर लगा कर जो व्यक्ति जिस स्त्री से भी बात करेगा वह उससे

आकर्षित होकर उसके साथ साथ चली जायेगी। लेकिन याद रहे कि उल्लू के नखों की भस्म को होठों पर लगाते समय निम्नलिखित मन्त्र को तीन बार पढ़ना चाहिए।

'शरबों शराबों त्वलज्यानःप्राणणे सीपतत्वं।'

अत्र दास्तां करो सी यदि तं मित्रतां परं पूठं इच्छासि मया सह निवास कुरु पिता हं त्वयाय एकतानि महेन्द्रा तोपि मया सह का भव॥

वशीकरण नं० ३७

शनिवार के दिन कमल के पत्ते पर गोरोचन से जिस स्त्री को वश में करना हो उसी का नाम लिख कर फिर उसी का तिलक लगाने से वह निश्चय ही वशीभूत हो जाती है।

वशीकरण नं० ३८

रविवार के दिन काले धतूरे के फूल, शाख, लता, पत्ते और जड़ लेकर उसमें कपूर केशर और गोरोचन सबको सम भाग में मिलाकर पोस कर तिलक लगाने से कैसी भी पाषाण हृदया स्त्री क्यों न हो वश में हो जाती है।

वशीकरण नं० ३९

उल्लू के अण्डकोषों को सुखाकर उनका चूर्ण तैयार करें और जिस स्त्री को वश में करना हो उसको खिला

दे लेकिन याद रहे कि उसे इसके खाने का कुछ पता न लगे जिस स्त्री को आप उल्लू के अण्डकोषों का चूर्ण तीन दिन खिलायेंगे वह आपके वश में हो जायेगी और अनेक प्रकार की प्रेम पूर्ण बातों से आपका जी बहलायेगी।

वशीकरण नं० ४०

उल्लू के अण्डकोषों को लेकर उन्हें तीन बार कुएँ के जल से धोये और धोते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़े।

मन्त्र

'खलं नारी आदपुरुष समरसम हनोहता ।।'

अब इस जल को जिस स्त्री को पिलाओगे वह आपके वश में हो जायेगी।

वशीकरण नं० ४१

यह बल्ला बल्ली कर काम पिशाच अमुकीं ग्राह्य एवपने मम रूपेण नख विदारय न द्रावण स्वेदेन बन्धन श्रीं फट ।।

उपरोक्त मन्त्र का हर रात को १००८ बार जप किया जाय, ४१ रोज में औरत वशीभूत हो जायेगी।

वशीकरण नं० ४२

नौचन्दी रविवार, सोमवार, मंगलवार के दिन प्रातःकाल उठकर सगरी मिश्री लेकर अपनी प्रेमिका

अथवा जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उसका ध्यान करता हुआ लघुशंका करता रहे, फिर चौथे दिन एक चावल लेकर उल्लू के मांस में मिलाकर प्रयोग कराये तो वह औरत तथा प्रेमिका निश्चय ही उसके प्रेम-पाश में बँध जायेगी, लेकिन साधक को यह पता होना चाहिये कि यह प्रयोग केवल पतित औरत के लिये ही है किसी कुलीना के लिये नहीं। साधक को प्रयोग करने से पूर्व इस बात को ध्यान में रख लेना चाहिये।

वशीकरण नं० ४३

ॐ नमो भैरवाय नमः। चल २ रे काली के पूत प्यारे जोगी जंगम अवधूत, सोती को जगाये जा, जागती को बैठार, जो न जगाये तोय कालिका माई की आन शैय्या उठ आवे मनोकामना दिखावे शब्द साँचा पिंड काचा फुरो ईश्वर वाचा।

रविवार के दिन रात को दो बजे गुड़ लेकर उपरोक्त मन्त्र से गुड़ को १२१ बार अभिमन्त्रित करे फिर बकुला के तेल से भैरव का पूजन करे। उस गुड़ की गोलियाँ बनाले और जिस स्त्री को एक गोली खिला दे वही वशीभूत हो जायगी।

वशीकरण नं० ४४

धतूरे के पत्ते और गोरोचन को परस्पर मिलाकर

उसमें उल्लू का रक्त मिलायें फिर केशर को लेखनी से सिद्ध किया हुआ पन्द्रहे का यन्त्र भोज पत्रों पर लिखे फिर उन्हीं भोज पत्रों पर जिस औरत पर प्रयोग करना हो उसका नाम, उसकी माता का नाम तथा उसके पिता का नाम लिखें। अब एक यन्त्र को अग्नि में डाले दूसरे को वृक्ष के साथ, तीसरे को नदी में डाले तथा चौथे को भूमि में गाड़ दें। जिस औरत पर यह प्रयोग किया जायेगा वह खुद आपके सामने उपस्थित होगी।

पन्द्रिहिया यन्त्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

वशीकरण नं० ४५

ओंम नमो भैरवो तीरे आज्ञां कालेकमल मुखं राज मोहने वशीकरणे नारी पुरुष रंजन लोक वश्य मोहनी दासोऽहं प्रसादेन।

आक के फूलों को कपड़े में बांधकर भस्म बना ली जाये और उपरोक्त मन्त्र से १००८ बार जाप करके उसे पानी में मिलाकर शनि को तिलक करे तो नारी नर वश में हो जाते हैं।

वशीकरण नं० ४६

एक माजूफल का फल लेवे उसे केले के पौधे के तने में खोलकर डाल दें । यह माजू फल उसमें इक्कीस दिन तक बराबर पड़ा रहे । इक्कीस दिन के पश्चात उस माजू फल को वहाँ केले के तने से निकाल कर अनार में डाल दें, लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि अनार अपने पौधे के साथ लटकता रहे । २१ दिन तक उसे अनार में पड़ा रहने दें । इसके पश्चात् उसे गन्धक के तेजाब में डाल दें । तीन रोज वह माजू फल तेजाब में पड़ा रहे । चौथे रोज उसे वहाँ से निकालें तो वह बिल्कुल गला हुआ होगा । बड़ी सावधानी से बाहर निकाल कर छाया में सुखा लें और इसके पश्चात् तीन रोज तक उसे नीले कपड़े में बाँधकर रखें । तीन रोज के बाद वह माजूफल भो नीले रङ्ग का हो जायेगा यानी कपड़े का रङ्ग श्वेत हो जावेगा । अब इस अनार व माजू फल को कपड़े से निकाल लेवें । अब जिस औरत अथवा प्रेमिका को अपने वश में करना हो तो उसके निवास स्थान के निकट जाकर इस अनार तथा फल में एक रत्ती उल्लू का नाखून मिला कर उस माजू फल को किसी ऐसी जगह आग में डाल दें कि उसका धुआं जिस औरत को अपने वश में करना हो उसके मकान में जाये । ज्यों ही

आपकी प्रेमिका अथवा जिस औरत पर आपने यह प्रयोग किया है वह औरत इस धुयें के नाक में लगते ही आपकी तालाश में घर से बाहर निकल आयेगी। जब तक वह आपको ढूँढ़कर आपसे नहीं मिलेगी उसे चैन न आयेगा। उस पर प्रेम का भूत सवार हो जायेगा। सब प्रकार की लज्जा को त्याग आपको ढूँढ़ कर आपसे प्रेम करेगी।

वशीकरण नं० ४७

मन्त्र

ॐ चामुण्डा जव जय वस्य वश्य स्वाहा ।।

विधि—इस मंत्र को ४१ रोज तक प्रतिदिन १०८ बार जप करके सिद्ध कर ले। फिर विशाषा नक्षत्र में रविवार को आधी रात के समय चमेली के फूलों को तोड़ कर उन्हें इसी मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके माला बना ले। जिस स्त्री को माला दी जावे वह औरत वश में हो जाये।

वशीकरण नं० ४८

मन्त्र

ॐ नमो राजस्य मुख विश्व राजस्य स्वाहा ।।

उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप

करके ४१ दिन में सिद्ध करले फिर तेल को बाँयें हाथ में लेकर इसी मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके सिर पर लगा ले फिर जिस स्त्री के पास जाये वह वश में हो ।

वशीकरण नं० ४६

मन्त्र

ॐ नमो गुड़ गुड़ रेतू गुड़ तमड़ा मसान ।।

विधि—इस मन्त्र को ४० दिन में प्रति दिन १०८ बार जप करके सिद्ध करले फिर गुड़ लेकर उसे सात बार उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिलाये वह वश में हो ।

वशीकरण नं० ५०

नागकेशर, कमल, केसर, जटा मांसी तगर और चिरौजी सम भाग लेकर पीस ले । फिर ढाक अथवा पीपल की लकड़ी को अग्नि में उस धूप को डालते हुये निम्नलिखित मन्त्र को प्रति दिन १०० बार जप करे और अपने नगर में यदि प्लेग या हैजा आदि जो भी उत्पात फैल रहा हो उसका नाम भी लेता जाये तो तीन दिन में सभी उत्पात शांत हो जायेंगे और साथ ही उस धूप का धुआँ सूक्ष्म रूप में जिस औरत पर प्रयोग किया जायेगा उसके शरीर में प्रविष्ट होकर उस स्त्री के हृदय में साधक के प्रति प्रेम उत्पन्न कर देगा और साधक

जहाँ भी होगा वह स्त्री वहीं जाकर उसकी दासी बनेगी ।

मन्त्र

ॐ मुली मुली महा मुली सर्व संक्षोमय उपद्रवोभ्यः स्वाहा ।

वशीकरण नं० ५१

कूट, तगर, वंशलोचन, मिश्री और पीपल को पानी में पीस कर बत्ती बनावे और उस बत्ती को रविवार को २ मुर्दे की खोपड़ी में सरसों का तेल भर कर जलाकर काजल बनाये फिर निम्नलिखित मन्त्र से काजल को १०० बार सिद्ध कर ले। इसके बाद इस काजल को अपनी दोनों आँखों में लगाकर जिस स्त्री को देखे वही वश में हो जाय ।

मन्त्र

ओ३म् अ ओं फट श्री कीं फट स्वाहा २ ।

वशीकरण नं० ५२

ॐ नमो ऊर्वशी सुपारी कामिनी बोरो राजा परंजा, खारी प्यारी मन्त्र पद लगाऊँ, तोटा कलेजा लगाऊँ जीवता वश होय वश न होय तो यती हनुमान की आन शब्द साँचा पिंड कांचा फुरा मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि—प्रथम उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप करके सिद्ध कर ले। इस जप को इक्कीस

दिन तक करते रहना चाहिये। फिर सूर्य ग्रहण के समय इसी मन्त्र से २१ बार सुपारियों को अभिमन्त्रित करके जिसको यह सुपारियाँ खिलाई जायेंगी वह स्त्री वशीभूत हो जायेगी।

वशीकरण नं० ५३

ओ३म् नवोवर विकट धी रूपिणी स्वाहा ।।

विधि—उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जाप करके फिर चावलों की खीर बनाकर इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके खावे तो अभीष्ट औरत वशीभूत हो जायेगी।

वशीकरण नं० ५४

ॐ अ ओ फट श्री कीं फट स्वाहा ।।

प्रथम उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप करके २१ दिन में सिद्ध कर ले, तत्पश्चात् केश, कूट, तगर, हरताल को पीसकर इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर तिलक करके जिस औरत के सामने जाये वही वश में हो जाये।

वशीकरण नं० ५५

बुध के दिन सूखी जोक लाकर कुआँरी लड़की के हाथ के कते हुये सूत से लपेटे और तिल्ली के तेल से उसका काजल बनाये। उस काजल को लगा कर जिस औरत के पास जाये वह वश में हो जायेगी।

वशीकरण नं० ५६

हाथी के कान का पसीना, लाल कनेर के फूल, सफेद सरसों तथा देह का मैल जिसको लगा दिया जावे वही स्त्री वश में हो जाती है।

वशीकरण नं० ५७

मन्त्र—ॐ क्लीं जिनके स्वाहा।

विधि—घी और गुग्गुल से इस मन्त्र द्वारा एक लाख बार विधिपूर्वक आहुतियाँ देने से सिद्धि होती है सिद्धि हो जाने के बाद इस मन्त्र को पढ़कर जिस औरत को भी स्पर्श किया जाये वही वश में हो जाती है।

वशीकरण नं० ५८

काले कौवे की जीभ और अपने बीसों नखों को जलाकर मरघट की राख और चौराहे की मिट्टी मिला कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुये जिस औरत के सिर पर डाल दिये जाँय वह वश में हो जायेगी।

मन्त्र

ॐ नमो घोली सूरजो घालो सातों परमेश्वर जहाँ लगाऊँ नहीं लगे नहीं लगे तो राजा रामचन्द्र की आन।

वशीकरण नं० ५९

आकाश बेल को चौड़ी सौ रुई में लपेटकर चमेली के तेल में जलाना चाहिए। इस काजल को भी

आंखों में लगा कर स्त्री के पास जाने से वह वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० ६०

रविवार के दिन छिपकली पकड़ कर किसी नये बर्तन में एक सिंदूर के साथ वन्द करे और उसे गुग्गुल की धूनी दे । फिर आधी रात को उस छिपकली की बत्ती बनाकर काजल कर ले । यह काजल जिस स्त्री को लगाया जाय वही स्त्री वश में हो ।

वशीकरण नं० ६१

एक रंग की बिल्ली का रक्त निकाल कर सुखा ले। फिर उसमें पानी मिला कर मस्तक पर लगाकर जिस स्त्री के पास जावे वही वश में हो जाये ।

वशीकरण नं० ६२

यदि उल्लू के जननेन्द्रिय का भस्म बना कर और उसमें मधु मिला कर जिस औरत को खिलाई जाये तो उस औरत को तब तक चैन न आयेगा जब तब कि वह अपने चाहने वाले को न पायेगी और ज्यों ही वह साधक से मिलेगी सदा उसकी चेरी बन कर रहना पसन्द करेगी ।

वशीकरण नं० ६३

ॐ नमो भगवते रुद्राय सिद्ध रूपिणे शिखि सर्वेषां शिवमस्तु हन रक्ष ४ भूतेभ्यश्च नमः ।

विधि—इस मन्त्र को २१ दिन पीपल के वृक्ष पर कर बैठ १०० बार जप करके सिद्ध कर ले। इसके बाद कनेर का फूल इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर के पैर के नीचे दबाये फिर इस फूल को जिस भी स्त्री को दे वही स्त्री वश में हो जाये।

वशीकरण नं० ६४

ॐ श्वेत वर्ष सित पवन वासिनी अग्रहित मम कार्य कुरू कुरू ठः ठः।

विधि—श्वेत चिरमिटी के बीज पक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को शुद्ध भूमि में बोकर उपरोक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके उनमें पानी दे। इसी प्रकार प्रति दिन करता रहे और बीज आने पर उन्हें अपने पास रख ले। उसी बीज को इसी मन्त्र से सात बार सिद्ध करके जिस किसी औरत पर डाले वही वश में हो जायेगी।

वशीकरण नं० ६५

ॐ नमो श्वेत गात्र सब लोक बशी वशीकरी दृष्टान विनाशय स्वाहा।

विधि—उपरोक्त मन्त्र को इकतालीस दिन में प्रति दिन एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध कर ले और फिर

सफेद चिरमिटी की जड़ और सरसों के बीज मिलाकर चूर्ण बनाले, फिर इस मन्त्र को सात बार जप करके जिस औरत के सर पर यह चूर्ण डाले वह औरत उसके वश में हो जायेगी।

पति वशीकरण

पति वशीकरण की वही विधियाँ हैं जो कि वशीकरण विधान में कही गई हैं। यहाँ सारी वशीकरण की विधियों को न दे कर केवल वशीकरण मन्त्र को लिखा जाता है क्योंकि पति वशीकरण की विधियाँ वशीकरण विधान में आ चुकी हैं।

पति वशीकरण के लिए स्त्री वशीकरण की विधियों को भी काम में लाया जा सकता है। स्त्री वशीकरण के लिये पुरुषों को विधियाँ तिलक लगाने की कही गयी हैं उसी प्रकार से तिलक तैयार करके उसकी बिन्दी लगाने से पत्नी भी अपने पति को वश में कर सकती है।

पति वशीकरण की सबसे उत्तम, बड़ी और सफल विधि नारी का पतिव्रत धर्म है। अपने पतिव्रत धर्म को खोकर कोई भी औरत अपने पति को वश में नहीं कर सकती। यह विधियाँ और पति वशीकरण मन्त्र इसलिए है कि यदि किसी पतिव्रता औरत का पति दुराचारी या,

वेश्यागामी हो, उसकी प्रत्येक बात की अवहेलना करता हो, उसकी सेवा सुश्रुषा का उस पर कोई भी प्रभाव न पड़ता हो, तब उस औरत को चाहिये कि अपने पतिव्रत धर्म के पालन के साथ २ इन विधियों और मन्त्र से उसका पति अवश्य की उसके बश में हो जायेगा ।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा, लक्ष जपात सिद्धि, शत् जपात प्रयोग सिद्धिः ।

अन्य मन्त्रों के समान एक लाख बार जाप करने से यह मन्त्र भी सिद्ध हो जाता है और सिद्ध हो जाने के पश्चात् प्रयोग से पूर्व एक सौ आठ बार जप करना चाहिये ।

—::०::—

राज वशीकरण

ईश्वरोवाच

कुमकुमं चंदनं चैव रोचनं शशि मिश्रितम् ।
गवां क्षीरेण तिलकै स्त्रीणां वश्य करं परम् ॥

कुमकुम, चन्दन, कपूर, सिद्धि को गाय के दूध में पीसकर लगाने सें राजा वश में हो जाते हैं ।

करे सौदर्शन मूलं बध्वा राज प्रियो भवेत् ।

जो हाथ में सुदर्शन की जड़ बाँधकर राजा के

समीप जाता है वह राजा का कृपा पात्र हो जाता है। अर्थात् राजा उसके वश में हो जाता है।

> कृष्णोत्पलंग मधुकरस्य च यक्षुयुग्मं।
> मूलं तथा तरगजं सित काक जंगा ॥
> यस्या, शिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं।
> दासी भवेर्झटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन सुदर्शन की जड़ लाकर उसमें तुलसी की पत्ती और कपूर मिला कर उमको पीसे, पुनः वस्त्र के ऊपर लेपन करे अर्थात कपड़े में लपेट कर उसकी बत्ती बना ले तत्पश्चात पवित्र होकर और सावधानी से विष्णु कान्ता के बीज तेल में रात्रि के समय उस बत्ती को जला कर काजल तैयार कर ले। इस काजल को नेत्रों में लगाने से राजा वश में हो जाता है।

सिंही मूलं हरेत्पुष्ये कटौ बद्ध्या नृपः प्रियः।

जो व्यक्ति पुष्य नक्षत्र में सिंही की जड़ को लेकर अपनी कमर में बाँधता है वह राजा का प्रिय पात्र बन जाता है अर्थात् राजा उसके वश में हो जाता है।

> भौमवारे दर्शदिने कृत्वा नित्याक्रियां शुचि।
> वने गत्वा ह्यपामार्गं वृक्षं पश्येदुङ मुखाः ॥
> तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथा विधि।
> कर्यमेकं सुवर्णं च दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥

तस्य हस्तेक गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकम् ।
कृत्वा तिस्तुषाणि ज्ञानी मौनी गच्छेन्निजे गृहम् ।।
रमेश हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवद्वशे ।।

जिस मङ्गलवार के दिन अमावस्या हो उस दिन नित्यक्रिया करने के पश्चात् बन में चला जावे वहाँ जाकर उत्तर की ओर मुख करके खड़ा होकर अपामार्ग के वृक्ष को देखे और फिर उसी स्थान पर (ब्राह्मण को बुलाये और विधिपूर्वक पूजा करे, उसको १६ माशे सोना दान में दे और उसी ब्राह्मण से अपामार्ग के बीज को निकलवाकर ले ले। तत्पश्चात उस बीज को लेकर अपने घर चला आये और मार्ग में किसी से भी कुछ न बोले। पुनः उन बीजों को साफ कर ले और अपने हृदय में भगवान लक्ष्मी नारायण का ध्यान करता हुआ जैसे हो सके उस उपाय से उस बीज को राजा को खिला दे। इस प्रकार के प्रयोग से राजा जन्म भर वशीकरण करने वाले के वश में रहता है।

कुमारी मूलमादाय विजया बीज संयुतम् ।
मस्तके तिलकं कुर्यात् राज वश्यं करं परम् ।।

घीक्वार की जड़ और भाँग के बीज मिलाकर इसका तिलक बनाकर अपने मस्तक पर लगाने से राजा वश में हो जाता है।

तालीसकुष्ठतगरैलिप्तां आस्त्री सुर्वातिकाम् ।
सिद्धयतैलेविनिक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥
पानयेदंजनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचर मायात: सर्वो भवति दासवत ॥

तालीस, कूट तथा तंगर मिलाकर लेप बनाले फिर लेप को रेशम के कपड़े पर लगाकर उसकी बत्ती बना ले फिर मनुष्य की खोपड़ी में सरसों का तेल डाल कर उसमें बत्ती को प्रज्वलित करे और उसका काजल बना ले और यह काजल लगाकर जिस पर दृष्टिपात करे वह वह में हो जावे। यह अन्जन त्रय लोक को वश में करने वाला है।

अपामार्गस्य बीजानि छागा दुग्धेन पेषयेत् ।
अनेन तिलको भाले सर्व लोक वशं कर: ॥

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस रविवार को अपामार्ग अर्थात् चिचिंटा का बीज ले आये, फिर बीज को भोजन अथवा जल में मिलाकर जैसे भी सम्भव हो राजा को खिलादे। इससे राजा वश में हो जाता है।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महीपति मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

एक लक्ष जपात् सिद्धिः। अष्टोत्तरशत् जपात प्रयोग सिद्धिः।

यह मन्त्र एक लाख बार जाप करने से सिद्ध होता है, प्रयोग से पूर्व इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करके प्रयोग करना चाहिये। इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ नाम लेना चाहिये।

यक्षिणी साधन विधान

यक्षिणी सिद्धि हो जाने से कार्य बड़ी सरलतापूर्वक हो जाता है, बुद्धि तीव्र होती है और मनुष्य कठिन से कठिन समस्याओं को क्षण मात्र में हल कर सकता है। दूसरे के मन का गुप्त रहस्य जान जाता है, जो कुछ मुँह से कहता है वह सत्य होता है। अनेक प्रकार के चमत्कार यक्षिणी द्वारा दिखाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है। संसार में कोई उसका दुश्मन नहीं रहता सब उसकी मान और प्रतिष्ठा करते हैं।

यक्षिणियों के नाम

यक्षिणी चौदह प्रकार की हैं, यथा–

(१) महा यक्षिणी, (२) सुन्दरी, (३) मनोहारी, (४) कनकयक्षिणी, (५) कामेश्वरी, (६) रतिप्रिया, (७) पद्मिनी, (८) नटी, (९) रागिनी, (१०) विशाला, (११) चन्द्रिका, (१२) लक्ष्मी, (१३) शोभना, (१४) मदना।

यक्षिणी साधन क्रिया

ईश्वर उवाच

ऋतु सिद्धि महायोगिन् यक्षणी मन्त्र साधनम् ।
यस्याः साधन मात्रेण पूर्णा सर्वे मनोरथाः ॥

श्री शंकर भगवान बोले कि हे महायोगी दत्तात्रेय जी अब यक्षिणी के मन्त्र का साधन सुनो जिसके करने से मनुष्य के सब मनोरथ और सब मनोकामनायें सिद्ध होती हैं ।

आषाढ़ी पूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।
सितेज्य योर मौढये तु साधयेद्यक्षिणः नरः ॥

आषाढ़ी पूर्णिमा को गुरु और शुक्र के उदय में क्षौर आदि क्रिया करके मनुष्य को यक्षणी का साधन करना चाहिये ।

प्रतिपद्दिनमारभ्ये श्रावणेन्दुबलान्विते ।
मासमात्रं प्रयोगोयं निर्विघ्नेन समाचरेत् ॥

इस प्रयोग को श्रावण कृष्ण पक्ष की परीवा से शुरू करके श्रावण शुक्ल की पूर्णिमा तक एक मास में निर्विघ्नता से समाप्त करना चाहिये ।

शिवआराधना

निर्जने बिल्व वृक्षस्य मूले कूर्शाच्छिवार्चनम् ।
षोडशैरुपचारैस्तु रुद्र पाठ समन्वितम् ॥

रमाम्बिकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पंचसहस्र कम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुवेरस्य तु पूजनम् ।।

निर्जन स्थान में जहाँ कोई न हो वहाँ बेल के वृक्ष की जड़ के नीचे शिवलिंग की स्थापना कर अर्थात् शिव जी की मूर्ति बनाकर सोलह प्रकार से उनका पूजन तथा रुद्र पाठ करें और साथ ही प्रतिदिन निम्नलिखित 'त्रयम्बकं यजामहे' मन्त्र का पाँच हजार जाप करें। मन्त्र यह है—

त्रयम्बके यजामहे सुगन्धिपुष्टि बन्धनम् ।
उर्वारुक मिवबन्धान्मृत्योर्मुक्षावयामृताम् ।।

और साथ ही कुबेर की पूजा भी करनी चाहिये।

कुबेर आराधना मन्त्र

यमराज नमस्तुभ्यं शंकर प्रिय बान्धव ।
एकां में वशगां नित्यं यक्षिणी कुरु ते नमः ।

हे यक्षराज ! तुमको मेरा नमस्कार है शंकर के प्रिय बांधव प्रति दिन एक यक्षिणी को मेरे वश में कीजिये । मैं तुमको नमस्कार करता हूँ।

इति मन्त्र कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।
ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद् दिवा ।।

उपरोक्त मन्त्र कुबेर का है, इसको एक सौ आठ बार प्रति दिन एक मास तक अर्थात् जब तक एक

अनुष्ठान समाप्त न हो, जपना तथा ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये तथा दिन के समय केवल खीर का भोजन करना चाहिये ।

यक्षिणी सिद्ध करने का समय

महर्षि दत्तात्रेय का मत है कि आषाढ़ सुदी पूर्णमासी शुक्रवार के दिन अथवा गुरुवार के दिन उदय में क्षौर कर्म (हजामत) बनवाकर और पवित्र होकर यक्षणी साधन क्रिया करे । अथवा श्रावण कृष्ण परीवा के दिन चन्द्र बलि होने पर साधन क्रिया आरम्भ करें । यह यक्षिणो रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्माणानाड़ी के चलते समय वट वृक्ष के ऊपर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे मन्त्र का पाँच हजार बार जाप नित्य प्रति करे ।

साधन नियम

सदैव हल्की खीर का भोजन करे, सत्यवादी और ब्रह्मचर्य से रहे दिन में कदापि न सोवे तथा एक बार भोजन करे मौन ब्रत धारण करे रात्रि को कुछ भी न खाये, भूमि पर सोवे। रक्त चन्दन विशेष रूप से लगावे और श्वेत रङ्ग के पदार्थ का सेवन करता रहे ।

(१) महायक्षिणी साधन

सिद्ध करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है। रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मणानाड़ी के चलते समय बट वृक्ष के ऊपर चहुँ ओर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे यन्त्र का पाँच हज़ार बार जाप नित्य प्रति करे।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं महा यक्षिणी प्रदात्रौ नमः।

महायक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी अनेक रूप धारण कर साधक को भय दिखाती है। आते समय भैंसे का रूप धारण कर लेती है। जिस समय वह आती है प्रथम अधकार और आँधी लाती है, हवा बड़े वेग से चलती है। बादल की घटा इतनी जोर की चारों ओर उठती हुई दिखाई देती है कि हाथों हाथ कुछ दिखाई नहीं देता। फिर एक दम उजाला हो जाता है, फिर काले रंग के बाल बिखेरे हुए एक स्त्री नाचती हुई आती है जिसके दाँत आगे को निकलते हुए सिर पर लाल रंग का कपड़ा लिपटा हुआ, मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगा हुआ, जिसकी सूरत

देखते ही यह अनुमान हो जाता है कि हूबहू काल की यही निशानी है।

ऐसे अनेकों उपद्रव एक सप्ताह तक बराबर होते हैं। यदि साधक भयभीत न हुआ तो फिर महायक्षिणी अपना दर्शन देती है।

महायक्षिणी का स्वरूप-

पीत वर्ण वाली, तीस वर्ष की आयु वाली श्वेत रंग की साड़ी पहिने हुए, जिस पर मोतियों की झालर लगी होती है मस्तक पर कस्तूरी और केशर की विन्दी लगी होती है। एक हाथ में कमल का पुष्प दूसरे में तीर कमान धारण किये हुए साधक के सामने दिखाई देती है।

प्रभाव—भयभीत हो जाने पर पागल बना देती हैं। इससे भय न करना चाहिये। सिद्ध किया हुआ धन सुकर्म में लगाया जाय, कुकर्म में लगाने से सिद्धि निष्फल हो जाती है।

(२) सुन्दरी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

यह यक्षिणी रात्रि के दूसरे पहर में सिद्ध की जाती

है। इसको श्मशान भूमि में अस्थियों पर बैठकर सिद्ध करे और मुर्दे की चिता पर पके चावल इसके बलिदान में दे। जब यह प्रसन्न होती है तब अपने बलिदान को स्वयं उठा कर ले जाती और उसको भक्षण कर लेती है।

सिद्ध करने का मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं यक्षिणी सुन्दरियै नमः।

क्रिया—इस मन्त्र को पाँच हजार बार जाप करे और प्रत्येक मन्त्र के साथ घृत और कपूर की आहुति दे।

आहुति हवन कुण्ड बनाना—

विशाषा नक्षत्र में रविवार के दिन कपिला गाय के गोबर में सिंदूर मिलाकर त्रिभुजाकार चौका दे। उसके मध्य में त्रिभुजाकार एक बालिश्त नीचा गड्ढा खोदे उसकी सतह पर सिंदूर के पाँच बिन्दु इस प्रकार लगावे कि चारों ओर चार बिन्दु रहें और मध्य में एक आवे उसके ऊपर क्वाँरे मुर्दे को हड्डियों को चुन कर अग्नि दीपक करे उसमें कपूर की आहुति उपरोक्त मन्त्र के साथ दे। इसके पश्चात् यक्षिणी प्रकट होगी।

सुन्दरी का आगमन—

जिस समय यह आती है चारों ओर धुयें का अंधकार हो जाता है साधक को कुछ दिखाई नहीं देता कभी

ऐसा भी होता है कि अग्निकुण्ड में से आग की लपटें उठकर साधक को ओर आती हैं। उस समय साधक को भयभीत नहीं होना चाहिये।

सुन्दरी यक्षिणो का स्वरूप—

गोरे बदन वाली षोडश वर्षीया बालिका के रूप में, बसंती साड़ी पहिने हुये गले में सफेद पुष्पों की माला धारण किये हुये भुजाओं में लाल रंग की चुस्त चोली पहिने, नाक में झलकदार नथ पहिने हुये साधक को दर्शन देती है।

(३) मनोहारी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

ठीक रात्रि के बारह बजे स्वाती नक्षत्र में शनिवार के दिन से सिद्धि आरम्भ की जाती है। साधन प्रारम्भ करने के दिन प्रातःकाल क्षौर कर्म करा कर छोटे छोटे बच्चों को मिष्ठान्न दही का भोजन करावे और यथा शक्ति उनको दान देकर वरदान माँगे, जिससे साधन निर्विघ्न समाप्त होवे फिर निर्जन बन में जाकर बट वृक्ष की जड़ में काल भैरव की मूर्ति स्थापित कर उसको स्नान करावे तत्पश्चात धूप दीप से पूजन कर नित्य प्रति एक हजार बार नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं हूँ हूँ फट स्वाहा: ओ३म् फट स्वाहा।
ॐ ह्रीं फट स्वाहा: मनोहारी यक्षे नमः ॥

मुर्दे की आँतों की डोरी और उसमें मुर्दे की अस्थियों के दाने डाल कर माला बनावे फिर एकाग्र चित्त होकर जाप करें। प्रत्येक सहस्र जप होने पर एक आँटे का पुतला रखता जाय और जैसे ही साधन समाप्त करे सबको इकट्ठा कर अपने मकान के पीछे गाड़ दे।

मनोहारी का आगमन--

जिस समय यह यक्षिणी आती है फूलों की सुगन्धि साथ लाती है। इसके आगे-आगे अनेक प्रकार के पशु शेर, चीते इत्यादि अपना-अपना स्वरूप बदलते हुए दिखाई देते हैं। किसी किसी पशु पर दैत्य सवार होता है। पीछे चन्द्रमुखी शंखनी हाथों में पुष्पों की माला लिए हुए आती है।

मनोहारी का स्वरूप—

श्वेत वर्ण की अनुमानतः षोडश वर्षीया कन्या के अनुसार चार शखिनियों के कंधे पर सिंहासन में बैठी हुई दर्शन देती है। गले में फूलों का हार पड़ा होता है हाथों में कमल के फूल धारण किये हुये होती है, माथे

पर सिंदूर का टीका लगा होता है। सिर के बाल खुले हुये पीछे लटके रहते हैं। यदि यह प्रसन्न हो जाय तो अपना परिचय तीन प्रकार से देती है अर्थात् (१) धन (२) जन (३) मानस। विमुख हो जाने से सकुटुम्ब नाश कर देती है इससे प्राप्त किया हुआ धन शुभ कर्मों में लगाया जाय। पुण्य भी अधिक किया जाय। यदि ऐसा धन व्यभिचार मदिरा पान में खर्च करे तो पुत्रादि सहित नष्ट कर डालती है।

प्रभाव—चित्त शान्त करती है। किसी बात की इच्छा प्रगट नहीं होने देती है। जिस कार्य को आवश्यकता हो तत्क्षण कर लाती है। साधक को किसी प्रकार भय क्लेश नहीं होने देती। इसकी साधना में भय नहीं करना चाहिये।

(४) कनक यक्षिणी

साधन का समय—

यह रात्रि के एक बजे एकान्त व निर्जन वन में सिद्ध की जाती है।

साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः।
ॐ हूँ कुरु ठः ठः स्वाहा ॐ क्लफटे स्वाहा॥

क्रिया—इस मन्त्र को सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे इस प्रकार साधन करने से तीस दिन बाद दर्शन देगी।

कनक यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी आते ही चारों ओर से मल मूत्र की वर्षा करती आती है। हाड़ मास की मालायें धारण किये रहते है। एकान्तवास इसको पसन्द है। यदि अधिक इसको तंग किया जाय या इसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य किया जाय तो साधक को मति भ्रष्ट कर देती है।

कनक यक्षिणी का स्वरूप—

स्वरूप इसका साठ वर्ष की बुढ़िया के समान है। शिर के समस्त बाल सफेद होते हैं, हाथ पैरों में केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है, मुँह में एक दाँत नहीं दीखता है। समस्त बदन व कपोलों पर झुर्रियाँ पड़ी दीखती हैं बदन की लम्बाई अधिक होती है।

प्रभाव—जब तक यह साधक के पास रहती है तब तक किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती और जब जाती है, उसको अनेक प्रकार के दुखों में फँसा जाती है।

यह यक्षिणी ज्योतिषियों के बड़े काम में आती है इसके सिद्ध हो जाने से ज्योतिषी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर

सही देता है। इस यक्षिणी की सिद्धि को 'कर्ण पिशाचनी' सिद्धि कहते हैं। क्योंकि यह जो कुछ कहती है साधक के कानों में कहती है। साधक का कान सदैव ऊपर की ओर रहा आता है।

यह यक्षिणी संसार में अपने साधक का प्रभाव बढ़ा देती है, परन्तु भ्रष्ट अधिक रहती है। यहाँ तक कि कोई-कोइ कर्ण पिशाचनी कान में विष्टा तक लगाये रहती है और अन्त में मरने पर साधक के शरीर में दुर्गन्धि पैदा कर देती है, जिससे उठाने वाले भी घृणा करते हैं।

(५) कामेश्वरी यक्षिणी

साधन का समय—

यह यक्षिणी रात्रि के प्रारम्भ काल में सिद्ध की जाती है और जब तक रात्रि समाप्त नहीं होती बराबर जप करना पड़ता है। इसकी साधना गूलर के वृक्ष की छाया के नीचे की जाती है और घृत का चौमुखा दीपक जलाकर साधक अपने सामने रख लेता है उसका 'लौ' बिना पलक मूंदे एकटक बराबर तमाम रात देखता रहता है। जिस समय तक साधक में एक रात बिना पलक लगाये दीपक ज्योति देखने की शक्ति उत्पन्न हो

आयेगी उसी दिन मे यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देने लगेगी।

कामेश्वरी सिद्धि मन्त्र

ॐ कामेश्वरी काम सिद्धेश्वरी स्वाहा।
ॐ फट् स्वाहा ॐ ह्रीं कुरु स्वाहा॥

उपरोक्त मन्त्र को एकाग्र चित्त से रुद्राक्ष की माला लेकर सवालक्ष नित्य प्रति जाप करे। तीस दिन बाद स्वप्न में यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देगी।

कामेश्वरी आगमन –

जिस समय पर यह यक्षिणी आती है उस समय चारों तरफ सफेद फूलों का मार्ग बन जाता है, चारों तरफ से शीतल मन्द सुगन्ध वायु बहने लगती है। एक हाथ में इत्रदान लिये होती है। रास्ते में फूलों की वर्षा होती आती है

कामेश्वरी का स्वरूप—

चन्द्रमा के समान उज्वल वर्ण वाली हंस की सवारी धीरे-धीरे आती है। गले में मोतियों की माला धारण किये होती हैं उसके पीछे चार स्त्रियाँ हवा ढोरता आती हैं और दो आगे चँबर डोरती दिखाई देती हैं। साथ की सब स्त्रियाँ पीताम्बर साड़ी पहिने होती हैं और स्वयं यक्षिणी गुलाबी रङ्ग की पोशाक में होती है।

प्रभाव—शीतलता लिये हये साधक के चित्त को

प्रसन्न करने वाली, किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाने वाली सबकी सहायक होती है।

(६) रतिप्रिया यक्षिणी

साधन का समय—

इस यक्षिणी की सिद्धि चाँदनी रात में दस बजे की जाती है। इसका जाप उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र में शुक्रवार के दिन से आरम्भ होता है। इसके अग्र भाग में सुगन्धित पदार्थ तथा अनेक प्रकार के खिले हुये पुष्प रक्खे जाते हैं। जिस समय यह प्रसन्न होती है फूलों की मालाओं को अपने आप गले में धारण कर लेती है।

इसके जाप की माला तुलसी के दानों की रेशम में पिरोई जाती है और निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है—

साधन मन्त्र—

ॐ रति वल्लभे रति प्रिये कामन्तु वल्लभोः।
महा देवा महा माया काया कंचनम्॥

यह यक्षिणी पैंतालीस दिन में अपना प्रभाव स्वप्न में दिखाती है। सिद्धि हो जाने पर मन इच्छित फल की दाता है। अधिकतर इसका प्रभाव स्त्रियों पर अधिक पड़ता है, कारण कि इसका सम्बन्ध कामदेव से अधिक है।

रतिप्रिया का आगमन—

कामेश्वरी यक्षिणी की भाँति इसका भी आगमन हाता है। गुलाबी रंग के पुष्प इसे अधिक प्रिय हैं। फूलों की सड़क मखमल के समान पृथ्वी पर बिछ जाती है, उसी पर अचक पचक पैर रखती हुई जाती है। दास दासियाँ विभिन्न प्रकार के सुगन्धि लिये सामने खड़े रखते हैं।

रति प्रिया का स्वरूप—

सुन्दर गौरांग नवल नवेली चन्द्रवदनी जिसके हाथों की नाजुक कलाई हवा के झोंके से हिलती हुई दीखती है। अपने उपासक को सदैव मुस्कराती हुई दर्शन देती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य कड़ुवे से कड़ुवे मिजाज वाली स्त्री को वशीभूत कर लेता है।

(७) पद्मिनी यक्षिणी

साधन समय—

इसका साधन आषाढ़ पूर्णिमा गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में रात्रि के चौथे पहर से निर्जन स्थान में प्रारम्भ होता है।

साधन मन्त्र

अनंग वल्लभौ देवि, कामारिप्रिय सेविका।
नमस्ते पद्मिनी माया, महा माया नमस्कृतं॥

पीपल के वृक्ष के नीचे बटुकनाथ की मूर्ति स्थापित कर काँस के आसन पर बैठ कर दक्षिण की ओर मुँह करके सवा लक्ष बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे।

पद्मिनी का आगमन—

जिस समय यह आती है आने के पहले एक बार अपनी झलक दिखला कर अन्तर्ध्यान हो जाती है। फिर अनेक प्रकार के बाजे बजने शुरू हो जाते हैं, परन्तु बाजे की तर्ज पर एक बड़ी बारात सी आती हुई दिखाई देती है इसी को मनुष्य 'साहबाँ' आसेब की आमद कहते हैं। सबको पद्मिनी अपना रूप दिखाती है।

पद्मिनी का स्वरूप—

गोरे अंग पर सिर के बाल ऐड़ी तक लम्बे लटके हुए दिखायी देते हैं। बाँह चम्पे की डाल के समान छोटी और मुलायम होती है। पैर कदम कंदली के सुडौल और सीधे होते हैं। हाथों में कमल के फूल और गले में फूलों के हार पड़े होते हैं। इस प्रकार के वेश से साधक को दर्शन देती है।

प्रभाव—जब यह सिद्ध हो जाती है तब साधक के यहाँ धन की कमी नहीं रहती।

(८) नटी यक्षिणी

साधन का समय—

इसके साधन करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक का है।

साधन मन्त्र

ॐ नमो ह्रीं फट स्वाहा ॐ क्लीं फट स्वाहा। ॐ नटी यक्षणी स्वाहा ॐ कुरु कुरु फट् फट् स्वाहा॥

सुनसान जङ्गल में जहाँ चौरस भूमि हो और सूर्य की किरण पूरी पड़ती हों, वहाँ पर सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा होवे और प्रति घंटा एक सहस्र मन्त्र जाप करता जावे। जब तक सूर्यस्त न होवे तब तक बराबर जाप करता रहे। सूर्य अस्त होने के पश्चात घर आकर केवल दूध पीकर सो रहे और रात्रि को कुछ भोजन न करे।

नटी यक्षिणी का आगमन—

जिस समय यह आती है भैंसे के समान हुँकार भरती हुई आती है, और साधक को अनेक विकराल रूप दिखला कर डराती है। यदि इस पर साधक डटा रहा तो तैंतालीस दिन में सिद्धि होवेगी।

नटी का स्वरूप

सुन्दरी गौरांग स्त्री सिर पर सुर्ख रङ्ग की चुंदरी

ओढ़े गले में मुण्डा की माला धारण किये, नव पल्लव बदन पर लपेटे हुये, हँसती खेलती साधक के सामने खड़ी हो जाती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने पर साधक प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार कर सकता है।

(६) अनुरागिनी यक्षिणी

साधन का समय--

शाम के पाँच बजे निर्जन स्थान में जहाँ की भूमि समतल हो वहाँ पर साधन करे। सत्ताइसवें दिन जाकर यक्षिणी अपना प्रभाव दिखावेगी।

साधन मन्त्र—

ॐ नमः अनुरागि यक्षिणी नमः हानि हानि
पचि पचि फट स्वाहा।

ऊँट के बालों की माला बनाकर तीस हजार जाप नित्य प्रति करे सत्ताइस दिन पीछे यक्षिणी स्वप्न में दिखाई देगी।

अनुरागिनी का आगमन—

इन्द्र की अप्सरा के आने से पहले लाल रंग का फर्श बिछा हुआ दिखाई देता है। बैलों के झुण्ड के झुण्ड आते हुए दीखते हैं जिन पर अनेक रूप धारण किये बिकट खोपड़ी वाले भूत दिखाई देते हैं। सबके

पीछे अनुरागनी यक्षिणी की सवारी आती है। यह ऊँट पर बैठी हुई पीछे की ओर मुंह किये हुये आती है।

अनुरागिनी यक्षिणी का स्वरूप

लाल रङ्ग के वस्त्र धारण किये मुख में पान खाये नाक में नाथ झलकाती हुई लम्बी भुजायें, हाथों की अंगुली एक-एक बालिस्त लम्बे, नाखून चार इञ्च चौड़े, पैर नाटे, बिना पंजे वाली, एक हाथ में कृपाण और दूसरे में मुन्ड माल लिये होती है।

प्रभाव–यह आते ही साधक की ओर सीधी चढ़ी हुई चली आती है। यदि साधक भयभीत हो गया तो पागल बना देती है, वरना इच्छानुसार काम करती है।

(१०) विशाला यक्षिणी

साधन समय–

रात्रि के तीसरे पहर में काले धतूरे के वृक्ष की छाया में गधे के चर्म का आसन बिछा कर उस पर बैठे और आहुति देने के हेतु अष्ट धातु का हवन कुण्ड आदित्य देव की मूर्ति स्थापित करके उस पर तेल मर्दन करे। निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आंठ बार प्रति दिन जाप करता रहे।

मन्त्र—

ॐ अनंग वल्लभो देवि, विशालस्य नमितः ।
स्वम प्रिया महा बश्यम कुरु फट फट स्वाहा ।।

आषाढ़ बदी १५ आदित्य वार के दिन विशाषा नक्षत्र में रात्रि के तीन बजे श्मशान भूमि में जावे और उपरोक्त मन्त्र का रात्रि में जाप करे। प्रत्येक मन्त्र के अन्तिम अक्षर पर तेल और चावलों की आहुति दे। अन्तिम आहुति मदिरा और मांस की देकर सीधा घर चला आवे और पोछे को न देखे।

विशाला यक्षिणी का आगमन—

इसके आने से पूर्व अनेकों हिंसक जानवर शोर करते हुये दिखाई देते हैं। फिर वह अंतर्ध्यान हो जाते हैं केवल दक्षिण दिशा में मनुष्य के बात चीत करने का शब्द सुनाई देता रहता है। साधक को उस समय अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये। यदि उसका ध्यान उस ओर से हट गया अथवा भयभीत हो गया तो घर आते ही बीमार हो जायगा। अथवा जिधर जावेगा उधर ही उसको वह शब्द सुनाई देगा। इसलिये साधक को चाहिये कि हृदय को कड़ा करके इसकी साधना करे।

विशाला यक्षिणी का स्वरूप

इसकी लम्बाई एक पीपल के पूरे और ऊँचे पेड़ के बराबर होती है। पैरों को पृथ्वी पर बड़े जोरों से मारती हुई और अनेक प्रकार के उपद्रव उठाती हुई आती है। सिर के बाल आगे की ओर लटके हुये होते हैं। लम्बाई के कारण इसकी उमर की तादाद नहीं हो सकती। जितनी यह लम्बी होती है उसी के अनुसार हाथ पैर लम्बे व चौड़े होते हैं। सिर इसका बड़ा और दांत आगे को निकले हुये और बड़े होते हैं।

प्रभाव—साधक इसको यदि प्रसन्न रखे तो माला-माल कर देती है और अप्रसन्न होने पर उसका सकुटुम्ब विनाश कर देती है।

(११) चन्द्रिका यक्षिणी

साधन का समय—

इसका साधन समय रात्रि के ११ बजे चांदनी रात्रि में होता है। साधक श्मशान भूमि में जाकर मुर्दे की चिता वाली भूमि अर्ध चन्द्राकार मुर्दे की हड्डियों का बनावे और आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रवार के दिन से मन्त्र की आरा-धना करें और तीस दिन तक बराबर जाप करता रहे।

जब स्वाति नक्षत्र में सुष्मुणा नाड़ी चलने लगे उस समय जाप की समाप्ति करना चाहिये।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहा: ।
ॐ चंडिका यक्षिणै नम: स्वाहा: ॥

इस मन्त्र को पचास हजार दफा जाप करे और इसके जाप के लिये मुर्दे की हड्डियों के दाने की माला उनमें पिरोवे और प्रत्येक दाने पर ॐश्री, ॐक्षी ॐक्षी बीच में अंकित करे और प्रति एक जाप पर घी गुड़ की आहुतियाँ देता जाय। भोग के लिए चावल व काले उर्द का बलिदान तैयार रखे। हवन की अन्तिम आहुति दही दूध घृत और शहद की देवे और घर जाकर ब्राह्मणों को खोर का भोजन कराये, यथा शक्ति उनकी पूजा करे और दान दे।

यक्षिणी का आगमन—

पैंतालीस वर्ष की उम्र की स्त्री काले वर्ण की हाथों पर मेंहदी रची हुई मुँह में पान चबाये दाँतों को आगे निकाले हुए एक हाथ में लड्डू दूसरे से अग्नि जलती हुई साधक के पास सीधी चली जाती है और रखे हुए बलिदान को ले जाती है।

प्रभाव—अगर साधक उस समय भयभीत नहीं हुआ तो भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है मान और प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती है।

(१२) लक्ष्मी यक्षिणी

साधन का समय—

इसकी साधना प्रातःकाल चार बजे की जाती है। इसकी साधना के लिये पवित्र मकान की आवश्यकता पड़ती है। जिस जगह पर इसकी आराधना की जावे उस मकान में कोई अपवित्र मनुष्य न जाने पावे और न कोई स्त्री उस मकान का स्पर्श करे। साधना करने से प्रथम मकान की सफाई लिपाई पुताई कराकर उसको धूप चन्दनादि की धूनी देकर पुष्पों की मालाएँ लटका दे और सुगन्धित इत्र की खुशबू उसमें बसाकर जाप आरम्भ करे।

साधन मन्त्र—

लक्ष्मी कान्तम् कमल नयन सिंदूर शोभावरम्।
भालेन्द्र तिलकं ललाट मुकुटम् वाणी वरम् वरदायकम्॥

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में लक्ष्मी की मूर्ति अष्टधातु की बनाकर स्थापित करे और प्रातःकाल उसको गङ्गा-जल से स्नान कराकर उसके मस्तक पर केशर और कस्तूरी का तिलक लगावे और स्वयं कुशासन पर बैठकर

पीताम्बर वस्त्र धारण करे। फिर स्नान किये हुए जल का भक्ति भाव से पान करे और हृदय में मूर्ति का चित्र धारण कर तुलसी की माला हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जाप करें और भांग के लड्डू बनवा कर सामने रखे इस प्रकार इकत्तीस दिन तक जाप करता रहे इकत्तीसवें दिन यक्षिणी दर्शन देगी।

लक्ष्मी का आगमन—

जिस समय यह आती है उससे पूर्व राजा महाराजाओं की भाँति आगमन की तैयारियाँ देवगण कर जाते हैं चारों ओर शान्ति स्थापित हो जाता है। भय का कुछ काम नहीं रहता। इसको अपनी आंखा से साधक नहीं देख सकता। तीसवें दिन स्वप्न में आकर साधक को दर्शन देती है।

लक्ष्मी का स्वरूप—

सुन्दर गोरे वर्ण की अठारह उन्नीस वर्ष के अनुमान वाली स्त्री चन्द्रवदनी मृगलोचनी बाँह चम्पे की डाल अनुसार नाक में स्वर्ण की नथ पड़ी हुई साक्षात देवी अवतार दोनों हाथों में कमल का फूल धारण किए हुये आती है।

प्रभाव—जब यह प्रसन्न होती है तब साधक को

मालामाल कर देती है और जब इसकी पूजा ठीक नहीं होती तो दरिद्री बनाकर चली जाती है ।

(१३) शोभना यक्षिणी

साधन का समय—

इसके सिद्ध करने का समय रात्रि के एक बजे का है । आषाढ़ बदी १५ गुरुवार के दिन स्वाति नक्षत्र में इसको सिद्ध करना प्रारम्भ करके और बलिदान के हेतु तेल और गुड़ में आटा गूँथकर लड्डू बनावे । प्रतिदिन जाप समाप्त कर काले कुत्ते को एक सौ आठ लड्डू नित्य प्रति खिला दिया करे इस प्रकार तीस दिन तक रोज तेल और गुड़ के १०८ लड्डू बनावे । अन्तिम दिन तेल और बेसन के १०८ लड्डू गुड़ में बनाकर कुत्तों को खिला दे ।

साधन मन्त्र—

ॐ शोभनायः शोभनायः शोभनाय नमः ।
निराकारो निराभासो वश्यं कुरु कुरु कुरु स्वाहा ।।

कैत वृक्ष की छाया में बैठकर तीस दिन तक जाप करता रहे । जाप करने की माला चिकनी मिट्टी के दानों की बनावे और उसमें क्वाँरी कन्या के हाथ का काता हुआ सूत डाले यह सूत विशाषा नक्षत्र से काता

जाता है। इसकी कपास प्राकृतिक रूप से पैदा होती है इसको कोई जोतता बोता नहीं स्वयं बरसात में अपने आप इसके पेड़ उग आते हैं और पंचक त्याग कर इसकी कपास लाई जाती है, फिर उसको क्वाँरी कन्या के हाथ से कतवाते हैं। इसके जाप की माला सवा लक्ष एकाग्र चित्त से जपी जाती हैं। समाप्ति होने पर कन्या लाँगुराओं को भोजन हलुआ और चनों का कराया जाता है फिर उनको लाल रङ्ग के वस्त्र पहिना कर यथाशक्ति दान दिया जाता है।

शोभना यक्षिणी का आगमन—

जब यह आती है अनेक प्रकार के रूप बदलती हुई आती है। किसी-किसी समय तो भयंकर शब्द सुनाने लगती है। कभी २ इसके साथ में अनेकों स्त्रियाँ आती हुई दिखाई देती हैं कभी स्वयं अनेक प्रकार से नाचती हुई दीखती है। कभी रोती हुई आती है। इसका प्रचंड कोप बड़ा भयानक होता है। साधक को चाहिये कि सावधानी के साथ बैठा रहे और चित्त को विचलित न करे वरना पागल हो जावेगा।

शोभना यक्षिणी का स्वरूप—

कुरूपिणी एक आँख ऊपर को चढ़ी हुई माथा टेढ़ा

मस्तक पर चेचक और फोड़ा फुन्सियों के दाग महा मलीन देखते ही घृणा उत्पन्न होती है। मदिरा मांस में अधिक रुचि रखती है। गले में अनेक प्रकार की खोपड़ी लाल रंग से रंगी हुई पड़ी हुई होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक को पटक देती है। अनेक प्रकार के दुर्व्यवहार करती है। यदि इसको साधक सह गया तो मालामाल कर देती है।

(१४) मदना यक्षिणी

साधन का समय—

इसका साधन रात्रि के पिछले पहर किन्तु दिन के आरम्भ काल में किया जाता है। निर्जन बन में जहां किसी मनुष्य की आवाज सुनाई न दे वहां पर छोंकर की कोपल लावे और उसमें बरगद की टहनी लगाकर हवन सामिग्री तैयार करे, और पृथ्वी पर षट चक्र काट कर कुण्ड बनावे प्रत्येक चक्र पर (ॐ ह्रीं) बीज अंकित करे बीच में मदना यक्षिणी का नाम लिख दे फिर उसके ऊपर बरगद और छोंकर की कोपल वाली सामिग्री रखकर अग्नि में प्रवेश करे और निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ॐ श्रीं मदनाश्वरी यक्षिणी स्वाहा!
ॐ काल भैरवायनमः फट फट स्वाहा॥

इस प्रकार मंत्र का पाँच हजार जाप वृक्ष के नीचे बैठकर करे। जिस स्थान पर जाप करना प्रारम्भ करे उसी जगह पर हवन कुन्ड स्थापित करे। जाप की माला के दाने मोर पंख के बनावे प्रत्येक दाने के बीच में एक एक गाँठ काली ऊन की लगावे। जब माला तैयार कर चुके तब नियमित समय पर स्यार की खाल के आसन पर बैठकर दक्षिण की ओर मुँह करके जाप करना आरम्भ करे। इक्कीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। इक्कीसवें दिन यक्षिणी स्वप्न में आकर दिखाई देगी।

मदना यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी सत्ताईसवें दिन से सिद्धि होने की सूचना देती है। साधक से स्वप्न में अनेक प्रकार की मनोहर बातें करती है। अपने हाव भाव कटाक्ष से साधक को मोहित करती है। इस प्रकार से उसकी सेवा करती है तथा सर्वदा उसकी सेवा करती रहती है। स्वप्नावस्था में जो कुछ साधक कहता है उस काम को तत्काल कर लाती है। जब जाती है तब हर प्रकार से साधक को प्रसन्न कर तसल्ली दे जाती है।

मदना यक्षिणी का स्वरूप—

रूपवती सुन्दर स्त्री मीठे वचन कहने वाली मन्द २

मुस्काने वाली कभी हँसती कभी नाचती गाती है। पोशाक सदैव काशनी रंग की पहिरे रहती है। जवानी के मद में चूर रहती है। नूर उसके चेहरे से टपकता रहता है काम कला में अति निपुण होती है। सदा साधक की इच्छा-नुसार काम करती है। कभी उससे अप्रसन्न नहीं होती।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से साधक का मन एक जगह पर एकाग्र हो जाता है। फिर उसको किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती।

* इति यक्षिणी साधन विधानम् *

अथ मारण प्रयोग

ईश्वरोवाच

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।
सद्यः सिद्धिः करदां शृणुष्वाहितो मने ।।

महादेव जी बोले कि हे मुने! अब मारण प्रयोग की विधि कहता हूँ, जिससे मनुष्य को फौरन ही सिद्धि प्राप्त होती है। हे मुने ! इसे ध्यान से सुनो।

मारणं न बृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।
प्राणान्त संकटे जाते कर्तव्य भूतिमिच्छता ।।

इस मारण का प्रयोग कभी भी जिस किसी पर व्यर्थ कार्यों में नहीं करना चाहिए। इसका प्रयोग केवल उस समय ही करना चाहिये जबकि प्राणों का संकट आ जाये। क्योंकि इसका प्रयोग केवल प्राणों की रक्षा के लिये ही उचित है!

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव सयापयेत् ।
तस्माद्रक्षेत सदात्मानं न क्वचिच्चरेत् ।।

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को नष्ट कर देता है। अतः तब जो सर्वदा अपनी आत्मा की रक्षा करना चाहे उसको कभी मारण प्रयोग नहीं करना चाहिये।

ब्रह्मात्मानं तु विदितंदृष्टवा विज्ञान चक्षुष ।
सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा नोषभाग्यवेत् ।।

जो ब्रह्म को जानने वाला अपने ज्ञान चक्षु से सर्वत्र ब्रह्म-मय देखता रहता है यदि वह किसी आवश्यक कार्यवश मारण प्रयोग करे तो अनुचित नहीं है। इसके विपरीत जो मारण प्रयोग करता है वह उस पाप का भागी होता है।

तस्माद्रक्षयः सचाऽऽमादि मारणं न क्वचिच्चरेत्।
कर्त्तव्य मारणं चेत् स्यात विधि कृत्यं समाचरेत्।।

अतः अपनी आत्म रक्षा करने वाले को कभी भी मारण का प्रयोग करना ही पड़ जाये तो इस विधि के अनुसार करना चाहिये।

चिता भस्मसगायुक्तं धत्तूरचूर्ण संयुतम्।
यस्यांगे निक्षिपेद्भौमे सद्योयाति यमालये।।

चिता की भस्म तथा धतूरे के चूर्ण को परस्पर मिलाकर जिसके शरीर पर मंगलवार के दिन फेंके वह फौरन ही यमलोक को चला जायेगा तथा उसकी अवश्य ही उसी दिन मृत्यु हो जायेगी।

मल्लातकोतभव तैलं कृष्ण सर्पस्य दंतकम्।
विष धतूरें संयुक्तं यस्यांगे निक्षिपेमृति।।

लावे का तेल, काले साप का दाँत, विष और धतूरा चारों वस्तुओं को मिला कर जिस व्यक्ति के शरीर के ऊपर फेंका जाय उसकी मृत्यु अवश्य हो जाती है।

नरास्थिचूर्णेस्ताम्बूलं मुक्तं मृत्युकरं परम्।
सर्वास्थिचूर्णं यस्यांगे निक्षिपेन मृत्युआप्नुयात्।।

मनुष्य की अस्थियों का चूर्ण पान में रखकर खाने से अवश्य मृत्यु हो जाती है।

चिताकाष्ठ गृहीत्वा तु भौमे च भरणीयुते।
निखनेचूच गृहद्वारे मासान्मृत्युर्भविष्यति ॥

जिस दिन मङ्गलवार हो और भरणी नक्षत्र हो उसी दिन चिता से लकड़ी ले आकर जिसके गृहद्वार पर गाड़ दे उसकी मृत्यु एक मास के भीतर हो जाती है।

कृष्णसर्पवसा ग्राह्या तद्वर्ति ज्वालयेन्निशि।
धत्तूरबीजतैलेन कज्जले नृकपाल क ॥
चिताभस्म समायुक्तं लवण पञ्चसंयुतम्।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्ण सद्यो याति यमालये ॥

काले सर्प की चर्बी और धतूरे के बीज का तेल एक में मिला दें। फिर रात्रि में उस तेल को मनुष्य की खोपड़ी में जलाकर उससे काजल प्राप्त करें जब प्राप्त हो जाय तब उसमें चिता की राख और पांचों नमक मिलाकर जिस पुरुष के शरीर पर फेंके वह पुरुष तत्क्षण सीधा यमलोक को चला जावे तथा उस पुरुष को फौरन मृत्यु हो जाये।

गृहीत्वा वाश्चिक मासमूलूक चूर्णसयुतम्।
यस्यागे निक्षिपेच्चूर्ण तस्य मृत्युर्भविष्यति ॥

बिच्छू तथा उल्लू पक्षी के मांस का चूर्ण लेकर उनको परस्पर मिलाकर जिस मनुष्य के ऊपर फेंका जाय उसकी मौत हो जाय।

लिखेत पञ्चदशी यन्त्र चिताभस्म विलोयत ।
स्मशानाग्नी क्षिपेद्यन्त्र भौमे च म्रियते रिपू ।।

चिता की राख तथा विलोम पद्धति से यदि मङ्गलवार के दिन पञ्चदशी यन्त्र लिखकर श्मशान की अग्नि में डाला जाय तो शत्रु की अवश्य ही मृत्यु हो जाती है।

उल्लू विष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्ण सद्योयाति यमालयम् ।।

उल्लू पक्षी को बीट का चूर्ण तथा उसमें विष का चूर्ण मिला कर जिस व्यक्ति के शरीर पर डाला जाये वह व्यक्ति शीघ्र ही यमलोक पहुँच जाता है अर्थात् उसकी शीघ्र ही मौत हो जाती है।

खर विष्ठा तु संगृह्य विषचू समन्विताम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्योयाति यमालयम् ।।

गधे की विष्ठा लेकर उसको विष में मिला कर उसे जिस व्यक्ति के अग पर डाला जाये वह शीघ्र ही यमपुरी को जाता है तथा जल्दी ही मौत हो जाती है।

रिपुपादतलात्पांशु गृहीत्वा पुत्तलीं कुरु ।
चिता भस्म समायुक्तं मध्यारुधिरान्वितम् ।।

शत्रु के पाँवों के नीचे की मिट्टी को लेकर उसमें चिता की राख तथा मध्यमा अंगुली का रक्त मिलावे और फिर उसका पुतली बनावे।

कृष्ण वस्त्रेण संवेष्ट्य कृष्णे सूत्रेणवन्धयेत् ।
कुशासने सुप्तमूर्तिदीपं प्रज्ज्वालयेत ।।

फिर उस पुतली को काले रङ्ग के कपड़ों में लपेटकर ऊपर से काला डोरा बाँध देवे । इसके बाद मूर्ति को कुशा के आसन पर सुलाकर दीपक जलावे ।

अयुतं प्रजपेनमन्त्रं पश्चादष्टोत्तर शतम् ।
मन्त्र राज प्रभावेण मासोश्चाष्टोत्तरं शतम् ।।

फिर निम्नलिखित मन्त्र का सहस्र जप करे इसके बाद १०८ उर्दी लेकर ०८ बार पुनः मन्त्र का जाप करे ।

पुतली मुखमध्ये तु निपेक्षित सर्वमाषकान् ।
अर्धरात्रिकृते योग शक्र तुल्योरि मारयेत् ।।
प्रातःकालेपुतलिकांश्मशाने च विनिक्षिपेत ।
मासात्मकप्रयोगेण रिपोमृत्युर्भविष्यति ।।

फिर उस अभिमन्त्रित सब उर्दी को उस मूर्ति के मुख में डाल देवे । इस प्रयोग को आधीरात के समय करने से इन्द्र के समान शत्रु भी मारा जा सकता है । रात्रि में इस प्रयोग को करके प्रातःकाल उसी पुतली को श्मशान में गाड़ देना चाहिये । इस प्रयोग को निरन्तर एक मास तक करना चाहिए । ऐसा करने से अवश्य ही शत्रु की मृत्यु होती है ।

मन्त्र

ॐ कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं क्रीं फट् भस्मी नमः कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का जाप करते समय जहाँ 'अमुक' शब्द है वहां शत्रु का नाम लेना चाहिये।

निम्बकाष्टं सामादाय चतुरङ्गुलंल मानतः।
शत्रु केशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत्॥
चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दद्यात् समाहितः।
त्रिरात्रं सप्त रात्रं वा यस्म नाम उदाहृत॥
कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरं शतं जपेत्।
प्रति गृह्णाति तच्छीघ्रं मत्रेणानेन मंत्रवित्॥

नीम की लकड़ी चार अंगुल लेकर उस पर शत्रु के बाल लपेट कर उसी से शत्रु का नाम लिखे फिर सावधानी के साथ उस नाम को चिता के अंगारे की धूप दे। इसी प्रकार तीन अथवा सात रात्रियों तक जिसके नाम पर यह प्रयोग किया जाय उसको निम्नलिखित मंत्र के प्रभाव से प्रेत शीघ्र पकड़ लेता है। साधक को यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरंम्भ करके चतुर्दशी तक समाप्त करना चाहिये और साथ ही प्रतिदिन निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार जप भी करते रहना चाहिये।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूताधिपते विरूपाक्षाय घोर दंष्ट्रिने विकरालिने ग्रह्मक्षभूतेनानेम शंकर अमुक हन हन दह दह पच पच गृहम गृहम हुं फट् ठः ठः॥

विधि—उपरोक्त प्रयोग में इसी मन्त्र का एक सौ आठ बार

जाप करना चाहिये। प्रयोग करते समय उसमें जहाँ 'अमुक' शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करे उसका नाम लेना चाहिये।

मन्त्र

ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ।। आयुत जपात सिद्धि ।
सर्पास्थ्यंगुल मात्रं तु चाश्लेषायां रिपौगृहे ।।
निखनेच्च तथा जप्तं मारयेत रिपुसन्ततिम् ।।

तथा इसी प्रकार आश्लेषा नक्षत्र में एक अंगुल की सांप की अस्थि शत्रु के घर में खोदकर गाड़ दे और साथ ही नीचे लिखे मन्त्र का जाप करता रहे तो शत्र की संतति का नाश हो जाता है।

मन्त्र

अश्वास्थि कोल आश्वंन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।
शत्रोगृहे निहन्त्या कुटुम्बं वैरिणां कुलम् ।।

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की अस्थि चार अंगुल की कील निम्नलिखित मन्त्र में अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु के वंश का नाश हो जाता है।

मन्त्र

हुँ हुँ फट् स्वाहा

सप्तदशाभिमन्त्रित कृत्वा निखनेत ।

विधि—उपरोक्त कील को इस मन्त्र से १७ बार अभिमंत्रित करे और शत्रु के घर में गाड़ दे।

आर्द्रायां निम्बबन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।
निखनेन्मृत वच्छत्रुरुद्धृते च पुनः सुखी ।।

शत्रु जिस घर में सोता हो उसमें आर्द्रा नक्षत्र में नीम का बन्दाक खोदकर गाड़ देने से शत्रु मरणोन्मुख हो जाता है और फिर जब उक्त बन्दाक को निकाल दे तो वह पुनः पहले के समान सुखी हो जाता है ।

तथा शिरीषबन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुनाहरेत् ।
शत्रोर्गेहे स्थापयित्वा रिपुर्नाशो भविष्यति ।।

इसी प्रकार उपरोक्त विधि के अनुसार शिरीष का बन्दाक शत्रु के घर में गाड़ देने से उसका नाश हो जाता है ।

मन्त्र

हुँ हुँ फट् स्वाहा ।।

विधि—उपरोक्त दोनों प्रयोगों में कील को इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ना चाहिये ।

मन्त्र

ॐ डं डां डि डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं गृहण गृहण हुं हुं ठः ठः ।

विधि—इस मन्त्र से मनुष्य की अस्थि की कील एक सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से चिता में गाड़ देवे वह

ज्वर से पीड़ित होकर मर जाता है। इसी प्रकार पूर्व कथित मन्त्र से मनुष्य की अस्थि की कील को एक सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके घर में अथवा जिसके नाम से आधी रात के समय श्मशान में गाड़ दे उसका नाश हो जाता है।

रिपुविष्ठां वृश्चिकश्च खनित्वा तु विनि:क्षिपेत् ।
आच्छद्यावरणे नाथ तत्पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् ।।
म्रियते मल रोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ।।

शत्रु को विष्ठा और बिच्छू को एक पात्र में रख कर बन्द कर दे फिर उस पात्र के पीछे मिट्टी लगा दे और जमीन खोद कर गाड़ दे तो मल के रुक जाने से शत्रु मरने लग जाता है और जब उसको जमीन से निकाल ले तब उसका कष्ट छूट जाता है और वह पहले के समान सुखी हो जाता है।

शत्रु पाद तलात्पांसुं गृह्णयादभौम वासरे ।
गोमूत्रेण तु सिंचित्वा प्रतिमां कारयेत् सुधी ।।
निर्जने च नदी तीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनत्तद्वक्षसि सुदारुणम् ।।
तद्वामे भैरवं कृष्णं विलिभिः प्रत्यहं यजेत् ।।

मंगलवार के दिन शत्रु के पैर के नीचे की मिट्टी लाकर गोमूत्र में उसको भिगो दें और शत्रु के नाम से उस मिट्टी की एक पुतली बनावे। तत्पश्चात एकान्त स्थान में या किसी नदी के तट पर बेदी बनाकर उस मूर्ति को उस पर स्थापित करके

उसकी छाती में खूब तेज लोहे का त्रिशूल गाड़ दे। इसके पश्चात उस मूर्ति के बायें भाग में भैरवी की मूर्ति स्थापित करके प्रतिदिन उनकी पूजा और बलिदान करे।

एकादशबटुंस्तत्र परमान्नेन भोजयेत।
अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतैलेन ज्वालयेत॥
व्याघ्रचर्मासनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे।
दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मंत्रमतन्द्रितः॥

जिस स्थान में इस प्रयोग को करे उस स्थान में ग्यारह ब्रह्मचारियों को उत्तम उत्तम भोजन करावे और उस भैरव मूर्ति के सम्मुख रात दिन कड़ुवे तेल का अखण्ड दीपक जलाया करे और उस मूर्ति के दाहिनी ओर व्याघ्र के चमड़े का आसन बनाकर दक्षिण की ओर मुख करके उस पर बैठे और जितेन्द्रिय होकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे।

मन्त्र·

ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नितेजसे अमुकं शत्रुं मारय मारय पोथय पोथय हुं फट् स्वाहा॥

अयुतः प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितैः।
एको न त्रिशद्दिवसैर्मारणं जायते ध्रुवम्॥

विधि—रात्रि के समय सावधानी से इस मन्त्र का दस सहस्र जप करने से उनतीस दिनों में यह प्रयोग अवश्य सफल होता है। इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करना हो जप करते समय उसका नाम लेना चाहिये।

कृकलास बसातैलं यस्यांगे बिन्दुमात्रतः ।
निक्षिपेन्म्रियते शत्रुर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ।।

गिरगिट की चरबी के तेल की एक बूंद भी यदि किसी के शरीर पर डाल दी जाय तो वह व्यक्ति कदापि जीवित नही रह सकता चाहे उसकी रक्षा करने वाला इन्द्र भी क्यों न आ जाय ।

लवणं विजया युक्तं गृहदीपे तु निक्षिपेत् ।
यस्य नाम्ना क्षयं याति मास मध्ये न संशयः ।।

नमक और भांग मिलाकर घर के दीपक में जिसके नाम से डाली जाय वह व्यक्ति एक मास के भीतर ही मर जाता है इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है ।

मन्त्र

ॐ नमः काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा

एकलक्ष जपात सिद्धो भवति । अष्टोत्तर शत जपात कार्य सिद्धिर्भवति ।

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से सिद्धि होती है और कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जाप करना चाहिये ।

* अथ उच्चाटन प्रयोग *

ईश्वर उवाच

अथग्रे सम्प्रवक्ष्यामि उच्चाटनविधि परम् ।
यस्य साधन मात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ।।

महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी ! अब मैं उच्चाटन की विधि वर्णन करता हूँ जिसके साधन मात्र से ही मनुष्य का उच्चाटन हो जाता है।

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं धनपुत्रकम् ।
उच्चाटनं वधं कुर्याद दुष्ट दण्डो विधीयते ।।

जिनके घर, खेत, स्त्री, धन तथा पुत्र आदि हर लिये गये हों उनके ऊपर उच्चाटन मारण आदि करके दुष्ट को नीति के अनुसार दण्ड देना चाहिये।

ब्रह्मदण्डी चिता भस्म शिवलिंगे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थेन च संयुक्तम् शनिवारे क्षिपेद् गृहे ।।
उच्चाटन भवेत्तस्य स्त्री पुत्रैर्बान्धवैस्सह ।
उच्चाटनं परं चैतन्नान्यथा मम भाषितम् ।।

ब्रह्मदण्डो, चिताभस्म तथा सरसों को परस्पर मिलाकर शिवलिंग पर लेप करे और फिर उस भस्म को अभिमन्त्रित करके शनिवार के दिन जिसके घर में उपरोक्त मिश्रण को डाल दे तो घर में स्त्री पुत्र तथा बान्धुओं में उच्चाटन हो जाय यह परमोत्तम उच्चाटन है। मेरा कथन मिथ्या नहीं है।

सिद्धार्थान शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी ।।

सरसों और शिवनिर्माल्य को मिला करके जिसके घर में खोद कर गाड़ देवे तो उसके घर में उच्चाटन हो जाता है और जब उसको निकाल लेवे तो उसके घर मनुष्य पुनः सुखी हो जाते हैं।

घूक पक्ष भौम वारे यद् गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य बिना मन्त्रेण सिद्धयति ।।

उल्लू पक्षी के पंख को मंगलवार के दिन जिसके घर में खोदकर गाड़ दे उसका उच्चाटन हो जाता है। यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है।

काक पक्षान रविर्वार यद्गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्यनान्यथा मम भाषितम् ।।

जिससे घर में रविबार के दिन कौवों का पंख गाड़ दे उसके घर में उच्चाटन हो जाता है। मेरे कथन में किसी प्रकार की असत्यता नहीं।

गृहीत्वौदुम्बरं कीलं मन्त्रेण चतुरांगुलम् ।
यस्यवै निखनेद् द्वारे अवश्योच्चाटनं भवेत् ।।

औदुम्बर लकड़ी के चार अंगुल की कील बनाकर फिर उसको मंत्र से अभिमन्त्रित करके जिसके ऊपर उच्चाटन करना हो उसके द्वार पर खोद कर उसको गाड़ दे इससे अवश्य उच्चाटन हो जायेगा।

अन्य मन्त्र

ॐ भूते सुलोचने ल्वुं स्वाहा ।।

विधि—इस मन्त्र को ११ लाख जप ११ मास में समाप्त करना चाहिए और १ लाख मंत्र से लकल दल का हवन करना चाहिए जब चन्द्र ग्रहण हो उस समय मालती के फूलों से हवन करे और बाहर जप करे और सूर्य ग्रहण हो तो भी इसी प्रकार

प्रयोग करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर सहस्र व्यक्तियों को भोजन देती है।

वाक्ष यक्षिणी मन्त्र

ॐ रीं चः चः स्वाहा ।।

विधि—इस मन्त्र को कुछ समय तक पवित्र व शुद्ध होकर एक सहस्र प्रति दिन जपने से यक्षिणी सिद्ध हो जाती है। जो बात वह कान में कह देगी और फिर आप उसे प्रकट कर दें, जो कहेंगे सच होगा!

वाक् सिद्धि मन्त्र

ॐ नमो लिङ्गोद्भवरुद्र देह में वाचनं सिद्धि हं विना परवत गतेन्द्रां द्री द्रु दा।

विधि—बहते हुये जल में खड़ा होकर और अपना बाँया हाँथ सिर पर रख कर जप करने से वाक् सिद्धि होती है अर्थात जो मुख से निकले वह सत्य हो जाय। यह एक जप तीन मास में समाप्त करना चाहिये।

त्यागी यक्षिणी मन्त्र

ॐ अहो त्यागी ममत्यागार्थ देहि में वित्तं वीह वित्त स्वाहा ।।

विधि—प्रातःकाल ही स्नान करके गूगुल का धूप दिखाकर इस मन्त्र का चार लाख जप एक साल में समाप्त करे। त्यागी प्रसन्न होती है और बहुत सी वस्तुएँ लाकर देती है।

वट यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री वट वासिनी यक्ष कुल प्रसूते वट यक्षिणी एहि एहि स्वाहा ।

विधि—यह प्रयोग सोमवार से आरम्भ करे और रात के समय त्रिमार्ग पर बैठकर उपरोक्त मंत्र का तीन लाख जप करने से वट यक्षिणी प्रसन्न होती है और एक अंजन और कुछ वस्त्र देती है, उन कपड़ों में से यदि कोई कपड़ा मनुष्य संकट काल में पहन कर जावे तो वह संकट दूर हो जाता है और अंजन को यदि कोई गर्भवती नित्य प्रति दो मास तक लगाये तो उसे अवश्य ही पुत्र उत्पन्न होता है ।

बड़ यक्षिणी मन्त्र

ओं नमो भगवते रुद्रामचन्द्र योगिने स्वाहा ।

विधि—रात के समय बड़ के वृक्ष के ऊपर चढ़कर निरंतर छः घन्टों तक इस मन्त्र का जप करना चाहिये और इतना समय हर रोज करे और तब तक इस जप को करता रहे जब तक कि एक लाख पूरे न हों ।

नरास्थि कीलमादाय निखनेच्चातुरंगुलम् ।
मंत्रयुक्तं रिपोर्द्वारे शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुली की कील बनाकर फिर उसको मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके ऊपर उच्चाटन करना हो उसके द्वार पर खोदकर उक्त कील को गाड़ देने से अवश्य उच्चाटन हो जाता है ।

श्वेतलाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि ।
निखनेत्तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ।।

जिसका उच्चाटन करना हो उसके घर में कलिहारी की जड़ खोदकर गाड़ दे तो उसका उच्चाटन शीघ्र हो जाय ।

छूक विष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धर्थेन समन्विताम् ।
यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ।।

उल्लू की बीट लेकर उसमें सरसों मिलाकर उसका चूर्ण बनावे, फिर उस चूर्ण को जिसके शरीर पर डाले उसका शीघ्र ही उच्चाटन हो जाय ।

काकोलूकस्य पक्षांश्च यद्गृहे निखनेद्रवौ ।
यन्नाम्ना मंत्र योगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ।।

कौवा और उल्लू का पंख जिसका उच्चाटन करना हो उसके नाम सहित उच्चाटन के मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसके घर में गाड़ देने से उसका सब उच्चाटन हो जाता है ।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्रया कराल दंष्ट्राय अमुकं पुत्र बांधवः सह शीघ्रमुच्चाटय हुँ हुँ फट् स्वाहा ठः ठः ।।

अयुत जपात सिद्धिः । अष्टोत्तरशतं जपात प्रयोग सिद्धिः ।

यह मन्त्र दश सहस्र जपने से सिद्ध होता है । जब सिद्ध हो जाय तो प्रयोग करने के लिये जप करते समय 'अमुक' शब्द के

स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये।

मध्यान्हे लुंठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिका।
उदङ् मुखः प्रतीच्यां तु गृहीत्वा वाम पाणिना ॥
यद्गृहे क्षिप्यते धूलिस्तस्योच्चाटनम् भवेत्।
एवं सप्तदिनं कुर्यात् गृहेशोच्चाटनं भवेत् ॥

जहाँ दोपहर के समय गधा लेटा हो वहा की धूल पश्चिम की ओर मुख करके खड़े होकर बायें हाथ से उठा लावे। फिर इस धूल को जिसके घर में फेंके दे उसका उच्चाटन हो जाये। इस प्रकार सात दिन तक करते रहने से घर के मालिक का उच्चाटन हो जाता है।

मन्त्र

ॐ नमो मीमाम्याय अमुक गृहे उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा। अयुत जपात्सिद्धिः।

विधि—उपरोक्त प्रयोग को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करने से सिद्ध होता है। इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है यहाँ जिसका उच्चाटन करना हो उसका नाम लेना चाहिये। यह मन्त्र दस हजार जप करने से सिद्ध होता है।

———

अथ आकर्षण अभिधान

ईश्वरोवाच

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धि प्रयत्नतः ।
राजः प्रजायाः सर्वेषां सत्यं आकर्षणं भवेत् ॥

श्री महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी अब मैं आकर्षण की विधि कहता हूँ जिससे राजा तथा प्रजा आदि सबको आकर्षित किया जा सकता है, इसको तुम सावधानी से सुनो।

कृष्णधत्तूर पत्राणां रसं रोचन संयुतम् ।
श्वेतचण्डत लेखन्या भूर्ज पत्रे लिखेत्ततः ॥
यस्य नाम लिखेन्मध्ये तापयेत्खादिराग्निना ।
शतयोजनगो वापि शाघ्रमायाति नान्यथा ॥

भोजपत्र पर काले धतूरे के रस में गोरोचन मिला कर सफेद कनैल की कलम से जिसके ऊपर आकर्षण करना हो उसका नाम लिखे और उस नाम के चारों ओर मन्त्र को लिख दें, इसके बाद खैर की लकड़ी जलाकर उस भोज पत्र को उसी लकड़ी की अग्नि पर तपा दे, तो जिसके ऊपर प्रयोग किया जाये चाहे वह सौ योजन अर्थात् ४०० कोस की दूरी पर भी चला गया तो भो अवश्य चला आवे ।

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।
यस्य नाम लिखेन्मध्ये मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥

तदा आकर्षणं याति सिद्धयोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।।

अनामिका अंगुली का रक्त निकाल कर सफेद कनैल की लकड़ी की लेखनी से भोजपत्र पर जिसका नाम लिखकर और उस नाम के चारों ओर आकर्षण मन्त्र को लिखकर शहद में डाल दे तो उसका आकर्षण अवश्य हो जाये। मेरा कहा हुआ यह सिद्धि योग मिथ्या नहीं है इसको प्रत्येक मनुष्य को न देना चाहिये।

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं गोरोचनसकुङ्कुमैः ।
तापयेत्खदिरगांरे स्त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ।।
मन्त्रं जपेत्सुससिद्धं कर्षयेदुर्वशामपि ।

ऊपर लिखी हुई अन्य विधि के अनुसार केशर तथा गोरोचन से मनुष्य की खोपड़ी में मंत्र लिखकर उस खोपड़ी को प्रातः मध्यान्ह और सायंकाल में खैर की लकड़ी की अग्नि पर तपावे तथा मन्त्र का जाप करे तो उर्वशी का भी आकर्षण हो जाये।

गृहीत्वार्जुनवन्दाकमश्लेषां समाहितः ।
अजामूत्रेण संपिष्ट्वा निक्षिपेच्छिरसोपरि ।।
नारी व पुरुषो यस्य सुतो व पशुरेव च ।
आकृष्ट स्वयमायाति सत्यं २ वदाम्यहम् ।।

आश्लेषा नक्षत्र में सावधानी से अर्जुन के वृक्ष का बांदा लाकर बकरी के दूध में उसको पीस डाले फिर जिस स्त्री पुरुष तथा पुत्र और पशु आदि के सिर उसको डाले, वह स्वयं आकर्षित होकर चला आवे। मैं सत्य कहता हूँ यह प्रयोग मिथ्या नहीं होगा।

सूर्यावर्तस्त मूलं तु पञ्चम्यामानयेद बुधः ।
ताम्बूलेनसमदद्यात स्वयमायाति भक्षणात् ।।

पंचमी के दिन सूर्यावर्त (हुर हुर) की जड़ लेकर उसको पान में रख कर जिसको दे वह स्वयं आकर्षित होकर चला आवे '

ब्रह्मदण्डी समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ।
कामार्ता कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगेविनिक्षिपेत् ।।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ।।

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस दिन ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण बना लेना चाहिए। उस चूर्ण को जिस काम पीड़ित स्त्री के उत्तम अङ्ग अथवा सिर पर छिड़क दे तो कामिनी प्रयोग करने वाले के पीछे २ अवश्य चली आती है। मेरा कथन मिथ्या नहीं है।

मन्त्र

ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षण कुरु कुरु स्वाहा। एक लक्ष जपात योग सिद्धि, अष्टोत्तर शत जपात प्रयोग सिद्धिः ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये और जब प्रयोग करना हो तो प्रयोग करने से पूर्व १०८ बार जप करके प्रयोग करे; और 'अमुक' के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये।

———

अथ इन्द्रजाल अभिधान

इश्वरोवाच

इन्द्रजालं विना रक्षा जायते न सुनिश्चितम् ।
रक्षामन्त्रो महामन्त्रः सर्व सिद्धि प्रदायकः ।।

महादेव जी बोले कि दत्तात्रेय जी अब मैं इन्द्रजाल की विधि का वर्णन करता हूँ। इसके बिना शरीर की रक्षा नहीं हो सकती। इस मन्त्र से निश्चय ही रक्षा होती है और यह सब सिद्धियों का देने वाला है।

शरीर रक्षा मन्त्र

ॐ नमो परब्रह्म परमात्मने मम शरीर रक्षां कुरु कुरु स्वाहा। लक्ष जपात मन्त्र सिद्धि। अष्टोत्तर शत जपात प्रयोग सिद्धिः ।।

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्धि होती है और प्रयोग सिद्धि के लिये प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करना चाहिए। इसको सिद्ध करने के बाद इन्द्रजाल की क्रीड़ा करने में यदि कोई भूल भी हो हो जाय तो किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

इन्द्रजाल मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजाल कौतुकानि दर्शय दर्शय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

एक लक्ष जपात मन्त्र सिद्धोभवति।
अष्टोत्तरशत जपात प्रयोग सिद्धो भवति ॥

विधि—यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है। और फिर जब क्रीड़ा करनी हो तो रक्षा महा मंत्र तथा इस मंत्र को १०८ बार जप करके इन्द्रजाल की क्रीड़ा करनी चाहिये।

कार्पास बीजं सर्पास्ये भौमवारे च रोपयेत्।
उद्भुतं बीज कार्पासं बाल एरण्ड तैलके ॥
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवत् दृश्यते ध्रुवम् ॥

कपास के बीज को मङ्गलवार के दिन मरे हुये साँप के मुख में डाल कर फिर इसके मुख से निकाल कर बो दे। जब उस कपास में रुई निकाल आवे तब उस रुई की बत्ती बनाकर रात के समय रेंडी के तेल में जलाने से वहाँ की सब वस्तुयें साँप के समान दिखाई देंगी और दिया बुझ जाय तो वे सब अदृश्य हो जायेंगी।

वृश्चिकस्य मुखे बीज क्षिपेन्कार्पासक तथा।
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्री बृश्चिक भवति ध्रुवम् ॥
वर्ति शान्तिः प्रकर्त्तव्या महा कौतुक शामिका ॥

बिच्छू के मुख में कपास का बीज डाल दे फिर उसको निकालकर बो दे, उसमें से जो रुई निकले उसको बत्ती बनाकर रात्रि को रेंड़ी के तेल में जलाने से बिच्छू ही बिच्छू दिखाई देंगे।

भौमे कार्पास बीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत्।
सन्ध्यायां ज्वालयेन्दति दृश्यते नकुला ध्रुवम् ॥

मङ्गलवार के दिन कपास के बीज नेवले के मुख में डाल कर बोये, उससे जो कपास उत्पन्न हो उसकी बत्ती बनाकर रेंड़ी के तेल में रात्रि के समय जलाने से नेवले ही नेवले दिखाई देगे।

एरण्ड तेलजं दीपं शनि पुष्पाहि कंचुकम् ।
मण्डूक वसाया दीपे सर्वं पश्यति सर्पवत् ॥

अरण्डी का तेल और मेंढक की चर्बी मिलाकर दीपक जलाये और उस दीपक में साँप के कैंचुल में शमी का पुष्प लपेट कर उसकी बत्ती जलाने से सब वस्तुयें सर्पवत् अथवा साँप के समान दिखाई देने लगेगी।

उलूकस्य कपाले तु घृत दीपेन कज्जलम् ।
पार्तायित्वांजयेन्नेत्रे रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥

उल्लू की खोपड़ी में घी डालकर दिया जलाये और फिर इस दीपक से काजल को प्राप्त करे उस काजल को आँखों में लगाने से बिना किसी दीपक के रात्री के घोर अन्धकार में भी पुस्तक को पढ़ सकता है।

चन्द्रे कार्पास बीजानि मार्जारस्य मुखे क्षिपेत् ।
तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ मार्जारो दृष्यते ध्रुवम् ॥

बिल्ली के मुख में कपास का बीज डालकर फिर उसके मुख से निकाल ले और उसको बो दे, उससे जो रुई निकले उसकी बत्ती बना कर रात में जलाने से अवश्य ही बिल्लियाँ दिखाई देंगी।

एवं यस्य मुखे क्षिप्तं तदुभ्वार्तिकम् ।
दीपं प्रज्वालयेद्रात्रौ दृश्यते हि स निश्चितम् ।।

इसी प्रकार जिसके भी मुख में कपास का बीज डालकर और उसे फिर बोकर उससे पैदा हुई रुई की बत्ती बनाकर रेंड़ी के तेल में डाल कर रात्रि के समय दीपक जलाने से अवश्य ही वही जन्तु दिखाई देगा।

अंकोल बीजे निक्षिप्ते मत्तेगजमुखे गुरौ ।
मत्रेण सिचयेन्नित्यं यावदबीज फलं भवेत् ।।
त्रिलोह वेष्ठितं कृत्वा एक बीज मुखेस्थितम् ।
मत्तमांग वीर्यस्तु वायु तुल्य पराक्रम् ।।

गुरुवार के दिन मरे हुये हाथी के मुख में अंकोला का बीज डाल दे और फिर उसको निकाल कर बो दे और जब तक उसका फल उत्पन्न न हो तब तक इन्द्रजाल का मन्त्र पढ़कर उसको सींचता रहे और जब पेड़ में फल पैदा हो जाय तो उसमें से एक बीज निकाल कर उसको त्रिलोह में लपेट कर अपने मुख में रखने से मतवाले हाथी के समान बल तथा वायु के तुल्य पराक्रम आ जाता है।

तुरंगास्ते तु तदबोजं रविवारे विनिक्षिपेत ।
जायन्ते सफला वृक्षस्तत बीजं ग्राह्य तं पुनः ।।
त्रिलोहवेष्ठितं कृत्वा मुखमध्ये च धारितम् ।
महा बलो महा तेजो जायते च तुरंगम् ।।

इस बीज को अर्थात अंकोल के बीज को रविवार के दिन मरे हुए घोड़े के मुख में डाले उससे जो पेड़ पैदा हो उसका कुछ

बीज लेकर उसे त्रिलोह में लपेट कर अपने मुख में डालें तो घोड़े के समान बहुत बलवान और वीर्यवान हो जावे।

दशहम द्विषच ताम्र षोडश रोप्य भाग्यकम्।
राव सख्या त्रिलोहस्य उताव्या सर्व कर्मणि॥

सोना दस भाग, तांबा बारह भाग, चांदी सोवाँ भाग इन धातुओं को परस्पर मिला कर अग्नि में डाल दे। इनसे जो नई-नई धातुयें तैयार होती हैं उसे त्रिलोह कहते हैं इस धातु का यन्त्र बनवा कर उसमें अंकोल के बीज को रखकर मुख में रखना चाहिये।

वृषमूखे तु तद् बीजं निक्षिप्तेभुवि निक्षितम्।
तद्बीज मुख मध्यस्था त्रिलोह वेष्टित कुरु॥
महा बली महा तेजो जायते वृषभश्च स॥

इसी प्रकार अंकोल के बीज को मरे बैलके मुखमें डाले उससे जो अंकोल का पेड़ पैदा हो उसका बीज लेकर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से निश्चय ही बैल के समान बल आ जाता है।

कुरंगास्ये तु तद् बीजंनिक्षिपेद् भूतले ध्रुवम्।
त्रिलोहवेष्ठितं बीजं मृगराज समा भवेत्॥

इस अंकोल के बीज को मृग के मुख में डाल कर बोने से जो अंकोल का वृक्ष पैदा होता है उससे अंकोल का बीज लेकर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से मनुष्य में मृगराज के समान स्फूर्ति आती है।

स्त्रानोवक्त्रे तु तद्बीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ।
त्रिलोहवेष्ठितं, कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा चकुक्कुरः ।।

इसी प्रकार कुत्ते के मुख में डाला हुआ अंकोल का बीज भूमि में बोवे और जब उसमें फल आ जाये तो उस फल को तोड़ कर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने वाला कुत्ते के समान हो जाता है अर्थात सबको कुत्ते के समान दिखाई देने लगता है।

मयूरमुख मध्ये तु तद्ब जं तु विनिक्षिपेत् ।
त्रिलोहवेष्ठितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनं ।।

इस प्रकार मोर के मुख में अंकोल के बीज को डाल कर पुनः उसको भूमि में बोये और उससे जो पेड़ पैदा होवे उसका एक फल तोड़ कर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से सबको मोर के समान दिखाई दे।

ये केचन जोवाश्च वर्तन्ते जगतो तले ।
क्षिप्त्वा मुखे अंकोलबीजं निक्षि तेपृथिवी तले ।।
तद्बीज मुख मध्यस्थ त्रिलोहे वेष्ठित कुरु ।
तद्रूपी च भवेत्सद्यो नान्यथा मम भाषितम् ।।

पृथ्वी पर जितने जोव हैं उनमें जिनके मुख में अंकोल का बीज डाले और फिर उस बोज को पृथ्वी में बोकर उसके फल को त्रिलोह में लपेट कर मुँह में रख ले तो वह उसी का स्वरूप हो जाता है जो जिस जन्तु के मुख के बीज का फल त्रिलोह में लपेट कर मख में रखे वह उसी जन्तु के रूप में दिखाई देगा मेरा कथन मिथ्या नहीं है।

अंकोलस्य तु बीजानि निक्षिप्त्वा तैल मध्यतः ।
धूपं दत्वा तु तत्तैलं स सर्वसिद्धि प्रदायकम् ।।
तड़ागे निक्षिपेत् पद्म बीजं तत्तैल सयुतम् ।
तत्क्षणाज्जायते योगिन् तडागात्कमलोद्भवाः ।।
तत्तैलमाम्रबीजे तु निक्षिपेत् बिन्दु मात्रतः ।
आम्रवृक्षस्तदुत्पन्नः क्षणमात्रात्फलान्वितः ।।

अंकोल के बीजों को तेल के बीच में डालकर धूप देने से वह तेल में सर्व प्रकार की सिद्धियों क देने वाला हो जाता है। यदि उस तेल में कमल का बोज मिलाकर उस तेल को तालाब में फेंक दिया जाये तो हे दत्तात्रेय जी ! उस तालाब में उसी क्षण ही कमल वृक्ष उत्पन्न हो जाते हैं उस तेल में आमों के बीजों को मिलाकर उस तेल को एक बूंद मात्र भो भूमि में फेंकी जाये तो उसी क्षण उसमें आम के फल भी लग जाते हैं।

खंजरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ।
पिञ्जरे रक्षयेत्तावद्यावद्भाद्रप्रदो भवेत् ।।
अदृश्यो जायते सत्यं नेत्रणापि न दृष्यते ।
करेण तु शिखा ग्राह्या रौप्ययन्त्रे च निक्षिपेत् ।
गुटिका मुखमध्यस्था अदृश्यो भवति ध्रुवम् ।।

खंजरीट अर्थात् खंजन पक्षी को फाल्गुन मास में जीबित पकड़ कर पिंजरे में डाल दें और भादों मास में वह पिंजड़े में ही अदृश्य हो जायेगा अर्थात वह आँखों से दिखाई न देगा क्योंकि उस समय उसकी चोटी निकल आती है उसकी चोटी

को हाथ से पकड़ कर उखाड़ ले और चाँदी के यन्त्र में बन्द कर दे। उस यन्त्र में जिसमें खंजन पक्षी की चोटी हो मनुष्य मुख में रखने से निश्चय ही अदृश्य हो जाता है अर्थात् किसी को दिखाई नहीं देता।

उल्लू विष्ठां गृहीत्वा त्वरण्डतैलेन पेषयेत।
यास्यांगे निक्षिपेद्बिन्दुमदृश्यो जायते नरः।।

उल्लू की विष्ठा को अरण्डी के तेल में पीस कर मिला कर जिसके शरीर पर डाली जाय वह ब्यक्ति अदृश्य हो जाता है अर्थात किसी को दिखाई नहीं देता।

म तुलुंगस्य व्रीजानां तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः।
लेपयेत्ताम्रपात्रे तन्मध्याह्ने च विलोकयेत्।।
रथेन सह चाकरो दृश्यते भास्करो ध्रुवम्।
बिना मंत्रेण सिद्धिःस्यात सिद्धि योग उदाहृतः।।

मातुलुङ्ग के बीजों का तेल निकाल कर तांबे के पत्र में उसका लेप करे फिर दोपहर के समय उसमें सूर्य भगवान को देखे तो निश्चय उसको सूर्य भगवान अपने रथ में बैठे दिखाई देंगे। यह प्रयोग जो मैंने कहा है बिना किसी मन्त्र के सिद्ध हो जाता है।

वाराहि क्रान्तिकमलं सिद्धार्थस्नेह लेपितम्।
मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम्।।

बाराही और क्रान्तिका की जड़ में सरसों के तेल का लेप करके उसको मुख में रखने से दूसरे मनुष्य की दृष्टि बन्द हो

जाती है अर्थात जो इसको मुख में रख ले वह दूसरों की दृष्टि बन्द करके उनको जो चाहे सो दिखावे।

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः।
कृकलास मुखे क्षिप्त्वा कंक बृक्षं च बन्धयेत्॥
मूत्र बन्धो भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी।
विना मन्त्रेण सिद्धिःस्यात्सिद्धियोग उदाहृतः॥

मङ्गलवार के दिन जहाँ शत्रु ने लघुशंका की हो वहाँ की मिट्टी लेकर उसको गिरगिट के मुख में डालकर उसको धतूरे के वृक्ष के साथ बाँध दे। जब तक वह मिट्टी धतूरे के वृक्ष के साथ बँधी रहे तब तक शत्रु की लघुशंका बन्द रहे और उस मिट्टी को धतूरे के बृक्ष से हटा लिया जाय तो शत्रु पुनः सुखी हो जाय। यह प्रयोग जो मैंने कहा है बिना किसी मन्त्र के सिद्ध हो जाता है।

सिन्दूरं गन्धक तालं समं पिष्टवा मनःशिलाम्।
धृते तल्लिप्तवस्त्रे तु ध्रुवमग्निश्च दृश्यते॥

सिंदूर, गन्धक, हरताल तथा मैनसिल इन सबको समभाग में लेकर पीस डालें फिर इसको वस्त्र पर लगाकर जो व्यक्ति उस वस्त्र को ओढ़ेगा वह अवश्य ही अग्नि के समान हो जायगा अर्थात् वह सबको अग्नि के सदृश दिखाई देगा।

रविवारे सकृद्धन्याद्दीर्घ तुण्डी तदा निशि।
ततः सोमे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः॥
तच्चर्मणि क्षिपेच्छत्रु मूत्रबन्धन कारिका।
उद्धृते तु सुखी चैव सिद्ध योग उदाहृतः॥

रविवार की रात्रि में छछूँदर को इस प्रकार से मारे कि वह एक ही बार में मर जाय फिर सोमवार के दिन जहाँ शत्रु ने लघुशंका की हो वहाँ की मिट्टी ले आवे और उस मिट्टी को छछूंदर की खाल में भर दे तो शत्रु की लघुशंका बन्द हो जाती है और उस खाल को खोल देने से शत्रु पुनः सुखी हो जाता है यह सिद्ध योग का प्रयोग है।

श्वेताञ्जनं शमादायागस्त्य पुष्प रसेन च।
पिष्टवा सप्त दिनं यावदृष्टमेह्नि यथा विधि ॥
अञ्जनं चांजयन्नेत्रे दृष्यन्ते चाह्नि तारकाः ॥

सफेद चन्दन को लेकर उसको सात दिन पीसे फिर आठवें दिन उसमें अगस्त्य के पुष्प का रस मिलाकर विधिपूर्वक अर्थात मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आँखों में अंजन लगावे तो दिन में तारे दिखाई दें।

कुक्कुटस्याण्डमादाय तच्छिद्रे पारदंक्षिपेत्।
सम्मुखे भास्करं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम् ॥
बिना मन्त्रेण सिद्धिःस्यात सिद्धि योग उदाहृतः ॥

मुर्गी के अण्डे को लेकर उसे छेदकर उसमें पारा भर दे और फिर यदि उसको सूर्य के सामने करे तो वह आकाश की ओर जायेगा। यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है।

अर्कक्षीरं वटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरं तथा।
गृहीत्वा पात्रके क्षिप्तं जलपूर्णं करोति च।
दुग्धे संजायते तत्र महाकौतुक कौतुकम् ॥

मदार का दूध, वट का दूध तथा गूलर का दूध इन सबको मिलाकर एक पात्र में भर कर रख दे फिर उसमें जल डाले तो वो सारा का सारा दूध ही के समान दिखे यह कौतुक महा कौतुक है।

पुष्यार्के तु समानीय मूलंश्वेतार्क सम्भवम् ।
अंगुष्ठप्रतिमां तस्य प्रतिमा तु प्रपूजयेत् ।।
गणनाथ स्वरूपं तु भक्त्या रक्ताश्व मारजै ।
कुसुमेश्चापि गंधाद्यैर्हविस्याशी जितेन्द्रिय ।।
पूज्येन्नाममन्त्रैश्च तद बीजानि नमोन्तकैः ।
यान्यान्प्रार्थयते कामानेकमासेन तांल्लभेत् ।।
प्रत्येक काम्य सिद्धयर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ।।

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस दिन अर्क अर्थात मन्दार की जड़ लेकर उसमें अंगूठे के बराबर गणेश जी की मूर्ति बनाकर गणेश जी के नाम से भक्ति-पूर्वक उस मूर्ति की पूजा करे। इसके पश्चात जितेन्द्रिय होकर गणेश जी का बीज मन्त्र से रक्त, चन्दन, लाल कनेर के पुष्प और गन्धक आदि से हवन करे। इस प्रकार से हवन पूजा करता हुआ साधक जिन कामनाओं की प्रार्थना करेगा उन कामनाओं की प्राप्ति हो जायेगी। प्रत्येक कामना सिद्धि के लेख इसी प्रकार एक १ मास पूजन करना चाहिये।

गणेश जी का मन्त्र

ॐ अन्तरिक्ष स्वाहा । अनेन मंत्रेण पूजयेत् ।

इस मंत्र से 'ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' पूजा करनी चाहिये।

ॐ ह्रीं पूर्वदयां । ॐ ह्रीं फट् स्वाहा । अनेन मन्त्रेण रक्ताश्वमार पुष्पाणि घृत औद्रयुतानि जुहुयात । वांछितं ददाति ।

इस मन्त्र से लाल चन्दन, लाल कनेर का पुष्प, घी तथा शहद मिलाकर हवन करना चाहिये । इस मन्त्र द्वारा हवन करने से देवता मनोवांछित फल देते हैं ।

ॐ ह्रीं श्रीं मानस सिद्धि करीं ह्रीं नमः । अनन मन्त्रेणं रक्त कुसुममेकं जप्त्वानित्यं क्षिपेत । ततो भगवती वरदा अष्टगुणा नामेकं गुणं ददाति ।

इस मन्त्र का जाप करते हुये एक मास तक वरदायिनी भगवती आठ गुणों में से एक गुण देती हैं ।

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षबन्दाकं धारयेत्करे ।
वाक्य सिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ।।

कृतिका नक्षत्र में थूहर के वृक्ष का बंदाक हाथ में बाँधने से वाक्य सिद्धि प्राप्त होती है यह अत्यन्त आश्चर्य में डालने वाला प्रयोग है ।

अनेन ग्राहयेत् स्वाती नक्षत्रे बदरीभवम् ।
बृन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्राथ्यंते जनैः ।।
तत्क्षणात प्राप्यते सर्वं मंत्रमात्रस्तु कथ्यते ।
ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा अनेन ग्राहयेत् ।।

इसी प्रकार इस 'अन्तरिक्षाय स्वाहा' मन्त्र से स्वाती नक्षत्र में बेर का बंदाक लेकर उसको हाथ में बांधे तो उसके प्रभाव

से जिस समय जो इच्छा हो करे वह क्षण भर में पूर्ण हो जाता है।

गन्धकं हरितालं च गोमूत्रं च विषं तथा।
सूक्ष्मं चूर्णमयं कृत्वा किंचिन्मार्गे विनिक्षिपेत ॥
विघ्ना: सर्वे पलायन्ति यथा युद्धेषु कातरा: ।
बिना मन्त्रेण सिद्धि:स्यात सिद्धि योगे उदाहृत: ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।
इन्द्रजाल महाविद्या वक्ता विद्यासु चौत्तमा ॥

गन्धक, हरिताल और विष को पीसकर चूर्ण के समान बना ले और उस चूर्ण को गोमूत्र में मिलाकर उसको थोड़ा सा मार्ग में छिड़क दे तो सब विघ्न इस प्रकार भाग जाते हैं जिस प्रकार युद्ध में कायर भाग जाते हैं। यह सिद्धियोग है। यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है। मैं सत्य कहता हूँ कि इन्द्रजाल विद्या सब विद्याओं में श्रेष्ठ कहा जाता है। यह विद्या सबको न सिखानी चाहिये।

अथ रसायनिक प्रयोगविधानम्

ईश्वरोवाच

अथाग्रे कथयिष्यामि रसायन विधि परम् ।
कुबेर तुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ।।

श्री महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी ! अब मैं तुम्हें उस रसायन की उत्तम विधि को कहता हूँ जिसको सिद्ध करने से मनुष्य कुबेर के समान धनवान हो जाता है ।

गोमूत्रं हरतालं च गन्धकं च मनः शिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेषयेत् ।।

गोमूत्र, हरताल, गन्धक और मैनशिल इन चारों वस्तुओं को सममात्रा में लेकर खरल करे और जब तक सूख न जाय तब तक उनको खरल करता रहे ।

गोमूत्रं रक्त वर्णाया गन्धकं रक्तवर्णकम् ।
एकादशदिनं यावद्रव्यं यत्नेन वै शुचिः ।।

इस प्रयोग के लिये गो मूत्र लाल गाय का तथा गन्धक लाल रवा की होनी चाहिये और इनको ग्यारह दिन तक मन्त्र पाठ करते हुये खरल में घोंटे ।

गोल कृत्वा द्वादशेह्नि रक्त वस्त्रेण वेष्टयेत ।
चरंगुलमानेन मृदम् लिप्त्वा विशेषयेत् ।।

उन सब वस्तुओं को बारहवें दिन गोला बनाकर लाल कपड़े में लपेट दे और फिर उसके ऊपर चार अँगुल मोटी मिट्टी चढ़ाकर सुखा ले।

पंच हस्त प्रमाणेन भूमौ गर्तं तु कारयेत्।
पलाश काष्ट लोष्ठेस्तु पूरयेत द्रव्य मध्यगम्॥

अब पाँच हाथ गहरी भूमि खोदे और उसमें पलाश की लकड़ी डालकर उसमें इस गोले को रख दे।

अग्नि दद्यात् प्रयत्नेन स्वांगशीतम् समुद्धरेत।
ताम्र पात्रेसु सन्तप्ते तद्भस्मं तु प्रदापयेत॥

और उसमें यत्नपूर्वक अग्नि लगा दे अर्थात उसमें इस प्रकार से अग्नि लगावे कि जिसमें वह पूर्णरूपेण भस्म हो जाय। जब वह भस्म हो कर शीतल हो जाय तब उनको निकाल ले और तपे हुये तांबे के पत्र पर उस भस्म को डाल दे।

गुंजेकं तत्क्षणात्स्वर्णं जायते ताम्र पात्रकम्।
अरण्ये निर्जने देशे शिवालय समीपतः॥

क्योंकि ज्योंहो वह भस्म तांबे के पत्र पर डाली जायेगी त्यों ही वह तांबे का पत्र घुंघची के आकार का सोना हो जायेगा। यह प्रयोग किसी निजंन बन अथवा शिवालय के समीप ही करना चाहिये।

शुक्ल पक्षे सुचन्द्रेह्नि प्रयोगं साधयेत् सुधीः।
त्र्यम्बकेति च मन्त्रस्य जपं दश सहस्रकम्॥

बुद्धिमान को चाहिये कि इस प्रयोग को शुक्ल पक्ष में उस दिन करे जिस दिन चन्द्रमा बलवान हो और इस प्रयोग के करने से पूर्व साधक को चाहिये कि त्र्यम्बकम् इस मन्त्र का दश सहस्र जप करे।

प्रत्यहं कारयेद् विप्रान भोजयेद्रुदसम्मितान् ।
यावत् सिद्धिर्न जायेत तावदेतत् समाचरेत ॥

प्रति दिन ११ ब्राह्मणों को भोजन करावे, और जब तक सिद्धि प्राप्त न हो तब तक प्रतिदिन इसी मन्त्र का दश सहस्र जप करते हुये द्रव्य खरल करने से रसायन सिद्ध होता है।

॥ द्रव्यमर्दन मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादीनामीशाय रसायनस्य सिद्धिं कुरु कुरु फट् स्वाहा ।

उपरोक्त वस्तुओं को खरल करते समय प्रति दिन इसी मन्त्र का दश सहस्र जप करते हुये द्रव्य खरल करने से रसायन सिद्ध होता है। पहले दस हजार बार जप करके मन्त्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है।

॥ इति रसायन प्रयोगं सम्पूर्णम् ॥

———

अथ तन्त्र प्रकरणम्

उच्चाटन-तंत्र

ब्रह्म दण्डी चिताभस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत् ।
सिद्धर्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ।।
उच्चाटनं भवेत्तस्य जीवते मरणान्तिश्चम् ।
बिना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोगोरुदाहृतः ।।

एक शिवलिङ्ग बनाकर उस पर ब्रह्मदण्डी और चिता की भस्म लेपन करे। सफेद सरसों मिलाकर उसे जिसके घर में फेंका जायगा शीघ्र ही उसका उच्चाटन हो जायगा। यह सिद्ध योग बिना मन्त्र के सिद्ध प्रदायक है।

उच्चाटन यन्त्र

	र टं	
र टं	नाम	र ट
	रं टं	
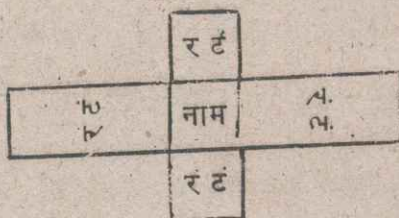
यह यन्त्र धतूरे के रस से धतूरे के पत्ते पर शत्रु-नाम सहित लिख कर हिलाने से शत्रु का शीघ्र उच्चाटन होता है।

उच्चाटन-मन्त्र

ॐ तुङ्ग स्फूलिङ्ग बक्रिय चाचिक विद्धद्दहन मांघ वेनं स्फें स्फें ॐ ठः ठः ।

इतवार तथा मंगलवार को पड़ने वाली अमावस्या को आधी रात को ऊँट के चर्म पर बैठकर श्वेत गुंजा की माला शत्रु के नाम से सौ बार जपने से उच्चाटन अवश्य होता है।

३–विद्वेषण-यन्त्र

एक हाथ में कौआ तथा दूसरे में उल्लू पक्षी का पंख लेकर "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह, बिद्वेषणम् कुरु स्वाहा" मन्त्र पढ़कर दोनों का अग्रभाग मिलाकर काले सूत्र में लपेटे। फिर पंख दोनों हाथ से पकड़कर जल में खड़ा होकर तर्पण करना चाहिये। इस प्रकार सात दिन करने तथा एक सौ आठ बार मंत्र जपने से अवश्य विद्वेषण हो जाता है।

नोट—अमुकस्यामुकेन के स्थानपर उन दो व्यक्तियों का नाम लेना चाहिये जिनसे विद्वेषण कराना हो।

विद्वेषण—यन्त्र

०	२	५	९
६	३	२	३
४	४	५	१
४	५	२	३

इस यन्त्र को शीशे की कलम से पीपल के नीचे लिखने से मनचाहा फल मिलता है।

विद्वेषण—मन्त्र

ॐ नमो नारदाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषणां कुरु कुरु स्वाहा। इस मन्त्र को एक लाख बार जपने से सिद्धि होती है। एक सौ आठ बार जपने से प्रयोग सिद्ध होता है।

अन्योक्ति

सर्प की दाढ़ और नकुले का बाल तथा स्मशान की भस्म की गोली बनाकर किसी ऐसे स्थान पर गाड़े जहाँ उसे दो मित्र लाँघ सकें। लंघन होने के बाद उनमें वैमस्य हो जायगा।

दूसरी विधि—रविवार को दोपहर के समय ऐसी जगह की धूल जहाँ गधा या भैंसा लेटा हो किसी के घर में डाल देने से उसमें सर्वदा क्लेश तथा कलह रहता हैं।

४—मोहन-तन्त्र

हरिताल चाश्वगन्धा पेषयेत्कदली रसे।
गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोक मोहनम्॥

अर्थात्—हरताल और असगंध को केले के रस में पीसकर गोरोचन मिलाकर तिलक लगाने से लोग मुग्ध हो जाते हैं।

मोहन-मन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्य भवामि यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तम् मोहयतु स्वाहा॥

दिन में पवित्र होकर एक हजार बार इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि होती है।

मोहन-यन्त्र

२१	२६	२५
२१	२४	२७
३०	२२	१०

इस यन्त्र को लिखकर अपने पास रखे तो जिससे बातचीत करे वह मोहित हो जावे।

५–दिव्य स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को गोरोचन, कुमकुम से भोजपत्र पर लिखे और
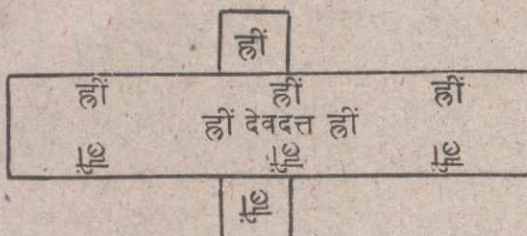
शराब के सम्पुट में रख कर धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन करे। दूसरे दिन स्नानादि नित्य कर्म से निश्चिन्त होकर शराब के सम्पुट से यन्त्र को निकाल कर शिखा में बांधे और चुपचाप अभीष्ट फल की प्रतीक्षा करे।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र
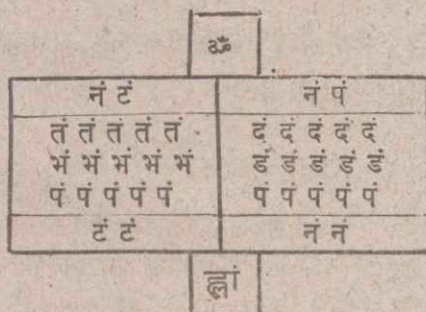
इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् पूजन करे और मंगलवार के दिन ताबीज में रख कर भुजा में बांधे तो उसे जो कोई देखेगा वश में हो जायगा।

राजा वशीकरण यन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं रामदत्त ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरोचन, केसर चन्दन से अनामिका अगुली के रक्त को मिलाकर लिखे और अनेक प्रकार से पुष्प, धूप, दीप नैवेद्य और मांस से विधिवत् पूजन करे। फिर यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मण को भोजन करावे। योगिनयों को दण्डवत करे। फिर राज दरबार में जाय तो इस यन्त्र को अपनी मुट्ठी में लेता जाय। उसे देखते ही राजा का क्रोध शान्त हो जायगा और वह वश में हो जायगा।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय। यस्य यस्य दृश्या भवनि यश्च मम मुख पश्यति तमृत मोहयतु स्वाहा। १००० जपात् सिद्धो भवति।

राजा वशीकरण तिलक

तगर, कूट, हरिताल और केशर सबको बराबर लेकर अनामिका अंगुली के रक्त से पीस कर मस्तक पर तिलक लगा कर राज दरबार में जावे तो राजा देखते ही वश में हो जायेगा।

डाकिनी शाकिनी उतारने का यन्त्र

ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

जब कभी किसी मनुष्य, स्त्री या पुरुष अथवा बालक किसी को भी औंचट में पाकर डाकिनी, ब्रह्मराक्षस, चुड़ैल, मसानीप्रेत, भूत डरावे तो उस समय इस यन्त्र को काम में लावे । इस यन्त्र को एक नवीन वस्त्र पर खड़िया से लिखे और फल, फूल, मिष्ठान्नादि से पूजन कर धूल से ढाँक दे । फिर धूलि सहित खैर के कोयले की आग में रख कर फूँक दे तो कठिन से कठिन भूत डाकिन्यादि चिल्लाते हुये भाग जाते हैं और रोगी को शीघ्र आराम हो जाता है ।

सास-स्वसुर को वश करने का यन्त्र

क्रीं	स्वा	१	१६
ह्रीं			
स्वा	क्रीं	१	१६

इस यन्त्र को रविवार के दिन गेहूँ की रोटी पर लिख कर काली कुतिया को खिलाने से सास वश में हो जाती है और मंगलवार को काले कुत्ते को खिलाने से स्वसुर वश में हो जाता है ।

झाड़-फूंक सीखा-ओझा-विद्या

भूत बाधा तन्त्र

काली मिर्च, पिप्पल, सेंधा नमक और गोरोचन को महीन पीस कर मधु के सम्पर्क से अंजन लगावे तो भूत की बाधा दूर हो।

भूत-बाधा दूर करने का मन्त्र

(उड्डीश तन्त्र, सावरि तन्त्र मतानुसार)

अखण्ड मन्त्र

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय । घोररौद्र महिषासुर रूपाय त्रैलौक्यं डंवराज रौद्रक्षेत्रपालाय ह्लों-ह्लों क्रीं-क्रीं कीमिति ताड़ाय-ताड़ाय मोहय-मोहय द्रंभि द्रंभि, क्षोभय क्षोभय, अभि अभि, साधय-साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये प्रीतीं ललाटे बंधय ह्लीं-ह्लीं हृदये स्तंभय किलि-किलि ईं ह्लीं डाकिनीं प्रच्छादय-प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अप्रभूति अदूरि स्वाहा, राक्षसं प्रच्छादय-प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय-प्रच्छादय, आकाशं प्रच्छादय-प्रच्छादय सिंहनीपुत्रं प्रच्छादय-प्रच्छादय एते डाकिनी ग्रह साधय-साधय शाकिनी ग्रह साधय-साधय अनेन मन्त्रेण डाकिनी शाकिनी, भूत-प्रेत-पिशाचादि ऐकाहिक, द्वयाहिक, त्र्यहिक, चातुर्थिक, पंचक वातिक, पैत्तिक, श्लैष्मिक सान्निपात, केशरा डाकिनी ग्रहादि,

मुंच-मुंच स्वाहा । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र, "ईश्वरो वाच" इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र को उच्चारण करके मयूर पुच्छ या लोहे की कोई वस्तु छप्पर की घास ले २१ बार झार दे तो भूतादि के समस्त उन्माद दूर हो जावेंगे ।

भूतादिक आकर्षण यन्त्र
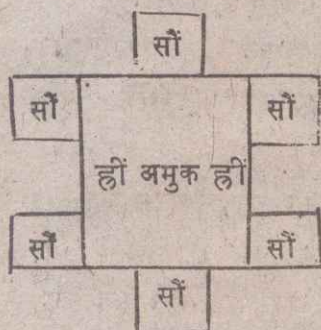
इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप से पूजन करके घी में रख दे । पश्चात् नित्य प्रति पूजन करके त्रिपुरा की प्रार्थना इस मन्त्र से करे ।

"आकर्षय महादेवी देवदत्तं मम प्रिये
ऐ त्रिपुरे देवेशि तुभ्यं दास्यामि वाचितम्"

इस प्रकार करने से २-४ दिन में ही रोगी सब बातें बकने लगेगा । यदि इस पर भी न बोले तो तुरन्त लिखित मन्त्र से काम ले ।

डाकिनी-शाकिनी भूत-प्रेत को भाषण कराने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, ॐ नमो जय-जय नृसिंह तीनलोक चौदह भुवन में, हाथ चाबि और ओठ चाबि,

नेत्र लाल-लाल, सर्व बैरि पछाड़ मार भक्तन का प्राण राखि आदेश-आदेश पुरुष को इति मन्त्र ।

रोगी को सम्मुख बैठाकर इस मन्त्र को पढ़े और इसी से अभिमन्त्रित कर उसे पिलावे तो डाकिनी शाकिनी भूतादिक तत्क्षण बोलने लगेंगे ।

दूसरा प्रयोग

ॐ नमो चढ़ो-चढ़ो बीर धरती चढ़, पाताशूल चढ़, पग पाताली चढ़ कौन-कौन वीर चढ़ै, हनुमान बीर चढ़ै । धरती चढ़, पग पानी चढ़, एड़ी चढ़-चढ़, मुके चढ़-चढ़, पिंडी चढ़-चढ़, गोड़े चढ़-चढ़, जाँघे चढ़-चढ़, कटि चढ़ २ पेट चढ़, पेट से धरन चढ़, धरन से पसलियों चढ़, पसलियों से हिये चढ़, हिये से छाती चढ़, छाती से काँधे चढ़, काँधे से कंठ चढ़, कंठ से मुख चढ़, मुख से जिह्वा चढ़, जिह्वा से कर्ण चढ़, कर्ण से आँखों चढ़, आँखों से ललाट चढ़, ललाट से शीश चढ़, शीश से कपाल चढ़, कपाल से चोटी चढ़ हनुमान नृसिह करवा तरक्तया, चलाबीर समद बीर, अगिया बीर, ये बीर चढ़े'' इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र से जो चाहे बोलवा (बकरवा) ले ।

भूत-प्रेत, डाकिनी आदि को चोट लगे ।

मन्त्र

ॐ नमो महाकाय योगिनी-योगिनी परथाकिनी

कल्प वृक्षाय दृष्टि योगिनी, सिद्धिरुद्रय, कालदंभेन साध्रय-साधय मारय-मारय चूरय-चूरय, अपहार शाकिनी सपरिवाराय नमः ॐठंछ, ॐ छः ह्रों, ह्रों फट् स्वाहा" इति मन्त्रः ।।

इस मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित करके ओखली में डाल मूशल से कूटे तो वह चोट डाकिनी को लगे फिर यदि चाहे तो इसी मन्त्र से अस्तुरा लेके अपना घुटना मूड़े तो डाकिनी का सर मुड़ा जावेगा।

फिर इसी मन्त्र से उर्द मन्त्रित करके फेंके तो डाकिनी आकर नाचने कूदने लगे और इसी मन्त्र से जल मन्त्रित करके नेत्र में लगा ले तो डाकिनी बोलने लगेगी।

भूत-बाधा दूर करते की धूनी

नीम का पत्ता, वच, होंग, सर्प की कांचली और सरसों इनकी धूनी दें तो भूत डाकिनी आदि दूर हो।

तन्त्र—१

पिपली, कालीमिर्च, सेंधा नमक और गोरोचन इनको मधु म पीसकर अंजन लगावे तो भूत बाधा दूर हो।

तन्त्र—२

गोरख बड़ी (गोरखा) को गोमूत्र में पीसकर नास दे तो ब्रह्मराक्षस भी दूर भागेगा।

तन्त्र—३

शङ्खाहूली की जड़ को चावलों के पानी में पीस कर तथा

घृत के साथ रगड़ कर नाक में सूँघाओ तो भूतादि बाधा दूर ह जावेगी ।

विधि

परन्तु यह सब कुछ तभी पूरा होता है जब उपरोक्त "यन्त्र-मन्त्र में, १-डाकिनी दोष दूर होने के मन्त्र" को जो ऊपर पहले लिखा है, उसे ग्रहण में (ग्रास से मोक्ष पर्यन्त) जप कर ले । तब वे मन्त्र उपरोक्त लिखित यथार्थ सिद्धि दाता होकर तत्कार्य पर उपयोगी होते हैं ।

पन्द्रहवें का एक आवश्यकीय यन्त्र

२	९	४
७	५	३
६	१	८

इस यन्त्र को बहुत दिन तक जगावे फिर जिस कार्य की सिद्धि के लिये लिख-कर भुजा पर बांधे वही कार्य सिद्ध होगा । अष्टगन्ध से भोजपत्र पर अनार या चाँदी की कलम से निकाल कर पूजन करे ।

नजर झाड़ने का यन्त्र

७	८१	३३	४२
८	८२	९	१७
२९	७	४९	५०
४५	५७	९	१

इस यन्त्र को तांबे के पत्र पर लिख कर बालक के गले में मंगल-वार के दिन बांधे तो नजर न लगे और लगी हो तो छूट जावे ।

बाल-रक्षा-यन्त्र

२५५	२६५	२५८
२६२	२५	२५९
२५७	२५६	२६३

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक की गर्दन में डाल दे तो बालक के हर एक रोग और प्रत्येक बाधा से रक्षा होगी ।

बाल रक्षा मन्त्र

ॐ नमो भगवते गरुणाय त्र्यम्बकाय स्वस्त्यस्तुस्वाहा ।

इस मन्त्र को १०१ बार पानी पर पढ़ कर बालक के भाल पर तिलक लगावे तो बालक सर्व व्याधाओं से रक्षित रहे ।

वशीकरण यन्त्र

८	९	३	४
६	४	७	५
५	७	१०	८
९	६	२	७

इस यन्त्र को ऐसो स्याही से जिसमें पानी के स्थान में तुम्हारे आँसू पड़े हों, एक भोजपत्र पर लिख कर अपने प्रेमी के मकान की चौखट के नीचे स्वयं दाब आवे। भगवात्कृपा से वह शीघ्र वश में हो जायगा।

वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो मोहिन्यै सर्व लोकान् मे वशीकुरु २ हूँ फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र द्वारा जल को इक्कीस बार पढ़ कर मुख को धोवे । फिर वह जिस किसा से बात करेगा वह उसके वश में रहेगा ।

सर्वजन वशीकरण तिलक

सौ तन्त्रन को तन्त्र यह, वशीकरण मन राख ।
तन मन सो वश कीजिये, बोलिके मीठी भाख ।।
पशु पक्षी आवत चले, सुनिके मीठे बोल ।

देखत टेढ़ो दृष्टि ही, भगै बोल अनमोल ।।
जो सब गुण में आगरी, है यह नर की देह ।
केवल यह वश होत है, सुनिके वचन सनेह ।।

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय । सर्व लोकानां मम वशान् कुरु-कुरु स्वाहा । एक लाख १००००० जपात सिद्धो भवति ।

सर्व वशीकरण तन्त्र

मेढ़ासींगी, बच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची यह सब बराबर लेकर कूट-छान कर रख ले । आवश्यकता होने पर पहिरने का वस्त्र लेकर धूनी देवे तो नर-नारी सब वश में हों, और क्रय-विक्रय में लाभ हो ।

पन्द्रहे का यंत्र

खाकी

८	१	६
३	५	७
४	९	२
वृष	कर्क	तुला

वादी

६	७	२
१	५	९
८	३	४
म०	मी०	कु०

आवि

२	७	६
९	५	१
५	३	८
कर्क	सि०	वृ०

अत्थिी

४	९	२
३	५	७
८	१	६
मे०	मि०	ध०

पन्द्रहे का मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीकाली चामुण्डा देवी स्वाहा ।

यन्त्र और मन्त्र का उपाय

इस यन्त्र से इतनी बातें सिद्ध होती हैं। भयंकर शत्रु वशीभूत होकर प्रीति करता है। शारीरिक व्यथा दूर होती है। धर्मपत्नी का कष्ट दूर होता है। चोरी गई हुई या खोई हुई वस्तु मिलती हैं। अपना स्नेही यदि विदेश चला गया हो तो शीघ्र ही लौट आता है। बन्दी हो तो छूट जाय।

पन्द्रहे के यन्त्र से शत्रु नाश होने का उपाय

मदार के पत्ते पर पन्द्रह दिन तक दक्षिण दिशा की ओर मुख करके पन्द्रह २ यन्त्र रोजाना लिखकर पत्ते के नीचे शत्रु का नाम लिखे और अग्नि में जला दे तो शत्रु नाश हो।

इस यन्त्र को शुभ कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में उत्तम दिन से लिखना शुरू करे। चमेली की कलम से उत्तर मुख बैठकर लिखे। यदि अशुभ कार्य के लिये लिखना हो तो अशुभ-दिन कृष्णपक्ष में लोहे की कलम से लिखना चाहिये। जितने दिन यन्त्र लिखे उतने दिन ब्रह्मचर्य से रहकर मूँग की दाल और चावल खाना चाहिये।

लक्ष्मी प्राप्त के लिये २००० यन्त्र लिखे; रोग दूर करने के लिये ६००, वशीकरण के लिये ३००० ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये ७०००, व्यापार करने के लिये ४०००, देवता प्रसन्न करने के लिये ५००० परदेश गये हुये को बुलाने के लिये २०००, स्त्री से पुत्र उत्पन्न करने के लिये ५०००, खेती अच्छी होने के लिये २०००, प्रेत बाधा दूर करने के लिये २०००, मन्त्र की सिद्धि के

लिये २०००, मित्र से मिलने के लिये २०००, अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये १५००० शत्रु वश करने के लिये २०००, खोई हुई चीज मिलने के लिये ५०००, सरस्वती प्रसन्न करने के लिये १०००, विषनाश करने के लिये २४०००, तिजरिया दूर करने के लिये ६०००, राजा को प्रसन्न करने के लिये ४०००, अनहोनी बात करने के लिये १००००० यन्त्र लिखे। गेहूँ के आटे से यन्त्र को मिलाकर मछलियों को खिला देने में सम्पूर्ण कार्यों की अवश्य सिद्धि हो जायगी। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है।

इतना कहकर श्री सदा शिव जी बोले—हे संसार के हित करने वाले लंकाधिपति! कलि में समस्त यन्त्र हुये हैं, परन्तु उपरोक्त पन्द्रहे का यन्त्र कलिकाल में मन इच्छित फल को देने वाला है पन्द्रहे का यन्त्र स्वर्ग में देवताओं को भी दुर्लभ है इसका उद्धार इस प्रकार से है। ॐ हरिः श्री हरस्तया॥

यन्त्र-मन्त्र

यन्त्र मन्त्र और तन्त्र विद्यायें ऋषियों कृत बहुत प्राचीन हैं। भारतवासी यहाँ तक उन्नतावस्था को पहुँच गये थे कि केवल हाथ फेर कर फूँक मारकर ही रोगियों को स्वस्थ कर देते थे। उनके शब्दों का प्रभाव रामबाण होता था। अब तक गुरु मन्त्र के पढ़े हुये पानी के छींटे अपना प्रभाव दिखा जाते हैं। हम इस विषय को अधिक न लिख कर थोड़े ही में इसे समाप्त करेंगे क्योंकि इन विद्याओं की इस नये जमाने में कद्र नहीं है। यहां पर यन्त्र का थोड़ा सा वर्णन करेंगे।

बाल रक्षा हेतु भूत बाधा निवारण

१—डाकिनी दोष दूर होने का मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरु का डाकिनी निहारी किन्ने

भारी यती हनुमान ने मारी कहाँ जाय पटकी किन्होंने देखी यती हनुमान ने देखी सातवें पाताल गई सातवें पाताल से कौन पकड़ लाया यती हनुमान ने पकड़ लाया। एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो कोठा तोड़ा तीन ताल दे तीन कोठा तोड़ा चार ताल दे चार कोठा तोड़ा, पाँच ताल दे पाँच कोठा, खोला छः ताल दे छ कोठा खोला, सातवें कोठा खोला देखे तो कौन कौन खड़े हैं; डाकिनी, निहारी भूत प्रेत चले यती हनुमंत मेरे झारे से चल, ॐ नमो आदेश गुरु की शक्ती; मेरी भक्ती फुरो, मन्त्र ईश्वरा वाच, इति मंत्र।

इस मन्त्र को मुख से उच्चारण कर मयूर के पक्ष तथा लोहे की चाकू से आदि में झार दे तो डाकिनी का दोष दूर हो।

डाकिनी दूर करने का यंत्र

यंत्र प्रथम १

११६	६६	१	ऽ
७	६	७	६
६	=	%	%
८	१	ऽ	४०

यंत्र द्वितीय २

७	७	ऽ	८
ऽ	६	६	५
४	॥	ऽ	११
७ •	६	१॥	%

प्रथम यन्त्र को भोजपत्रादि पर लिख कर बालक के गले में

बाँधे और द्वितीय यन्त्र को लिखकर शुद्ध जल में घोलकर पिलावे । डाकिनी दूर होकर बालक दोष से निवृत्त हो जायगा ।

प्रयोग विधि

रेवौ रवाऽर्क दुग्धेन स्मशानेभस्मना लिखेत् ।
यस्य वर्णस्य नामानि, चितामध्ये क्षिनक्षयेत् ।।
विक्षिप्तो जायते मर्त्यं, अष्टोत्तर शतं जपेत् ।

रविवार के दिन श्मशान को भस्म मन्दार के दूध में मिला कर कागज पर इस यन्त्र को लिखे और यन्त्र के नीचे शत्रु का नाम लिख कर अग्नि में जला देवे और 'ॐ ह्रि श्री हरस्तया' मन्त्र को १०८ बार जपे तो शत्रु विक्षिप्त हो जाय ।

चन्द्रवारे गृहीत्वा तु श्वेत दूर्वा च केशरः ।
श्वेत गुंजा समायुक्त कपिला पत्र मध्यतः ।।
पञ्चदर्शी विलोमेतु सन्ध्या काले विशेषतः ।
यत्रण लिख्यते सम्यक् वाह्या कच धारयेत् ।।
राज्ञानां वशमायाति अन्य लोकेषु का कथा ।

चन्द्रवार (सोमवार) के दिन सफेद दूब केशर, सफेद चिरमिटी और कपिला गौ का दूध लावे उपरोक्त वस्तुओं को पीस कर कपिला गौ के दूध में मिला दें, सायंकाल के समय इस पन्द्रह यन्त्र को बिलोम रीति से लिखे पश्चात् भुजा या कंठ में बाँध ले तो राजा वशीभूत हो जाता है और लोगों का तो कहना ही क्या है ।

भौमवारे गृहीत्वातु काक रक्त च पक्षिकं ।
यन्त्रण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत ।।

तस्य द्वारे खनेद् भूमौ भवेदुच्चाटनं ध्रुवम् ।

मङ्गलवार के दिन काक की पंख की कलम से और उसी के रक्त को स्याही से मुर्दे के वस्त्र पर यन्त्र और शत्रु का नाम लिखकर शत्रु के द्वार को भूमि खोदकर गाड़ दे तो अवश्य शत्रु उच्चाटन होय ।

बुधवारे गृहीत्वा तु, नाग केशर रोचनम् ।
यत्र लिखित्वा तेनैव, तस्यवर्ती समाचरेत् ।।
सर्षप तैलेन प्रज्वाल्य, मंत्र अष्टोत्तरं जपेत् ।
नृकपाले कज्जलं कृत्वा, वाञ्जयेत् मोहनजगत् ।।

बुधवार के दिन नागकेशर गोरोचन से यन्त्र लिखकर बत्ती बनावे और सरसो के तेल में उसे जलाकर मनुष्य की खोपड़ी पर काजल पारे और पूर्वोक्त मन्त्र को १००० बार जप करके अपनी आँख में काजल लगावे तो वशीकरण हो जाता है ।

गुरुवारे हरिद्राहि रोचनं घृत मिश्रितम् ।
यंत्र राज सभा लिख्य यस्यनाम समध्यकं ।।
आरुने निर बनेच्चैव सर्वा कर्षणो भवेत् ।

गुरुवार के दिन हल्दी, गोरोचन, घी यह तीनों चीज को मिलाकर यन्त्र लिखे । यन्त्र के बीच में जिसको वश में करना हो उसका नाम लिख देवे और अपने आसन के नीचे दाब लेवे तो वशीभूत हो जाता है ।

भृगुवारे स कर्पूरं बचा कुष्ट मधूनि च ।
यंत्र राजंतु संलिख्य भूर्जपत्र सुशोभनम् ।।

दृष्ट्वातु तस्य आयाति प्राणैरपि धनैरपि ।

शुक्रवार के दिन कर्पूर व बचकूट और मधु मिलाकर इस येन्त्र को लिखे तो इस यंत्र को देखकर धन और प्राण दोनों को लेकर स्त्री चली आती है।

शनिवारे चिता काष्ट पंचदर्शी विलौमकं ।

लिखेत यस्य नामानि स्मशाने निर्वने यदि ।।

कुक्कुटस्याति रक्तेन म्रियते नात्र संशयः ।

मुर्गे के रुधिर से विलोम अर्थात् उलटी रीति से मन्त्र को लिखकर श्मशान भूमि में गाड़ दे, उस यन्त्र पर जिसका नाम लिखा रहे वह अवश्य मर जायगा ।

वशीकरण बुरकी

चिता पर की भस्म, कूट. बच तगर और कुंकुम को मिलाकर पीसकर उसका चूर्ण बना लेवे । उस चूर्ण को जिस स्त्री के सिर पर या जिस पुरुष के पाँव तले डाले वह आजन्म वश में रहेगा ।

वशीकरण अञ्जन

तगरकूट तालीस मिलावै; तब वातीसो पीस मिलावै ।
सरसों तेल दिया में मेलै, आदतवार पुष्य में खेलै ।।
आधी रात अमावस नयन निहारिये ।
मनुष्य खोपड़ी ऊपर काजल पारिए ।।
रखक अञ्जन आँज नयन जब देखिये ।
जन जो भावै यार सोई वश कीजिये ।।

पति वशीकरण यन्त्र

गं गं गं गं गं गं गं गं गं

गं गं गं गं गं गं गं गं गं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्री ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रीं ह्रीं क्लीं गं अमुकः गं
क्लीं ह्रीं क्रीं ह्रीं क्लीं क्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

गं गं गं गं गं गं गं गं गं गं

एक लम्बा चौड़ा ऐसा भोजपत्र लावे जो फटा न हो फिर अनामिका अंगुली का रक्त और हाथी का मद जावक और गोरोचन ये चारों चीजें मिलाकर चमेली की लकड़ी के कलम से इस यन्त्र को लिखे फिर एक सुन्दर शुद्ध खेत से काली मिट्टी लेकर गणेश जी की मूर्ति बनावे। उस मूर्ति के पेट में इस यन्त्र को रख देवे। धूप दीप फूल माला आदि से पूजन कर नैवेद लगाकर इस मन्त्र पर उच्चारण करे ।। अथ मन्त्रः ।।

देव देव गणाध्यक्ष सुरासुर नमस्कृते।
देव दत्ते महा पश्य यावज्जीवं कुरु प्रभो ।।

इस मन्त्र को बार २ कहकर एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें इस मूर्ति को रख दे और मिट्टी डाल कर गड्ढा बन्द कर दे तो पति स्त्री के वशीभूत होकर रहेगा।

पुनः पति वशीकरण मंत्र

ॐ ह्रीं ध्रीं क्रीं थ्रीं ठः ठः ।।

विधि—परिवा के दिन परेवा पक्षी को मार लावे फिर ऊपर जो मन्त्र लिखा है उसको बारम्बार पढ़कर उसका मांस पान में डालकर खिला देना चाहियें।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः भवाये नमः शर्वाण्ये अमुकी (अमुकी के स्थान पर स्त्री का नाम लेना) वश्य मान स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र को १०००० जपे फिर जिह्वा मैल, दाँत मैल, नाक मैल, गुदा मैल, लिंग मैल इन सबको मद में मिलाकर जिस पुरुष को पान करावे वह पुरुष वशीभूत हो जाता है ।

वेश्या वशीकरण मन्त्र

ॐ द्राविणी स्वाहा, ॐ हामिले स्वाहा ।

विधि

दस हजार जपकर मन्त्र सिद्धि कर लेवे । उसके पीछे ओंगा का गूदा १६ अंगुल लम्बा निकाल लेवे और इस मन्त्र को सात बार उस पर पढ़कर वेश्या के घर में गाड़ देवे तो वेश्या वशीभूत हो जाती है ।

संसार वशीकरण यंत्र

ॐ वं जं ह्रीं डं
उं ह्रीं ऊँ ड
बं ड़ं जगत वं ड ह्रीं

इस यन्त्र को कपूर, कस्तूरी गोरोचन चन्दनादि की स्याही और चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखे । तीन दिन तक इस यन्त्र का सुगन्धित पुष्प और द्रव्य से पूजन करके ताबीज में भरवाकर बाँह में बांध लेवे, फिर जिसके पास जाय वही वश में हो जाता है ।

सर्व वशीकरण तंत्र

गोरोचन, वंशालोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन और काक जंघा की जड़ इन सबको बराबर भाग में लेवे और बावली या जलाशय के जल से कुमारी कन्या द्वारा गोली बनवा कर छाया में सुखा लेवे फिर उसका मस्तक पर तिलक करे तो जो उसको देखे वह वश में हो जाता है और राजा के दरबार में न्याय (दीवानी अदालत) या युद्ध में सर्वत्र विजय पाता है।

सर्व वशीकरण मंत्र

मोहन—मंत्र

मोहनी मोहनी मोहनी मोहनी कीजे मोहनी मेरा नाम,
चामकी बाँटी बाँधों सारी रात ।।

राजा मोहों परजा मोहों मोहों महाजन जो कोई करे मेरे सिर घाव । उसको आवे आप सिर पर घाव दोहाई ईश्वर महादेव गौरा पारवती की ।

विधि

लवङ्ग, गूगुल, मधु, घृत इन चारों को सम भाग में लेकर जिनके नाम से चाहे, जिस मङ्गलवार को अमावश्या पड़े १०८ बार जप कर १०८ धूनी देवे फिर श्री महावीर जी के सामने छोटे बच्चे को मोहन भोग की प्रसादी खिलावे। फिर उस विभूति को पीले चमेली के फूल पर मन्त्र पढ़ कर जिस पर डाले या सूंघने को दे वह शीघ्र वश में हो।

वशीकरण सुपारी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय त्रिपुरवाहनाय ।

नाम लेकर जिसको वश करना चाहे अमुक अच्छा मुहूर्त देखकर उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सुपारी जिसको खिलावे वह वश में हो जाय ।

राजा वशीकरण मन्त्र

"ॐ क्लीं सः अमुक वश कुरु कुरु स्वाहा"

इस प्रकार १ लाख मन्त्र जपे, सिद्ध हो जायगा । फिर १००० बार जप कर केशर, चन्दन गोरोचन और कपूर दूध में मिला घिसकर तिलक लगाकर राजा के सामने जाय तो वह वश में हो ।

वशीकरण मंत्र

३४ का यंत्र

१०	९	१	१४
११	४	१२	७
८	११	६	९
५	१०	१५	४

इस यन्त्र को लिखकर बत्ती बनावे और घृत के दीपक में डाल कर जलावे और मन चाही कामिनी के घर की ओर मुंह करके रख दे तो उसके हृदय में प्रीति उत्पन्न हो ।

प्रेत-बाधा निवारण यंत्र

यदि इस प्रकार के यन्त्र को कोरे कपड़े पर लिख कर प्रेत बाधा वाले को दिखाकर जलादे तो उसका प्रेत छूट जाय।

शत्रु मोहन तंत्र

शत्रु को विष्ठा और बीछी को लाकर एकत्र करे फिर उसको एक ढके पात्र में रखकर पृथ्वी में एक गड्ढा खोदकर उसमें रख दे, ऊपर मिट्टी डाल दे इस प्रकार करने से शत्रु शीघ्र ही शरणागत होगा, मरने लगेगा। जब पांव पर आकर गिरे तब उसे उखाड़ ले तब उसे आराम हो जायगा।

शत्रु मोहन यंत्र

७६	८४	२	८
८४	७४	९	१
६	३	९	१
४	६	५	९३

इस मन्त्र को तिकनी टिकरी पर लिख कर कंठ में बांधे तो उसे शत्रु का भय न रहगा। अभ्यासी को देखते ही शत्रु मोहित हो जायगा।

शत्रु वशीकरण की एक और विधि

भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा दे तो शत्रु वश में हो जाय।

पति-वशीकरण

गोरोचन, योनि का रक्त और केले का रस एकत्र करके इसका तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

अपरंच

सफेद सरसों और अनार का फल, फूल, शाखा, पत्र तथा जड़ को एकत्रित कर पीस कर योनि के ऊपर इसका लेप करने से यदि स्त्री दुर्भगा अर्थात् कुरूपा हो तो भी अपने पति को दास के समान अपने वश में कर लेगी।

सर्वसाधारण वशीकरण मंत्र

"ॐ नमो कट कट विकट घोर रूपिणी अमुकं मे वशमानय स्वाहा।

विधि

इस मन्त्र को ग्रहण में १००० बार जपे फिर रविबार को इससे अभिमन्त्रित करके अन्न भोजन करे और भोजन करते समय उसका नाम लेता जावे जिसे वश में करना हो तो वह शीघ्र ही वश में हो जायगा।

सर्व-जन वशीकरण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को। राजा मोहें, परजा मोहें मोहें, ब्राह्मण बणिया। हनुमंत रूप में जगत मोहें, जो

रामचन्द्र परमाणिया । गुरू की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरोवाच ।

विधि—इस मन्त्र को पहले २१ दिन तक एक हजार प्रति-दिन और चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य नित्य प्रति करता रहे तो भी रामचन्द्रजी का ध्यान करके चौराहे की धूलि उठा कर २१ बार मन्त्र को जपकर माथे में बिन्दी लगाले । जो देखे बश में हो जायगा ।

भ्राता वशीकरण मंत्र

ॐ मोंड़ो ।' इस मन्त्र को बिना भोजन किये ही पाँच सौ जप करे तो भाई की कौन कहे राजा, पुत्र आदि सब वश हो में जाय । यह सब मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र है ।

शत्रु वशीकरण मंत्र

''ॐ ह्रीं क्लीं ऐं ल्लो भोग प्रदा भैरवी मातङ्गी त्रैलोक्यं वशमानय स्वाहा ।

विधि—मैनसिल और गोरोचन पर इस यन्त्र को एक सहस्र लिखकर जप करे । तिलक लगाते समय सात बार मन्त्र जपे तो देखते ही शत्रु वश में हो जाय ।

त्रिभुवन वशीकरण

ॐ नमो भूतनाथाय समस्त-भुवन भूतानि साधय हुँ ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करने से आकाश, पाताल और पृथ्वी के चराचर प्राणी वशीभूत हो जाते हैं ।

वशीकरण लौंग

ॐ नमो आदेश गुरु को, कामरू देश कौमाक्षादेवी जहाँ बसे इस्माइल योगी दीन्हीं एक लौंग राती प्राती, दूजी लौंग दिख वेराती। तीजी लौंग रहै थहराय। चौथी लौंग मिलावै आय नहिं छावैं तौं कुवां बावड़ी धार फिरै डंडी कुआँ, बावड़ी छिटक मरै। ओं नमो आदेश गुरू को मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फुरो तंत्र ईश्वरोवाच।

विधि—ग्रहण की रात को चार लौंग लाकर चार दिशाओं में रखे और बीच में चौमुख दीपक जलावे, फिर धूप सुगन्ध माला, नैवेद्य चढ़ाय एक हजार मन्त्र जपे, सिद्ध होने पर सात मन्त्र पढ़ के लौंग दे। इस लौंग को जो खाय, वह वश में हो जाय।

सभा मोहन तंत्र

अथेली ता हनुमंत बसै, भैरूँ बसे कपार।
नारसिंह की मोहनी, मोहै सब संसार।।

मोहन रे मोहन तू बीर सब बीर में तेरा सिर सबकी दृष्टि, बाँध दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊँ तोहि तेल सिंदूर कहाँ से आया। कैलाश पर्वत से आया अंजनी का हनुमंत, गौरी का गणेश। काला गोरा तातला तीनों बसे पताल। बिन्दा तेल सिंदूर का दुश्मन गया पताल दुहाई शाकिया सिंदूर की। हमें देखत शीतल हो जाय

हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच। सत्यनाम आदेश गुरु का।

विधि—सात शनिवार को दीपक में तेल करके लोहबान देवे, मिठाई का भोग धरे १०८ बार जपै। फूल पान करके पूजा करे। सिद्धि हो जाय तो पीछे जहां जाय, सिन्दूर पर सात बार मन्त्र पढ़े माथे पर लगा कर जाय। राजा गुस्से में हो जाय, और दण्ड देने को बुलावे तो देखते ही शीतल हो जाय। जिस सभा में जाय वहाँ के सब मनुष्य बड़ा आदर भाव करें और प्रीति से सम्मान करें।

प्रेत वशीकरण मंत्र

ॐ श्री व वं भु भूतेश्वरी मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

विधि—मूल नक्षत्र में बबूल के नीचे तीन दिन इस मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपै तो प्रेत प्रकट होकर 'मांग मांग' कहेगा। जब उससे वचन लेकर जो मन चाहे मांग ले।

भूत वशीकरण-मन्त्र

ॐ साल सलीता सोसल बाई काग पढ़ंता धाई ओं लं लं लं ठः।

शनिश्चर के दिन अर्द्धरात्रि में नग्न हो बबूल के वृक्ष के नीचे आक की लकड़ी जलाकर मन्त्र पढ़ पढ़ कर बबूल तिल और उर्द की आहुति दे। भूत सम्मुख आकर बातें करेंगे। इस समय दृढ़ हो अपना हाथ काटकर सात बूंद रक्त को पृथ्वी पर टपकावे, प्रेत सदा वश में रहेगा। जब बुलाओगे, आवेगा। रात्रि में शौच से

आकर आबदस्त के थोड़े से बचे हुये पानी को बबूल पर चढ़ा दिया करे।

अन्य वशाकरण मन्त्र

"ओं यं य यं ओं र रं र लं लं ठः ठः ओं क्लीं"

सोमवार को खटकुली पक्षी को मार कर उसकी चोंच में सुपारी डाल कर नदी के किनारे गाड़ आवे मङ्गलवार को सवेरे उखाड़ लावे, सुपारी निकाल ले, फिर वह सुपारी पान में डालकर मन्त्र पढ़ जिसे खिलादे तत्काल वशीभूत हो जाय।

भूतबाधा निवारण मन्त्र

श्लोक—गुग्गुलं लशुनं सर्पि कंचुकः कपि रोम च
शिखि कुक्कुटयोर्विष्ठा मलः पारावतस्यच।
एतद्धूपाद्ग्रहाः क्रूराः पिशाचा भूत पूतनः
डाकिन्यौज्विरा रौद्रा नश्यन्स्पिर्श मारुतः।

गुग्गुल; लहसुन; घी; सांप की केचुली; बानर के रोम, मोर और मुर्गा पक्षी की विष्ठा तथा कबूतर की विष्ठा इन सब को धूप करें; क्रूर ग्रह (पिशाच) भूत; पूतना डाकिनी; ज्वर आदि रोग स्पर्श मात्र से हीं नष्ट हो जाते हैं।

जादू निवारण मन्त्र

ॐ आहूता मन्दरश्यम वजाज्वलं जल जम जम जम ॐ जाहि जाहि जाहि। काले धतूरे का बीज मन्त्र पढ़ अग्नि में डाले तो जादू दूर हो।

बाई दूर होने का मन्त्र

ॐ मूलनमः धूक्षतमः जाहि- जाहि जाहि ध्वांक्षतम् प्रकीर्ण

मङ्गप्रस्तार मुंच मुंच। एतवार मङ्गलवार को तिलोई पक्षी के आंख से झारे तो बाई दूर हो।

सर्व ग्रह बाधा दूर होने का मंत्र

ॐ ऐं ह्रं क्लीं दह दह—

प्रदोष के दिन से सात दिन बराबर मालपुआ और कस्तूरी की १०८ बार आहुति देने से ग्रह-बाधा दूर हो।

देव-बाधा निवारण मन्त्र

ओ३म् सर्वेश्यरायहूम्

सोमवार से नौ दिन लगातार गरी और काले तिल के मन्त्र पढ़ तीन माला की अहुति दे देवे तो देद बाधा दूर हो जाये।

सर्प कीलने का मंत्र

बैठी समुन्दर करो गोहार; जहर बुझाया अचल लोहार, धुक धुक बरे पत्थल कील शब्द साँचा फुरो वाचा। सात बार मन्त्र पढ़ निगेह की जड़ से फुंकै तो सर्प निर्विष हो जाय।

सर्प खोलने का मन्त्र

आता का जाता का लागल गाता का चलता फिरता खोल २ अलाव पति शब्द साँचा फुरो बाँचा। मंत्र पढ़ तुनी की लकड़ी सुँघा दे तो सर्प खुल जाय।

पीनस रोग निवारण मन्त्र

कसे तोंवरी छप्पर चढ़ी बीस बिलाई बावन गढ़ी रोंक सिद्ध पत्ती शब्द साँचा फुरो वाचा।

यह मन्त्र पढ़कर सात बार झारे पोंछे; श्वेत पत्थर चटा पीसकर नाक के ऊपर बांधे तो सब कीड़े गिर पड़ें।

घुमरी निवारण मन्त्र

ॐ अब्बुजहाँ जालन्धरी जो सुन्दरीं जुमोह जुमोह सात बार मन्त्र पढ़कर चचिका पक्षी के पंख शिखा में बाँध देवे। घुमरी न आवेगी।

आकर्षण मन्त्र

कृष्ण धतूर पत्राणां रसै गोरोचनं समम्।
लिखेत्करवीर लेखिन्या यन्त्र पञ्चदशा द्रव्यम्॥
भूर्जपत्रेच तन्नाम धूपयत् खदिर वह्निना।
रुष्टोपि स्वयमायाति नान्यथा मम भाषितम्॥

काले धतूरे के पत्तों का अर्क गोरोचन के साथ ले। कनेर की कलम से भोजपत्र पर पन्द्रहे के यन्त्र तथा उसके नाम को लिखो और फिर उस यन्त्र को कत्था की लकड़ी की अग्नि से तपाओ तो रूठा हुआ मनुष्य आकर्षित हो जावे।

पन्द्रहे के यन्त्र का स्वरूप

६	१	८
७	५	३
२	९	४

गर्भपतन निवारण

कुलाल हस्तीद्भव मृत्तिकाया,
छागी पयः छौद्र रसस्य पानात् ।
गर्भच्युत शून मयां निकार्यं,
कार्योति गर्भ प्रकृतिं हठेन ॥

कुम्हार के हाथ में लगी हुई मिट्टी, बकरी का दूध और शहद इनको मिला कर पीने से गर्भ की पीड़ा तथा गर्भपात होना निश्चय रुक जायगा।

मृतक गर्भ पातनम्

फिटकरी, बाँस की छाल, इन दोनों को औट कर आठ टंक की मात्रा में तीन बार अथवा तीन दिन पीये तो अवश्य ही गर्भ पात हो जाता है।

सुख से प्रसव होने का उपाय

इक्कीस के तन्त्र को सोलह कोठी में भरे। इस यन्त्र के दिखाने और गंगाजल में धोकर पिलाने से तथा छुआने से स्त्री को सुख पूर्वक सन्तान उत्पन्न होती है। इसमें सन्देह नहीं है यह चमत्कारी यन्त्र है।

इक्कीस का यन्त्र

४	५	५	७
८	४	८	१
६	३	६	६
		२	७

परदेश गया मनुष्य लौट आवे

सः सः सः सः सः
सः सः क्रीं ह्रीं क्रीं
साध्य नाम
ह्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं
ह्रीं क्रीं ह्रीं दर

इस यन्त्र को गोरोचन केशर चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप फूल माला, नैवेद्यादि से विधिवत पूजन करे। ऊपर से पीला सूत लपेट देवे। मनुष्य के शरीर में उबटन मलने से जो मैल छूटता है उसको एक मूर्ति बनावे। उसके हृदय में इस यन्त्र को रख देवे और उसी मैल से ही ढक कर तीन दिन तक सायंकाल के समय खैर की आग से मूर्ति को तपावे। तापते समय इस मन्त्र को पढ़ता जाय।

❁ मन्त्र ❁

ॐ देवकत वेगन आकर्णय, पाणियद्र स्वाहा ॥

इस रीति के करने पर देशान्तर में गया हुआ मनुष्य चाहे जितनी दूर हों शीघ्र खिचा हुआ चला आयेगा।

दुःस्वप्न निवारण मन्त्र

ओवाराणस्यां दक्षिणे कोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः।
तस्य स्मरण मात्रेण दुःस्वप्नो सुस्वप्नो भवेत् ॥

मन्त्र को प्रातः उठते ही १०८ बार जपकर हाथ पर फूंक मारे और अपने मुख पर हाथ फेरे। इससे दुःस्वप्न का दोष मिट जाता है।

मुकदमा जीतने का मन्त्र

ॐ क्रां क्रां श्रां धूम्र वारि बदक्ष बिजयति जयति ॐ हूं ॥

नदी किनारे त्रयोदशी पुनर्वसु नक्षत्र में सुरही गाय के चर्म पर बैठ कर प्रवाल की माला से जपै। मुकदमे में अवश्य ही जीत होगी।

व्यापार वर्द्धक मन्त्र

"ॐ श्रीं श्रीं परमां सिद्धि श्रीं श्रीं श्रीं ॐ"

प्रदोष का व्रत करके संध्या समय नागौरी के फूल अष्ट-गन्ध मिश्रित कर तीन माला मन्त्र जपे तत्पश्चात् १०८ आहुति दे और फिर सात प्रदोष तक लगातार प्रतिदिन करने से व्यापार की वृद्धि होगी।

देवबाधा निवारण यन्त्र

रा० ओ३म् दू० न० फ

कस्तूरी व सुवर्ण को लेखनी से चाँदी के पत्र पर लिख कर प्रतिदिन नियम से पूजन करे तो सब प्रकार की देव बाधा दूर हो।

व्यापार वर्द्धक यन्त्र

वर्हय	ऐं	बर्हय
ऐं	अन्नपू०	ऐं
वर्हय	ऐं	बर्हय

यह यन्त्र को ताम्रपत्र पर गोरोचन और हंस के पंख की लेखनी से प्रतिदिन प्रातःकाल लिख कर धूप दीपादि से पूजा करे तो अवश्य व्यापार वृद्धि होगी।

नजर झाड़ने का यन्त्र

६	६	६	६	६
६	६	६	६	६

अनार की लेखनी लेकर संखाहुली के रस से कमल पत्र पर लिख कर बालक के कंठ में बाँध दे तो नजर लगने का भय दूर हो।

टोना निवारण मन्त्र

"ॐ काँ कलककपाट बज्र-प्रहार लङ्का अलक कलक फलाङ्ग यतीकी वाचा सत्य हूँ।

कपड़े का पलीता बनाकर अलसी के तेल में भिगोकर जलावे और कांसे की थाली में जल भर कर पलीता में से तेल टपकावे, २१ वार मन्त्र पढ़कर बालक को फूंक मारे। इस विधि से टोना उतर जायगा।

सर्व कामना पूर्ण होने का मंत्र

'ॐ विद्युनिह्व चञ्चलाकाये गन्ध गन्ध प्रसारिणी देहि देहि ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ हः।

अर्द्ध रात्रि के समय नदी में खड़ा हो स्फटिक की माला से १०८ (माला) उक्त मन्त्र को जपे। फिर एक माला से जल तन्दुल की खीर बनाकर अग्नि में आहुति करे। सब प्रकार की अभीष्ट कामना पूर्ण होगी।

✱ इति श्री वशीकरण मन्त्र सम्पूर्ण ✱

———